श्रीः ।

भूमिका ।

विदित होकि सम्पूर्ण भयभक्त हरिचरणानुरागियोंके आनन्दार्थ तथा कराल कलिमल ग्रसित पुरुषोंके निस्तारार्थ और भगवत् कथामृत प्रेमियोंकी पूर्ण तृप्त्यार्थ हमने श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास जीके समग्र (१६) ग्रंथ एकत्र करके मुद्रित कियेहैं यह ग्रंथ परम क्लिष्टतासे प्राप्तकर उत्तम विद्वानोंके द्वारा शुद्ध कराकर अत्युत्तम रीतिसे छापेहैं ग्रंथोंकी संख्या निम्न लिखित रूपसे है ॥

१ श्रीरामलल्लानहछू–इसमें सोहर छन्दमें परम मनरंजन दुःख भंजन श्रीरामचन्द्रजीके नह काटनेका वर्णनहै, तथा शृंगार और हास्य रसका अधिक उद्दीपन है ॥

२ वैराग्यसंदीपिनी–इसमें अत्युत्तम सामयिक दोहा चौपाई ज्ञान भक्ति मार्गी तथा राजनीतिक वर्णित हैं संत स्वभाव संत महिमा और शांति रसकाभी उत्तम प्रकारसे वर्णनहै ॥

३ बरवारामायण–बरवाछंदमें सातौकाण्ड रामायण सूक्ष्म रीति से वर्णित है ॥

४ पार्वतीमंगल–उमामहेश्वरका विवाह विस्तार पूर्वक वर्णित है ॥

५ जानकीमंगल–जगज्जननी जनकसुता जानकीजी और रामचन्द्रजीका विवाह विस्तार पूर्वक वर्णित है ॥

६ गीतावली–सातौकाण्ड रामायण अनेक प्रकारके रागरागिनियोंमें वर्णितहै ॥

७ श्री कृष्णगीतावली–श्रीकृष्णचरित्र तथा उद्धव गोपियोंका पवित्र चरित्र मनहरन रागरागिनियोंमें वर्णित है ॥

श्रीः ।

भूमिका ।

विदित होकि सम्पूर्ण भगवद्भक्त हरिचरणानुरागियोंके आनन्दार्थ तथा कराल कलिमल ग्रसित पुरुषोंके निस्तारार्थ और भगवत् कथामृत प्रेमियोंकी पूर्ण तृप्त्यार्थ हमने श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास जीके समग्र (१६) ग्रंथ एकत्र करके मुद्रित कियेहैं यह ग्रंथ परम क्लिष्टतासे प्राप्तकर उत्तम विद्वानोंके द्वारा शुद्ध कराकर अत्युत्तम रीतिसे छापेहैं ग्रंथोंकी संख्या निम्न लिखित रूपसे है ॥

१ श्रीरामलल्लानहछू–इसमें सोहर छन्दमें परम मनरंजन दुःख भंजन श्रीरामचन्द्रजीके नह काटनेका वर्णनहै, तथा शृंगार और हास्य रसका अधिक उद्दीपन है ॥

२ वैराग्यसंदीपिनी–इसमें अत्युत्तम सामयिक दोहा चौपाई ज्ञान भक्ति मार्गी तथा राजनीतिक वर्णित हैं संत स्वभाव संत महिमा और शांति रसकाभी उत्तम प्रकारसे वर्णनहै ॥

३ बरवारामायण–बरवाछंदमें सातौकाण्ड रामायण सूक्ष्म रीतिसे वर्णित है ॥

४ पार्वतीमंगल–उमामहेश्वरका विवाह विस्तार पूर्वक वर्णित है ॥

५ जानकीमंगल–जगज्जननी जनकसुता जानकीजी और रामचन्द्रजीका विवाह विस्तार पूर्वक वर्णित है ॥

६ गीतावली–सातौकाण्ड रामायण अनेक प्रकारके रागरागिनियोंमें वर्णितहै ॥

७ श्री कृष्णगीतावली–श्रीकृष्णचरित्र तथा उद्धव गोपियोंका पवित्र चरित्र मनहरन रागरागिनियोंमें वर्णित है ॥

८ रामाज्ञाप्रश्न–यह प्रश्न अत्यंतही सत्य प्रश्नके अनुकूल उत्तर बताती है ॥

९ दोहावली–इसमे राजनीतिक अत्युत्तम दोहा हैं ॥

१० कवित्तरामायण–सातौकाण्ड रामायण कवित्त घनाक्षरी और सवैयोंमें वर्णित है ॥

११ कलिधर्म्माधर्म्मनिरूपण–कलियुगके धर्म और अधर्मका विवरण दोहा चौपाइयोंमें उत्तम रीतिसे वर्णन किया गया है ॥

१२ विनयपत्रिका–अनेक राग रागिनियोंमें विनयके पद गान रसिक हरि भक्तोंके उपकारार्थ वर्णित हैं ॥

१३ हनूमानबाहुक–इसके पाठसे शरीरकी पीड़ा शांत होती है जो रोचक कवित्तोंमें वर्णित है ॥

१४ छप्पयरामायण–सातौकाण्ड रामायण सूक्ष्मतासे छप्पय छन्दमें वर्णित है ॥

१५ हनूमानचालीसा–इसके पाठसे विघ्नकी शांति और कार्यकी सिद्धि होतीहै ॥

१६ संकटमोचन–यह भी मांगलिक और दुःखहर्त्ता है ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–बंबई.

अथ

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

श्रीरामललानहछू, वैराग्य संदीपनि

श्रीबरवा रामायणादि

जिसे

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखानामें छापकर

प्रकट किया

ज्येष्ठ संवत् १९५१

श्रीः।

श्रीजानकी वल्लभो विजयते ॥

अथ श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत-

श्रीरामलला नहछू प्रारम्भः ॥

सोहरछंद

आदि शारदा गणपति गौरि मनाइयहो ॥ रामललाकर नहछू गाइ सुनाइयहो ॥ जेहि गाये सिधिहोय परमनिधि पाइयहो ॥ कोटि जनमकर पातक दूरि सो जाइयहो ॥ १ ॥ कोटिन्ह बाजन बाजहिं दशरथके गृहहो ॥ देवलोक सब देखहिं आनँद अतिहियहो ॥ नगर सोहावन लागत वरणि न जातैहो ॥ कौशल्याके हर्ष न हृदय समातैहो ॥ २ ॥ आलेहि बाँसके माँडव मणिगण पूरनहो ॥ मोतिन्ह झालर लागि चहूँ दिशि झूलनहो ॥ गंगाजलकर कलशतौ तुरित मँगाइयहो ॥ युवतिन्ह मंगलगाइ राम अन्हवाइ यहो ॥ ३ ॥ गजमुकुता हीरामणि चौक पुराइयहो ॥ देइ सुअरघ रामकहँ लेइ वैठाइयहो ॥ कनकखंभ चहुँ ओर मध्य सिंहासनहो ॥ माणिक दीप बराय वैठि तेहि आसनहो ॥ ४ ॥ बनिबनि आवत नारि जानि गृहमायनहो ॥ विहँसत आउ लोहारिनि हाथ बरायनहो ॥ अहिरिनि हाथ दहेड़ि शकुनलेइ आवहि हो ॥ उनरत योवन देखि नृपति मनभावइहो ॥ ५ ॥ रूप सलोनि तँबोलिनि बीरा हाथहिहो ॥ जाकी ओर विलोकहि मन तेहि साथहिहो ॥ दरजिनि गोरे गात लिहे कर जोरा हो ॥ केशरि परम लगाइ सुगंधनबोराहो ॥ ६ ॥ मोचिनि वदन सकोचिनि हीरा माँगनहो ॥ पनिहि लिहे करशोभित सुंदर आँगनहो ॥ बातियाकै सुधारि मलिनिया सुंदर गातहिहो ॥ कनक रतनमणि मौर लिहे मुसुकातहि हो ॥ ७ ॥ कटिकै छीन बरनिआँ छाता पानिहिहो ॥ चंद्रवदनि मृगलोचनि सब रसखानिहिहो ॥ नैन विशाल नउनियां भौंह चमकावइ हो ॥ देइगारी रनिवासहि प्रमुदित गावइहो ॥ ८ ॥ कौशल्याकीजेठि दीन्ह अनुशासनहो ॥ नहछू जाइ करावहु वैठि सिंहासनहो ॥ गोद लिहे कौशल्या वैठी रामहिवरहो ॥ शोभित दूलह राम शीशपर आँचरहो ॥ ९ ॥ नाउनि

अति गुणखानि तौ वेगि बोलाईहो ॥ करि शृंगार अति लोनि तौ विहँसति आईहो॥कनक चुनिनसो लसितनहरनीलियेकरहो ॥ आनँद हिय न समाइ देखिरामहि वरहो ॥ १० ॥ कानि कनकतरीवर वेसरि सोहहिहो ॥ गजमुक्ताकर हार कंठमणि मोहहिहो ॥ कर कंकण कटि किंकिणि नूपुर बाजहिहो॥रानीके दीन्ही सारी तौ अधिक विराजहिहो ॥ ११ ॥ काहे रामजिउ साँवर लछिमन गोरहो ॥ की दुहुँरानि कौशिलहि परिगा भोरहो ॥ राम अहहिं दशरथके लछिमन आनकहो ॥ भरत शत्रुहन भाइ तौ श्रीरघुनाथ कहो ॥ १२॥ आजु अवधपुर आनँद नहछू रामकहो॥ चलहु नयनभरि देखिय शोभा धामकहो ॥ अति वड़भाग नउनियाँ छुए नखहाथ सों हो ॥ नैनन्ह करत गुमान तौ श्रीरघुनाथसोंहो ॥ १३ ॥ जो पगु नाउनि धोवइ राम धोवावहिंहो ॥ सो पग धूरि सिद्ध मुनि दरशन पावहिं हो॥अतिशय पुहुपकमाल राम उर सोहहिंहो ॥ तिरछी चितवनि आनँद मुनि मुख जोहहिंहो ॥ १४ ॥ नखकाटत मुसुकाहिं वरणि नहिं जाताहिहो॥ पद्मपरागमणिमानहुँ कोमल गाताहिहो ॥ जावक रचित अँगुरियन्ह मृदुल सुठारीहो ॥ प्रभुकर चरण प्रछालि तो अति सुकुमारीहो ॥ १५ ॥ भई निछावरि बहुविधि जो जस लायकहो ॥ तुलसिदास बलिजाउँ देखि रघुनायकहो ॥१६॥ भरिगाड़ी नेवछावरि नाउ लेइ आवइहो ॥ परिजन करहिं निहाल अशीशत आवइहो ॥तापरकरहिं सुमौजबहुतदुख खोवहिंहो ॥ होइ सुखी सब लोग अधिक सुख सोवहिंहो ॥ १७ ॥ गावहिं सब रनिवास देहिं प्रभुगारीहो ॥ रामलला सकुचाहिं देखि महतारीहो ॥ हिलिमिलि करत सवाँग सभारस केलिहो ॥ नाउनि मनहरषाइ सुगंधनमेलिहो ॥ १८ ॥ दूलहको महतारि देखि मन हरषैंहो ॥ कोटिन्ह दीन्हेउ दान मेघ जनु बरषैंहो ॥ रामललाकर नहछू अति सुखगाइयहो ॥ जेहि गाये सिधिहोइ परमनिधि पाइयहो ॥ १९ ॥ दशरथराउ सिंहासन बैठि बिराजहिंहो॥तुलसिदास बलिजाहि देखि रघुराजहिहो ॥ जे यह नहछू गावै गाइ सुनावइँहो ॥ ऋद्धि सिद्धि कल्याण मुक्ति नर पावइँहो ॥ २० ॥

इति श्रीगोसाँईतुलसीदासजी विरचित श्रीरामललानहछू संपूर्ण ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीजानकी वल्लभो विजयते ॥

अथ श्रीगोस्वामि तुलसीदास कृत

वैराग्यसंदीपिनी प्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥ राम वामदिशि जानकी, लषण दाहिनी ओर ॥ ध्यान सकल कल्याण मय, सुरतरु तुलसी तोर ॥ १ ॥ तुलसी मिटै न मोह तम, किए कोटि गुणग्राम ॥ हृदय कमल फूलै नहीं, विनु रविकुल रविराम ॥ २ ॥ सुनत लखत श्रुति नयन विनु रसना विनु रसलेत ॥ वास नासिका विनुलहै, परसै बिना निकेत ॥ ॥३॥ सोरठा॥ अज अद्वैत अनाम, अलखरूप गुणरहित जो ॥ मायापति सोइ राम, दासहेतु नरतनु धरेउ ॥ ४ ॥ दोहा ॥ तुलसी यह तनु खेतहै, मन वच कर्म किशान ॥ पाप पुण्य द्वै बीजहैं, ववैसो लहै निदान ॥ ५ ॥ तुलसी एह तनु तवाहै, तपत सदा त्रैताप ॥ शांति होहि जब शांतिपद, पावै राम प्रताप ॥ ६ ॥ तुलसी वेद पुराण मत, पूरण शास्त्र विचार ॥ यह विराग संदीपिनी, अखिल ज्ञानको सार ॥ ७॥ (अथ संत स्वभाव वर्णनम्)॥ दोहा ॥ सरल वरण भाषा सरल, सरल अर्थमय मानि ॥ तुलसी सरलै संतजन, ताहि परी पहिचानि ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ अति शीतल अतिही सुखदाई । शम दम राम भजन अधिकाई ॥ जड़ जीवनको करै सचेता । जगमाहीं विचरत यहि हेता ॥ ९ ॥ दोहा ॥ तुलसी ऐसे कहु कहूँ धनि, धरणी वहु संत ॥ परकाजे परमारथी, प्रीति लिए निवहंत ॥ १० ॥ की मुख पट दीन्हे रहै, यथा अर्थ भाषंत॥तुलसी या संसारमें, सो विचारयुत संत ॥ ११ ॥ वोलै वचन विचारिकै, लीन्हे संत सुभाव ॥ तुलसी दुख दुर्वचनके, पंथ देत नहिं पाव ॥ १२ ॥ शत्रु न काहू करि गनै मित्र गनै नहिं काहि ॥ तुलसी यह मत संतको, वोलै समता माहिं ॥ ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ अति अनन्य गति इंद्रिजीता । जाको हरि विनु

कतहुँ न चीता ॥ मृगतृष्णा सम जग जिय जानी । तुलसी ताहि संत पहिचानी ॥ १४ ॥ दोहा ॥ एक भरोसो एक बल एक आस विश्वास ॥ रामरूप स्वाती जलद चातक तुलसीदास॥ ॥ १५ ॥ सो जन जगत जहाजहै, जाके राग न दोष ॥तुलसी तृष्णा त्यागिकै, गहेउ शील संतोष॥१६॥शीलगहनि सबकी सहनि, कहनि हीय मुखराम ॥ तुलसी रहिए यहि रहनि, संत जननको काम॥१७॥ निज संगी निज सम करत, दुर्जन मन दुख दून ॥ मलयाचलहैं संत जन, तुलसी दोष विहून ॥१८॥कोमलवाणी संतकी, श्रवै अमृतमय आय ॥ तुलसी ताहि कठोरमन, सुनत मौन होइ जाय ॥ १९ ॥ अनुभव सुख उत्पति करत, भव भ्रम धरै उठाय॥ऐसी वाणी संतकी जो उर भेदै आय॥२०॥ शीतलवाणी संतकी, शशिहूते अनुमान ॥ तुलसी कोटि तपनि हरै, जो कोउ धारै कान ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ पापताप सब शूल नशावै । मोह अंध रवि वचन बहावै ॥ तुलसी ऐसे सद्गुरु साधू । वेद मध्य गुण विदित अगाधू ॥ २२ ॥ दोहा ॥ तन करि मन करि वचन करि, काहू दूषत नाहिं ॥ तुलसी ऐसे संतजन, राम रूप जग माहिं ॥ २३ ॥ मुख देखत पातक हरै, परसत कर्म विलाहिं ॥ वचन सुनत मनमोह गत, पूरुब भाग मिलाहिं ॥२४॥ अति कोमल अरु विमल रुचि, मानस में मल नाहिं॥तुलसी रत मन होइ रहै, अपने साहिबमाहिं॥२५॥जाके मनते उठि गई, तिल तिल तृष्णा चाहि॥मनसा वाचा कर्मना, तुलसी वंदत ताहि ॥ २६ ॥ कंचन काँचहि सम गनै, कामिनि काष्ठ पषान ॥ तुलसी ऐसे संतजन, पृथिवी ब्रह्म समान ॥२७॥ चौपाई ॥ कंचनको मृतिका करि मानत । कामिनि काष्ठ शिला पहिचानत ॥ तुलसी भूलि गयो रस एहा ॥ ते जन प्रगट रामकी देहा ॥ २८ ॥ दोहा ॥ अकिंचन इंद्रिय दमन, रमन राम इक तार ॥ तुलसी ऐसे संत जन, विरले या संसार॥ २९ ॥अहंवाद मैं तैं नहीं, दुष्टसंग नहिं कोइ ॥ दुखते दुख नहिं ऊपजै, सुखते सुख नहिं होइ ॥ ३० ॥ सम कंचन काँचे गिनत, शत्रु मित्र सम दोइ ॥ तुलसी या संसारमें, कहत

संतजन सोइ॥३१॥ विरले विरले पाइए माया, त्यागीसंत ॥ तुलसी कामी कुटिल कलि, केकी काक अनंत॥३२॥मैं तें मेटचो मोह तम उगो आतमाभानु ॥ संतराज सो जानिए, तुलसी यासहिदानु॥३३॥

इति श्रीवैराग्यसंदीपिनी महामोहविध्वंसिनी संत-
स्वभाववर्णन्नाम प्रथमप्रकाशः ॥ १ ॥

(अथसंतमहिमावर्णनं)॥सोरठा॥को वरणै मुख, एक तुलसी महिमा संतकी॥जिन्हके विमल विवेक, शेष महेश न कहि सकत॥१॥ दोहा॥ महिपत्रीकरि सिंधु मसि, तरु लेखनी बनाइ॥तुलसी गणपति सो तदपि,महिमा लिखी न जाइ ॥२॥धन्य धन्य माता पिता, धन्य पुत्र वर सोइ॥तुलसी जो रामहिं भजै जैसे हु कैसेहु होइ॥३॥तुलसी जाके वदनते, धोखेउ निकसत राम॥ताके पगकी पगतरी, मेरे तनुको चाम ॥ ४ ॥ तुलसी भगत श्वपच भलो, भजै रैनि दिन राम ॥ ऊँचो कुल केहि कामको, जहाँ न हरिको नाम ॥५ अति ऊँचे भूधरनिपर, भुजगनके अस्थान॥तुलसी अति नीचे सुखदा ऊख अन्न अरुपान ६॥ चौपाई॥ अति अनन्य जो हरिको दासा। रटै नाम निशि दिन प्रतिश्वासा ॥ तुलसी तेहि समान नहिं कोई। हमनीके देखा सब लोई ॥ ७॥ यदपि साधु सबही विधि हीना। तद्यपि समता केन कुलीना ॥ यह दिन रैनि नाम उच्चरै। वह नित मान अगिनिमें जरै ॥८॥ दोहा॥दासरता एकन्नामसो, उभयलोक सुख त्यागि॥तुलसी न्यारे है रहै, दहै न दुखकी आगि ॥ ९ ॥

इति श्रीवैराग्यसंदीपिनी महामोहविध्वंसिनी संतमहिमा
वर्णनं नाम द्वितीयप्रकाशः ॥ २ ॥

(अथशांतिवर्णनं)॥दोहा॥रैनिको भूषण इंदुहै,दिवसको भूषणभान॥ दासको भूषण भक्तिहै, भक्तिको भूषणज्ञान ॥ १ ॥ ज्ञानको भूषण ध्यानहै, ध्यानको भूषण त्याग ॥ त्यागको भूषण शांतिप्रद, तुलसी अमल अदाग ॥ २ ॥ चौपाई ॥ अमलअदाग शांतिप्रदसारा । सकल कलेशन करत प्रहारा॥ तुलसी उर धारै जो कोई । रहै अनंद सिंधु महँ सोई ॥ ३ ॥ त्रिविध पाप संभव जो तापा । मिटहिं दोष दुख दुसह कलापा। परम शांति सुखरहै समाई।तहँ उतपात न भेदै

आई ॥ ४ ॥ तुलसी ऐसे शीतलसंता सदारहैं यहिभाँति एकंता ॥
कहा करैं खललोगभुजंगा ॥ कीन्ह्यौ गरल शील जो अंगा ॥ ५ ॥
दोहा॥अति शीतल अतिही अमल,सकल कामनाहीन ॥ तुलसी ता-
हि अतीत गनि, वृत्ति शांति लयलीन॥६॥चौपाई॥जो कोइ कोपभ-
रैमुखवैना ॥ सन्मुखहतै गिराशरपैना॥तुलसी तऊलेश रिसनाहीं ॥
सो शीतल कहिए जगमाहीं ॥७॥ दोहा ॥ सातद्वीप नव खंडलों, ती-
निलोक जगमाहिं॥तुलसी शांति समान सुख,अपर दूसरो नाहिं॥८॥
चौपाई ॥ जहाँ शांतिसत गुरुकीदई । तहाँ क्रोधकी जर जरिगई ॥
सकल काम वासना विलानी । तुलसी यही शांति सहिदानी ॥ ९॥
तुलसी सुखद शांति को सागर ॥ संतन गायो करन उजागर ॥ ता-
मैं तन मन रहै समोई । अहं अगिनि नाहिं दाहै कोई॥१॥दोहा॥ अहं-
कारकी अगिनिमें,दहतसकलसंसार ॥ तुलसी बाँचे संतजन, केवल
शांति अधार ॥ ११ ॥ महाशांति जल परसि कै,शांतभएजनजोय॥
अहं अगिनिते नाहिं दहे,कोटि करै जो कोय ॥ १२ ॥ तेज होत त-
नतरणिको, अचरज मानत लोइ ॥ तुलसी जौं पानी भया, बहुरि
न पावकहोइ ॥ १३ ॥ यद्यपिशीतल सम सुखद, जगमें जीवनप्राण ॥
तदपि शांतिजल जनिगनो, पावक तेज प्रमाण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥
जरै वरै अरु खीझि खिझावै ।राग द्वेष महँ जनम गँवावै॥सपनेहु शां-
ति नहीं उन देही ॥ तुलसी जहाँ जहाँ व्रत एही ॥ १५ ॥ दोहा ॥
सोइ पंडित सोइ पारखी, सोई संत सुजान॥सोई शूर सचेत सो, सोई
सुभटप्रमान ॥१६॥ सोइ ज्ञानी सोई गुणी, जन सोइ दाता ध्यानि ॥
तुलसी जाके चित भई, राग द्वेषकी हानि ॥ १७॥ चौपाई ॥ रागद्वेष
की अगिनि बुझानी । काम क्रोध वासना नशानी ॥ तुलसी जबहिं
शांति गृह आई । तब उर ही उर फिरी दोहाई ॥१८॥ दोहा ॥फिरी
दोहाई रामकी, गेकामादिक भाजि ॥ तुलसी ज्यों रविके उदै, तुर-
त जात तम लाजि ॥१९॥ यह विराग संदीपिनी, सुजन सुचित सुनि
लेहु ॥ अनुचित वचन विचारिकै, जस सुधारि तस देहु ॥ २० ॥

इति तुलसीदास विरचित वैराग्य संदीपिनी महामोह विध्वंसिनी
शांति नाम वर्णनं तृतीयप्रकाशःसमाप्तः ॥ वैराग्य संदीपनी समाप्त॥

श्रीगणेशायनः ॥

श्रीजानकी वल्लभो विजयते

अथ श्रीबरवारामायण प्रारम्भः ॥
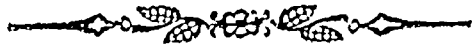
बरवाछंद ॥ केशमुकुत सखि मर्कत मणि मय होत ॥ हाथ लेत पुनि मुक्ता करत उदोत ॥ १ ॥ सम सुवरण सुखमाकर सुखद न थोर ॥ सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर ॥ २ ॥ सियमुख शरद कमल जिमि किमि कहि जाइ ॥ निशिमलीन वह निशि दिन यह विगसाइ ॥ ३ ॥ बड़े नयन कट भ्रुकुटी भाल विशाल ॥ तुलसी मोहत मनहिं मनोहरबाल॥ ४ ॥ चंपक हरवा अँगमिलि अधिक सोहाइ ॥ जानिपरै सिय हियरे जब कुँभिलाइ ॥ ५ ॥ सिय तुव अंग रंग मिलि अधिक उदोत ॥ हार वेलि पहिरावों चंपक होत ॥ ६ ॥ साधु सुशील सुमति शुचि सरल सुभाव ॥ रामनीत रत काम कहा यह पाव ॥ ७॥ कुंकुम तिलक भाल श्रुति कुंडल लोल ॥ काकपक्ष मिलि सखि कस लसत कपोल ॥ ८ ॥ भाल तिलक सर सोहत भौंह कमान ॥ मुखअनुहरिया केवल चंद समान॥९॥तुलसी बँक विलोकनि मृदु मुसुकानि॥ कस प्रभु नैन कमल अस कहौं वखानि॥१०॥ कामरूप सम तुलसी राम स्वरूप॥ को कवि सम सर करै परै भव कूप॥ ११ ॥ चढ़त दशा यह उतरत जात निदान॥ कहौं न कबहूं करकस भौंह कमान ॥ १२ ॥ नित्यनेम कृत अरुण उदय जब कीन ॥ निरखि निशाकर नृप मुख भए मलीन ॥ १३ ॥ कमठ पीठ धनु सजनी कठिन अँदेश ॥ तमकि ताहि ए तोरिहि कहव महेश॥ १४ ॥ नृप निराश भए निरखत नगर उदास ॥ धनुप तोरि हरि सब कर हरेउ हरास ॥ ॥ १५ ॥ काबूँघट मुख मूदहु नवलानारि॥चाँद सरगपर सोहत यहि अनुहारि ॥ १६ ॥ गरब करहु रघुनंदन जनि मन माँह ॥ देखहु आपनि मूरति सियके छाँह ॥ १७ ॥ उठी सखी हँसि मिसकारि कहि

मृदुबैन ॥ सिय रघुवरके भए उनीदे नैन॥१८॥सींक धनुषहित सिखन सकुचि प्रभुलीन॥मुदित माँगि इक धनुही नृप हँसिदीन॥१९॥

इति श्रीवरवै रामायण बालकांड समाप्त ॥

सातदिवसभए साजत सकल बनाउ ॥कापूछहु सुठिराउर सरल स्वभाउ॥२०॥राजभवन सुख विलसत सिय सँग राम॥ विपिन चले तजि राज सुविधि बड़वाम ॥२१॥ कोउ कह नरनारायण हरि हर कोउ॥कोउ कह विहरत वन मधु मनसिज दोउ ॥२२॥ तुलसी भइ मति विथकित करि अनुमान॥राम लषणके रूप न देखेउ आन२३॥ तुलसी जानि पग धरहु गंगमहँजांच ॥ निगानांगकरि नितहिं नचाइहि नाच ॥ २४ ॥ सजल कठौता कर गहि कहत निषाद ॥ चढ़हु नाव पग धोइ करहु जनिवाद ॥२५॥ कमल कंठकित सजनी कोमलपाइ ॥ निशिमलीन यह प्रफुलित नितिदरशाइ ॥ २६ ॥ (वाल्मीकि) वचन ॥ द्वैभुजकर हरिरघुवर सुंदर वेष ॥ एक जीभकर लछिमन दूसर शेष ॥ २७ ॥

इति श्रीवरवैरामायण अयोध्या कांड समाप्त ॥

वेदनाम कहि अँगुरिन खंड अकाश ॥ पठयोशूर्पणखाहि लषणके पास ॥ २८ ॥ हेमलता सिय मूरति मृदुमुसुकाइ ॥ हेम हीरण कह दीन्हेउ प्रभुहि देखाइ ॥ २९ ॥ जटा मुकुट कर शर धनु संग मरीच ॥ चितवनि वसति कनखियनु अँखियनु वीच ॥ ॥ ३० ॥ (रामवाक्य) ॥ कनक सलाक कला शशि दीप सिखाउ॥ तारासिय कहँ लछिमन मोहिं बताउ ॥ ३१ ॥ सीय वरण सम केतकि अति हिय हारि ॥ किहेसि भवर कर हरवा हृदय विदारि ॥ ॥ ३२ ॥ शीतलता शशिकी रहि सब जग छाइ ॥ आगिनि ताप ह्वै हम कहँ सचरत आइ ॥ ३३ ॥

इतिश्री वरवै रामायण आरण्यकांड समाप्त ॥

श्याम गौर दोउ मूरति लछिमन राम ॥ इनते भइ सित कीरति अति अभिराम॥३४॥कुजन पाल गुण वर्जित अकुल अनाथ ॥ कहहु कृपानिधि राउर कस गुण गाथ ॥ ३५ ॥

इति श्रीवरवैरामायण किष्किंधाकांड समाप्त॥

विरह आगि उर ऊपर जब अधिकाइ ॥ एअँखिया दोउ वैरानि देहिं बुझाइ ॥ ३६ ॥ डहकुन है उजियरिया निशिनहिं घाम ॥ जगत जरत असलागु मोहिं विनुराम ॥ ३७ ॥ अब जीवन कैहै कपि आश न कोइ ॥ कनगुरियाके मुदरी कंकण होइ ॥ ३८ ॥ राम सुयश कर चहुँयुग होत प्रचार ॥ असुरन कहँ लखि लागत जग अँधियार ॥ ३९ ॥ कपिवाक्य ॥ सिय वियोग दुख केहिविधि कहउँ बखानि ॥ फूलबानते मनसिज वेधत आनि ॥ ४० ॥ शरद चाँदनी सँचरत चहुँदिशि आनि ॥ विधुहि जोरिकर विनवति कुल गुरुजानि ॥ ४१ ॥

इति श्रीबरवैरामायण सुंदरकांड समाप्त ॥

विविधवाहनी विलसत सहित अनंत ॥ जलधि सरिस को कहै राम भगवंत ॥ ४२ ॥

इति श्रीबरवैरामायण लंकाकांड समाप्त ॥

चित्रकूट पयतीर सो सुरतरुवास ॥ लषण राम सिय सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४३ ॥ पयनहाइ फलखाहु परिहरियआस ॥ सीयराम पद सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४४ ॥ स्वारथ परमारथ हित एक उपाय ॥ सीयराम पद तुलसी प्रेम बढ़ाय ॥ ४५ ॥ काल कराल विलोकहु होइ सचेत॥रामनामजपुतुलसी प्रीतिसमेत ।४६।संकटसोचविमोचन मंगलगेह ॥ तुलसरिामनामपर करिय सनेह ॥ ४७ ॥ कलिनाहिं ज्ञान विराग न योग समाधि ॥ रामनाम जपु तुलशी नित निरुपाधि ॥ ४८ ॥ रामनाम दुइ आखर हियहितु जानु ॥ राम लषण सम तुलसी सिखव न आनु ॥४९॥ माय बाप गुरु स्वामि रामकरनाम ॥ तुलसी जेहि न सोहाइ ताहि विधि वाम ॥ ५० ॥ रामनाम जपु तुलसी होइ विशोक ॥ लोक सकल कल्याण नीक परलोक॥ ॥ ५१ ॥ तप तीरथ मख दान नेम उपवास ॥ सबते अधिक रामजपु तुलसीदास ॥ ५२ ॥ महिमा रामनामकी जान महेश ॥ देत परमपद काशी करि उपदेश ॥ ५३ ॥ जान आदिकवि तुलसी नाम

प्रभाव ॥ उलटा जपत कोलते भए ऋषिराव ॥ ५४ ॥ कलशयोनि जिय जानेउ नाम प्रतापु ॥ कौतुक सागर सोखेउ करि जिय जापु ॥ ५५ ॥ तुलसी सुमिरत राम सुलभ फलचारि ॥ वेद पुराण पुकारत कहत पुरारि ॥ ५६ ॥ रामनामपर तुलसी नेहनिवाहु ॥ एहिते अधिक न एहिसम जीवनलाहु ॥ ५७ ॥ दोषदुरित दुखदारिद दाहक नाम ॥ सकल सुमंगलदायक तुलसीराम ॥ ५८ ॥ केहिगनती महँ गनती जस वन घास॥राम जपत भए तुलसी तुलसीदास ॥ ५९ ॥ आगम निगम पुराण कहत करिलीक॥ तुलसी नाम राम कर सुमिरणनीक ॥ ६० ॥ सुमिरहु नाम राम कर सेवहु साधु ॥ तुलसी उतरि जाहु भव उदधि अगाधु ॥६१॥ कामधेनु हरिनाम कामतरु राम॥तुलसी सुलभ चारि फल सुमिरत नाम॥६२॥ तुलसी कहत सुनत सब समुझतकोय॥वड़ेभाग्य अनुराग राम सन होय ॥ ६३ ॥ एकहि एक सिखावत जपत न आप ॥ तुलसी राम प्रेमकर वाधकपाप ॥ ६४ ॥ मरत कहत सब सब कहँ सुमिरहु राम ॥ तुलसी अब नाहिं जपत समुझि परिणाम ॥ ६५ ॥ तुलसी रामनाम जपु आलस छाँडु ॥राम विमुख कलिकालको भयो न भाँडु ॥ ६६ ॥ तुलसी राम नाम सम मित्र न आन॥जो पहुँचाव रामपुर तनु अवसान॥६७॥ नाम भरोस नाम वल नाम सनेहु ॥ जनम जनम रघुनंदन तुलसिहि देहु ॥६८॥ जनम जनम जहँ जहँ तनु तुलसिहि देहु ॥ तहँ तहँ राम निबाहिव नाम सनेहु ॥ ६९ ॥

इति श्री गोसाँई तुलसीदासजी विरचित बरवै रामायण उत्तर कांड समाप्तः ॥

इति बरवारामायण समाप्त।

श्रीगणेशायनमः।

श्रीजानकीवल्लभोविजयते।

अथ पार्वतीमंगल प्रारम्भः॥

बरवैछन्द॥ विनय गुरुहिं गुणि गणहिं गिरिहि गणनाथहि॥हृदय आनि सियराम धरे धनुभाथहि॥ १॥ गावउँ गौरि गिरीश विवाह सुहावन॥ पाप नशावन पावन मुनि मनभावन॥ २॥ कवितरीति नाहिं जानौं कवि नकहावउँ॥ शंकर चरित सुसरित मनहिं अन्हवावउँ॥ ३॥ पर अपवाद विवाद विदूषितवाणिहि॥ पावनि करौं सोगाइ भवेश भवानिहि॥ ४॥ जय संवत फागुनसुदिपाँचै गुरुदिनु॥ अश्विनिविरचेउँ मंगल सुनि सुख छिनु छिनु॥ ५॥ गुणनिधान हिमवान धरणिधरधुरधनि॥ मैनातासुघरणिवर त्रिभुवन तियमनि॥ ६॥ कहहु सुकृत केहि भाँति सराहिय तिन्हकर॥ लीन्हजाइ जगजननि जनम जिन्हकेघर॥ ७॥ मंगलखानि भवानि प्रगट जबते भइ॥ तबते ऋधि सिधि संपति गिरिगृह नितनइ॥ ८॥ छंद॥ निति नव सकल कल्याण मंगल मोदमय मुनिमानहीं॥ब्रह्मादि सुर नर नाग अति अनुराग भाग बखानहीं॥पितु मातु प्रियपरिवार हरषहिं निरखि पालहिं लालहीं॥ सितपाखवाढ़ति चंद्रिका जनु चंद्र भूपण भालहीं॥ कुँवरि सयानि विलोकि मातु पितु शोचहिं॥ गिरिजा योग जुरिहि वर अनुदिन लोचहिं॥९॥ एकसमय हिमवान भवन नारदगए॥ गिरिवर मैना मुदित मुनिहि पूजतभए॥१०॥ उमहिं बोलि ऋषिपगन मातु मेलतभई॥ मुनिमन कीन्ह प्रणाम वचन आशिषदई॥ ११॥ कुँवरिलागि पितु काँध ठाढ़ि भइ सोहई॥ रूपनजाइ बखानि जान जोइ जोहई॥ १२॥ अतिसनेह सतिभाय पाँय परि पुनि पुनि॥ कह मैना मृदु वचन सुनिय विनती मुनि॥ ॥ १३॥ तुम त्रिभुवन तिहुँकाल विचार विशारद॥ पार्वती अनुरूप कहिय वर नारद॥ १४॥ मुनि कह चौदह भुवन फिरउँ जग

जहँ जहँ ॥ गिरिवर सुनिय सरहना राउरि तहँ तहँ॥१५॥भूरिभाग तुमसरिस कतहुँ कोउ नाहिंन ॥कछु न अगम सब सुगम भयो विधि दाहिन ॥ १६ ॥ छंद॥दाहिनभए विधि सुगम सब सुनि तजहु चित चिंतानई ॥ वर प्रथम विरवा विरंचि विरचो मंगलामंगलमई॥ विधि लोक चरचा चलति राउरि चतुर चतुराननकही ॥ हिमवानकन्या योगवर बाउर विबुध वंदितसही ॥ २ ॥ मेरेहु मन अस आवमिलि हिवरबाउर ॥ लखिनारद नारदी उमहिं सुखभा उर ॥१७॥ सुनि सहसे परिपाइँ कहत भए दंपति ॥ गिरिजाहिलाग हमार जिवन सुखसंपति ॥ १८ ॥ नाथ कहिय सोइ जतन मिटइ जेहि दूषण ॥ दोष दलनु मुनि कहेउ बाल विधुभूषण ॥१९॥ अवशि होइ सिधि साहस फलै सुसाधन ॥ कोटि कलपतरु सरिस शंभु अवराधन ॥२०॥ तुम्हरे आश्रम अवहिं ईश तप साधहिं॥कहिय उमहिं मनुलाइ जाइ अवराधहिं ॥ २१ ॥ कहि उपाउ दंपतिहि मुदित मुनिवरगए ॥ अतिसनेह पितु मातु उमहिं सिखवतभए ॥ २२ ॥ सजिसमाजु गिरिराज दीन्ह सब गिरिजहि ॥ वदति जननि जगदीश युवति जिनिसिरजहि ॥ २३ ॥ जननि जनक उपदेश महेशहि सेवहि ॥ अति आदर अनुराग भगति मन भेवहि॥२४॥ छंद ॥ भेवहि भगति मन वचन करम अनन्य गति हर चरनकी॥गौरव सनेह सकोच सेवा जाइ केहिविधि वरनकी ॥ गुणरूप योवनसींव सुंदरि निरखि छोभ न हर हिए ॥ ते धीर अछत विकार हेतु जे रहत मनसिज वशकिए ॥३॥ देव देखि भल समउ मनोज बुलायउ ॥ कहेउ करिय सुरकाजु साजु सजि धायउ॥२५॥ वामदेव सनकामुवामहोइ वरतेउ ॥ जगजय मद निदरेसि हरपायेसि फरतेउ ॥२६॥ रति पतिहीन मलीन विलोकि विसूरति ॥ नीलकंठ मृदुशील कृपामय मूरति ॥ २७॥ आशुतोष परितोषकीन्ह वर दीन्हेउ॥शिव उदास तजि वास अनत गमकीन्हेउ ॥२८॥उमा नेहवश विकल देह सुधि बुधि गई॥कलपवेलि वन बढ़त विषम हिम जनुहई॥२९॥ समाचार सब सखिन जाइ घर घर कहे॥ सुनत मातु पितु परिजन दारुण दुखदहे॥३०॥जाइ देखि अति प्रेम

उमहिं उरलावहिं ॥ बिलपहिं वाम विधातहि दोष लगावहि ॥३१॥ जौं न होहि मंगल मग सुर विधि वाधक ॥ तौ अभिमत फल पावहिं करि श्रम साधक ॥ ३२ ॥ छंद॥ साधक कलेश सुनाइ सब गौरिहि निहोरत धामको ॥ को सुनइ काहि सोहाइ घर चित चहत चंद्रललामको ॥ समुझाइ सबहि दृढ़ाइ मन पितु मातु आयसुपाइ कै ॥ लागी करन पुनि अगम तप तुलसी कहै किमि गाइकै ॥ ४ ॥ फिरेउ मातु पितु परिजन लखि गिरिजापन ॥ जेहि अनुराग लाग चित सोइ हितु आपन ॥ ३३ ॥ तजेउभोग जिमिरोग लोग अहिगण जनु ॥ मुनि मनसहुते अगम तपहि लायो मनु ॥३४॥ सकुचहिं वसन विभूषण परसत जो वपु ॥ तेहि शरीर हर हेतु अरंभेउ बड़तपु ॥ ३५ ॥ पूजहि सबहि समय तिहुँ करहि निमज्जन ॥ देखि प्रेम व्रतनेमु सराहहिं सज्जन ॥३६॥ नींद न भूख पियास सरिस निशि वासर ॥ नयन नीर मुख नाम पुलक तनु हियहर॥ ३७ ॥ कंद मूल फल अशन कबहुँ जल पवनहिं ॥सूखे बेलके पात खात दिन गवनहिं ॥ ३८ ॥ नाम अपरणा भयो पर्ण जब परिहरे ॥ नवल धवल कलकीरति सकल भुवन भरे ॥ ३९ ॥ देखि सराहहिं गिरिजहि मुनिवर मुनि बहु॥अस तप सुना नदीख कबहुँ काहू कहुँ॥४०॥ छंद ॥ काहू न देख्यो कहहिं यह तप योग फल फल चारिका॥नहिं जानि जाइ न कहति चाहति काहि कुधर कुमारिका ॥ बटु वेष पेपन प्रेम पण व्रतनेम शशिशेखर गए ॥ मनसहि समरपेउ आपु गिरिजहि वचन मृदु बोलत भए ॥ ५ ॥ देखि दशा करुणाकर हर दुख पायउ ॥ मोर कठोर सुभाय हृदय अस आयउ ॥ ॥४१॥ वंश प्रशंसि मातु पितु कहि सब लायक॥अमिय वचन बटु बोलेउ सुनि सुखदायक ॥ ४२ ॥ देवि करों कछु विनय सो बिलगु न मानव ॥ कहौं सनेह सुभाय सांच जिय जानव ॥४३॥ जनमि जगत यश प्रगटेहु मातु पिताकर ॥ तीय रतन तुम उपजिहु भव रतनागर ॥४४॥ अगम न कछु जग तुम कहँ मोहिं अस सूझइ ॥ बिनु कामना कलेश कलेश न बूझइ॥४५जो वर लागि करहु तप

तौ लरिकाइय॥ पारस जो घर मिलै तौ मेरु कि जाइय॥४६॥मोरेहि जान कलेश करिय विनु काजहि ॥ सुधाकि रोगिहि चाहहि रतन कि राजहि ॥ ४७ ॥ लखि न परेउ तप कारण वटुहिय हारेउ ॥ सुनि प्रिय वचन सखी मुख गौरि निहारेउ॥४८॥छंद॥गौरी निहारेउ सखी मुख रुख पाइ तेंहि कारण कहा ॥ तपकरहि हरहितु सुनि विहँसि वटु कहत मुरुखाई महा ॥ जेहि दीन्ह अस उपदेश बरेहु कलेश करि बरु बावरो॥ हित लागि कहौं सुभाय सो बड़ विषम वैरी रावरो ॥ ६ ॥ कहहु काह सुनि रीझिहु वर अकुलीनहिं ॥ अगुण अमान अजाति मातु पितु हीनहिं ॥ ४९ ॥ भीख माँगि भव खाहिं चिता निति सोवहिं ॥ नाचहिं नगन पिशाच पिशाचिनि जोवहिं ॥५०॥ भाँग धतूर अहार छार लपटावहिं ॥ योगी जटिल सरोष भोग नहिं भावहिं ॥ ५१ ॥ सुमुखि सुलोचनि हरमुख पंच तिलोचन ॥ वाम देव फुर नाम काम मदमोचन ॥ ५२ ॥ एकउ हरहिनवर गुण कोटिक दूषण ॥ नर कपाल गजखाल व्याल विष भूषण ॥ ५३ ॥ कहँ राउर गुण शील स्वरूप सुहावन॥कहा अमंगल वेष विशेषु भयावन ॥ ५४ ॥ जो सोचहि शशिकलहि सो सोचहि रोरोहि ॥ कहा मोर मन धरी वरी वर बौरेहि ॥ ५५ ॥ हिए हेरि हठ तजहु हठै दुख पैहहु ॥ व्याह समय सिख मोरि समुझि पछितैहहु५६ ॥ छंद॥ पछिताव भूत पिशाच प्रेत जनेत ऐहैं साजकै ॥यमधारिसरिसनिहारि सब नर नारि चलिहहिं भाजिकै ॥ गज अजिन दिव्य दुकूल जोरत सखी हँसि मुख मोरिकै॥ कोउ प्रगट कोउ हिएकहिहि मिलवत अमिय माहुर घोरिकै ॥ ७ ॥ तुमहिं सहित असवार वसह जब होइहिं ॥ निरखि नगर नर नारि विहँसि मुख गोइहिं ॥ ५७ ॥ वटुक रिकोटि कुतर्क यथा रुचिवालइ ॥ अचलसुता मन अचल बयारि कि डोलइ ॥५८॥ साँचसनेह साँचि रुचि जो हठि फेरइ॥ सावन सरित सिंधुरुख सूपसो घेरइ ॥५९॥ मणि विनु फणि जलहीन मीन तनु त्यागइ॥सो कि दोष गुण गणइ जो जेहि अनुरागइ॥६०॥करणकटुकवटु वचन विशिप सम हियहए ॥ अरुण नयन चढ़िभ्रु-

कुटि अधर फरकत भए॥६१॥बोली फिरि लखि सखिहि काँप तनु थरथर॥ आलि विदाकरु वटुहि वेगि बड़ बरबर॥६२॥कहुँ तियहो हि सयानि सुनहिं सिख राउरि॥ बौरेहिके अनुराग भइउँ बड़िबाउ-रि॥६३॥दोषनिधान इशान सत्यसबभाषेउ॥मेटिको सकइ सो आंक जो विधि लिखि राखेउ॥६४॥ कोकरिवाद विवाद विषाद बढ़ावइ॥ मीठ काह कवि कहहिं जाहि जोइ भावइ॥६५॥ भइ बड़िवार आ-लिकहु काज सिधारहि॥ वाकि जनि उठहि बहोरि कु युगुतिसँ-वारहि॥६६॥ छंद॥ जनि कहहि कछु विपरीत जानत प्रीति रीति न बातकी॥ शिवसाधु निंदक मंद अति जोउ सुनै सोउ बड़पात-की॥ सुनि वचन सोधि सनेह तुलसी साँच अविचल पावनो॥ भएप्रगट करुणासिंधु शंकर भालचंद्र सुहावनो॥८॥ सुंदरगौर शरीर भूति भलि सोहइ॥ लोचन भाल विशाल वदन मनमोहइ॥ ॥६७॥ शैलकुमारि निहारि मनोहरमूरति॥ सजल नयनाहिय हरष पुलकतनु पूरति॥६८॥ पुनि पुनि करै प्रणाम न आवत क-छु कहि॥ देखौं स्वपनकी सौतुक शशिशेखरसहि॥६९॥जैसे जन्म दरिद्र महामणिपावइ॥ पेखत प्रगट प्रभाउ प्रतीति न आवइ॥७०॥ सफल मनोरथ भयउ गौरि सोहइ सुठि॥वरतेँ खेलन मनहुँ अबहिं आई उठि॥७१॥ देखि रूप अनुराग महेश भएवश॥ कहत वचन जनुसानि सनेह सुधारस॥ ७२ ॥ हमहिं आजुलगि कनउड़ काहु न कीन्हेउ॥ पार्वतीतप प्रेम मोल मोहिं लीन्हेउ॥७३॥ अब जो कहहु सो करउँ विलंब न यहि घरी॥ सुनि महेश मृदुवचन पुलकि पाँयनपरी॥७४॥ छंद॥ परिपाँय सखि सुख कहि जनायो आ-पवाप अधीनता॥ परितोषि गिरिजहि चले वर्णत प्रीति नीति प्रवीणता॥ हरहृदय धरि वर गौरि गवनी कीन्ह विधिमन भाव-नो॥ आनंद प्रेम समाज मंगलगान वाजु वधावनो॥९॥ शिव सुमि रेमुनि सात आइ शिरनाइन्हि॥ कीन्ह शंभु सनमान जन्मफल पाइन्हि॥७५॥सुमिरहिं सकृत तुम्हहिं जन तेइ सुकृतीवर॥ नाथ जिन्हहिं सुधि करिअ तिन्हहिसम तेइहर॥ ७६ ॥सुनि मुनिवि

नय महेश परमसुख पायउ ॥ कथा प्रसंग मुनीशन्ह सकल सुनायउ॥७७॥जाहु हिमाचल गेह प्रसंग चलायहु॥ जौं मनमान तुम्हार तौ लगनलिखायहु ॥ ७८ ॥ अरुंधतीमिलि मैनहिं बात चलाइहि ॥ नारि कुशल इहि काज काज बनिआइहि ॥ ७९ ॥ दुलहिनि उमा ईश वरु साधक ए मुनि ॥ वनिहि अवशियहु काज गगनभइ असधुनि ॥ ८० ॥ भयउ अकनि आनंद महेश मुनीशन्ह ॥ देहिं सुलोचनि सगुण कलशलिए शीशन्ह ॥ ८१ ॥ शिवसोंकहे दिन ठाउँ बहोरि मिलनुजहँ॥चले मुदित मुनिराज गए गिरिवर पहँ॥ ॥ ८२ ॥ छंद ॥ गिरि गेह गे अति नेह आदर पूजि पहुनाई करी ॥ घर बात घरनि समेत कन्या आनि सब आगे धरी॥सुखपाइ बात चलाइ सुदिनु सोधाइ गिरिहि सिखाइकै ॥ ऋषि सात प्रातहि चले प्रमुदित ललित लगन लिखाइकै ॥ १० ॥ विप्र वृंद सन्मानि पूजि कुल गुरु सुर ॥ परेउ निसानहि घाउ चाउ चहुँ दिशि पुर ॥ ८३॥ गिरि वन सरित सिंधु सर सुनइ जो पायउ॥सब कहँ गिरिवर नायक नेवत पठायउ ॥८४॥ धरि धरि सुंदर वेष चले हरषित हिए ॥ चउर चीर उपहार हारमणिगण लिए ॥ ८५ ॥ कहेउ हरषि हिमवान वितान बनावन ॥ हरषित लगियँ सुवासिनि मंगल गावन ॥ ८६ ॥ तोरण कलशचँवर ध्वज विविध बनाइन्हि ॥ हाट पटोरन्हि छाय सफल तरु लाइन्हि ॥ ८७ ॥ गौरी नैहर केहिविधि कहहु बखानिय ॥ जनु ऋतुराज मनोज राज रजधानिय ॥८८॥ छंद ॥ जनु राजधानी मदनकी विरची चतुर विधि औरही ॥ रचना विचित्र विलोकि लोचन विथक ठौरहि ठौरही ॥ यहि भाँति व्याह समाज सजि गिरिराज मगु जोवन लगे ॥ तुलसी लगनलै दीन्ह मुनिन्ह महेश आनँद रँग मगे ॥ ११ ॥ वेगि बुलाइ विरंचि बँचाइ लगनतब ॥ कहेन्हि वियाहन चलहु बुलाइ अमर सब ॥ ८९ ॥ विधिपठए जहँ तहँ सब शिवगण धावन ॥ सुनि हर्षहिं सुर कहहिं निसान बजावन ॥ ९० ॥ रचहिं विमान बनाइ सगुण पावहिं भले ॥ निज निज साज समाज साजि सुरगण चले॥९१॥मुदित सकल शिवदूत भूतगण गाजहिं॥

शूकर महिष श्वान खरवाहन साजहिं॥९२॥ नाचहिं नाना रंग तरंग बढ़ावहिं ॥ अज उलूक वृकनाद गीतगण गावहिं ॥ ९३ ॥ रमानाथ सुरनाथ साथ सब सुरगण ॥ आए जहँ विधि शंभु देखि हरषेमन ॥९४॥ मिले हरिहि हर हरषि सुभाखि सुरेशहिं ॥ सुरनिहारि सन्मानेउ मोद महेशहिं ॥ ९५॥ बहु विधि वाहन यान विमान विराजहिं॥ चलीबरात निसान गहागह बाजहिं ॥९६॥ छंद ॥ बाजहिं निसान सुगान नभ चढ़ि वसह विधु भूषण चले ॥ वरषहिं सुमन जय जय करहिं सुर सगुण शुभ मंगल भले ॥ तुलसी वराती भूत प्रेत पिशाच पशुपति सँग लसे ॥ गज छाल व्याल कपाल माल विलोकि वर सुर हरि हँसे॥१२॥ विबुध बोलि हरि कहेउ निकट पुर आयउ ॥ आपन आपन साज सबहिं विलगायउ॥ ९७ ॥ प्रथम नाथके साथ प्रमथ गणराजहिं ॥ विविध भाँति मुख वाहन वेष विराजहिं॥९८॥ कमठखपरमढ़ि खाल निशान बजावहिं ॥ नर कपाल जलभरि भरि पियहिं पियावहिं॥ ९९ ॥ वर अनुहरत वरात वनी हरि हँसिकहा ॥ मुनि हिय हँसत महेश केलि कौतुक महा ॥१००॥वडविनोद मग मोद न कछु कहि आवत॥जाइ नगरनियरानि वरात बजावत ॥१०१॥ पुर खरभर उर हरषेउ अचल अखंडल ॥ परव उदधि उमगेउ जनु लखि विधु मंडल॥१०२॥ प्रमुदित गे अगवान विलोकि वरातहि ॥ भभरे वनइ न रहत न बनइ परातहि ॥१०३॥ चले भाजि गज वाजि फिरहिं नहिं फेरत ॥ बालक भभरि भुलान फिरहिं घर हेरत॥१०४॥दीन्ह जाइ जनवास सुपास किए सब ॥ घर घर बालक वात कहन लागे तब॥१०५॥प्रेत वेताल वराती भूत भयानक ॥ वरद चढ़ा वरबाउर सबइ सुबानक ॥१०६॥कुशल करइ करतार कहहि हम साँचिय॥देखब कोटि विवाह जियत जो बाँचिय॥१०७॥समाचार सुनि शोच भयउ मन मैनहिं ॥ नारदके उपदेश कवन घरगे नाहिं॥१०८॥ ॥छंद॥ घरवाल चालक कलहप्रिय कहियत परम परमारथी ॥ तैसी बरेखी कीन्हि पुनि मुनिसात स्वारथ सारथी ॥ उरलाइ उमहिं अनेक विधि

जलपति जननि दुखमानई ॥ हिमवान कहेउ इशानमहिमा अगम निगम न जानई ॥१३॥ सुनि मैना भइ सुमन सखी देखन चली॥ जहँ तहँ चरचा चलइ हाट चौहट गली॥१०९॥श्रीपति सुरपति विबुधबात सब सुनि सुने ॥ हँसहिं कमल कर जोरि मोरिमुख पुनि पुनि ॥११०॥लखि लौकिक गति शंभुजानि बड़ सोहर॥भएसुंदर शतकोटि मनोज मनोहर॥१११॥नील निचोल छाल भइ फणि मणि भूषण॥ रोमरोमपर उदित रूपमय पूषण ॥११२ ॥गणभए मंगलवष सदन मनमोहन ॥ सुनत चले हियहरषि नारि नर जोहन-॥११३॥शंभु शरद राकेश नखतगण सुरगण॥जनु चकोर चहुँ ओर विराजहिं पुरजन॥११४॥गिरिवर पठए बोलि लगनवेरा भई ॥ मंगल अरघ पाँवड़े देत चले लई॥११५॥होहिं सुमंगल शकुन सुमनवरषहिं सुर ॥ गहगहे गान निशान मोद मंगलपुर ॥११६॥पहिलिहि पँवारि सुसामध भा सुखदायक॥ इत विधि उत हिमवान सरिसस-वलायक ॥११७॥मणि चामीकर चारु थार सजि आरति ॥ रतिसिहाहिं लखि रूप गान सुनि भारति॥११८॥भरी भाग अनुराग पुलकतनु मुदमन ॥ मदनमत्त गजगवनि चली वरपरिछन ॥११९॥ वरविलोकि विधु गौर सु अंग उजागर ॥ करति आरती सासु मगन सुखसागर॥१२०॥छंद ॥ सुखसिंधुमगन उतारि आरति करि निछावरि निरखिके ॥ मधु अरघ वसन प्रसून भरि ले चलीं मंडपहरषिके ॥ हिमवान दीन्हे उचित आसन सकल सुर सनमानिके ॥ तेहि समय साज समाज सब राखे सुमंडप आनिके ॥ १४॥ अरघदेइ मणिआसन वर वैठायउ ॥ पूजिकीन्ह मधुपर्क अमी अँचवायउ ॥ १२१॥ सत ऋषिन्ह विधि कहेउ विलंब न लाइय॥लगन वेर भई वेगि विधान वनाइय ॥१२२॥ थापि अनल हरवरहि वसनपहिरायउ ॥ आनहु दुलहिनि वेगि समय अव आयउ॥१२३॥सखीसुवासिनि संग गौरि सुठि सोहति ॥ प्रगटरूप मय मूरति जन जगमोहति ॥१२४॥भूषण वसन समय सम शोभा सो भली ॥सुखमा वेलि नवल जनुरूप फलनि फली॥ १२५ ॥ कहहु काहि पटतरिय गौरि

गुणरूपहि॥सिंधुकहिय केहिभाँति सरिससरकूपहि ॥ १२६ ॥ आवत उमाहिं विलोकि शीश सुरनावहिं ॥ भये कृतारथ जनमजानिसुख पावहिं॥१२७॥विप्र वेद ध्वनि करहिं शुभाशिष कहि कहि॥ गान निसान सुमन झरि अवसर लहि लहि ॥ १२८॥ वरदुलहिनिहि विलोकि सकल मनरहसहिं॥साखोच्चार समय सब सुर मुनि विहँसहिं॥१२९॥ लोक वेदविधि कीन्ह लीन्ह जलकुशकर ॥ कन्यादान संकलपकीन्ह धरणीधर ॥ १३० ॥ पूजे कुलगुरुदेव कलशशिल शुभघरी॥लावा होम विधान बहुरि भाँवरि परी ॥१३१॥वंदन वंदि ग्रंथि विधि करि ध्रुवदेखेउ ॥ भाविवाह सबकहहिं जनम फलपेखेउ॥ १३२ ॥ छंद ॥ पेखेउ जनम फल भा विवाह उछाहउमगहिं दशदिशा ॥ निसान गान प्रसून झरि तुलसी सुहावनिसो निशा ॥ दाइज वसन मणि धेनु धनु हयगय सु सेवक सेवकी ॥ दीन्ही मुदित गिरिराजजे गिरिजाहिपियारी पेवकी ॥ १५ ॥ बहुरि बराती मुदित चले जनवासहि ॥ दूलह दुलहिनिगे तब हाँस अवासहि ॥१३३॥रोकिद्वार मैना तब कौतुक कीन्हेउ ॥ करि लहकौरि गौरि हर बड़ सुखदीन्हेउ ॥ १३४ ॥ जुआ खेलावत गारिदेहिं गिरिनारिहि ॥ अपनी ओर निहारि प्रमोद पुरारिहि ॥ १३५ ॥ सखी सुवासिनि सासु पाउ सुखसबविधि ॥ जनवासहि वर चलेउ सकल मंगलनिधि ॥ १३६॥ भइ जेवनार बहोरि बुलाइ सकलसुर ॥ बैठाए गिरिराज धरम धरणीधुर ॥ १३७ ॥ परसनलगे सुवार विबुध जनजेवहिं ॥ देहिं गारि वर नारि मोद मनभेवहिं ॥ १३८ ॥ करहिं सुमंगल गान सुघर सहनाइन्ह ॥ जेंइचले हरि दुहिन सहितसुर भाइन्ह ॥ १३९ ॥ भूधर ओर विदाकर साजसजायउ ॥ चले देव सजियान निसान बजायउ ॥ १४० ॥ सनमाने सुरसकल दीन्ह पहिरावनि ॥ कीन्हि बड़ाई विनय सनेह सुहावनि ॥ १४१ ॥ गहि शिवपद कह सासु विनय मृदु मानवि ॥ गौरि सजीवनिमूरि मोरि जियजानवि ॥ १४२ ॥ भेंटि विदाकरि बहुरि भेंटि पहुँचावहिं ॥ हुँकरि हुँकरि सुलवाइ धेनु जनु धावहिं ॥ १४३ ॥ उमा मातु मुख

निरखि नयनजलमोचहिं ॥ नारि जनम जगजाय सखी कहि सोच-हिं ॥ १४४ ॥ भेंटि उमहिं गिरिराज सहित सुत परिजन ॥ बहुत भाँ-ति समुझाइ फिरे बिलखित मन ॥ १४५ ॥ शंकर गौरि समेत गए कैलाशहि ॥ नाइ नाइ शिर देव चले निज वासहि ॥ १४६ ॥ उमा महेश विवाह उछाह भुवन भरे ॥ सबके सकल मनोरथ विधि पूर-णकरे ॥ १४७ ॥ प्रेमपाट पटडोरि गौरि हरगुण मणि ॥ मंगल हार रचेउ कवि मति मृगलोचनि ॥ १४८ ॥ छंद ॥ मृगनयनि विधुवदनी रचेउ मणि मंजु मंगलहारसो ॥ उर धरहु युवती जन विलोकि ति-लोक शोभा सारसो ॥ कल्याण काज उछाह व्याह सनेह सहित जो गाइहैं ॥ तुलसी उमा शंकर प्रसाद प्रमोद मन प्रिय पाइहैं ॥ १६ ॥

इति श्रीगोसाईं तुलसीदासजी विरचित शिव पार्वती मंगल संपूर्ण ॥ शुभंभवतु सर्वदा ॥

श्रीगणेशायनमः।

श्रीजानकी वल्लभो विजयते॥

अथ जानकीमंगल प्रारम्भः।

मंगलछंद॥

गुरु गणपति गिरिजापति गौरि गिरापति॥ शारद शेष सुकवि श्रुति संत सरल मति॥ १॥ हाथ जोरि करि विनय सवहि शिरनावौं॥ सिय रघुवीर विवाह यथामति गावौं॥ २॥ शुभ दिन रच्यौ स्वयंवर मंगलदायक॥ सुनत श्रवण हिय वसहिं सीय रघुनायक॥३॥देश सुहावन पावन वेद वखानिय॥ भूमि तिलक सम तिरहुत त्रिभुवन जानिय॥४॥तहँ बस नगर जनकपुर परम उजागर॥ सिय लखि जहँ प्रगटी सब सुखसागर॥५॥ जनक नाम तेहि नगर बसै नरनायक॥ सब गुण अवधि न दूसर पटतर लायक॥ ६॥ भयउ न होइहि हैन जनक सम नरवइ॥ सीयसुता भै जासु सकल मंगलमइ॥७॥नृप लखि कुँवरि सयानि बोलि गुरु परिजन॥करि मत रच्यौ स्वयंवर शिव धनु धरिपन॥८॥छंद॥ पण धरउ शिवधनु रचि स्वयंवर अति रुचिर रचना बनी॥ जनु प्रगटि चतुरानन देखाई चतुरता सब आपनी॥ पुनि देश देश सँदेश पठयउ भूप सुनि सुख पावहीं॥सब साजि साजि समाज राजा जनक नगरहि आवहीं॥ १॥ रूप शीलवय वंश विरद बल दल भले॥ मनहुँ पुरंदर निकर उतरि अवनी चले॥ ९॥ दानव देव निशाचर किन्नर अहिगन॥ सुनि धरि धरि नृप वेष चले प्रमुदित मन॥ १०॥ एक चलहिं यक बीच एक पुर पैठहिं॥ एक धरहिं धनु धाय नाइशिर बैठहिं॥ ११॥ रंगभूमि पुर कौतुक एक निहारहिं॥ ललकि लोभाहि नयन मन फेरि न पारहिं॥ १२॥ जनकहि एक सिहाहिं देखि सनमानत॥बाहेर भीतर भीर न वैन वखा-

नत ॥ १३ ॥ गान निसान कोलाहल कौतुक जहँ तहँ ॥ सीय वि-
वाह उछाह जाइ कहि कापहँ ॥ १४ ॥ गाधि सुवन तेहि अवसर
अवध सिधायउ ॥ नृपति कीन्ह सनमान भवन लै आयउ ॥ १५ ॥
पूजि पहुनई कीन्ह पाइ प्रिय पाहुन ॥ कहेउ भूप मोहिं सरिस सुकृत
किए काहुन ॥१६॥ छंद ॥ काहू न कीन्हेउ सुकृत सुनि मुनि मुदि-
त नृपहि बखानहीं ॥ महिपाल मुनिको मिलन सुख महिपाल मुनिमन
जानहीं ॥ अनुराग भाग सोहाग शील स्वरूप बहु भूषण
भरी ॥ हिय हरषि सुतन्ह समेत रानी आइ ऋषि पायन्ह परी ॥
॥ २ ॥ कौशिक दीन अशीष सकल प्रमुदित भई ॥ सींची मनहुँ
सुधारस कलपलता नई ॥ १७ ॥ रामहिं भाइन्ह सहित जबहिं
मुनि जोहेउ ॥ नैन नीर तनु पुलकरूप मन मोहेउ ॥ १८ ॥ परसि
कमल कर शीश हरषि हियलावहिं ॥ प्रेम पयोधि मगन मुनि पार न
पावहिं ॥ १९ ॥ मधुर मनोहर मूरति सादर चाहहिं ॥ बार बार
दशरथके सुकृत सराहहिं ॥ २० ॥ राउ कहेउ कर जोरि सुवचन
सुहावन ॥ भयउँ कृतारथ आजु देखि पद पावन ॥ २१ ॥ तुम्ह प्र-
भु पूरण काम चारि फल दायक ॥ तेहिते बूझत काज डरौं मुनि
नायक ॥ २२ ॥ कौशिक सुनि नृप वचन सराहेउ राजहि ॥ धर्म
कथा कहि कहेउ गयउ जेहि काजहि ॥ २३ ॥ जबहिं मुनीश
महीशहि काज सुनायउ ॥ भयउ सनेह सत्यवश उतर न आयउ-
॥२४॥ छंद ॥ आयउ न उतर वसिष्ठ लखि बहुभाँति नृप समुझा-
यऊ ॥ कहि गाधिसुत तप तेज कछु रघुपति प्रभाउ जनायऊ ॥ धी
रजधरेउ गुरु वचन सुनि कर जोरि कह कोशलधनी ॥ करुणानि-
धान सुजान प्रभु सों उचित नहिं विनती घनी ॥ ३ ॥ नाथ मोहिं
बालकन्ह सहित पुर परिजन ॥ राखनिहार तुम्हार अनुग्रह घर
वन ॥ २५ ॥ दीन वचन बहुभाँति भूप मुनिसन कहे ॥ सौंपि
राम अरु लषण पाँय पंकज गहे ॥२६॥ पाइ मातु पितु आयगुरू-
पाँयन परे ॥ कटि निषंग पट पीत करनि शर धनु धरे ॥ २७ ॥ पुर
वासी नृपरानिन संग दिए मन ॥ वेगि फिरेउ करि काज कुशल रघुनंद

न ॥ २८ ॥ ईशमनाइ अशीशहिं जय यश पावहु॥ न्हात खसै ज-
निवार गहरु जनि लावहु ॥ २९ ॥ चलत सकल पुरलोग वियोग
विकलभए ॥ सानुज भरत सप्रेम राम पाँयननए ॥ ३० ॥ होहिं
शकुन शुभ मंगल जनु कहि दीन्हेउ ॥ राम लषण मुनिसाथग-
मन तब कीन्हेउ ॥ ३१ ॥ श्यामल गौरकिशोर मनोहरता निधि॥
सुखमा सकल सकेलि मनहुँ विरचे विधि ॥ ३२ ॥ छंद ॥ विरचे
विरंचि बनाइ वाची रुचिरता रंचौ नहीं ॥ दशचारि भुवन नि-
हारि देखि विचारि नहिं उपमा कहीं ॥ ऋषि संग सोहत जातम-
गछवि वसति सो तुलसी हिए ॥ कियो गमन जनु दिननाथ
उत्तर संग मधु माधवलिए ॥ ४ ॥ गिरितरु वेलि सरित सर विपुल
विलोकहिं ॥ धावहिं बाल सुभाव विहँग मृग रोकहिं ॥ ३३ ॥ सकु-
चहिं मुनिहि सभीत बहुरि फिरि आवहिं ॥ तोरि फूल फल कि-
शलय माल बनावहिं ॥ ३४ ॥ देखि विनोद प्रमोद प्रेम कौशिक
उर ॥ करत जाहिं घनछाँह सुमन बरषहिंसुर ॥ ३५ ॥ बधीताड़का
रामजानि सब लायक ॥ विद्यामंत्र रहस्य दिए मुनिनायक
॥ ३६ ॥ मग लोगन्हके करत सफल मन लोचन ॥ गएकौशिक
आश्रमहिं विप्र भय मोचन ॥३७ ॥ मारि निशाचर निकर यज्ञक-
रवायउ ॥ अभयकिए मुनिवृंद जगत यश गाएउ ॥ ३८॥ विप्रसा-
धु सुर काज महा मुनि मन धरि ॥ रामहिं चले लिवाइ धनुषमख
मिसुकरि ॥ ३९ ॥ गौतमनारि उधारि पठै पतिधामहि ॥ जनक
नगर लै गएउ महामुनि रामहिं॥ ४० ॥ छंद ॥ लैगएउ रामहिं गा-
धिसुवन विलोकि पुर हरषे हिए॥सुनि राउ आगे लेन आयउ सचिव
गुरु भूसुरलिए ॥ नृपगहे पाँय अशीशपाई मान आदर अतिकि-
ए ॥ अवलोकि रामहिं अनुभवत मनु ब्रह्मसुख सौगुणदिए ॥ ५ ॥
देखि मनोहर मूरति मन अनुरागेउ ॥ बँध्यो सनेह विदेह विराग
विरागेउ ॥ ४१॥ प्रमुदित हृदय सराहत भल भवसागर ॥ जहँ उप-
जहिं अस माणिक विधिवड़नागर ॥ ४२॥ पुण्य पयोधि मातु पि-
तु ए शिशु सुरतरु ॥ रूप सुधासुख देत नयन अमरनि वरु॥४३॥

केहि सुकृतीके कुँवर कहिय मुनिनायक ॥ गौरश्याम छवि धाम धरे धनुशायक ॥ ४४ ॥ विषय विमुख मन मोर सेइ परमारथ ॥ इन्हहिं देखि भयो मगन जानि बड़ स्वारथ ॥ ४५ ॥कहेउ सप्रेम पुलकि मुनि सुनि महिपालक ॥ ए परमारथ रूप ब्रह्ममयबालक ॥ ४६ ॥ पूषण वंश विभूषण दशरथनंदन ॥ नाम राम अरु लषण सुरारि निकंदन ॥ ४७ ॥ रूप शील वय वंश रामपरिपूरन ॥ समुझि कठिन प्रण आपन लाग विसूरन ॥ ४८ ॥ छंद ॥ लागे विसूरन समुझि प्रण मन वहुरि धीरज आनिकै ॥ लैचले देखावन रंगभूमि अनेक विधि सनमानिकै ॥ कौशिक सराही रुचिर रचना जनक सुनि हरषित भए ॥ तब राम लषण समेत मुनि कहँ सुभग सिंहासनदए ॥ ६ ॥ राजत राजसमाज युगल रघुकुल मनि ॥ मनहुँ शरद विधु उभय नखत धरणी धनि ॥ ४९ ॥ काक पक्ष शिर सुभग सरोरुह लोचन ॥ गौर श्याम शत कोटि काम मद मोचन ॥ ५० ॥ तिलक ललित शर भ्रुकुटी काम कमानै॥श्रवण विभूषण रुचिर देखि मन मानै॥५१॥ नाशा चिबुक कपोल अधर रद सुंदर ॥ बदन शरदविधु निंदक सहज मनोहर ॥ ५२ ॥ उर बिशाल वृष कंध सुभग भुज अति बल ॥ पीत वसन उपवीत कंठ मुकुताफल ॥ ५३ ॥ कटि निषंग कर कमलन्हि धरे धनुशायक ॥ सकल अंग मनमोहन जोहन लायक ॥ ५४ ॥ राम लषण छवि देखि मगन भए पुरजन ॥ उर आनँद जल लोचन प्रेम पुलक तन ॥ ५५ ॥ नारि परस्पर कहहिं देखि दुहुँ भाइन्ह ॥ लहेउ जनम फल आजु जनमि जग आइन्ह ॥ ५६ ॥ छंद ॥ जग जनमि लोचन लाहु पाए सकल शिवहि मनावहीं ॥ वर मिलौ सीतहि साँवरो हम हरषि मंगल गावहीं ॥ एक कहहिं कुँवर किशोर कुलिश कठोर शिव धनुहै महा ॥ किमिलेहिं वाल मराल मंदर नृपहि अस काहु न कहा॥ ७ ॥ भे निराश सब भूप विलोकत रामहिं॥ पण परिहरि सिय देव जनक वर श्यामहिं ॥ ५७ ॥ कहहिंएक भलिवात व्याहु भल होइहि ॥ वरदुलहिनि लगि जनक अपन प्रण

खोइहि ॥ ५८ ॥ शुचि सुजान नृप कहहिं हमहिं अस सूझइ ॥ तेज प्रताप रूप जहँ तहँ बलबूझइ ॥ ५९ ॥ चितइ न सकहु रामतन गाल बजावहु ॥ विधि वश बलउ लजान सुमति न लजावहु ॥ ॥६०॥ अवशि रामके उठत शरासन टूटिहि ॥ गवनिहिराज समाज नाक असि फूटिहि ॥ ६१ ॥ कसन पियहु भरिलोचन रूप सुधारसु॥करहु कृतारथ जन्म होहु कत नरपशु ॥ ६२ ॥ दुहुँ दिशिराज कुमार विराजत मुनिवर ॥ नील पीत पाथोज वीच जनु दिनकर ॥६३॥ काकपक्ष ऋषि परसत पाणि सरोजनि॥लाल कमल जनु लालत बाल मनोजनि ॥ ६४ ॥ छंद ॥ मनसिज मनोहर मधुर मूरति कस न सादर जोवहू ॥ विनुकाज राज समाज महँ तजिलाज आपु विगोवहू ॥ शिख देइ भूपनि साधु भूप अनूप छवि देखनलगे ॥ रघुवंश कैरवचंद चितइ चकोर जिमि लोचन ठगे ॥ ८ ॥ पुर नरनारि निहारहिं रघुकुल दीपहि ॥ दोष नेहवशदेहिं विदेह महीपहि ॥ ६५ ॥ एक कहहिं भल भूप देहु जनि दूषण ॥ नृप न सोह विनु वचन नाकविनु भूषण ॥ ६६ ॥ हमरे जान जनेश बहुतभलकीन्हेउ ॥ प्रणमिस लोचनलाहु सबन्हि कहँ दीन्हेउ ॥६७॥ अस सुकृती नरनाह जो मन अभिलापिहि ॥ सो पुरइहि जगदीश पैज प्रण राखिहि ॥ ६८ ॥ प्रथम सुनत जो राउ राम गुण रूपहि ॥ बोलि व्याहि सियदेत दोष नहिं भूपहि ॥ ६९ ॥ अबकरि पैज पंच महँ जो प्रण त्यागै॥विधि गति जानि न जाइ अयश जग जागै७०॥ अजहुँ अवशि रघुनंदन चाप चढ़ाउब ॥ व्याह उछाह सुमंगल त्रिभुवनगाउब॥७१॥लागि झरोखन्ह झांकहिं भूपति भामिनि ॥ कहत वचन रद लसहिं दमक जनु दामिनि॥७२॥ ॥ छंद ॥ जनुदमकदामिनिरूप रति मृदु निदरि सुंदरि सोहहीं ॥ मुनि ढिग देखाए सखिन्ह कुँवर विलोकि छवि मन मोहहीं ॥ सियमातु हरपी निरखि सुखमा अति अलौकिक रामकी ॥ हिय कहति कहँ धनु कुँवर कहँ विपरीत गति विधि वामकी ॥ ९ ॥ कहि प्रिय वचन सखिन्हसन रानि विसूरति ॥ कहाँ कठिन शिव धनुप कहाँ मृदुमू-

रति ॥ ७३ ॥ जो विधि लोचन अतिथि करत नहिं रामहिं ॥ तौ कोउ नृपहि न देत दोष परिणामहिं ॥ ७४ ॥ अब असमंजस भयउ न कछु कहि आवै ॥ रानिहि जानि ससोच सखी समुझावै ॥ ॥ ७५ ॥ देवि सोच परिहरिय हरषहिय आनिय ॥ चाप चढ़ा उब राम वचन फुरमानिय ॥ ७६॥ तीनि काल कर ज्ञान कौशिकहि करतल ॥ सो कि स्वयंवर आनहिं बालक विनुबल॥७७॥ मुनि महिमा सुनि रानिहि धीरज आयउ ॥ तब सुबाहु सूदन यश सखिन सुनायउ ॥ ७८ ॥ सुनि जिय भयउ भरोस रानि हिय हरखइ ॥ बहुरि निरखि रघुवरहि प्रेम मन करखइ ॥ ७९ ॥ नृप रानी पुर लोग रामतन चितवहिं ॥ मंजु मनोरथ कलश भरहिं अरु रितवहिं॥८०॥ छंद ॥ रितवहिं भरहिं धनु निरखि छिन छिन निरखि रामहिशोचहीं ॥नर नारि हरष विषाद वश हिय सकल शिवहि सकोचहीं ॥ तब जनक आयसुपाइ कुलगुरु जानकिहि लै आयऊ ॥ सिय रूप राशि निहारि लोचन लाहु लोगन्हि पायऊ ॥ १० ॥ मंगल भूषण वसन मंजु तन सोहहिं ॥ देखि मूढ महिपाल मोहवश मोहहिं ॥ ८१ ॥ रूप राशि जेहि ओर सुभाय निहारइ ॥ नील कमल सर श्रेनि मयन जनु डारइ ॥८२ ॥ छिन सीतहि छिन रामहिं पुरजन देखहिं ॥ रूप शील वय वयश विशेष विशेषहिं ॥८३॥राम दीख जब सीय सीय रघुनायक॥ दोउतन तकि तकि मयन सुधारत शायक ॥ ८४ ॥ प्रेम प्रमोदपरस्पर प्रगटत गोपहिं ॥ जनु हिरदय गुण ग्राम थूनि थिररोपहिं ॥ ॥ ८५ ॥ राम सीय वय समौ सुभाय सुहावन ॥ नृप योवन छवि पुरइ चहत जनु आवन ॥ ८६ ॥ सोछवि जाइ न वरणि देखि मनमानै ॥ सुधा पानकरि मूक कि स्वाद बखानै ॥८७॥ तब विदेहप्रण वंदिन्ह प्रगटि सुनायउ ॥ उठे भूप आमरपि शकुन नहिं पायउ॥८८॥ छंद॥ नहिं शकुनपायेउ रहे मिसुकरि एक धनु देखनगए ॥ टकटोरि कपि ज्यौं नारियर शिरनाइ सब बैठतभए ॥ एक करहिं दाप न चाप सज्जन वचन जिमिटारे टरै ॥ नृप नहुप ज्यों स-

बके विलोकत बुद्धि बल बरबश हरै ॥ ११ ॥ देखिसपुर परिवार जनकहिय हारेउ ॥ नृप समाज जनु तुहिन वनज बन मारेउ ॥ ॥ ८९ ॥ कौशिक जनकहि कहेउ देहु अनुशासन ॥ देखि भानुकुल भानुइ सानु शरासन ॥ ९० ॥ मुनिवर तुम्हरे वचन मेरु महि-डोलहि ॥ तदपि उचित आचरत पाँच भल बोलहि ॥ ९१ ॥ बानु बानु जिमि गयउ गवहिं दशकंधर ॥ को अवनीतल इन्हसम वीरधुरंधर ॥ ९२ ॥ पार्वती मनसरिस अचल धनु चालक ॥ अह-हिं पुरारि तेउ एक नारि व्रत पालक ॥ ९३ ॥ सोधनु कहि अवि-लोकन भूप किशोरहि ॥ भेदकि सिरिस सुमन कण कुलिश कठो-रहि ॥ ९४ ॥ रोम रोम छवि निंदति सोम मनोजनि ॥ देखिय मूर-ति मलिन करिय मुनि सोजनि ॥ ९५ ॥ मुनि हँसि कहेउ जनक यह मूरति सोहइ ॥ सुमिरत सकृत मोह मल सकल बिछोहइ ॥ ९६ ॥ छंद॥ सब मल बिछोहनि जानि मूरति जनक कौतुक दे-खहू ॥ धनु सिंधु नृप बल जल बढ़्यो रघुवरहि कुंभजलेखहू ॥ सुनि सकुचि सोचहिं जनक गुरु पद बंदि रघुनंदन चले ॥ नाहिं हरष हृदय विषाद कछु भए शकुन शुभ मंगलभले ॥ १२ ॥ वरसनलगे सुमन सुर दुंदुभि बाजहिं ॥ मुदित जनक पुरप-रिजन नृप गण लाजहिं ॥ ९७ ॥ महि महिधरनि लषण कह बल-हि बढ़ावन ॥ राम चहत शिव चापहि चपरि चढ़ावन ॥ ९८ ॥ गए सुभाय राम जब चाप समीपहि ॥ सोच सहित परिवार विदेह महीपहि ॥ ९९ ॥ कहि न सकति कछु सकुचति सिय हि-यसोचइ ॥ गौरि गणेश गिरीशहि सुमिरि सकोचइ ॥ १०० ॥ हो-ति विरहसर मगन देखि रघुनाथहि ॥ फरकि वाम भुज नयन देहिं जनु हाथहि ॥ १०१॥ धीरज धरति शकुन बल रहति सो नाहिन ॥ वरकिशोर धनु घोर दइउ नहिं दाहिन ॥ १०२ ॥ अंतर्यामीरा-म मरम सब जानेउ ॥ धनु चढ़ाइ कौतुकहिं कानलगि तानेउ ॥ १०३ ॥ प्रेम परखि रघुवीर शरासन भंजेउ ॥ जनु मृगराज कि-शोर महागज गंजेउ॥ १०४ ॥ छंद ॥ गंजेउ सो गर्जेउ घोर धुनि सु-

नि भूमि भूधर लरखरे ॥ रघुवीर यश मुकुता विपुल सब भुवन प-टु पेटकभरे ॥ हित मुदित अनहित रुदित मुख छवि कहत कवि धनु जागकी ॥ जनु भोर चक्र चकोर कैरव सघन कमल तड़ाग की ॥ १३ ॥ नभपुर मंगल गान निसान गहागहे ॥ देखि मनोरथ सुरतरु ललित लहालहे ॥ १०५ ॥ तब उपरोहित कहेउ सखी सब गावत ॥ चली लेवाइ जानकिहि भा मनभावत ॥ १०६ ॥ कर क-मलनि जयमाल जानकी सोहइ ॥ वरणि सकै छवि अतुलित अस कवि कोहइ ॥ १०७ ॥ सीय सनेह सकुचवश पियतन हेरइ ॥ सुरतरु रुख सुरवेलि पवन जनु फेरइ ॥१०८॥ लसत ललित क-र कमल माल पहिरावत ॥ काम फंद जनु चंदहि वनजफँदा-वत ॥ १०९ ॥ रामसीय छवि निरुपम निरुपम सोदिन ॥ सुख स-माज लखि रानिन्ह आनँद छिनछिन ॥११०॥ प्रभुहि माल पहिराइ जानकिहि लैचली ॥ सखी मनहुँ विधु उदय मुदित कैरव कली ॥ १११ ॥ वरषहिं विबुध प्रसून हरषि कहि जयजए ॥ सुख सनेह भरे भुवन रामगुरुपहिं गए॥११२॥छंद॥गए रामगुरुपहिं राउ रानी नारि नर आनँदभरे ॥ जनु तृषित करि करिनी निकर शीतल सुधासागर परे ॥ कौशिकहि पूजि प्रशंसि आयसुपाइ नृप सुखपायऊ ॥ लि-खि लगन तिलक समाज सजि कुलगुरुहि अवध पठायऊ॥ १४ ॥ गुणि गण बोलि कहेउ नृप मांडव छावन॥गावहिं गीत सुआसिनि बा जबधावन ॥ ११३ ॥ सीय राम हित पूजहिं गौरि गणेशहि ॥ परि-जन पुरजन सहित प्रमोद नरेशहि ॥ ११४ ॥ प्रथम हरदि वेदन करि मंगल गावहिं ॥ करि कुल रीति कलश थपि तेलु चढ़ावहिं ॥ ॥ ११५ ॥ गे मुनि अवध विलोकि सुसरित नहायउ ॥ सतानंद शत कोटि नामफल पायउ ॥ ११६ ॥ नृप सुनि आगे आइ पूजि सनमानेउ ॥ दीन्हि लगन कहि कुशल राउ हरषानेउ॥११७॥मु-निपुर भयउ अनंद बधाव बजावहिं ॥ सजहि सुमंगल कलश विता-न वनावहिं ॥ ११८ ॥ राउ छाँड़ि सब काजसाज सब साजहिं चलेउ वरात वनाइ पूजि गणराजहिं ॥ ११९ ॥ बाजहिं ढोलनिसा

न शकुन शुभ पायन्हि ॥ सियनैहर जन कौर नगर नियरायन्हि ॥ १२० ॥ छंद ॥ नियरानि नगर बरात हरषी लेन अगवानीगए॥ देखत परस्पर मिलत मानत प्रेम परिपूरणभए ॥ आनंदपुर कौतुक कोलाहल बनत सो वरणतकहाँ ॥ लै दियो तहँ जनवास सकल सुपास नितनूतन जहाँ ॥ १५ ॥ गे जनवासेहि कौशिक रामलषण लिए॥हरषे निरखि बरात प्रेम प्रमुदित हिए ॥ १२१ ॥ हृदय लाइ लिए गोदमोद अति भूपहि ॥ कहि न सकाहिं शतशेष अनंद अनूपहि ॥ १२२॥ राय कौशिकहि पूजि दान विप्रन्हदिए ॥ राम सुमंगल हेतु सकल मंगल किए ॥ १२३ ॥ ब्याह विभूषण भूषित भूषण भूषण ॥ विश्व विलोचन वनज विकासक पूषण ॥ १२४ ॥ मध्य बरात विराजत अति अनुकूलेउ ॥ मनहुँकाम आराम कल्पतरु फूलेउ ॥ १२५ ॥ पठई भेंट विदेह बहुत बहु भाँतिन्ह ॥ देखत देव सिहाहिं अनंद बरातिन्ह ॥ १२६ ॥ वेदविहित कुल रीति कीन्हि दुहुँकुलगुर॥ पठई बोलि बरात जनक प्रमुदित उर॥१२७॥ जाइ कहेउ पगुधारिय मुनि अवधेशहि ॥ चले सुमिरि गुरु गौरि गिरीश गणेशहि॥१२८ ॥छंद॥ चले सुमिरि गुरु सुर सुमनवर्षहिंपरे बहुविधि पाँवड़े ॥ सनमानि सबविधि जनक दशरथ किए प्रेमकनावड़े ॥ गुण सकल सम समधी परस्पर मिलत अति आनँदलहे॥ जय धन्य जय जय धन्य धन्य विलोकि सुरनर मुनि कहे ॥ १६ ॥ तीनि लोक अवलोकहिं नहिं उपमा कोउ ॥ दशरथ जनक समान जनक दशरथ दोउ ॥ १२९ ॥ सजहिं सुमंगल साज रहस रनिवासहिं ॥ गान करहिं पिकबैनि सहित परिहासहि ॥ १३० ॥ उमा रमादिक सुरतिय सुनि प्रमुदित भईं ॥ कपट नारि वर वेप विरंचि मंडप गईं ॥ १३१ ॥ मंगल आरति साजि वरहि परिछनचलीं ॥ जनुविकसीं रवि उदय कनक पंकज कलीं ॥१३२॥नख शिख सुंदर राम रूप जब देखहिं॥ सब इंद्रिन्ह महँ इन्द्र विलोचन लेखहिं ॥ ॥ १३३ ॥ परम प्रीति कुल रीति करहिं गजगामिनि ॥ नहिं अघाहिं अनुराग भाग भरि भामिनि ॥ १३४ ॥ नेगचारु

कहँ नागरि गहरु लगावहिं ॥ निरखि निरखि आनंद सुलोचनि पावहिं ॥ १३५ ॥ करि आरती निछावरि वरहि निहारहिं ॥ प्रेम मगन प्रमदागण तनु न सम्हारहिं ॥ १३६ ॥ छंद ॥ नहिंतनु सम्हारहिं छविनिहारहिं निमिष रिपु जनु रणजए ॥ चक्कवै लोचन रामरूप सुराजसुख भोगी भए ॥ तब जनक सहित समाज राजहि उचित रुचिराशन दए ॥ कौशिक वशिष्ठहि पूजि पूजे राउदै अंबर नए ॥१७॥ देत अरघ रघुवरहि मंडप लै चलीं ॥ करहिं सुमंगल गान उमगि आनँद अलीं ॥ १३७ ॥ वर विराज मंडप महँ विश्व विमोहइ ॥ ऋतुवसंत वन मध्य मदन जनु सोहइ ॥ १३८ ॥ कुल विवहार वेद विधि चाहिय जहँ जस ॥ उपरोहित दोउ कराहिं मुदित मन तहँ तस ॥१३९॥वरहि पूजि नृप दीन्ह सुभगसिंहासन ॥ चलीं दुलहिनिहि ल्याइ पाइ अनुशासन ॥ ॥ १४० ॥ युवति युत्थमहँ सीय सुभाइ विराजइ ॥ उपमा कहत लजाइ भारती भाजइ ॥ १४१ ॥ दूलह दुलहिनिन्ह देखि नारि नरहरषहिं ॥ छिन छिन गान निसान सुमन सुर वरषहिं ॥ ॥ १४२ ॥ लैलै नाम सुआसिनि मंगल गावहिं ॥ कुँवर कुँवरि हित गणपति गौरि पुजावहिं ॥ १४३ ॥ अगिनि थापि मिथिलेशकुशोदक लीन्हेउ ॥ कन्यादान विधान संकलप कीन्हेउ ॥ १४४ ॥ ॥ छंद ॥ संकलिप सिय रामहिं समर्पी शील सुख शोभामई ॥ जिमिशंकरहि गिरिराज गिरिजा हरिहि श्रीसागर दई ॥ सिंदूरवंदन होमलावा होन लागी भाँवरी ॥ शिलपोहनी करि मोहनी मन हर्‍यौ मूरति साँवरी॥१८॥यहि विधि भयो विवाह उछाह तिहूँ पुर ॥ देहिं अशीश मुनीश सुमन वरषहिं सुर॥१४५॥ मन भावत विधि कीन्ह मुदित भामिनि भई ॥ वरदुलहिनिहि लेवाइ सखी कोहवरगई ॥ १४६ ॥ निरखि निछावरि कराहिं वस[न]
मणि छिन छिन ॥ जाइ न वरणि विनोद मोदमय सोदिन॥१४७॥
सिय भ्राताके समय भौमतहँ आयउ ॥ दुरीदुराकरि नेग सुना[इ]
जनायउ ॥ १४८ ॥ चतुर नारि वर कुवँरिहि रीति सिखावहिं ॥ दे

हिं गारि लहकौरि समौ सुख पावहिं ॥ १४९॥ जुआ खेलावत कौतुक कीन्ह सयानिन्ह ॥ जीति हारि मिसदेहिं गारि दुहुँ रानिन्ह ॥ १५० ॥ सीय मातु मन मुदित उतारति आरति॥कोकहि, सकइ अनंद मगन भइ भारति ॥ १५१ युवति यूथ रनिवास रहस बस यहि विधि॥देखि देखि सिय राम सकल मंगलनिधि ॥१५२ ॥छंद॥ मंगल निधान विलोकि लोचन लाह लूटति नागरी ॥ दईजनक तिहुँ कुँवरन्हि कुँवरि विवाहि सुनि आनँभरी ॥ कल्याण मो कल्याण पाइ वितान छवि मन मोहई॥ सुर धेनु शशि सुरमणि सहित मानहुँ कलपतरु सोहई ॥ १९ ॥ जनक अनुजतनयाद्वै परम मनोरम ॥ जेठि भरत कहँ व्याहि रूपरति शयसम॥ १५३ ॥ सिय लघुभगिनि लषण कहँ रूप उजागरि ॥ लषण अनुज श्रुति कीरति सब गुण आगरि॥१५४॥राम विवाह समान व्याह तीनिउ भए ॥ जीवन फल लोचन फल विधि सवकहँ दए ॥ १५५॥ दाइज भयउ विविध विधि जाइ न सो गनि ॥ दासी दास वाजि गज हेम वसन मनि ॥१५६॥ दान मान परमान प्रेम पूरण किए ॥ समधी सहित वरात विनय वश करि लिए ॥ १५७ ॥ गेजनवासेहि राउ संग सुत सुत बहू ॥ जनु पाएफल चारि सहित साधनचहूँ ॥१५८॥ चहुँ प्रकार जेंवनार भई बहु भाँतिन्ह ॥ भोजन करत अवधपति सहित वरातिन्ह॥१५९॥देहिं गारि वर नारि नाम लै दुहुँ दिशि ॥ जेंवत वढ़ेउ अनंद सोहावनि सो निशि॥१६०॥ छंद ॥ सो निशि सोहावनि मधुर गावनि वाजने वाजहिं भले ॥ नृपकियो भोजन पान पाइ प्रमोद जनवासहि चले ॥ नट भाट मागध सूत याचक यश प्रतापहि वरनहीं ॥ सानंद भूसुर वृंद मणि गज देत मन करषै नहीं ॥ २० ॥ करि करि विनय कछुक दिनराखि वरातिन्ह ॥ जनक कीन्ह पहुनाई अगनित भाँतिन्ह ॥ १६१ ॥ प्रातवरात चलिहि सुनि भूपति भामिनि ॥ परि न विरहवश नींद वीतिगइ यामिनि॥ १६२ ॥ खरभर नगर नारि नर विधिहि मनावहिं ॥ वार वार ससुरारि राम जेहि आवहिं ॥ १६३ ॥ सकल चल

नके साज जनक साजत भए ॥ भाइन्ह सहित राम तब भूप भवनगए ॥ १६४ ॥ सासु उतारि आरती करहिं निछावरि ॥निर-खि निरखि हिय हरषहिं मूरति साँवरि ॥ १६५ ॥ माँगेउ विदा राम तब सुनि करुणाभरी ॥ परिहरि सकुच सप्रेम पुलकि पायन्ह परी ॥ १६६ ॥ सीय सहित सब सुता सौंपि करजोरहिं ॥ वारवार रघुनाथहि निरखि निहोरहिं ॥१६७॥ तात तजिय जानि छोह मया राखविमन ॥ अनुचर जानवराउ सहित पुर परिजन॥१६८॥छंद ॥ जन जानि करब सनेह बलि कहि दीन वचन सुनावहीं ॥ अति प्रेम वारहिं वार रानी बालकिन्ह उर लावहीं ॥ सिय चलत पुरज-न नारि हयगय विहँग मृग व्याकुल भए ॥ सुनि विनय सासु प्रबो-धि तब रघुवंश मणि पितुपहँ गए ॥ २१ ॥ परेउ निसानहिं घाउ राउ अवधहि चले॥सुरगण बरषहिं शकुन सगुन पावहिं भले॥१६९॥ जनक जानकिहि भेंटि सिखाइ सिखावन ॥ सहित सचिव गुरु बंधु चले पहुँचावन ॥१७०॥ प्रेम पुलकि कहि राय फिरिय अब राजन॥ करत परस्पर विनय सकल गुणभाजन ॥१७१॥ कहेउ जनक कर जोरि कीन्ह मोहिं आपन ॥ रघुकुल तिलक सदा तुम्ह उथपन थापन ॥१७२॥विलग न मानव मोर जो बोलि पठायउँ ॥प्रभु प्रसाद यश जाति सकल सुख पाएउँ॥१७३॥पुनि वशिष्ठ आदिक मुनि वं-दि महीपति॥गहि कौशिकके पायँ कीन्हि विनती अति ॥ १७४ ॥ भाइन्ह सहित बहोरि विनय रघुवीरहि ॥ गदगद कंठ नयन जल उर धरि धीरहि ॥ १७५ ॥ कृपासिंधु सुखसिंधु सुजान शिरोम-नि॥तात समय सुधिकर विछोह छांड़ब जनि॥ १७६ ॥ छंद ॥ ज-नि छोह छांड़ब विनय सुनि रघुवीर बहु विनती करी ॥ मिलि भें-टि सहित सनेह फिरेउ विदेह मन धीरजधरी ॥ सो समौ कहत न बनत कछु सब भुवन भरि करुणारहे ॥ तब कीन्ह कोशलप-तिपयान निसान बाजे गहगहे ॥ २२ ॥ पंथ मिले भृगुनाथ हाथ फ-रसा लिये ॥ डाटहिं आँखि देखाइ कोप दारुण किए ॥१७७॥ राम कीन्ह परितोष रोषरिस परिहरि ॥ चले सौंपि शारंग सुफल लो-चन करि ॥१७८॥ रघुवर भुज बल देखि उछाह बरातिन्ह ॥ मुदित

राउ लखि सन्मुख विधि सब भाँतिन्ह ॥ १७९ ॥ एहि विधि ब्याहि सकल सुत जग यश छायउ ॥ मगलोगनि सुख देत अवधपति आयउ ॥१८०॥ होहिं सुमंगल शकुन सुमन सुरवरषहिं ॥ नगरकोलाहल भयउ नारि नर हरषहिं ॥ १८१ ॥ घाट बाट पुर द्वार बजार बनावहिं ॥ वीथीसींचि सुगंध सुमंगल गावहिं ॥ १८२ ॥ चौकैंपूरैं चारु कलश ध्वज साजहिं ॥ विविधि प्रकार गहागह बाजने बाजहिं ॥१८३॥ वंदनवार वितान पताका घर घर ॥ रोंपे सफल सपल्लव मंगल तरुवर ॥ १८४ ॥ छंद ॥ मंगल विटप मंजुल विपुल दधि दूब अक्षत रोचना ॥ भरि थार आरति सजहिं सब शारंग शावक लोचना ॥ मन मुदित कौशल्या सुमित्रा सकल भूपति भामिनी ॥ सजि साज परिछन चलीं रामहिं मंत्र कुंजरगामिनी ॥ ॥२३॥ बधुन्ह सहित सुत चारिउ मातु निहारहिं ॥ वारहिं वार आरती मुदित उतारहिं ॥१८५॥ करहिं निछावरि छिनु छिनु मंगल मुद भरीं॥ दुलह दुलहिनिन्ह देखि प्रेम पयनिधि परीं॥१८६॥ देत पाँवड़े अरघ चलीं लै सादर॥ उमगि चलेउ आनंद भुवन भुइ बादर॥ १८७ ॥नारि उहार उघारि दुलहिनिन्ह देखहिं॥ नैन लाहु लहि जनम सफल करि लेखहिं ॥ १८८ ॥ भवन आनि सनमानि सकलमंगल किए॥ वसन कनकमणि धेनुदान विप्रन्हदिए॥१८९॥ याचक कीन्ह निहाल अशीशहिं जहँ तहँ ॥ पूजे देव पितर सब राम उदय कहँ ॥१९०॥ नेगचार करि दीन्ह सबहि पहिरावनि ॥ समधी सकल सुआसिनि गुरु तिय पावनि ॥१९१॥ जोरी चारि निहारि अशीशत निकसहिं ॥ मनहुँ कुमुद विधु उदय मुदित मन विकसहिं ॥ १९२ ॥ छंद ॥ विकसहिं कुमुद जिमि देखि विधु भए अवध सुख शोभामई ॥ एहि जुगुति राम विवाह गावहिं सकल कवि कीरति नई ॥ उपवीत ब्याह उछाह जे सिय राम मंगल गावहीं ॥ तुलसी सकल कल्याण ते नर नारि अनुदिनु पावहीं ॥ २४ ॥

इति श्रीगोसाँई तुलसीदासजी विरचितं श्रीजानकी

स्वयंवरमंगल संपूर्ण ॥

श्रीः ।

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

गीतावली ।

जिसमें

गान रसिक हरिभक्तोंके आनन्दार्थ सातौ काण्ड रामायण अनेक प्रकारके राग रागिनियोंमें वर्णितहै ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखानामें छापकर

प्रकट किया ।

ज्येष्ठ संवत् १९५१

श्रीरामपंचायतन ॥

श्रीगणेशायनमः ।

श्रीजानकी वल्लभो विजयते ॥

अथ गीतावली प्रारंभः ॥

श्लोक ॥ नीलाम्बुज श्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वामभागं ॥ पाणौ महाशायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ १॥ (राग आसावरी)॥ आजु सुदिन शुभघरी सुहाई॥ रूपशील गुणधाम रामनृप भवन प्रगट भए आई ॥ १ ॥ अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह बार योग समुदाई॥ हर्षवंत चर अचर भूमि सुर तनरुह पुलकि जनाई ॥ २ ॥ वरषहिं विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई ॥ कौशल्यादि मातुमनहरषित यह सुख वरणि न जाई ॥ ३ ॥ सुनि दशरथसुत जन्म लिये सब गुरु जन विप्र बोलाई ॥ वेद विहित करि कृपा परम शुचि आनँद उर न समाई॥४॥ सदन वेद धुनि करत मधुरमुनि बहु विधि बाजबधाई ॥ पुरवासिन्ह प्रियनाथ हेतु निज निज संपदा लुटाई ॥ ५ ॥ मणि तोरण बहु केतु पताकनि पुरी रुचिर करिछाई॥मागध सूत द्वार वंदीजन जहँ तहँ करत बड़ाई ॥ ६ ॥ सहज शृँगार.किए वनिताचलीं मंगल विपुल बनाई॥ गावहिं देहिं अशीश मुदित चिरजिवो तनय सुखदाई ॥ ७ ॥ वीथिन्ह कुंकुम कीच अरगजा अगर अबीर उड़ाई॥ नाचहिं पुर नर नारि प्रेमभर देहदशा विसराई ॥ ८ ॥ असित धेनु गज तुरँग वसन मणि जातरूप अधिकाई ॥ देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल सिद्धि गृह आई॥९॥ सुखी भए सुर संत भूमि सुर खल गण मन मलिनाई ॥ सबइ सुमन विकसत रवि निकसत कुमुद विपिन बिलखाई ॥ १० ॥ जो सुखसिंधु सुकृत सीकरते शिव विरंचि प्रभुताई ॥ सोइ सुख अवध उमँगि रह्यो दश दिशि कौन जतन कहौं गाई ॥ ११ ॥ जे रघुवीर चरण चिंतक तिन्हकी ग-

ति प्रगट देखाई ॥ अविरल अमल अनूप भगति दृढ़ तुलसि दास तव पाई ॥ १२ ॥ १ ॥ (राग जयतश्री) ॥ सहेली सुनु सोहिलोरे ॥ सोहिलो सोहिलो सोहिलो सोहिलो सब जग आज ॥ पूत सपूत कौशिला जायो अचल भयो कुलराज ॥ १ ॥ चैत चारु नौमी शिताम्मध्य गगन गत भानु ॥ नखत योग ग्रह लगन भले दिन मंगल मोद निधानु ॥ २ ॥ व्योम पवन पावक जल थल दिशि दशहु सुमंगल मूल ॥ सुर दुंदुभी बजावहिं गावहिं हरषहिं वरषहिं फूल ॥ ३ ॥ भूपति सदन सोहिलो सुनि बाजैं गह गहे निसान॥जहँ तहँ सजहिं कलश ध्वज चामर तोरणकेतुवितान॥४॥सींचि सुगंध रचैं चौकैं गृह आँगन गली बजार ॥ दल फल फूल दूब दधि रोचन घर घर मंगलचार॥५॥ सुनिसानंद उठे दशस्यंदन सकल समाज समेत ॥ लिये बोलि गुरु सचिव भूमिसुर प्रमुदितचलेहैं निकेत॥६॥जातकर्म करि पूजि पितर सुर दिये महिदेवनि दान॥तेहि औसर सुत तीनि प्रगट भए मंगल मुद कल्यान७ आनँद महँ आनंद अवध आनंद बधावन होइ ॥ उपमा कहें चारि फलकी मोकों भलो न कहै कवि कोइ ॥ ८ ॥ सजि आरती विचित्र थारकर यूथ यूथ वरनारि ॥ गावत चलीं बधावनो लैलै निज निज कुल अनुहारि ॥ ९ ॥ असही दुसही मरहु मनहिं मन वैरि न बढ़हु विषाद ॥ नृपसुत चारि चारु चिरंजीवहु शंकर गौरिप्रसाद ॥ १० ॥ लैलै ढोल प्रजा प्रमुदित चले भाँति भाँति भरभार ॥ करहिं गान करि आन रायकी नाचहिं राजदुआर ॥ ११॥ गजरथ बाजि बाहिनी बाहन सबनि सँवारे साज ॥ जनु रतिपति ऋतुपति कोशल पुर विहरत सहित समाज ॥ १२ ॥ घंटा घंटि पखावज आवज झांझ वेणु डफतार॥ नूपुर धुनि मंजीर मनोहर कर कंकण झनकार ॥ १३ ॥ नृत्य करहिं नट नटी नारि नर अपने अपने रंग॥ मनहुँ मदनरति विविध वेषधरि नटत सुदेश सुधंग ॥ १४ ॥ उघटहिं छंद प्रबंध गीत पद राग तान बंधान॥सुनि किन्नर गंधर्व सराहत विथकेहैं विवुध विमान ॥ १५ ॥ कुंकुम अगर अरगजा छिरकहिं

भरहिं गुलाल अबीर ॥ नभ प्रसून झरि पुरी कोलाहल भइ मन भावति भीर ॥ १६॥ बड़ीवयस विधि भयो दाहिनो गुरुसुर आशिरवाद ॥ दशरथ सुकृत सुधासागर सब उमगेहैं तजि मरयाद ॥१७॥ ब्राह्मण वेदवंदि विरदावलि जय धुनि मंगल गान ॥ निकसत पैठत लोग परसपर बोलत लगिलगि कान ॥ १८ ॥ वारहिं मुकुता रतन राजमहिषी पुर सुमुखि समान ॥ बगरे नगर निछावरि मणिगण जनु जुवारि जव धान ॥ १९ ॥ कीन्हि वेद विधि लोकरीति नृप मंदिर परम हुलास ॥ कौशल्या कैकयी सुमित्रा रहस विवश रनिवास ॥ २० ॥ रानिन दिए वसनमणि भूषण राजा सहन भंडार ॥मागध सूत भाट नट याचक जहँ तहँ करहिं कवार ॥२१॥ विप्र वधू सनमानि सुआसिनि जन पुरजन पहिराइ,॥ सनमाने अवनीश अशीशत ईश रमेश मनाइ ॥ २२ ॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि भूति सब भूपति भवन कमाहिं॥समउ समाज राजदशरथको लोकप सकल सिहाहिं ॥ ॥ २३ ॥ कोकहिसकै अवध वासिनको प्रेम प्रमोद उछाह ॥ शारद शेष गनेश गिरीशहि अगम निगम अवगाह ॥ २४ ॥ शिवविरंचि मुनि सिद्ध प्रशंसत बड़े भूपके भाग ॥ तुलसी दास प्रभु सोहिलो गावत उमगि उमगि अनुराग ॥ २५ ॥ २ ॥ (राग बिलावल) ॥

आजु महामंगल कोशलपुर सुनि नृपके सुत चारि भए ॥ सदन सदन सोहिलो सोहावनो नभ अरु नगर निशान हये ॥ १ ॥ सजि सजि यान अमर किन्नर मुनि जानि समय समगानठये ॥ नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि बरषहिं सुमन चये ॥ २ ॥ अति सुख वेगि बोलि गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गए ॥ जातकर्म करि कनक वसन मणि भूषित सुरभि समूह दये ॥३॥ दल फल फूल दूब दधि रोचन युवतिन्ह भरि भरि थार लये ॥ गावत चलीं भीर भइ वीथिन्ह वंदिन्ह बाँकुरे विरद बये ॥ ४ ॥ कनक कलश चामर पताक ध्वज जहँ तहँ वंदनवार नये ॥ भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं सकल लोक एक रंगरये ॥ ५ ॥ उमगि चल्यो आनंद लोक तिहुँ देत सबनि मंदिर रितये॥ तुलसिदास पुनि भरेइ देखियत रामकृपा

चितवनि चितये ॥ ६ ॥ ३ ॥ (राग जयतश्री ॥) गावैं विबुध विमल
वरवानी॥भुवन कोटि कल्याण कंदु जायो पूत कौशिलारानी ॥१॥
मास पाख तिथिवार नखत ग्रह योग लगन शुभ ठानी ॥ जल थल
गगन प्रसन्न साधु मन दशदिशि हिय हुलसानी ॥ २ ॥ वरषत
सुमन वधाव नगर नभ हरष न जात वखानी ॥ ज्यों हुलास रनि-
वास नरेशहि त्यौं जन पद रजधानी ॥ ३ ॥ अमर नाग मुनि मनु-
ज सपरिजन विगत विषाद गलानी॥ मिलेहि माझ रावण रजनीच-
र लंकशंक अकुलानी॥४॥देव पितर गुरु विप्र पूजि नृप दिए दान रु-
चिजानी॥मुनि वनिता पुरनारि सुआसिनि सहस भाँति सनमानी५॥
पाइ अघाइ अशीशत निकसत याचक जन भये दानी ॥ यौं प्रस-
न्न कैकयी सुमित्रहि होहु महेश भवानी ॥ ६ ॥ दिन दूसरे भूप भा-
मिनि दोउ भई सुमंगल खानी ॥ भयो सोहिलो सोहिले मो-
जनु सृष्टि सोहिलो सानी ॥ ७ ॥ गावत नाचत भोमन भावत सु-
ख आवत अधिकानी ॥ देत लेत पहिरत पहिरावत प्रजा प्रमोद
अघानी ॥ ८ ॥ गान निसान कुलाहल कौतुक देखत दुनी सिहा-
नी ॥ हरि विरंचि हर पुर शोभा कुलि कोशलपुरी लोभानी ॥ ९ ॥
आनंद अवनिराज रानी सब माँगहु कोखि जुड़ानी ॥ आशिषदै
दै सराहहिं सादर उमा रमा ब्रह्मानी ॥ १० ॥ विभव विलास वाढ़ि
दशरथकी देखि न जिनहिं सोहानी ॥ कीरति कुशल भूति जय
ऋधि सिधि तिन्ह पर सबै कोहानी ॥ ११ ॥ छठी बारहौं लोक वे-
द विधि करि सुविधान विधानी ॥ राम लषण रिपु दवन भरत
धरे नाम ललित गुरुज्ञानी॥१२॥ सुकृत सुमन तिल मोद वासिवि-
धि जतन यंत्रभरि घानी॥सुख सनेह सब दिवो दशरथहि खरि ख-
लेल थिरंथानी ॥ १३ ॥ अनुदिन उदय उछाह उमग जग घर
घर अवध कहानी ॥ तुलसीराम जनम यश गावत सो समाज
उर आनी ॥ १४।४ ॥(राग केदारा ॥) अवध वधावने घर घर मंगल
साज समाज ॥सगुण सोहावने मुदित करत सब निज निज काज ॥
छंद ॥ निज काज सजत सँवारि पुर नर नारि रचना अन-

गनी ॥ गृह अजिर अटनि बजार वीथिन्ह चारु चौकें विधिधनी ॥ चामर पताक वितान तोरण कलश दीपावलि बनी ॥ सुख सुकृत शोभा मय पुरी विधि सुमति जननी जनु जनी ॥ दोहा ॥ चैत चतुर्दशि चंदिनी, अमल उदित निशिराज ॥ उडुगण अवलि प्रकाशहीं, उमगत आनँद आज ॥ १ ॥ ॥ छंद॥ आनंद उमगत आजु विबुध विमान विपुल बनाइकै॥ गावत बजावत नटत हरषत सुमन बरषत आइकै ॥ नर निरखि नभ सुरपेखि पुरछवि परस परस चुपाइकै ॥ रघुराज साज सराहि लोचन लाहुलेत अघाइकै॥२॥जागिये राम छठी सजनीरी रजनी रुचिर निहारि॥मंगल मोदमठी मूरति जहँ नृप बालकचारि॥छंद॥मूरति मनोहर चारि विरचि विरंचि परमारथमई॥अनुरूप भूपहि जानि पूजनयोग विधि शंकर दई॥तिन्हकी छठी मंजुलमठी जगसरस जिन्हकी सरसई॥किये नींदभामिनि जागरण अभिरामिनी यामिनि भई ॥ ३ ॥ दो०॥सेवक सजग भये समय, साधन सचिव सुजान ॥ मुनिवर गुरु सिखये, लौकिक वैदिक विविधविधान ॥ छंद ॥ वैदिक विधान अनेक लौकिक आचरत सुनि जानिकै॥ बलिदान पूजामूलिकामनि साधि राखीं आनिकै ॥ जे देव देवी सेइयत हित लागि चित सनमानिकै ॥ ते यंत्र मंत्र सिखाइ राखत सबनिसों पहिचानिकै ॥ ४ ॥ सकल सुआसिनि गुरुजन पुरजन पाहुनेलोग ॥ विबुध विलासिनी सुर मुनि याचक जो जेहि योग ॥ ॥ छंद ॥ जेहि योग जे तेहिभाँति ते पहिराइ परिपूरण किये ॥ जय कहतदेत अशीश तुलसीदास ज्यों हुलसत हिये ॥ ज्यों आजु कालिहु परँव जागर होहिंगे नेवते दिए ॥ ते धन्य पुण्य पयोधि जे तेहि समै सुख जीवन जिये ॥ ५ ॥ भूपति भागवली सुर वर नाग सराहि सिहाहिं ॥ तिय वरवेष अली संपति सिधि अणिमादिक माहिं ॥ छंद ॥ अणिमाहिं शारद शैलनंदिनि बाल लालहिपालहीं ॥ भरि जनमजे पाये नते परितोष उमारमा लही ॥ निज लोक विसरे लोकपति वरकी न च-

रचा चालहीं ॥ तुलसी तपत तिहुँ ताप जगजनु प्रभुछठी
छायालही ॥ ६।८ ॥ (राग जयतश्री) ॥ वाजत अवध गहागहेआ-
नंद वधाये ॥ नामकरन रघुवरनिके नृप सुदिन सोधाए ॥ पा-
य रजायसु रायको ऋषिराज वोलाए ॥ शिष्य सचिव सेवक स-
खा सादर शिरनाए ॥ साधु सुमति समरथ सबै सानंद सिखाए ॥
जल दल फल मणि मूलिका कुलिकाज लिखाए ॥ १ ॥ गणप गौ-
रि हर पूजिकै गोवृंद दुहाए ॥ घर घर मुद मंगल महागुण
गाण सुहाए ॥ तुरत मुदित जहँ तहँ चले मनके भय भाए ॥
सुरपति सासनु घन मनो मारुत मिलिधाए ॥ २ ॥ गृह आँगन
चौहट गलीं वाजार वनाए ॥ कलश चँवर तोरण ध्वजा सु वि-
तानतनाए ॥ चित्रचारु चौकै रची लिखि नाम जनाए ॥ भरिभ
रि सरवर वापिका अरगजा सनाए ॥ ३ ॥ नर नारिन्ह पल चारिमें
सव साज सजाए ॥ दशरथ पुर छवि आपनी सुर नगर लजा-
ए ॥ विवुध विमान वनाइकै आनंदित आए ॥ हरषि सुमन व-
रषन लगे गये धन जनु पाए ॥ ४ ॥ वरे विप्र चहुँ वेदके रविकु-
ल गुरुज्ञानी ॥ आपु वशिष्ठ अथर्वणी महिमा जग जानी ॥ लो-
करीति विधि वेदकी करि कह्यौ सुवानी ॥ शिशु समेत वेगि वोलि
ये कौशल्या रानी ॥ ५ ॥ सुनत सुआसिनि लैचलीं गावत
वड़भागीं ॥ उमा रमा शारद शची देखि सुनि अनुरागीं ॥ निज
निज रुचिवेष विराचिकै हिलिमिलि सँगलागीं ॥ तेहि अव-
सर तिहुँ लोक की सुदशा जनु जागीं ॥ ६ ॥ चारु चौक वैठत भईं
भूप भामिनि सोहैं ॥ गोद मोद मूरति लिये सुकृती जन जोहैं ॥
सुख सुखमा कौतुक कला देखि सुनि मुनि मोहैं ॥ सोसमा-
ज कहै वराणिकै ऐसे कविकोहैं ॥ ७ ॥ लगे पढ़न रक्षा ऋचा ऋ-
पि राज विराजे ॥ गान सुमन झरि जयजये वहु वाजने वाजे ॥ भ-
ए अमंगल लंकमे शक संकट गाजे ॥ भुवन चारि दशके व-
ड़े दुख दारिद भाजे ॥ ८ ॥ वाल विलोकि अथर्वणी हँसि हरहि ज-
नायो ॥ शुभको शुभ मोद मोदको राम नाम सुनायो ॥ आलवाल

कल कौशिला दल बरन सोहायो ॥ कंद सकल आनंदको जनु अंकुरि आयो ॥९॥ जोहि जानि जपे जोरिकै कर पुट शिरराखे ॥ जय जय जय करुणानिधे सादर सुरभाषे ॥ सत्यसिन्धुसाँचे सदा जे आपर आषे ॥ प्रणतपाल पाये सही जे फल अभिलाषे ॥ १० ॥ भूमिदेव देव देखिकै नर देव सुखारी ॥ बोलि सचिव सेवक सखा पट धारि भँडारी ॥ देहु जाहि जोइ चाहिए सनमानि सँभारी ॥ लगेदेन हिय हरषिकै हेरि हेरि हँकारी ॥ ११ ॥ राम निछावरि लेनको हठि होत भिखारी ॥ बहुरि देत तेइ देखिए मानहुँ धन धारी ॥ भरत लषण रिपु दवनहूं धरे नाम विचारी ॥ फलदायक फल चारिके दशरथ सुतचारी ॥ १२ ॥ भये भूप बालकनिके नाम निरूपम नीके ॥ गये सोच संकट मिटे तव ते पुरतीके ॥ सुफल मनोरथ विधि किये सब विधि सबहीके ॥ अब ह्वैहैं गाए सुने सबके तुलसीके ॥ १३ ॥ ६ ॥ (रागविलावल) ॥ सुभगसेज शोभित कौशल्या रुचिर राम शिशु गोदलिये ॥ बारबार बिधु वदन बिलोकति लोचन चारु चकोरकिए ॥ १ ॥ कबहुँ पौंढि पय पान करावति कबहूं राखति लाय हिये ॥ बालकेलि गावति हलरावति पुलकति प्रेम पियूष पिये ॥ २ ॥ विधि महेश मुनि सुर सिहात सब देखत अंबुद ओट दिए ॥ तुलसिदास ऐसो सुख रघुपतिपै काहू तो पायो न बिये ॥३॥७॥ (राग सोरठ)॥ ह्वै हो लाल कबहिं बड़े बलिमैया ॥ राम लषण भावते भरत रिपुदवन चारु चारयो भैया ॥ १ ॥ बाल बिभूषण वसन मनोहर अंगनि विरचि बनैहों ॥ शोभा निरखि निछावरि करि उरलाय वारने जैहों ॥ २ ॥ छगन मगन अँगना खेलिहो मिलि ठुमुकु ठुमुकु कबधैहो ॥ कलबल वचन तोतरे मंजुल कहि माँ मोहिं बुलैहो ॥ ३ ॥ पुर जन सचिव राउ रानी सब सेवक सखा सहेली ॥ लैहैं लोचन लाहु सुफल लखि ललित मनोरथ बेली ॥ ४ ॥ जा सुख की लालसा लटू शिव शुक सनकादि उदासी ॥ तुलसी तेहि सुखसिंधु कौशिला मगन पै प्रेम पियासी ॥ ५॥८॥ पगनि कब चलिहो चारौ

मैया ॥ प्रेम पुलकि उरलाइ सुवन सब कहति सुमित्रा मैया ॥ १ ॥
सुंदर तनु शिशु बसन विभूषण नख शिख निरखि निकैया॥दलि तृण
प्राण निछावरि करि करि लैहै मातु बलैया ॥ २ ॥ किलकनि नट-
नि चलनि चितवनि भजि मिलनि मनोहर तैया ॥ मणि खंभनि
प्रतिबिंब झलक छबि छलकिहै भरि अँगनैया ॥ ३ ॥ बाल विनोद
मोद मंजुल विधु लीला ललित जोन्हैया ॥ भूपति पुण्य पयोधि उ-
मग घर घर आनंद बधैया ॥ ४ ॥ ह्वैहैं सकल सुकृत सुख भाजन
लोचन लाहु लुटैया ॥ अनायास पायहैं जनम फल तोतरे वचन
सुनैया ॥ ५ ॥ भरत राम रिपुदवन लषणके चरित सरित अन्ह-
वैया ॥ तुलसी तब केसे अजहुँ जानिबे रघुवर नगर बसैया ॥ ६ ॥
९ ॥ (राग केदारा)॥ चुपरि उबटि अन्हवाइके नयन आँजे रचि रुचि
तिलक गोरोचन को कियोहै ॥ भूपर अनूपमसिबिंदुवारे वारे वार
विलसत शीश पर हेरि हरै हियोहै॥मोदभरी गोदलिये लालाते सुमि-
त्रा देखि देव कहैं सबको सुकृत उप वियोहै॥मातु पितु प्रिय परिजन
पुरजन धन्य पुण्य पुंज पेखि पेखि प्रेम रस पियोहै॥ लोहित ललित
लघु चरण कमल चारु चाल चाहि सो छबि सुकवि जिय जियोहै ॥
बालकेलि बातवश झलकि झलमलत शोभा की दीयटि मानो
रूप दीपदियोहै ॥ रामशिशु सानुज चरित चारु गाइ सुनि सुजननि
सादर जनम लाहु लियोहै ॥ तुलसी बिहाइ दशरथ दश चारि पुर
ऐसे सुखयोग विधि विरच्यो न वियोहै ॥ १० ॥ राम शिशु गोद
महामोद भरे दशरथ कौशिलहुँ ललकि लषण लाल लयेहैं ॥ भरत
सुमित्रा लये कैकयी शत्रु शमन तन प्रेम पुलक मगन मन भयेहैं ॥
मेढी लटकन मणि कनक रचित बाल भूपण बनाइ आछे अंग अंग
ठएहैं ॥ चाहि चुचुकारिचूँ विलालत लावत उर तैसे फल पावत
जैसे सुबीजबयेहैं ॥ बनओट विबुध विलोकि बरपत फूल अनुकूल
वचन कहत नेहन येहैं ॥ ऐसे पितु मातु पूत प्रिय परिजन विधि
जानियत आयु भरि एई निरमएहैं॥ अजर अमर होहु करो हरि हर
छोहु जरठ जठेरन्हि आशिरवाद दएहैं ॥ तुलसी सराहैं भाग्य तिन्ह

के जिन्हके हिये डिंभ रामरूप अनुराग रंग रएहैं॥११॥ (राग आसावरी)॥ आजु अनरसेहैं भोरके पय पियत न नीके॥रहत न बैठे ठाढ़े पालने झूलतहू रोवत राम मेरो सो शोच सबहीके॥देव पितर ग्रह पूजिये तुला तौलिये घीके ॥ तदपि कबहुँ कबहुँक सखी ऐसेही अरत जब परत दृष्टि दुष्टतीके ॥ वेगि वोलि कुलगुरु छुएमाथे हाथ अमीके ॥ सुनत आइ ऋषि कुश हरे नरसिंह मंत्र पढ़ि जो सुमिरत भयभीके ॥ जासु नाम सर्वस सदाशिव पार्वतीके ॥ ताहि झरावाति कौशिला यह रीति प्रीतिकी हिय हुलसाति तुलसीके ॥ १२ ॥ माथे हाथ ऋषि जब दियो राम किलकन लागे ॥ महिमा समुझि लीला विलोकि गुरु सजल नयन तनु पुलकि रोम रोम जागे ॥ लिए गोद धाये गोदते मोद मुनि मन अनुरागे ॥ निरखि मातु हरषी हिये आली ओट कहति मृदु वचन प्रेमके से पागे॥ तुम्ह सुरतरु रघुवंश के देत अभिमत मागे ॥ मेरे विशेषि गति रावरी तुलसी प्रसाद जाके सकल अमंगल भागे ॥ १३ ॥ अमिय विलोकनि करि कृपा मुनि वर जब जोये ॥ तव ते राम अरु भरत लषण रिपुदवन सुमुख सखि सकल सुवन सुख सोये ॥ लाय सुमित्रालिए हिए फणि मणि ज्यों गोए॥तुलसी नेवछावरि करति मातु अति प्रेम मगन मन सजल सुलोचनकोए॥१४॥मातुसकल कुलगुर वधू प्रिय सखी सुहाई॥सादर सब मंगल किये महि मनि महेशपर सबनि सुधेनु दुहाई॥ बोलि भूप भूसुरलिये अति विनय वड़ाई ॥ पूजिपाइ सनमानि दानदिए लहि अशीश सुनि वरषैं सुमन सुरसाई॥घर घर पुरवाजन लगीं आनंद वधाई ॥ सुखसनेह तेहि समयको तुलसी जानै जाको चोरचोहै चित चहुँ भाई॥१५॥(राग धनाश्री)॥या शिशुके गुण नाम वड़ाई॥कोकहिसकै सुनहु नरपति श्रीपति समान प्रभुताई ॥ यद्यपि वुधि वय रूप शील गुण समये चारुचारचोंभाई॥तदपि लोक लोचन चकोर शशि राम भगत सुखदाई ॥ सुर नर मुनि करि अभय दनुज हति हरिहि धरणि गरुआई॥ कीरति विमलविश्व अघमोचनि रहिहि सफल जगछाई॥याके चरण सरोज कपट तजि जो भजिहैं मनलाई॥

सोकुल युगल सहित तरिहैं भव यह न कछू अधिकाई ॥ सुनि गुरु वचन पुलकितन दंपति हरष न हृदय समाई॥ तुलसिदास अवलोकि मातु मुख प्रभु मनमें मुसुकाई ॥ १६ ॥ ९ ॥(राग बिलावल) ॥ अवध आजु आगमी एकु आयो ॥ करतल निरखि कहत सब गुणगण बहुतनि परिचौ पायो॥ बूढ़ो बड़ो प्रमाणिक ब्राह्मण शंकर नाम सुहायो ॥संग सुशिष्य सुनत कौशल्या भीतर भवन बोलायो॥ पाँयपखारि पूजि दियो आसन अशन वसन पहिरायो ॥ मेले चरण चारु चारचौ सुत माथे हाथ दिवायो॥नख शिख बाल बिलोकि विप्रतनु पुलक नयन जल छायो ॥ लैलै गोद कमल कर निरखत उर प्रमोद अनपायो॥ जनम प्रसंग कह्यो कौशिक मिसि सीय स्वयंवर गायो ॥ राम भरत रिपुदवन लषणको जय सुख सुयश सुनायो ॥ तुलसिदास रनिवास रहसवश भयो सबको मन भायो ॥ सन्मान्यौ महिदेव अशीशत सानँद सदन सिधायो ॥ १७ ॥ (राग केदारा)॥पौढ़िये लालन पालने हौं झुलावौं॥कर पद मुख चख कमल लसत लखि लोचन भँवर भुलावौं ॥ बालविनोद मोद मंजुलमणि किलकनि खानि खुलावौं ॥ तेइ अनुराग ताग गुहिवेकहँ मति मृगनयनि बुलावौं ॥ तुलसी भनित भली भामिनि उर सो पहिराइ फुलावौं॥ चारु चरित रघुवर तेरे तेहि मिलि गाइ चरण चितु लावौं ॥ १८ ॥ सोइए लाल लाडिले रघुराई ॥ मगनमोदलिए गोद सुमित्रा वारवार बलिजाई॥ हँसे हँसत अनरसे अनरसत प्रतिबिंबनि ज्यों झाई॥तुम सबके जीवनके जीवन सकल सुमंगल दाई ॥ मूल मूल सुरवीथि बेलि तम तोमसुदल अधिकाई ॥ नखत सुमन नभ विटप बोंडि मानो छपा छिटकि छबिछाई ॥ हौं जँभात अलसात तात तेरी बानि जानि मैं पाई॥ गाइ गाइ हलराइ बोलि हौं सुख नीदरी सुहाई ॥ बाछरू छबीलो छौना छगन मगन मेरे कहति मल्हाइ मल्हाई ॥ सानुज हिय हुलसति तुलसीके प्रभु किललित लरिकाई ॥ १९ ॥ ललन लोनेलैरुआ वलि मैया॥ सुख सोइये नीद बेरिया भई चारु चरित चारचो भैया ॥ कहति मल्हा-

इ लाइ उर छिन छिन छगन छबीले छोटे छैया ॥ मोद कंद कुल कुमुद चंद मेरे रामचंद रघुरैया ॥ रघुवर बालकेलि संतनकी सुभग सुभद सुरगैया ॥ तुलसी दुहि पीवत सुख जीवत पयसप्रेम घनो घैया ॥ २० ॥ सुखनीद कहति आलि आइहौं ॥ राम लषण रिपुदवन भरत शिशु करि सब सुमुख सोआइहौं ॥ रोवनि धोवनि अनखानि अनरसनि डिठि मुठि निठुर नशाइहौं ॥ हँसनि खेलनि किलकनि आनंदनि भूपति भवन बसाइहौं ॥ गोद विनोद मोदमय मूरति हरषि हरषि हलराइहौं ॥ तनु तिल तिलकरि वारि रामपर लेहौं रोग बलाइहौं ॥ रानी राउ सहित सुत परिजन निरखि नयन फलपाइहौं ॥ चारु चरित रघुवंश तिलकके तहँ तुलसिहि मिलि गाइहौं ॥ २१॥ (राग आसावरी) ॥ कनक रतनमय पालनो रच्यो मनहुँ मार सुतहार ॥ विविध खेलौना किंकिणी लागे मंजुल मुकुताहार ॥ रघुकुल मंडन रामलला ॥ १ ॥ जननि उबटि अन्हवाइकै मणिभूषण सजिलिए गोद ॥ पौढ़ाये पटु पालने शिशु निरखि मगन मन मोद ॥ दशरथ नंदन राम लला ॥ २ ॥ मदन मोरके चंदकी झलकनि निदराति तनु जोति ॥ नीलकमल मणि जलदकी उपमा कहें लघुमति होति ॥ मातु सुकृत फल राम लला ॥ ३ ॥ लघु लघु लोहित ललितहैं पद पाणि अधर एक रंग ॥ कोकवि जो छवि कहिसकै नख शिख सुंदर सब अंग ॥ परिजन रंजन राम लला ॥ ४ ॥ पगनूपुर कटि किंकिणी कर कंजनि पहुँची मंजु ॥ हिये हरिनख अद्भुत बन्यो मानो मनसिज मणि गण गंज ॥ पुरजन सुरमणि राम लला ॥५॥ लोयन नील सरोजसे भूपर मसि बिंदु विराज ॥ जनु विधु मुख छवि अमियको रक्षक राखो रसराज ॥ शोभासागर राम लला ॥ ६ ॥ गभुआरीं अलकावलीं लसै लटकन ललित ललाट ॥ जनु उडुगण विधु मिलनको चले तम विदारि करि बाट ॥ सहज सोहावनो राम लला ॥ ७ ॥ देखि खेलौना किलकहीं पद पानि विलोचन लोल ॥ विचित्र विहग अलिज लज ज्यों सु-

खमा सर करत कलोल ॥ भगत कल्पतरु राम लला ॥ ८ ॥ बाल बोल विनु अरथके सुनि देत पदारथ चारि ॥ जनु इन्द वचनन्हिते भए सुरतरु तापस तिपुरारि ॥ नाम कामधुक राम लला ॥ ९ ॥ सखी सुमित्रा वारहीं मणि भूषण वसन विभाग ॥ मधुर झुलाइ मलहावहीं गावैं उमगि उमगि अनुराग ॥ हैं जग मंगल राम लला ॥ १० ॥ मोती जायो सीपमें अरु अदिति जन्यो जग भानु ॥ रघुपति जायो कौशिला गुण मंगल रूप निधानु ॥ भुवन विभूषण राम लला ॥ ११ ॥ राम प्रगट जबते भये गये सकल अमंगल मूल ॥ मीत मुदित हित उदितहैं नित वैरिन के चित शूल ॥ भव भय भंजन राम लला ॥१२॥अनुज सखा शिशु संग लै खेलन जैहैं चौगान ॥ लंका खर भर परैगो सुरपुर बाजिहैं निसान ॥ रिपुगण गंजन राम लला ॥ १३ ॥ राम अहेरे चलहिंगे जब गज रथ बाजि सँवारि ॥ दशकंधर उर धकधकी अब जनिधावै धनुधारि ॥ अरि करिकेहरि राम लला ॥ १४ ॥ गीत सुमित्रा सखिन्हकै सुनि सुनि सुर मुनि अनुकूल ॥ दैअशीश जय जय कहैं हरषैं वरषैं फूल ॥ सुर सुखदायक राम लला ॥ १५ ॥ बालचरित मय चंद्रमा यह सोरह कलानिधान ॥ चित चकोर तुलसी कियो करैं प्रेम अमिय रस पान ॥ तुलसीको जीवन राम लला ॥ १६ ॥ २२॥ (राग कान्हरा) ॥ पालनैं रघुपतिहि झुलावै ॥ लैलै नाम सप्रेम सरस स्वर कौशल्या कल कीरति गावै । केकि कंठ द्युति श्याम वरण वपु बाल विभूषण विचित्र बनाए । अलकैं कुटिल ललित लटकन भ्रू नील नलिन दोउ नयन सुहाए ॥ शिशु सुभाय सोहत जब कर गहि वदन निकट पद पल्लव लाये ॥ मनहुँ सुभग युग भुजग जलज भरि लेत सुधा शशि सों सचुपाए ॥ उपर अनूप विलोकि खेलौना किलकत पुनि पुनि पाणि पसारत ॥ मनहुँ उभय अंभोज अरुणसों विधु भय विनय करत अति आरत॥ तुलसिदास बहु वास विवश अलि गुंजत सों छवि नाहिं जात बखानि ॥ मनहुँ सकल श्रुति ऋचा मधुपह्वै विशद सुयश वर्णत

वरवानी ॥ २३ ॥ (राग विलावल) ॥ झूलत राम पालने सोहैं ॥ भूरि भाग जननी जन जोहैं ॥ तन मृदु मंजुल मेचकताई ॥ झलकाति बाल विभूषण झाँई ॥ अधरपाणि पद लोहित लोने॥ सर शृंगार भवसारस सोने ॥ किलकत निरखि विलोल खेलौना ॥ मनहुँ विनोद लरत छवि छौना ॥ रंजित अंजन कंज विलोचन ॥ भ्राजत भालतिलक गोरोचन ॥ लसै मसि बिंदु वदन विधुनीको ॥ चितवत चितचकोर तुलसीको ॥ २४ ॥ (राग कल्याण)॥ राजत शिशुरूप राम सकल गुण निकाय ॥ धाम कौतुकी कृपालु ब्रह्मजानु पाणि चारी ॥ नील कंज जलद पुंज मरकतमणि सदृश श्याम काम कोटि शोभा अंग अंग उपर वारी॥हाटक मणि रत्न खचित रचित इंद्र मंदिरभई इंदिरानिवास सदन विधि रच्यो सँवारी॥विहरत नृप अजिर अनुज सहित वालकेलि कुशल नील जलज लोचन हरि मोचन भयभारी ॥ अरुण चरण अंकुश ध्वज कंज कुलिश चिह्न रुचिर भ्राजत अति नूपुरवर मधुर मुखर कारी॥किंकिणी विचित्र जाल कंबु कंठ ललित माल उर विशाल केहरि नख कंकण करधारी॥चारु चिबुक नासिकाकपोल भाल तिलक भ्रुकुटि श्रवण अधर सुंदर द्विज छवि अनूप न्यारी ॥ मनहुँ अरुण कंज कोश मंजुल युगपाँति प्रसव कुंदकली युगल युगल परम सुभ्रवारी ॥ चिक्कन चिकुरावली मनो षडंघ्रि मंडली बनी विशेषि गुंजत जनु वालक किलकारी ॥ एकटक प्रतिबिंब निरखि पुलकत हरि हरषि हरषि लै उछंग जननी रसभंग जिय विचारी ॥ जाकहँ सनकादि शंभु नारदादि शुकमुनींद्र करत विविध योग काम क्रोध लोभ जारी ॥ दशरथ गृह सोइ उदार भंजन संसार भार लीला अवतार तुलसिदास त्रासहारी ॥ २५ ॥ (राग कान्हरा)॥ आँगन फिरत घुटुरुवनि धाये ॥ नील जलद तनु श्याम राम शिशु जननि निरखि मुख निकट बोलाए ॥१॥ बंधुक सुमन अरुण पद पंकज अंकुश प्रमुख चिह्न वनि आए ॥ नूपुर

जनु मुनिवर कलहंसनि रचे नीरदै बाँहबसाए ॥ २ ॥ कटि मेख लवर हारग्रीव दर रुचिर बाहँ भूषण पहिराए ॥ उर श्रीवत्स मनोहर हरि नख हेम मध्य मणि गण बहु लाये ॥ ३ ॥ सुभगचि- बुक द्विज अधर नासिका श्रवण कपोल मोहिं अतिभाए ॥ भ्रू सुंदर करुणारस पूरण लोचन मनहुँ युगल जल जाए ॥४॥ भाल वि- शाल ललित लटकन वर वालदशाके चिकुर सोहाए ॥ मानो दोउ गुरु शनि कुज आगे करि शशिहि मिलन तमके गुण आए॥५॥उप- मा एक अभूत भई तब जबजननी पट पीत ओढ़ाए॥नील जलदपर उ डुगण निरखित तजिसुभाव मानो तड़ित छपाए॥६॥अंग अंग पर- मारनिकरमिलि छविसमूह लैलै जनुछाए॥तुलसिदास रघुनाथरूप गुण तौ कहौं जो विधि होहिं बनाए॥७॥२६॥(राग केदारा)॥रघुवरवाल छवि कहौं वरणि॥सकल सुखकी सींवकोटि मनोज शोभाहरनि॥१॥ वसी मानहुँ चरण कमलनि अरुणता तजि तरनि॥रुचिर नूपर किं- किणी मनुहरति रुनझुनु करनि ॥ २ ॥ मंजुमेचक मृदुलतनु अ- नु हरति भूषण भरनि ॥ जनु सुभग शृंगार शिशु तरु फरयोहै अ- द्भुत फरनि ॥ ३॥ भुजनि भुजग सरोज नयननि वदन विधु जित्यों लरनि ॥ रहे कुहरनि सलिल नभ उपमा अपर दुरि डरनि ॥ ४ ॥ लसत कर प्रतिबिंब मणि आँगन घुटुरुवनि चरनि ॥ जनु जलजसं- पुट सु छवि भरि भरि धरति उरधरनि ॥ ५ ॥ पुण्यफल अनुभव- ति सुतहि विलोकि दशरथ घरनि ॥ वसति तुलसी हृदय प्रभुकि- लकनि ललित लरखरनि ॥ ६ ॥ २७ ॥ नेकु विलोकि धौं रघुवर- नि॥चारि फलत्रिपुरारि तोको दिये प्रगटकरि नृपवरनि ॥ १ ॥ बाल भूषण वसन तन सुंदर रुचिर रजभरनि ॥ परस्पर खेलनि अजिर उठि चलनि गिरि गिरि परनि ॥ २ ॥ झुकनि झाँकनि छाँह सों किलकनि नटनि हठि लरनि ॥ तोतरी बोलनि बिलोकनि मो- हनी मनुहरनि ॥ ३ ॥ सखि वचन सुनि कौशिला लखि सुढर पा-

से ढरनि ॥ लेति भरि भरि अंक सैंततिपै तजनु दुहुँ करानि॥४॥च-
रित निरखत विबुध तुलसी ओट दै जलधरनि ॥ चहत सुरसुरप-
ति भयो सुरपति भयो चहै तरनि॥५॥२८॥(राग जयतश्री)॥भूमित-
ल भूपके बड़े भाग ॥ राम लषण रिपुदमन भरत शिशु निरखत
अति अनुराग ॥ १ ॥ बाल विभूषण लसत पाइ मृदु मंजुल अंग
विभाग ॥ दशरथ सुकृत मनोहर विरवनि रूप करह जनु लाग ॥
॥ २ ॥ राज मराल विराजत विहरतजे हर हृदय तड़ाग ॥ ते नृप
अजिर जानु पाणि धावत धरन चटक चल काग ॥ ३ ॥ सिद्ध सि-
हात सराहत मुनि गण कहैं सुर किन्नरनाग ॥ ह्वै वरु विहँग विलो-
किय बालक बासि पुर उपवन बाग ॥ ४ ॥ परिजन सहित राय
रानिन्हकियो मज्जन प्रेम प्रयाग ॥ तुलसी फल चारयो ताके मणि
मरकत पंकजराग ॥५॥२९॥ (राग आसावरी) ॥ छँगन मगन अँग-
ना खेलत चारु चारयो भाई ॥सानुज भरत लाल लषण राम लोने
लोने लरिका लखि मुदित मातु समुदाई ॥१॥बाल बसन भूषण ध-
रे नख शिख छबि छाई ॥ नील पीत मनसिज सरसिज मंजुल मा-
लनि मानोहै देहनिते द्युति पाई ॥ २ ॥ ठुमुकु ठुमुकु पगधरनि न-
टनि लरखरनि सुहाई॥भजनि मिलनि रुठनि टूठनि किलकनि अव-
लोकनि बोलनि वरणि न जाई ॥३॥ जननि सकल चहुँ ओर आल
वाल मणि अँगनाई ॥ दशरथ सुकृत विबुध विरवा विलसत विलो-
कि जनु विधि वर वारि बनाई॥ ४ ॥ हरि विरंचि हर हेरि राम प्रेम
पर बसताई ॥ सुख समाज रघुराजके वरणत विशुद्ध मन सुरनि सु-
मन झरिलाई ॥ ५ ॥ सुमिरत श्रीरघुवरनकी लीला लरिकाई ॥
तुलसिदास अनुराग अवध आनँद अनुभवत तब को सो अजहुँ
अघाई॥ ६ ॥३०॥ (राग विलावल) ॥ आँगन खेलत आनँदकंद ॥
रघुकुल कुमुद सुखद चारु चंद ॥ सानुज भरत लषण सँग सोहैं ॥
शिशु भूषण भूषित मन मोहैं ॥ तन द्युति मोरचंद जिमिझलकैं ॥
मनहुँ उमगि अँग अँग छबि छलकैं ॥१॥ कटि किंकिणि पाँय पैंज-
नीवाजैं ॥ पंकज पाणि पहुँचिया राजैं ॥ कंठुला कंठवघन ह्यानी

के ॥ नयन सरोज मयन सरसीके ॥ २ ॥ लटकन लसत ललाट लटूरीं ॥ दमकति द्वैद्वै दँतुरियाँ रूरीं ॥ मुनि मन हरत मंजु मसि बुंदा ॥ ललित वदन वलि बालमुकुंदा ॥ ३ ॥ कुलही चित्र विचित्र झँगूलीं ॥ निरखहिं मातु मुदित प्रीति फूली ॥ गहि मणि खंभ डिंभ डगि डोलत ॥ कल बल वचन तोतरे बोलत ॥ ४ ॥ किलकत झकि झांकत प्रतिबिंबनि ॥ देत परम सुख पितु अरु अंबनि ॥ सुमिरत सुखमा हिय हुलसीहै ॥ गावत प्रेम पुलकि तुलसीहै ॥ ५ ॥३१॥ (राग कान्हरा) ॥ ललित सुतहि लालति सचुपाये ॥ कौशल्या कल कनक अजिर महँ सिखवत चलन अँगुरियाँ लाये ॥ १ ॥ कटिकिंकिणी पैंजनी पाँयनि बाजति रुनु झुनु मधुर रेंगाये ॥ पहुँची करनि कंठ कठुला बन्यो केहरि नख मणि जरित जराये ॥ पीत पुनीत विचित्र झँगुलिया सोहति श्याम शरीर सोहाये ॥ दतियाँ द्वैद्वै मनोहर मुख छवि अरुण अधर चित लेत चोराये ॥ ३ ॥ चिबुक कपोल नासिका सुंदर भाल तिलक मसि बिंदुबनाये ॥ राजत नययन मंजु अंजन युत खंजन कंज मीन मदनाये ॥ ॥ ४ ॥ लटकन चारु भ्रुकुटिया टेढ़ी मेढ़ी सुभग सुदेश सुभाये ॥ किलकि किलकि नाचत चुटकी सुनि डरपति जननि पाणि छुटुकाये॥ ५॥ गिरि घुटुरुवनि टेकि उठि अनुजनि तोतरि बोलत पूप देखाये ॥ बाल केलि अवलोकि मातु सब मुदित मगन आनँद अनमाये।६ ।देखत नभ घन ओटचरित मुनि योग समाधि विरति विसराये॥तुलसिदास जे रसिकन येहि रस ते नर जड़ जीवत जग जाये ॥७॥ ॥३२॥ (राग ललित) ॥ छोटी छोटी गोड़ियां अँगुरियाँ छोटी छबीलीं ॥ नख जोति मोती मानो कमल दलनिपर ॥ ललित आँगन खेलैं ठमुकु ठमुकु चलैं झुंझुनु २पाँय पैंजनी मृदु मुखर॥किंकिणी कलित कटि हाटक रतन जटित मंजु कर कंजनि पँहुचियाँ रुचिरतर ॥ पियरी झीनी झँगुली साँवरे शरीर खुली बालक दामिनि ओढ़ी मानों बारे बारिधर ॥ उरबघनहा कंठ कठुला झँडूलेकेश मेढीलटकन मसि बिंदु मुनिमनहर ॥ अंजन रंजित नैन चित चोरै चि-

तवनि मुखशोभापर वारों अमित असमशर ॥ चुटकी बजावति नचावति कौशल्या माता वालकेलि गावति मल्हावति सुप्रेम भर ॥ किलकि किलकि हँसैंद्वैद्वै दँतुरियाँ लसैं तुलसीके मनव-से तोतरे वचन वर ॥ ३३ ॥ सादर सुमुखि विलोकि राम शिशुरूप अनूप भूपलिय कनियाँ ॥ सुंदर श्याम सरोज वरण तन सब अँग सुभग सकल सुखदनियाँ ॥१॥ अरुण चरण नख जोति जगम गति रुनु झुनु करति पाँय पैजनियाँ॥कनक रतन मणि जटित रटित क-टि किंकिणि कलित पीतपट तनियाँ ॥ २ ॥ पहुँची करनि पदिक हरिनख उर कठुला कंठ मंजुगज मनियाँ ॥ रुचिर चिबु करद अध-र मनोहर ललित नासिका लसति नथुनियाँ ॥ ३॥ विकट भृकुटि सुखमानिधि आनन कल कपोल काननि नग फनियाँ॥ भाल तिल-क मसि बिंदु विराजत सोहति शीश लाल चौतनियाँ ॥ मन मो-हनी तोतरी बोलनि मुनि मनहरणि हँसनि किलकनियाँ ॥ बाल सुभाय विलोल विलोचन चोरति चितहि चारु चितवनियाँ ॥ ५ ॥ सुनिकुल वधू झरोखनि झाँकति रामचंद्र छवि चंद्र वदनियां॥तुलसि दास प्रभु देखि मगन भई प्रेम विवश कछु सुधि न अपनियाँ ॥६॥ ३४ ॥ (राग बिलावल) ॥ सोहत सहज सुहाये नैन ॥ खंजन मीन कमल सकुचत तव जब उपमा चाहत कवि दैन ॥ १ ॥ सुंदर सब अंगनि शिशु भूषण राजत जनु शोभा आएलैन ॥ बड़ोलाभलाल-ची लोभवश राहिगए लखि सुखमा बहु मैन ॥ २ ॥ भोर भूप लिए गोद मोद भरे निरखत वदन सुनत कल वैन ॥ वालक रूप अनूप राम छवि निवसति तुलसिदास उर ऐन ॥३॥३५॥ (राग विभास)॥ भोरभयो जागहु रघुनंदन ॥ गतव्यलीक भक्तनि उर चंदन ॥ शशि करहीन छीन द्युति तारे ॥ तमचुर मुखर सुनहुँ मेरे प्यारे ॥ वि-कसित कंजकुमुद विलखाने ॥ लैपरागरस मधुप उड़ाने ॥ अनुजस-खा सब बोलनि आए ॥ बंदिन्ह अति पुनीत गुणगाए ॥ मन भा-वतो कलेऊ कीजै ॥ तुलसिदास कहँ जूठनि दीजै ॥ ३६ ॥ प्रात भयो तातवलि मातु बिधु वदन पर मदनवारों कोटि उठो प्राण प्यारे॥

सूत मागध वंदि वदत बिरदावली द्वार शिशु अनुज प्रियतम तिहारे ॥ कोक गत शोक अवलोकि शशि छीन छवि अरुणमय गगन राजत रुचिरतारे ॥ मनहुँ रवि बाल मृगराज तमनिकर करि दलित अति ललित मणि गण बिथारे ॥ सुनहु तम चुर मुखरकीर कलहंस पिक केकि रव कलित बोलत विहँग वारे॥ मनहुँ मुनि वृंद रघुवंश मणिरावरे गुणत गुण आश्रमनि सपरिवारे ॥ सरनि विकसित कंज पुंज मकरंद वर मंजुतर मधुर मधुकर गुंजारे ॥ मनहुँ प्रभु जन्म सुनि चयन अमरावती इंदिरानंद मंदिर सँवारे॥ प्रेम संमिलित वर वचन रचना अकनि राम राजीव लोचन उघारे॥दास तुलसी मुदित जननि करै आरती सहज सुंदर अजिर पाँवधारे।३७। जागिये कृपानिधान जान राय रामचंद्र जननी कहै वारवार भोर भयो प्यारे ॥ राजिवलोचन विशाल प्रीति वापिका मराल ललित कमल वदन उपर मदन कोटि वारे॥१॥अरुण उदित विगत सर्वरी शशांक किरनि हीन दीन दीप जोति मलिन द्युति समूह तारे ॥ मनहुँ ज्ञान घन प्रकाश वीते सव भव विलास आसत्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे।२।बोलत खग निकर मुखर मधुर करि प्रतीत सुनहु श्रवण प्राणजविन धन मेरे तुमवारे ॥ मनहुँ वेद वंदी मुनि बृंद सूत मागधादि बिरद वदत जय जय जय जयति कैटभारे ॥ ३ ॥ बिकासित कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गुंजत कल कोमल धुनि त्यागि कंजन्यारे ॥ जनु विराग पाइ सकल शोक कूप गृह विहाइ भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुनत गुन तिहारे ॥ ४ ॥ सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल बिपुल दुख कदंबदारे ॥ तुलसिदास अति अनंद देखिकै मुखारबिंद छूटे भ्रम फंद परम मंद द्वंदभारे ॥ ५ ॥ ३८ ॥ बोलत अवनिप कुमार ठाढे नृपभवन द्वार रूपशील गुण उदार जागहु मेरे प्यारे॥ बिलखित कुमुदिनि चकोर चक्र वाक हरप भोर करत शोर तमचुर खग गुंजत अलि न्यारे ॥ रुचिर मधुर भोजन करि भूपण सजि सकल अंग संग अनुज वालक सव विविध विधि सँवारे ॥ करतल गहि ललित चाप भंजन रिपु

निकर दाप कटितट पट पीत तूण शायक अनियारे ॥ उपवन मृगया विहार कारण गवने कृपाल जननी मुख निरखि पुण्य पुंज निज विचारे ॥ तुलसिदास संगलीजै जानि दीन अभै कीजै दीजै मति विमल गावै चरित वर तिहारे ॥३९॥ (राग नट) ॥ खेलन च-लिये आनँद कंद॥सखा प्रिय नृप द्वार ठाढ़े विपुल बालक वृंद॥१॥ तृषित तुम्हरे दरश कारण चतुर चातक दास ॥ वपुष वारिद वर-षि छवि जल हरहु लोचन प्यास ॥ २ ॥ बंधु वचन बिनीत सुनि उठे मनहुँ केहरिबाल ॥ ललित लघु शर चापकर उर नयन बाहु विशाल ॥ ३ ॥ चलत पद प्रतिबिंब राजत अजिर सुखमा पुंज ॥ प्रेम वश प्रति चरण महि मानो देति आसन कंज ॥ निरखि परम विचित्र शोभा चकित चितवहिंमात ॥ हर्ष विवश न जात कहि निज भवन विहरहु तात ॥ ५ ॥ देखि तुलसीदास प्रभु छवि रहे सब पलरोंकि ॥ थकित निकर चकोर मानहुँ शरदइन्दु विलोकि ॥ ॥ ६ ॥ ४० ॥ विहरत अवध वीथिन राम ॥ संग अनुज अनेक शिशु नव नील नीरद श्याम ॥ १ ॥ तरुण अरुण सरोज पद बनी कनक मय पद त्रान ॥ पीत पट कटितूण वर कर ललित लघु ध-नुबान ॥ २ ॥ लोचननिको लेत फल छवि निरखि पुर नर नारि ॥ वसत तुलसीदास उर अवधेशके सुत चारि ॥ ३ ॥ ४१ ॥ जैसे राम ललित तैसे लोने लषण लालु ॥ तैसेई भरत शील सुखमा सनेह निधि तैसेई सुभग संग शत्रु शालु ॥ धरे धनु शरकर कसे कटि तर-कसी पीरे पट ओढ़े चले चारु चालु ॥ अंग अंग भूषण जरायके ज-गमगत हरत जनके जीको तिमिर जालु ॥ २ ॥ खेलत चौहटा घाटवीथी वाटिकानि प्रभु शिव सुप्रेम मानस मरालु ॥ शोभा दान दैदै सनमानत याचकजन करत लोक लोचन निहालु ॥ ३ ॥ रावण दुरित दुखदलै सुर कहैं आजु अवध सकल सुखको सुकालु॥ तुलसी सराहैं सिद्ध सुकृत कौशल्या जूके भूरि भाग भाजन भुआलु ॥ ४ ॥ ४२ ॥ (राग ललित) ॥ ललित ललित लघु लघु धनुशर कर तैसी तरकसी कटि कसे पट पियरे॥ललित पनही पाँय पैंजनी

किंकिणी धुनि सुनि सुख लहै मनु रहै नित नियरे ॥ पहुँची अंगद चारु हृदय पदिक हारु कुंडल तिलक छवि गड़ी कवि जयरे॥ सिरसुटेपारोलाल नीरज नयन विशाल सुंदर वदन ठाढ़े सुरतरु सियरे ॥ सुभग सकल अंग अनुज बालक संग देखे नर नारि रहैं ज्यों कुरंग दियरे ॥ खेलत अवध खोरि गोली भौंरा चक डोरी मूरति मधुर बसै तुलसी के हियरे ॥ ४३ ॥ छोटिऐ धनुहियाँ पनहिंयाँ पगनि छोटी छोटिऐ कछौटी कटि छोटिऐ तरकसी ॥ लसत झँगूली झीनीदामिनिकी छवि छीनी सुंदर वदन शिर पगिया जरकसी॥ बय अनुहरत विभूषण विचित्र अँग जोहे जिय आवति सनेह की सरकसी ॥ मूरति की सूरति कही न परै तुलसी पै जानै सोई जाके उर कसकै करकसी ॥ ४४ ॥(राग टोड़ी) ॥ राम लषण एक ओर भरत रिपुदवन लाल एक ओरभए ॥ सरयुतीरसम सुखद भूमि थल गनि गनि गोइयाँ बाँटिलये ॥ कंदुक केलि कुशल हय चाढ़ि चढ़ि मन कसकसि ठोकि ठोकि खये ॥ कर कमलनि विचित्र चौगानै खेलन लगे खेल रिझये ॥ व्योम विमाननि विबुध विलोकत खेलक पेखक छाह छये ॥सहित समाज सराहि दशरथहि वरषत निजतरु कुसुमचये ॥ एक लै बढ़त एक फेरत सब प्रेम प्रमोद विनोद मये ॥ एक कहत भइ हाल रामजूकी एक कहत भइया भरत जये ॥ प्रभु बकसत गज वाजि वसन मणि जय धुनि गगन निशान हये ॥ पाइ सखा सेवक याचक भरि जीवन दूसरे द्वारगए॥ नभ पुर परति निछावरि जहँ तहँ सुर सिद्धनि वरदानदये ॥ भूरि भाग अनुराग उमगि ते जे गावत सुनत चरित नितये ॥हारे हरप होत हिय भरतहि जिते सकुचि शिर नयन नए ॥ तुलसी सुमिरि सुभाव शील सुकृती तेइ जे एहि रंग रए॥४५॥खेलि खेलि सुखेल निहारे ॥ उतरि उतरि चुचुकारि तुरंग सादर जाइ जोहारे ॥ १ ॥ बंधु सखा सेवक सराहि सनमानि सनेह सँभारे॥ दिए वसन गज वाजि साजि शुभसाज सुभाँति सँवारे॥२॥मुदित नयन फल पाइ गाइ गुण सुर सानंद सिधारे॥सहित समाज राज मंदिर कहँ राम राउ पगुधारे३

भूप भवन घरघर घमंड कल्याण कोलाहल भारे ॥ निरखि हरषि आरती निछावरि करत शरीर बिसारे ॥ ४ ॥ नितये मंगल मोद अवध सब विधि सब लोग सुखारे॥तुलसी तिन्ह समतेउ जिन्हके प्रभु ते प्रभु चरित पियारे॥५॥४६ ॥ (राग सारंग) ॥ चहत महामुनियागजयो ॥ नीचनिशाचर देत दुसह दुख कृश तनु ताप तयो ॥१॥ शापे पाप नये निदरत खल तब यह मंत्रठयो ॥ विप्रसाधु सुर धेनु धरणि हित हरि अवतार लयो ॥ २ ॥ सुमिरत श्रीसारंगपाणि छन में सब सोचगयो ॥ चले मुदित कौशिक कोशल पुर सगुणनि साथदयो ॥ ३॥ करत मनोरथ जात पुलकि प्रगटत आनंदनयो ॥ तुलसी प्रभु अनुराग उमगि मग मंगल मूल भयो ॥ ४७ ॥ आजु सकल सुकृत फल पाइहौं ॥ सुखकी सींव अवधि आनँदकी अवध विलोकिहौं जाइहौं ॥ १ ॥ सुतनि सहित दशरथहि देखिहौं प्रेम पुलकि उर लाइहौं ॥ रामचंद्र मुखचंद्र सुधा छवि नयन चकोरनिप्याइहौं ॥ २ ॥ सादर समाचार नृप बुझिहैं हौं सब कथा सुनाइहौं ॥ तुलसी ह्वै कृतकृत्य आश्रमहिं राम लषण लै आइहौं ॥ ४८ ॥ (रागनट) देखि मुनिरावरे पद आज ॥ भयो प्रथम गणतीमें अबतें हौं जहँ लौं साधु समाज ॥ १ ॥ चरण वंदि कर जोरि निहोरत कहिय कृपा करि काज ॥ मेरे कछु न अदेय राम बिनु देह गेह सब राज ॥ २ ॥ भली कही भूपति त्रिभुवन में को सुकृती शिरताज ॥ तुलसी राम जनमहिं ते जानियत सकल सुकृत को साज ॥३॥४९॥ राजन राम लषण जो दीजै॥ यशरावरो लाभ ढोटनिहूँ मुनि सनाथ सबकीजै॥१॥डरपतहौं साँचेहु सनेह वश सुत प्रभाव बिनु जाने॥बूझिय वामदेव अरु कुलगुरु तुम पुनि परम सयाने ॥२॥ रिपु रणदलि मखराखि कुशल अति अलप दिनन्हि घरऐहैं॥तुलसिदास रघुवंश तिलककी कवि कलकीरति गैहैं॥३॥५०॥रहेठगिसे नृपति सुनि मुनिवरके वचन ॥ कहि न सकत कछु राम प्रेम वश पुलक गात भरे नीरनयन ॥१॥ गुरु वशिष्ट समुझाय कह्यो तब हियहरपाने जाने शेष शयन ॥ सौंपे सुत गहि पाणि पाँय परि भूसुर

उर चले उमगि चयन ॥ २ ॥ तुलसी प्रभु जोहत पोहत चित सोहत मोहत कोटि मयन ॥ मधु माधव मूरति दोउ संग मानो दिन मणि गवन कियो उत्तर अयन ॥ ३ ॥ ६१ ॥ (राग सारंग) ॥ ऋपि सँग हरषि चले दोउ भाई ॥ पितु पद वंदि शीश लियो आयसु सुनि शिष आशिषपाई ॥ १ ॥ नील पीत पाथोज वरण वपु वय किशोर वनिआई ॥ शर धनु पाणि पीत पट कटितट कसे निखंग बनाई ॥ २ ॥ कलित कंठ मणि माल कलेवर चंदन खौरि सुहाई ॥ सुंदर वदन सरोरुह लोचन मुख छवि वरणि न जाई॥३ ॥ पल्लव पंख सुमन शिर सोहत क्यों कहौं वेप लुनाई ॥ मानो मूरति धरि उभय भाग भइ त्रिभुवन सुंदर ताई ॥ ४ ॥ पैठत सरनि शिलनि चढ़ि चितवत खग मृग वन रुचिराई ॥ सादर सभय सप्रेम पुलकि मुनि पुनि पुनि लेत बोलाई ॥ ५ ॥ एक तीर तकि हती ताडका विद्या विप्र पढ़ाई ॥ राख्यो यज्ञ जीति रजनीचर भइ जग विदित बड़ाई ॥ ६ ॥ चरण कमल रज परसि अहल्या निज पति लोक पठाई ॥ तुलसिदास प्रभुके बूझे मुनि सुरसरि कथा सुनाई ॥ ॥ ७ ॥ ६२ ॥ (राग नट) ॥ दोउ राजसुवन राजत मुनिके संग ॥ नख शिख लोने लोने वदन लोने लोयन दामिनि वारिद वर वरन अंग ॥ १ ॥ शिरनि शिखा सुहाइ उपवीत पीत पट धनु शर कर कसे कटि निखंग ॥ मानो मख रुज निशिचर हरिवेको सुत पावकके साथ पठये पतंग ॥ २ ॥ करत छांह घन वरपैं सुर सुमन छवि वर्णत अतुलित अनंग ॥ तुलसी प्रभु विलोकि मगलोग खग मृग प्रेम मगन रँगे रूप रंग ॥ ३ ॥ ६३॥(राग कल्याण) ॥ मुनिके संग विराजत वीर ॥ काक पच्छ धर कर कोदंड सर सुभग पीतपट कटि तूणीर ॥ १ ॥ वदन इंदु अंभोरुह लोचन श्याम गौर शोभा सदन शरीर ॥ पुलकत ऋपि अवलोकि अमित छवि उर न समाति प्रेमकी भीर ॥ २ ॥ खेलत चलत करत मग कौतुक विलवँत सरित सरोवर तीर ॥ तोरत लता सुमन सरसीरुह पियत सुधा सम शीतल नीर ॥ ३ ॥ बैठत विमल शिलनि विटपनि तर पुनि पुनि

वर्णत छाँह समीर॥ देखत नटत केकिकल गावत मधुप मराल को-
किला कीर ॥ ४ ॥ नयननि को फल लेत निरखि खग मृग सुरभी
ब्रज वधू अहीर ॥ तुलसी प्रभुहि देत सब आसन निज निज मन
मृदु कमल कुटीर ॥ ५ ॥ ५४ ॥ (राग कान्हरा) ॥ सोहत मग मुनि
सँग दोउ भाई ॥ तरुणतमाल चारु चंपक छवि कवि सुभाय कहि
जाई ॥ १ ॥ भूषण वसन अनुहरत अंगनि उमगति सुंदरताई ॥
वदन मनोज सरोज लोचननि रहीहै लोभाइ लोनाई ॥ २ ॥ अंश-
नि धनु शर कर कमलनि कटि कसेहैं निखंग वनाई ॥ सकल भुवन
शोभा सरवसु लघु लागत निरखि निकाई ॥ ३ ॥ महि मृदु पथ घ-
न छाँह सुमन सुर वरषि पवन सुखदाई ॥ जल थलरुह फल फूल
सलिल सब करत प्रेम पहुनाई ॥ ४ ॥ सकुच सभीत विनीत साथ
गुरु बोलनि चलनि सुहाई ॥ खग मृग विचित्र विलोकत विच विच
लसत ललित लरिकाई ॥ ५ ॥ विद्यादई जानि विद्यानिधि विद्य
हु लही बड़ाई ॥ ख्याल दली ताडुका देखि ऋषि देत अशीश अ-
घाई ॥ ६ ॥ बूझत प्रभु सुरसरि प्रसंग कहि निज कुल कथा सुनाई॥
गाधिसुवनसनेह सुख संपति उर आश्रम न समाई ॥ ७ ॥ वन-
वासी वटु यती योगि जन साधु सिद्ध समुदाई ॥ पूजत पेखि प्रीति
पुलकत तनु नयन लाभ लुटिपाई ॥ ८ ॥ मख राख्यो खल दल
दलि भुजबल बाजति विबुध बधाई ॥ नित पथ चरित सहित
तुलसी चित बसत लषण रघुराई ॥ ९ ॥ ५५ ॥ मंजुल मंगलमय
नृप ढोटा ॥ मुनि मुनितिय मुनिशिशु विलोकि कहैं मधुर म-
नोहर जोटा ॥ १ ॥ नाम रूप अनुरूप वेष वय राम लषण लाल
लोने ॥ इनते लहीहै मानो घन दामिनि द्युति मनसिज मरक-
तसोने ॥ २ ॥ चरण सरोज पीतपट कटितट तूण तीर धनुधारी ॥
केहरिकंध काम करि करवर विपुल बाहुबल भारी ॥ ३ ॥ दूषण
रहित समय सम भूषण पाइहु अंगनि सोहैं ॥ नवराजीव न-
यन दूषण रिपुवदन मदन मन मोहैं ॥ ४ ॥ शिरनि शिखंड सुम-
न दल मंडन बाल सुभाय बनाये ॥ केलि अंकतनु रेणु पंकजनु

प्रगटत चरित चोराये ॥ ५ ॥ मखराखिबे लागि दशरथ सों माँगि आश्रमहिं आने ॥ प्रेम पूजि पाहुने प्राणप्रिय गाधिसुवन सनमाने ॥ ॥ ६ ॥ साधन फल साधक सिद्धनिके लोचन फल सबहीके ॥ सकल सुकृत फल मातु पिताके जीवन धन तुलसीके ॥ ७ ॥ ५६ ॥ राग सूहो ॥ राम पदपदुम परागपरी ॥ ऋषितिय तुरत त्यागि पाहन तनु छबिमय देहधरी ॥ १ ॥ प्रबल पाप पति शाप दुसह दव दारुण जरनि जरी ॥ कृपा सुधासींची बिबुध बेलि ज्यौं फिरि सुख फरनि फरी ॥ २ ॥ निगम अगम मूरति महेश मति युवति बराय वरी ॥ सोइ मूरति भइ जानि नयन पथ एकटक ते न टरी ॥ ३ ॥ वरणति हृदय स्वरूप शील गुण प्रेम प्रमोदभरी ॥ तुलसिदास ऐसे केहि आरतकी आरति प्रभु न हरी ॥ ॥ ४ ॥ ५७ ॥ परत पद पंकज रज ऋषिरवनी ॥ भईहै प्रगट अति दिव्य देह धरि मानो त्रिभुवन छवि छवनी ॥१॥ देखि बड़ो आचरज पुलकि तनु कहत मुदित मुनि भवनी ॥ जो चलिहैं रघुनाथ पयादेहि शिला न रहिहि अवनी ॥२॥ परसि जो पाँय पुनीत सुरसरी सोहै तीनि पथ गवनी ॥ तुलसिदास तेहि चरण रेणुकी महिमा कहै मति कवनी ॥ ३ ॥ ५८ ॥ भूरि भाग्य भाजनु भई ॥ रूपराशि अवलोकि बंधु दोउ प्रेम सुरंग रई ॥ १ ॥ कहा कहैं केहि भाँति सराहैं नहिं करतूतिनई ॥ बिनुकारण करुणाकर रघुवर केहि केहि गति न दई॥ २॥ करि वहु विनय राखि उरमूरति मंगल मोद मई ॥ तुलसी ह्वै विशोकपति लोकहि प्रभुगुण गनतगई ॥ ॥ ३ ॥ ५९ ॥ (राग कान्हरा) ॥ कौशिकके मखके रखवारे ॥ नाम राम अरु लषण ललित अति दशरथराज दुलारे॥१॥मेचक पीत कमल कोमल कल काकपच्छ धरवारे ॥ शोभा सकल सकेलि मदन विधि सुकर सरोज सँवारे॥२॥सुभग समूह सुबाहु सरिसखल समर शूर भटभारे ॥ केलि तूण धनुवाण पाणि रण निदरि निशाचर मारे ॥ ३ ॥ ऋषि तियतारि स्वयंवर पेखन जनकनगर पगुधारे ॥ नग नरनारि निहारत सादर कहि बड़भाग्य हमारे ॥ ४ ॥ तुलसी

सुनत एक एकनिसों यों चलत विलोक निहारे ॥ मूकनि वचन लाहु मानो अंधनि लहेहैं विलोचनतारे ॥ ५ ॥ ६० ॥ (राग ठोड़ी) आए मुनि कौशिक जनक हरषानेहैं ॥ बोलि गुरु भूसुर समाज सों मिलन चले जानि बड़े भाग्य अनुराग अकुलानेहैं ॥ १ ॥ नाइ शीश पगनि अशीश पाइ प्रमुदित पांवड़े अरघदेत आदरसों आनेहैं ॥ अशन बसन वासकै सुपास सब विधि पूजि प्रिय पाहुने सुभाय सनमानेहैं ॥ २ ॥ विनय बड़ाई ऋषिराजऊ परस्पर करत पुलकि प्रेम आनँद अघानेहैं ॥ देखे राम लषण निमेषैविथकित भई प्राणहुँते प्यारे लागे विनु पहिचानेहैं ॥ ३ ॥ ब्रह्मानंद हृदय दरश सुख लोयननि अनुभए उभय सरस राम जाने हैं ॥ तुलसी विदेहकी सनेहकी दशा सुमिरि मेरे मन माने राउ निपटसयानेहैं ॥ ४ ॥ ६१ ॥ (राग मलार) ॥ कोशलरायके कुँअरोटा ॥ राजतरुचिर जनकपुर पैठत श्याम गौर नीके जोटा ॥ १ ॥ चौतनी शिरनि कनक कली काननि कटिपट पीत सोहाये ॥ उरमणि गाल विशाल विलोचन सीय स्वयंवर आए ॥ २ ॥ वरणि न जात मनहिं मन भावत सुभग अवहिं वय थोरी ॥ भई हैं मगन विधुवदन विलोकत वनिता चतुर चकोरी ॥ ३ ॥ कहँ शिवचाप लरिकवनि वूझत विहँसि चितै तिरछौहैं ॥ तुलसी गलिन भीर दरशन लगि लोग अटनि अवरोहैं॥४॥६२॥एअवधेशके सुत दोऊ-चढ़ि मंदिरनि विलोकत सादर जनक नगर सव कोऊ ॥ १ ॥ श्याम गौर सुंदर किशोरतनु तूण वाण धनुधारी ॥ कटि पट पीत कंठ मुक्तामणि भुज विशाल वलभारी ॥२॥ मुखमयंक सरसीरुह लोचन तिलक भाल टेढ़ी भौंहैं॥ कल कुंडल चौतनी चारु अति चलत मत्त गज गौंहैं ॥३॥ विश्वामित्र हेतु पठए नृप इन्हहिं ताड़ुका मारी ॥ मखराख्यो रिपुजीति जान जग मग मुनि वधू उधारी ॥४॥ प्रिय पाहुने जानि नरनारिन नयननिअयन दये॥तुलसिदास प्रभु देखि लोग सव जनक समान भये ॥५॥६३ ॥ (राग ठोड़ी)॥ वूझनु जनक नाथ ढोटा दोउ काकेहैं॥ तरुण तमाल चारु चंपक वरणतनु कौने

बड़े भागीके सुकृत परि पाकेहैं ॥ १ ॥ सुखके निधान पाये हियके पिधानलाये ठगकेसे लाडू खाये प्रेम मधु छाकेहैं ॥स्वारथ रहित परमारथी कहावतहे भे सनेह विवश विदेहताविवाकेहैं ॥ २ ॥ शील सुधाके अगार सुखमाके पारावार पावत न पैरपार पैरि पैरि थाकेहैं॥ लोचन ललकिलागे मन अति अनुरागे एक रसरूप चित सकल सभाकेहैं ॥ ३ ॥ जिय जिय जोरत सगाई राम लषण सों आपने आपने भाँयँ जैसे भाय जाकेहैं॥प्रीतिको प्रतीतिको सुमिरिवेको सेइवेको शरणको समरथ तुलसीहुताकेहैं ॥४।६४ ॥ ए कौन कहाँते आए ॥ नील पीत पाथोज वरण मन हरण सुभाय सुहाए ॥ १ ॥ मुनिसुत किधौं भूप बालककिधौं ब्रह्म जीव जग जाए ॥ रूप जलधिके रतन सुछवि तिय लोचन ललित ललाये ॥ २ ॥ किधौं रवि सुवन मदन ऋतुपति किधौं हरि हर वेष बनाए ॥ किधौं आपने सुकृत सुरतरुके सुफल रावरेहि पाये ॥ ३ ॥ भए विदेह विदेहनेह वश देह दशा विसराए ॥ पुलक गात न समात हरष हिय सलिल सुलोचन छाए ॥ ४ ॥ जनक वचन मृदु मंजु मधु भरे भगति कौशिकहि भाये ॥ तुलसी अति आनंद उमगि उर राम लषण गुण गाये ॥ ५।६५ ॥ कौशिक कृपालुहूको पुलकित तनु भो ॥ उमगत अनुराग सभाके सराहे भाग देखि दशा जनक की कहिवेको मनु भो ॥ १ ॥ प्रीतिके न पातकी दिएहूँ शाप पाप बड़ो मख मिस मेरो तव अवध गवनुभो ॥ आशहूते प्यारे सुत माँगे दिये दशरथ सत्यसिंधुसोच सहे शूनो सो भवनुभो ॥ २ ॥ काक शिखा शिर करकेलि तूण धनु शर बालक विनोद यातुधाननि सो रनुभो ॥ बूझत विदेह अनुराग आचरज वश ऋषिराज जाग भयो महाराज अनुभो ॥ ३ ॥ भूमिदेव नरदेव सचिव परसपर कहत हमको सुरतरु शिवधनु भो ॥ सुनत राजाकी रीति उपजो प्रतीति प्रीति भाग तुलसीके भले साहेबको जनुभो ॥ ४।६६ ॥ चारयो भले बेटा देव दशरथ रायके ॥ जैसे राम लषण भरत रिपुहन तैसे शील शोभा सागर प्रभाकर प्रभायके ॥ १ ॥ ताड़का सँहारि मखराखे नीके

पाले व्रत कोटि कोटि भटकिए एक एक घायके ॥ एकबाण वेगही उड़ाने यातुधान जात सूख गए गातहैं पतइया भये वायके ॥ २॥ शिलाछोर छुवत अहल्या भई दिव्य देह गुण पेखे पारसके पंक-रुह पायके ॥ रामके प्रसाद गुरु गौतम खसम भये रावरेहु सता-नंद पूत भये मायके ॥ ३ ॥ प्रेम परिहास पोख वचन सरसपर क-हत सुनत सुख सबही सुभायके॥तुलसी सराहै भाग कौशिक जनक जूके विधिके सुढर होत सुढर सुदायके ॥ ४।६७ ॥ एदोऊ दशरथके वारे॥नामराम घनश्याम लषण लघु नखशिख अंग उज्यारे।१।निज हित लागि माँगि आने मैं धर्मसेतु रखवारे॥धीर वीर विरुदैत बाँकु-रे महाबाहु बल भारे ॥ २ ॥ एक तीर तकि हती ताड़का किए सु-र साधु सुखारे ॥ यज्ञ राखि जग साखि तोषि ऋषि निदरि निशाचर मारे ॥ ३ ॥ मुनि तिय तारि स्वयंवर पेखन आए सुनि वचन ति-हारे ॥ एउ देखि हैं पिनाकु नेकु जेहि नृपति लाज ज्वर जारे ॥ ॥ ४ ॥ सुनि सानंद सराहि सपरिजन बारहिं बार निहारे ॥ पूजिस-प्रेम प्रशंसि कौशिकहि भूपति सदन सिधारे ॥ ५ ॥ सोचत सत्य सनेह विवश निशि नृपहि गनत गयतारे ॥ पठये बोलि भोर गुरुके सँग रंगभूमि पगु धारे ॥ ६ ॥ नगर लोग सुधिपाइ मुदित सबही सब काज विसारे ॥ मनहुँ मघा जल उमगि उदधि रुख चले नदी नदनारे ॥७॥ ए किशोर धनु घोर बहुत विलखात विलोकि निहा-रे ॥ टरचो न चाप तिन्हते जिन्ह सुभटनि कौतुक कुधर उखारे ॥ ८ ॥ एजाने बिनु जनक जानियत कारि पण भूप हँकारे ॥ नत-रु सुधासागर परिहरि कत कूप खनावत खारे ॥ ९ ॥ सुखमा शी-ल सनेह सानि मानो रूप विरंचि सँवारे ॥ रोम रोम पर सोम काम शत कोटि वारि फिरि डारे ॥ १० ॥ कोउ कहै तेज प्रताप पुंज चितये नहिं जात भिआरे ॥ छुअत शरासन सलभ जरेगो ये दिन-कर वंश दियारे॥११॥एक कहै कछु होउ सुफल भए जीवन जनम हमारे ॥ अवलोके भरि नयन आजु तुलसीके प्राणपियारे ॥ १२ ॥ ॥ ६८ ॥ जनक विलोकि बार बार रघुवरको ॥ मुनि पद शीश नाय

आयसु अशीश पाई एई बातै कहत गवन कियो घरको ॥ १ ॥ नींदन परति राति प्रेम पण एक भाँति सोचत सकोचत विरंचि हरि हर-को॥तुम्हते सुगम सब देव देखिवेको अवजस हंस किए जोगवत युग परको ॥ २ ॥ ल्याये संग कौशिक सुनाये कहि गुणगण आए देखि दिनकर कुल दिनकरको ॥तुलसी तरु सनेहको सुभाउ वाउ मानो चलदलको सो पात करै चितचरको ॥३॥६९ ॥ (राग केदार) ॥ रंग भूमि भोरेंही जाइकै ॥ राम लषण लखि लोग लूटिहैं लोचन लाभ अघाइकै ॥१ ॥ भूप भवन घर घर पुर बाहर इहैं चरचारही छाइकै मगन मनोरथ मोद नारि नर प्रेम विवश उठैं गाइकै ॥ २ ॥ सो-चत विधि गति समुझि परस्पर कहत वचन विलखाइकै ॥ कुँवर किशोर कठोर शरासन असमंजस भयो आइकै ॥ ३ ॥ सुकृत सँभारि मनाइ पितर सुर शीश ईशपद नाइकै ॥ रघुवर कर धनु भंग चहत सब अपनो सो हितु चितु लाइकै ॥ ४ ॥ लेत फिरत कण सुई शकुन शुभ बूझत गणक बोलाइकै॥ सुनि अनुकूल मुदित मन मानहुँ धरत धीरजहि धाइकै ॥ ५ ॥ कौशिक कथा एक एक-निसो कहत प्रभाउ जनाइकै ॥ सीय राम संयोग जानियत रच्यौ विरंचि बनाइकै ॥ ६ ॥ एक सराहि सुबाहु मथन वर वाहु उछाह ब-ढ़ाइकै॥ सानुज राज समाज विराजिहैं रामपिनाक चढ़ाइकै ॥ ७॥ब-ड़ी सभा बड़ो लाहु बड़ो यश बड़ी बड़ाई पाइकै॥ को सोहिहै और को लायक रघुनायकहि विहायकै ॥ ८ ॥ गवनिहैंगँ वहि गवाँइ गरव गृह नृप कुल बलहि लजाइकै ॥ भली भाँति साहब तुलसीके चलिहैं व्याहि बजाइकै ॥ ९ ॥७० ॥ (रागठोड़ी) ॥ भोर फूल बीनवेको गए फुलवाई हैं ॥ शीशनि ठेपारे उपवीत पीत पट कटि दोना वाम करनि सलोने भेस वाई हैं ॥१॥ रूपके अगार भूपके कुमार सुकुमार गुरुके प्राणअधार संग सेवकाई हैं ॥ नीच ज्यों टहल करें राखे रुख अनुसरे कौशिक से कोहीवश किये दुहु भाई हैं॥२॥स-खिन सहित तेहि औसर विधि संयोग गिरिजाजू पूजिवेको जानकीजू

आईहैं ॥ निरखि लषण राम जाने ऋतुपति काम मोहिमानो मदन मोहनी मूड़नाई हैं ॥ ३ ॥ राघोजू श्रीजानकी लोचन मिलिवेको मोद कहिवेको जोगुनमैं वातै सी बनाईहैं ॥ स्वामी सीय सखिन्ह लखनहुँ तुलसीको तैसो तैसो मन भयो जाकी जैसिये सगाईहैं ॥ ४ ॥ ॥ ७१ ॥ पूजि पार्वती भले भाय पाँय परिकै ॥ सजल सुलोचन शिथिलतनु पुलकित आवै न वचन मनुरह्यो प्रेम भरिकै ॥ १ ॥ अंतर्यामिनि भव भामिनि स्वामिनि सोंहो कही चहौं वात मातु अंत तौहौं लरिकै॥ मूरति कृपालु मंजु माल दै वोलत भई पूजोमन कामना भावतो वरुवरिकै ॥२॥ राम कामतरु पाइ वेलि ज्यों वोडी बनाइ माग कोखि तोखि पोषि फैलि फूलि फरिकै ॥ रहौंगी कहौंगी तव साँची कही अंबासिय गहे पाँयहै उठाय माथे हाथ धरिकै॥३॥ मुदित अशीश सुनि शीश नाइ पुनि पुनि विदाभई देवी सों जननि डर डरिकै ॥ हरषीं सहेली भयो भावतो गावती गीत गौनीभवन तुलसी प्रभुको हियो हरिकै ॥ ४ ॥ ७२ ॥ रंगभूमि आए दशरथ के किशोरहैं ॥ पेखनो सो पेखन चलेहैं पुर नर नारि वारे बूढ़े अंध पंगु करत निहोरहैं ॥ १ ॥ नील पीत नीरज कनक मरकत घन दामिनिवरणतनु रूपके निचोर हैं॥सहज सलोने राम लषण ललित नाम जैसे सुने तैसेई कुँवर शिरमोरहैं ॥२॥ चरण सरोज चारु जंघा जानु ऊरू कटि कंधर विशाल वाहु बड़े वरजोरहैं ॥ नीकेकै निषंग कसे कर कमलनि लसै वाण विशिपासन मनोहर कठोरहैं ॥ ३ ॥ काननि कनकफूल उपवीत अनुकूल पियरे दुकूल विलसत आछे छोरहैं ॥ राजिवनयन विधुवदन टेपारे शिर नख शिख अंगनि ठगौरी ठौर ठौरहैं ॥ ४॥ सभासरवर लोक कोकनद कोकगण प्रमुदित मन देखि दिनमणि भोरहैं ॥ अवुध असैलेमन मैले महिपाल भये कछुक उलूक कछु कुमुद चकोरहैं ॥ ५॥ भाई सों कहत बात कौशिकहि सकुचात बोल घन घोरसे वोलत थोर थोरहैं ॥ सन्मुख सबहि विलोकत सबहि नीके कृपासों हेरत हँसि तुलसीकी ओरहैं ॥ ६।७३॥एई राम लषणजे मुनि सँग आएहैं॥चौतनी चोलना

काछे सखि सोहैं आगे पाछे आछे हुते आछे आछे आछे भाय भा-येहैं॥१॥साँवरे गोरे शरीर महाबाहु महावीर कटि तूण तीरधरे धनुष सुहायेहैं॥देखत कोमल कल अतुल विपुल बल कौशिक कोदंड कला कलित सिखाएहैं ॥ २ ॥ इन्हहीं ताडका मारी गौतमकी तिय तारी भारी भारी भूरि भट रण विचलायेहैं ॥ ऋषि मख रखवारे द-शरथके दुलारे रंगभूमि पगुधारे जनक बुलायेहैं ॥ ३ ॥ इन्हकेवि-मल गुण गणत पुलकित तनु सतानंद कौशिक नरेशहि सुनायेहैं॥ प्रभुपद मन दिये सो समाज चित्त किये हुलसि हुलसिहिये तुलसिहुं गायेहैं॥४।७४॥(राग कान्हरा) ॥सीय स्वयंवरु माई दोउ भाई आ-ए देखन ॥ सुनत चलीं प्रमदा प्रमुदित मन प्रेम पुलकित नयनहुँ मदन मंजुल पेखन ॥ १ ॥ निरखि मनोहरताई सुख पाई कहैं एक एक सों भूरि भाग हम धन्य आलीए दिन अखन॥ तुळसीसह-जसनेह सुरँगसब सोसमाज चित चित्रसारलागी लेखन ॥ २ ७५॥ (राग गौरी) राम लषण जब दृष्टि परेरी॥अवलोकत सब लोग जनक पुर मानो विधि विविध विदेह करेरी ॥ १ ॥ धनुषयज्ञ कमनीय अवनि तल कौतुकही भये आय खरेरी ॥ छवि सुरसभा मनहुँ मन-सिजके कलितकलपतरु रूख फरेरी ॥ २॥ सकल काम वरषत मु-ख निरखत करषत चित हित हरप भरेरी ॥ तुलसी सबै सराहत भूपहि भले पैत पासे सुढर ढरेरी ॥ ३ ॥ ७६ ॥ नेकु सुमुखि चितलाइ चितौरी ॥ राजकुँवर मूरति रचिबेकी रु-चि सुविरंचि श्रम कियो है कितौरी ॥ १ ॥ नख शिप सुंदरता अवलोकत कह्यो न परत सुख होत जितौरी ॥ साँवर रूप सुधा भरिबे कहँ नयन कमल कल कल सरि तौरी ॥ २ ॥ मेरे जान इन्हहिं बोलिबे कारण चतुर जनक ठयो ठाट इतोरी ॥ तुलसी प्रभु भंजिहैं शंभु धनु भूरिभाग्य सिय मातु पितौरी ॥ ३ ।७७॥ (राग सारंग)॥ जब ते राम लषण चितयेरी ॥ रहे एकटक नर नारि जन-कपुर लागत पलक कलप वितयेरी ॥ १ ॥ प्रेम विवश माँगत महेश सों देखतही रहिए नितयेरी ॥ कै ए सदा बसहु इन्ह नयन-

न्हि कै ए नयन जाहु जित एरी ॥ २ ॥ कोउ समुझाइ कहै किन भूपहि बड़े भाग्य आए इत येरी ॥ कुलिश कठोर कहाँ शंकर धनु मृदु मूरति किशोर कित येरी ॥ ३ ॥ विरचत इन्हहिं बिरंचि भुवन सब सुंदरता खोजत रितयेरी ॥ तुलसिदासते धन्य जनम जन मन क्रम वच जिन्हके हित येरी ॥ ४ ॥ ७८ ॥ सुन सखि भूपति भलोइ कियोरी ॥ जेहि प्रसाद अवधेश कुवँर दोउ नगर लोग अवलोकि जियोरी ॥ १ ॥ मानि प्रतीति कहे मेरे तैं कत संदेह वशकरति हियोरी ॥ तौलौ है यह शंभु शरासन श्रीरघुवर जौलों न लियोरी ॥ २ ॥ जेहिं विरंचिरचि सीय सँवारी औ रामहिं ऐसो रूप दियोरी ॥ तुलसिदास तेहि चतुर विधाता निजकर यह संयोग सियोरी ॥ ३ ॥ ७९ ॥ अनुकूल नृपहि शूलपानिहैं ॥ नीलकंठ कारुण्यसिंधु हर दीनबंधु दिनदानिहैं ॥ १ ॥ जो पहिलेही पिनाक जनक कहँ गए सौंपि जिय जानिहैं ॥ बहुरि त्रिलोचन लोचन के फल सबहि सुलभ किये आनिहैं ॥ २ ॥ सुनियत भव भावते रामहैं सिय भावती भवानिहैं ॥ परिखत प्रीति प्रतीति पयज प्रणरहे काज ठटु ठानिहैं ॥ ३ ॥ भये विलोकि विदेह नेहवश बालक विनु पहिचानिहैं ॥ होत हरे होने बिरवनि दल सुमति कहति अनुमानिहैं ॥ ४ ॥ देखियत भूप भोरकेसे उड़गण गरत गरीब गलानिहैं ॥ तेज प्रताप बढ़त कुँवरनको यदपि सकोची बानिहैं ॥ ५ ॥ वय किशोर बरजोर बाहुबल मेरु मेलि गुण तानिहैं ॥ अबशिराम राजीव विलोचन शंभु शरासन भानिहैं ॥ ६ ॥ देखिहैं व्याह उछाह नारि नर सकल सुमंगल खानिहैं ॥ भूरिभाग्य तुलसीतेउ जे सुनिहैं गाइहैं बखानिहैं ॥७॥८०॥ (राग केदारा) ॥ रामहि नीके कै निरखिसुनयनी॥ मनसहु अगम समुझि यह अवसरु कत सकुचति पिकवयनी ॥ १ ॥ बड़े भाग्य मख भूमि प्रगट भइ सीय सुमंगल अयनी ॥ जा कारण लोचन गोचर भइ मूरति सब सुख दयनी ॥ ॥२॥ कुलगुरु तियके मधुर वचन सुनि जनक युवति मति पयनी ॥ तुलसी शिथिल देह सुधि बुधि करि सहज सनेह विपयनी॥३॥८१॥

मिलो वरु सुंदर सुंदरि सीतहि लायकु साँवरो सुभग शोभाहू को परम शृंगारु ॥ मनहुँ को मन मोहै उपमाको कोहै सो है सुखमासागर संग अनुज राजकुमारु ॥ १ ॥ ललित सकल अंग तनु धरे की अनंग नैननिको फल कैधौं सियको सुकृत सारु॥ शरद सुधा सदन छविहि निंदै वदन अरुण आयत नवनलिन लोचन चारु ॥ २ ॥ जनक मनकी रीति जानि विरहीत प्रीति ऐसी औ मूरति देखे रह्यो पहिलो विचारु ॥ तुलसी नृपहि ऐसो कहि न बुझावैकोउ प्रण औ कुँवर दोउ प्रेमकी तुलाधौं तारु ॥ ३ ॥ ॥ ८२ ॥ देखि देखिरी दोउ राजसुवन ॥ गौर श्यामसलोने लोने लोने लोयननि जिन्हकी शोभाते सोहै सकल भुवन ॥ १ ॥ इन्हहि ताडका मारी मग मुनि तिय तारी ऋषि मख राख्यो रण दलेहैं दुवन॥तुलसी प्रभुको अव जनक नगर नभ सुयश विमल विधु चहत उअन॥२॥८३॥ राग टोड़ी ॥ राजा रंगभूमि आज वैठे जाइ जाइकै ॥ आपने आपने थल आपने आपने साज आपनी आपनी बरवानक वनाइकै॥१॥कौशिक सहित राम लषण ललित नाम लरिका ललाम लोने पठए बुलाइकै॥दरशलालसा वश लोग चले भाय भले विकसत मुख निकसत धाइ धाइकै ॥ २ ॥ सानुज सानंद हिये आगे हैं जनक लिये रचना रुचिर सव सादर देखाइकै ॥ दिये दिव्य आसन सुपास सावकाश अति आछे आछे वीछे वीछे विछौना विछाइकै ॥३॥ भूपति किशोर दुहुँ ओर वीच मुनिराउ देखिवेको दाउ देखो देखिवो विहाइकै॥उदैशैल सोहैं सुन्दरकुँवर जोहैं मानौ भानु भोर भूरि किरनि छिपाइकै॥४॥कौतुक कोलाहल निसान गान पुर नभ वरपत सुमन सुविमान रहे छाइकै ॥ हित अनहित रत विरत विलोकि वाल प्रेम मोद मगन जनम फल पाइकै ॥ ५ ॥ राजाकी रजाइ पाइ सचिव सहेली धाइ सतानंद ल्याए सिय सिविका चढ़ाइकै ॥ रूप दीपिका निहारि मृग मृगी नर नारि विथके विलोचन निमेपै विसराइकै ॥ ६ ॥ हानि लाहु अनख उछाहु वाहु वलकहि वंदी वोले विरद अकस उपजाइकै ॥ द्वीप द्वीपके महीप आये सुनि पैज प्रण

कीजै पुरुषारथको अवसर भो आइके ॥ ७ ॥ आनाकानि कठ हँसी मुहाँ चाहीं होन लगी देखि दशा कहत विदेह बिलखाइकै॥ घरनि सिधारिये सुधारिये आगिले काज पूजि पूजि धनु कीजै बिजय बजाइके ॥ ८ ॥ जनक वचन छुए बिरवालजारूकेसे वीर रहे सकल सकुचि शिरनाइके॥ तुलसी लषण माषे रोषे राखे रामरुख भाषे मृदु परुष सुभायन रिसाइके ९॥८४भूपति विदेह कही नीकिये जो भईहे॥बड़ेहीं समाज आजु राजानि की लाज पति हाँकि आँक एकही पिनाकछीनिलईहे ॥१ ॥मेरो अनुचित न कहत लरिकाईं वश प्रण परमिति और भाँति सुनि गईहे ॥ नतरु प्रभु प्रताप उतरु चढाएँ चाप देतो पै देखाइ वल फल पापमईहे ॥ २ ॥ भूमिके हरैया उखरइया भूमि धरनिके विधि विरचे प्रभाउ जाको जग जईहे ॥ बिहँसि हिये हरषि हटके लषण राम सोहत सकोच शीलनेहनारि नईहे ॥ ३ ॥ सहमी सभा सकल जनक भए विकल राम लखि कौशिक अशीश आज्ञा दई है ॥ तुलसी सुभाय गुरुपाँय लागि रघुराज ऋषिराजकी रजाइ माथे मानिलई है ॥ ४ ॥ ८५ ॥ सोचत जनक पोच पेच परिगईहे ॥जोरि कर कमल निहोरि कहैं कौशिक सों आयसुभो रामको सो मेरे दुचितईहे ॥ १ ॥ वाण यातुधान पति भूप द्वीप सातहूंके लोकप विलोकत पिनाक भूमिलईहे ॥ जो तिलिंग कथासुनी जाको अंत पाये विनु आये विधि हरि हारि सोई हाल भईहे ॥ २ ॥ आपुही विचारिये निहारिये सभाकी गति वेद मर्याद मानौ हेतु वादहई है॥इन्हके जितैहैं मन शोभा अधिकानी तन मुखनकी सुखमा सुखद सरसईहे ॥३॥ रावरो भरोसोवल कैहैं कोऊ किये छल कैधौं कुलके प्रभाव कैधौं लरिकईहे ॥ कन्याकल कीरति विजय विश्वकी वटोरि कैधौं करतार इन्हहीं को निरमईहे॥४॥प्रणकी न मोहिं न विशेषि चिंता सीताहूकी लुनिहै पै सोइ सोई जोईजे हिवईहे ॥रहे रघुनाथकी निकाई नाकी नीके नाथ हाथसों तिहारे करतूति जाकी नईहे॥५॥कहि साधु साधु गाधि सुवन सराहे राउ महाराज जानि जिय ठीक भली दईहै॥हरषे लषण हरषाने बिलखाने लोग तुल-

सी मुदित जाको राजाराम जईहैं ॥६॥ ८६॥ सजन सराहैं जो जनक वातकहींहै ॥ रामहि सोहानी जानि मुनिमन मानी सुनि नीच महिपावली दहन विनुदहीहै ॥ १ ॥ कहैं गाधिनंदन मुदित रघुनंदन सों नृपगति अगहु गिरा न जाति गहीहै॥ देखे सुने भूपति अनेक झूठे झूठे नाम साँचे तिरहुतिनाथ साखी देत महीहै ॥ २ ॥ राग उविराग भोग योग जोगवत मनु योगी जाग वालिक प्रसाद सिद्धि लहीहै ॥ ताते न तरनि ते न सीरे सुधाकरहूतें सहज समाधि निरुपाधि निरवहीहै ॥ ३ ॥ ऐसउ अगाध वो धरावरे सनेह वश विकल विलोकियत दुचितई सहीहै ॥ कामधेनु कृपा हुलसानी तुलसीश उर प्रण शिशु हेरि मर्याद वाँधी रहीहै ॥ ४ ॥ ८७ ॥ ऋषिराज राजा आजु जनक समानको ॥ आपु यहि भाँति प्रीति सहित सराहियत रागी औ विरागी वड़भागी ऐसो आनको ॥ १ ॥ भूमि भोग करत अनुभवत योग सुख मुनि मन अगम अलख गति जानको ॥ गुरु हर पद नेहु गेह वसि भो विदेह अगुण सगुण प्रभु भजन सयानको ॥ २ ॥ कहनि रहनि एक विरति विवेक नीति वेद वुध संमत पथीन निरवानको ॥ विनु गुनकी कठिन गाँठि जड़ चेतन की छोरी अनायास साधु सोधक अयानको ॥ ३ ॥ सुनि रघुवीरकी वचन रचनाकी रीति भए मिथिलेश मानो दीपक विहानको ॥ मिट्यो महा मोह जीको छूट्यो पोच शोच सीको जान्यो अवतार भयो पुरुष पुराणको ॥ ४ ॥ सभा नृप गुरु नर नारि पुर नभ सुर सव चितवत मुख करुणानिधान को ॥ एकहि एक कहत प्रगट एक प्रेम वश तुलसीश तोरिय शरासन इशानको ॥ ५ ॥ ८८ ॥ रागमारू ॥ सुनो भैया भूप सकल दैकान ॥ वज्ररेख गजदशन जनक प्रण वेद विदित जगजान ॥ १ ॥ घोर कठोर पुरारि शरासन नाम प्रसिद्ध पिनाकु ॥जो दशकंठ दियो वाँवो जेहिं हर गिरि कियो है मनाकु ॥ २ ॥ भूमि भाल भ्राजत न चलत सो ज्यों विरंचिको आँकु ॥धनु तोरै सोइ वरै जानकी राउ होइकी राँकु ॥ ३ ॥ सुनि आमरपि उठे अवनीपति लगे वचन जनु

तीर ॥ टरै न चाप करैं अपनो सो महा महाबलधीर ॥ ४ ॥ नमित शीश सोचहिं सलज्ज सब श्रीहत भए शरीर ॥ बोले जनक विलोकि सीय तन दुखित सरोष अधीर ॥ ५ ॥ सप्त द्वीप नव खंड भूमिके भूपति वृंद जुरे ॥ बड़ोलाभ कन्याकीरतिको जहँ तहँ महिप मुरे ॥ ६ ॥ डग्यौ न धनु जनु वीर विगत महि किधौं कहुँ सुभट दुरे ॥ रोषे लषण विकट भृकुटी करि भुज अरु अधर फुरे ॥ ७ ॥ सुनहु भानुकुल कमल भानु जो अब अनुशासन पावौं ॥ को वा पुरो पिनाकु मेलि गुण मंदर मेरु नवावों ॥ ८ ॥ देखौ निज किंकर को कौतुक क्यौं कोदंड चढावौं ॥ लैधावों भंजौं मृनाल ज्यौं तौ प्रभु अनुग कहावों ॥ ९ ॥ हरषे पुर नर नारि सचिव नृप कुँवर कहे बरबैन ॥ मृदु मुसकाइ राम बरज्यौ प्रिय बंधु नयनकी सैन ॥ १० ॥ कौशिक कह्यो उठहु रघुनंदन जगवंदन बलऐन ॥ तुलसिदास प्रभु चले मृगपति ज्यौं निज भगतनि सुखदैन ॥ ११ ॥ ॥ ८९ ॥ जबहिं सब नृपति निराशभए ॥ गुरुपद कमल वंदि रघुपति तब चाप समीप गए ॥ १ ॥ श्यामतामरसदाम वरण वपु उर भुज नयन विशाल ॥ पीत वसन कटि कलित कंठ सुंदर सिंधुर मणि माल ॥ २ ॥ कल कुंडल पल्लव प्रसून शिर चारु चौतनी लाल ॥ कोटि मदन छवि सदन वदन विधु तिलक मनोहर भाल॥ ॥ ३ ॥ रूप अनूप विलोकत सादर पुरजन राजसमाज ॥ लषण कह्यो थिरहोहिं धरनि धरु धरनि धरनि धर आज ॥ ४ ॥ कमठ कोल दिग दंति सकल अंग सजग करहु प्रभु काज ॥ चहतचपरि शिव चाप चढ़ावन दशरथको युवराज ॥ ५ ॥ गहि करतल मुनि पुलक सहित कौतुकहि उठाइलियो ॥ नृपगन मुखनि समेत नमित करि साजि सुख सवहि दियो॥६॥आकरष्योसिय मन समेत हरिहरष्यो जनक हियो॥भंज्यौ भृगुपति गर्व सहित तिहुँ लोक विमोह कियो ॥ ७॥भयो कठिनकोदंड कोलाहल प्रलय पयोद समान ॥ चौंके शिव विरंचि दिशिनायक रहे मूँदि कर कान ॥ ८ ॥ सावधानह्वै चढ़े विमानानि चले बजाइ निसान॥उमगि चल्यो आनंद नगर नभ जय

धुनि मंगल गान ॥९॥ विप्र वचन सुनि सखी सुआसिनि चलीं जानकिहिल्याइ ॥ कुँअर निरखि जयमाल मेलिउर कुँआरि रही सकुचाइ ॥ १० ॥ वरषहिं सुमन अशीशहिं सुर मुनि प्रेम न हृदय समाइ ॥ सीय रामकी सुंदरतापर तुलसिदास वलिजाइ ॥११॥९०॥ (राग मलार) ॥ जब दोउ दशरथ कुँअर विलोके ॥ जनक नगर नर नारि मुदित मन निरखि नयन पल रोके ॥ १ ॥ वय किसोर घन तडित वरनतनु नखशिख अंगलोभारे ॥ दैचितुकै हित लै सब छवि वितु विधि निज हाथ सँवारे ॥ २ ॥ संकट नृपहि सोच अति सीतहि भूप सकुचि शिरनाए ॥ उठे राम रघुकुल कल केहरि गुरु अनुशासन पाए ॥ ३ ॥ कौतुकहीं कोदंड खंडि प्रभु जय अरु जानकिपाई ॥ तुलसिदासकीरति रघुपतिकी मुनिन्ह तिहूँपुरगाई ॥ ४ ॥ ९१ ॥ राग टोड़ी ॥ मुनि पदरेणु रघुनाथ माथे धरीहै ॥ रामरुखनिरखि लषणकी रजाइ पाइ धराधराधरनि सुसावधान करीहै ॥ १॥ सुमिरि गणेश गुरु गौरि हर भूमि सुर सोचत सकोचत सकोची वानधरीहै ॥ दीनवंधु कृपासिंधु साहसिक सीलसिंधु सभाकी सकोच कुलहू की लाज परीहै ॥ २ ॥ पेषि पुरुषारथ परिखिप्रण प्रेमनेम सियहियकी विशेषि बड़ी खरभरीहै ॥ दाहिनो दियो पिनाकु सहमि भयो मनाकु महाव्याल विकल विलोकि जनुजरीहै ॥ ३ ॥ सुर हरषत वरषत फूल वार वार सिद्धि मुनि कहत शकुन शुभघरीहै ॥ रामवाहु विटप विसाल वोडी देखिअत जनक मनोरथ कलप वेलि फरीहै ॥ ४ ॥ लख्यौ न चढ़ावत नतानत नतोरतहूं घोर धुनि सुनि शिवकी समाधि टरीहै॥ प्रभुके चरित चारु तुलसी सुनतसुख एकही सुलाभ सवही की हानि हरी है॥५॥९२॥ ॥ (राग सारंग) ॥ राम कामरिपु चाप चढ़ायो ॥ मुनिहि पुलक आनंद नगर नभ निरखि निसान वजायो ॥ १ ॥ जेहि पिनाकु विनुनाक किये नृप सवहि विषाद वढ़ायो ॥ सोई प्रभुकर परशत टूटयौ जनु हुतो पुरारि पढ़ायो ॥ २ ॥ पहिराई जयमाल जानकी युवतिन्ह मंगल गायो ॥ तुलसी सुमनवरषि हरषे सुर सुयश तिहूँ पुर छायो ॥ ३ ॥ ९३ ॥ ॥ (राग टोडी) ॥ जनक मुदित मन

टूटत पिनाकके ॥ बाजेहैं बधावने सुहावने मंगल गान भयो सुख एकरस रानी राजा राँकके ॥ १ ॥ दुंदुभी बजाइ गाइ हरषि बरषि फूल सुरगण नाचैं नाच नायकहू नाकके ॥ तुलसी महीश देखे दिनरजनीश जैसे सूने परे सूनसे मनो मिटाये आँकके ॥२॥९४ ॥ लाजतो न साजि साज राजा राउ रोषेहैं ॥ कहा भव चाप चढ़ाए व्याह ह्वै है बड़े खाये बोलै खोलै सेल असि चमकत चोखेहैं ॥१॥ जानि पुर-जन त्रसे धीर दे लषण हँसे बल इन्हके पिनाक नीके नापे जोखेहैं ॥ कुलहि लजावैं बाल बालि स बजावैं गाल कैधौं क्रूर कालवश तम-कि त्रिदोषेहैं ॥ २ कुँवर चढ़ाई भौंहैं अबको विलोके सोहैं जहँ त-हँ भे अचेत खेत केसे धोखेहैं ॥ देखे नर नारि कहैं साग खाइ जाए माइ बाह पीन पाँवरनि पीना खाइ पोखेहैं ॥ ३ ॥ प्रमुदित मन लोक कोकनद कोकगण रामके प्रतापपर विशोच शरसोखेहैं ॥ तब के देखैया तोषे तबके लोगनि भले अबके सुनैया साधु तुलसीहुँ तोषे हैं ॥४॥९५॥जयमाल जानकी जलजकरलईहै॥सुमन सुमंगल शकुन की बनाइ मंजु मानहुँ मदनमाली आपु निरमई है॥१॥ राज रूपलखि गुरु भूसुर सुआसिनिन्हि समय समाजकी ठवनि भली ठई है॥ चलीगानकरत निसानबाजे गहगहे लहलहे लोयनसा नेह सरसई है ॥ २ ॥ हनिदेव दुंदुभि हरषि बरषत फूल सफल मनोरथ भो सुख सुचितई है ॥ पुरजन परिजन रानी राउ प्रमुदित मनसा अनूपराम रूप रंग रई है ॥ ३॥ सतानंदशिष सुनि पाँयपरि पहिराई माल सि-यपिय हिय सोहतसो भई है ॥ मानस ते निकसि विशाल सुत माल पर मानहुँ मरालपांति बैठी बनि गई है ॥ ४ ॥ हितनि को लाह की उछाहकी विनोद मोद शोभा की अवधि नहिं अब अधिकई है ॥ याते विपरीत अनहितनकी जानिलीबी गतिकहे प्रगट पुनि सखा सिखई है॥५॥निज निज वेद की सप्रेम योगक्षेममई मुदित अशीशवि-प्र विदुषनि दई है ॥ छवि तेहि कालकी कृपालु सीतादूलहकी हुल-सति हिए तुलसीके नितनई है॥६॥९६॥ (रागकेदारा)॥ लहुलोचन-ननि को लाहु ॥ कुँवर सुंदर साँवरो सखि सुमुखि सादर चाहु ॥ १ ॥

खंडि हरकोदंड ठाढ़े जानुलंबित बाहु ॥ रुचिर उर जयमाल राजति देतसुख सबकाहु ॥२॥ चितौचित हित सहित नख शिख अंग अंग निबाहु ॥ सुकृत निज सियरामरूप विरंचि मतिहि सराहु ॥ ३ ॥ मुदित मन वरवदन शोभा उदित अधिक उछाहु॥मनहुँ दूरि कलंक करि शशि समर सूद्यो राहु ॥ ४ ॥ नयन सुखमा अयनहरत सरोज सुंदरताहु ॥ बसत तुलसीदास उरपुर जानकीका नाहु ॥ ५ ॥१७ ॥

॥ (रागसारंग) ॥ भूपके भागकी अधिकाई ॥ टूटचौ धनुष मनोरथ पूज्यौ विधि सबबात बनाई ॥१॥ तबते दिन दिन उदै जनकको जबते जानकी जाई ॥ अब यहि व्याह सफल भयो जीवन त्रिभुवन विदित बड़ाई ॥ २ ॥ वारहि वार पहुनई एहैं राम लषण दोउ भाई ॥ यहि आनंद मगन पुरवासिन्ह देहदशा बिसराई ॥ ३ ॥ सादर सकल विलोकत रामहिं काम कोटि छविछाई ॥ यह सुखसमउ समाज एक मुख क्यों तुलसी कहै गाई ॥ ४ ॥ १८ ॥

(रागसोरठ)॥ मेरे बालक कैसे धौं मग निबाहगे ॥ भूख पियास शीत श्रम सकुचनि क्यों कौशिकहि कहहिंगे ॥ १ ॥ को भोरहिं उबटी अन्हवैहै काढ़ि कलेऊ देहै ॥ कोभूषण पहिराइ निछावरिकरि लोचन सुख लेहै ॥ २ ॥ नयन निमेषनि ज्यो जोगवैं नित पितु परिजन महँ नारी ॥ तेंपठये ऋषि साथ निशाचर मारन मख रखवारी ॥ ३ ॥ सुंदर सुठि सुकुमार सुकोमल काकपक्षधर दोऊ॥तुलसी निरखि हरषि उरलैहौं विधिहै है दिन सोऊ ॥४॥ ९९॥

ऋषिनृप शीश ठगौरिसी डारी ॥ कुलगुरु सचिव निपुण नेवनि अवरेव न समुझि सुधारी ॥ १ ॥ सिरस सुमन सुकुमार कुँवर दोउ शूर सरोष सुरारी ॥ पठए बिनहिं सहाय पयादेहि केलि बाण धनुधारी ॥ २ ॥ अति सनेह कातरि माताकहै लखि सखि वचन दुखारी ॥ वादिवीर जननी जीवन जग छत्र जाति गत भारी ॥३॥ जोकहि है फिरे राम लषण घर करि मुनिमख रखवारी॥सो तुलसी प्रियमोहिं लागि है ज्यों सुभाय सुतचारी॥ ॥४॥ १००॥

जबते लै मुनिसंग सिधाये ॥ राम लषणके समाचार सखि तबते कछुअ न पाए ॥ १ ॥ विनुपानहीं गमन फल भोजन

भूमिशयन तरुछाहीं ॥ सर सरिता जलपान शिशुनके साथ सु से-
वक नाहीं ॥२॥ कौशिक परमकृपालु परमहित समरथ सुखद सुचा-
ली ॥बालक सुठि सुकुमार सकोची समुझि सोच मोहिँ आली॥३॥
वचनसप्रेमसुमित्राके सुनि सब सनेह वश रानी ॥ तुलसी आइ भरत
तेहि औसर कही सुमंगलबानी ॥४॥१०१॥ सानुज भरत भवन उ-
ठिधाए॥ पितु समीप सब समाचार सुनि मुदित मातुपहँ आए॥१॥
सजल नयन तनु पुलक अधर फरकत लखि प्रीति सुहाई ॥ कौ-
शल्या लिए लाइ हृदय बलि कहौ कछु है सुधि पाई ॥ २ ॥ सता-
नंद उपरोहित अपने तिरहुति नाथ पठाए ॥ क्षेम कुशल रघुवीर
लषणकी ललित पत्रिका ल्याए ॥ ३ ॥ दलि ताडुका मारि निशि-
चर मख राखि विप्र तिय तारी॥दै विद्या लै गए जनकपुर हैं गुरु सं-
ग सुखारी ॥ ४ ॥ करि पिनाक पण सुता स्वयंबर सजि नृप कट-
क बटोरयो ॥ राजसभा रघुवर मृणाल ज्यों शंभु शरासन तोरयो ॥
॥ ५ ॥ यों कहि शिथिल सनेह बंधु दोउ अंब अंक भरि लीन्हे ॥
वार वार मुख चूमि चारु मणि वसन निछावरि कीन्हे ॥ ६ ॥ सुनत
सुहावनि चाह अवध घर घर आनंद बधाई ॥ तुलसिदास रनिवास
रहस वश सखी सुमंगल गाई ॥ ७ ॥ १०२ ॥ (राग कान्हरा) ॥
राम लषण सुधि आई बाजै अवध बधाई ॥ ललित लगन लिखि प-
त्रिका उपरोहितके कर जनक जनेश पठाई ॥ १ ॥ कन्या भूप
विदेह की रूपकी अधिकाई ॥ तासु स्वयंबर सुनि सब आए देश
देशके नृप चतुरंग बनाई ॥ २ ॥ पण पिनाक पविमेरु ते गुरुता
कठिनाई ॥ लोकपाल महिपाल बाणइत रावण सके न-
चाप चढाई ॥ ३ ॥ तेहि समाज रघुराजके मृगराज जगाई ॥ भंजि
शरासन शंभुको जग जय कल कीरति तिय तियमणि सिय पाई॥
॥ ४ ॥ पुर घर घर आनंद महा सुनि चाह सुहाई ॥ मातु मुदित
मंगल सजै कहै मुनि प्रसाद भये सकल सुमंगल माई ॥ ५ ॥ गुरु
आयसु मंडप रच्यो सब साज सजाई ॥ तुलसिदास दशरथ बरा-
त सजि पूजि गणेशहि चले निशान बजाई ॥ ६ ॥ १०३ ॥ (राग

केदारा) मनमें मञ्जु मनोरथ होरी ॥ सो हर गौरि प्रसाद एक ते कौशिक कृपा चौगुनो भोरी ॥ १ ॥ पण परिताप चाप चिंता निशि सोच सकोच तिमिर नहिं थोरी ॥ रविकुल रवि अवलोकि सभा सर हितचित वारिज वन विकसोरी ॥ २ ॥ कुँवर कुँवरि सब मंगलमूरति नृप दोउ धरम धुरंधर धोरी ॥ राज समाज भूरि भागी जिन लोचन लाहु लही एक ठोरी ॥ ३ ॥ व्याह उछाह राम सीताको सुकृत सकेलि विरंचि रच्योरी ॥ तुलसिदास जानै सोइ यह सुख जाके उर वसति मनोहर जोरी ॥ ४ ॥ १०४ ॥ राजति राम जानकी जोरी ॥ श्याम सरोज जलद सुंदर वर दुलहिनि तड़ित वरण तनु गोरी ॥ १ ॥ व्याह समय सोहति वितान तर उपमा कहुँ न लहति मति मोरी ॥ मनहुँ मदन मंजुल मंडप महँ छवि शृंगार शोभा सोउ थोरी ॥ २ ॥ मंगलमय दोउ अंग मनोहर ग्रंथित चूनरि पीत पिछौरी ॥ कनककलश कहँ देत भाँवरी निरखि रूप शारद भइ भोरी ॥ ३ ॥ मुदित जनकरनिवास रहसवश चतुर नारि चितवहिं तृण तोरी ॥ गान निशान वेद ध्वनि सुनि सुर वरषत सुमन हरष कहैं कोरी ॥ ४ ॥ नयननको फल पाइ प्रेमवश सकल अशीशत ईश निहोरी ॥ तुलसी जेहि आनंद मगन मन क्यों रसना बरणैं सुख सोरी ॥ ५ ॥ १०५ ॥ दूलह राम सीय दुलहीरी ॥ घन दामिनि वर वरन हरन मन सुंदरता नख शिखनि बहीरी ॥ १ ॥ व्याह विभूषण वसन विभूषित सखि अवली लखि ठगिसि रहीरी ॥ जीवन जन्मलाहु लोचन फल है इतनोइ लह्यो आजु सहीरी ॥ २ ॥ सुखमा सुरभि शृंगार क्षीर दुहि मयन अमिय मय कियोहै दहीरी ॥ मथि माखन सिय राम सँवारे सकल भुवन छवि मनहुँ महीरी ॥ ३ ॥ तुलसिदास जोरी देखत सुख शोभा अतुल न जाति कहीरी ॥ रूप राशि विरची विरंचि मानो शिला लवनि रति काम लहीरी ॥ ४ ॥ ॥ १०६ ॥ जैसे ललित लषण लाल लोने ॥ तैसिये ललित उरमिला परस्पर लखत सुलोचन कोने ॥ १ ॥ सुखमा सार शृंगार सार करि कनक रचैहैं तिहि सोने ॥ रूपप्रेम परमिति न परत कहि विथकि

रहीहै मति मौने ॥ २ ॥ शोभाशील सनेह सोहावनो समउ केलि गृह गोने ॥ देखि तियनिके नयन सफल भयो तुलसिदासहुके होने ॥ ३ ॥ १०७ ॥ ॥ (राग बिलावल) ॥ जानकी वर सुंदर माई ॥ इंद्रनील मणि श्याम सुभग अँग अंग मनोजनि बहु छवि छाई॥१॥ अरुण चरण अंगुली मनोहर नखद्युतिवंत कछुक अरुणाई ॥ कंजदलनि पर मनहुँ भौमदश बैठे अचल सुसदसि बनाई ॥ २ ॥ पीत जानु उर चारु जटित मणि नूपुर पद कल मुखर सोहाई ॥ पीतपराग भरै अलिगण जनु युगल जलज देखिरहे लोभाई ॥ ३ ॥ किंकिणि कनककंज अवली मृदु मरकत शिखर मध्य जनु जाई ॥ गई न उपर सभीत नमित मुख विकशि चहूँ दिशि रही लोनाई॥४॥ नाभि गँभीर उदर रेखावर उर भृगु चरण चिह्न सुखदाई॥भुज प्रलंब भूषण अनेक युत बसन पीत शोभा अधिकाई ॥ ५ ॥ यज्ञोपवीत विचित्र हेममय मुक्तामाल उरसि मोहि भाई ॥ कंद तड़ित विच जनु सुरपति धनु निकट बलाकपाँति चलि आई ॥ ६ ॥ कंबु कंठ चिबुकाधर सुंदर क्यों कहौं दशननकी रुचिराई ॥ पद्मकोश महँ बसे बज्र मनो निज सँग तड़ित अरुण रुचिलाई ॥ ७॥नासिक चारु ललित लोचन भ्रू कुटिल कचनि अनुपम छवि पाई ॥ रहे घेरि राजीव उभय मानो चंचरीक कछु हृदय डेराई ॥८॥ भाल तिलक कंचन किरीट शिर कुंडल लोल कपोलनि झाँई ॥ निरखहि नारि निकर विदेहपुर निमि नृपकी मरयाद मिटाई ॥ ९ ॥ शारद शेष शंभु निशि बसर चिंतत रूप न हृदय समाई ॥ तुलसिदास शठ क्योंकरि बरणै यह छवि निगम नेति कहि गाई ॥ १०॥१०८॥ (राग कान्हरा) ॥ भुजनि पर जननी वारि फेरि डारी ॥ क्यों तोरचौ कोमल कर कमलनि शंभु शरासन भारी ॥ १ ॥ क्यों मारीच सुबाहु महाबल प्रबल ताड़का मारी ॥ मुनि प्रसाद मेरे रामलषणकी विधि बड़ि करवर टारी ॥ २ ॥ चरणरेणुलै नयननि लावति क्यों मुनिवधू उधारी ॥ कहौं धौं तात क्यों जीति सकल नृप बरी है विदेहकुमारी ॥ ३॥ दुसह-रोष-मूरति भृगुपति अति नृपतिनिकर

पक्षकारी ॥ क्यों सौंप्यो शारंग हारि हियकरि है बहुत मनुहारी॥४॥ उमगि उमगि आनंद विलोकति वधुनसहित सुतचारी॥तुलसि दास आरती उतारति प्रेम मगन महतारी ॥ ५ ॥ १०९ ॥ मुदित मन आरती करै माता ॥ कनक वसन मणि वारिवारिकर पुलक प्रफुल्लित गाता॥१॥पाँलागनि दूलिहिनिहि सिखावति सरिस सासु सत साता देहिं अशीश तेवरिस कोटिलगि अचलहोउ अहिवाता ॥२॥रामसीय छवि देखि युवतिजन करहिं परस्पर वाता ॥ अव जान्यो साँचेहु सुनहुसखि कोविद बड़ो विधाता ॥३॥ मंगल गान निसान नगर नभ आनँद कह्यो न जात॥ चिरंजीवहु अवधेश सुवन सव तुलसि दास सुखदाता ॥ ४ ॥ ११० ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां बालकांडसंपूर्णम् ॥

राग सोरठ ॥ नृप कर जोरि कह्यो गुरुपाहीं ॥ तुम्हरी कृपा अशीशनाथ मेरी सवै महेश निवाहीं ॥ १ ॥ रामहोहिं युवराज जियत मेरे यह लालच मन माहीं ॥ वहुरि मोहिं जियवे मरिवेकी चितचिन्ता कछु नाहीं ॥२॥महाराजभलोकाज विचारयौ वेगविलंव न कीजै॥ विधिदाहिनो होइ तौ सवमिलि जनम लाहु लुटि लीजै३॥ सुनत नगर आनंद वधावन कैकेयीविलखानी॥तुलसी दासदेवमायावश कठिन कुटिलताठानी ॥ ४ । १११ ॥ (रागगौरी) ॥ सुनहु राम मेरे प्राणपियारे ॥ वारौं सत्यवचन श्रुतिसम्मत जाते हों विछुरत चरण तिहारे ॥ १ ॥ विनु प्रयास सव साधनको फल प्रभु पायो सो तो नाहिं सम्हारे॥ हरितजि धरमशील भयो चाहत नृपति नारि वश सरवस हारे ॥ २ ॥ रुचिर काँच मणि देखि मूढ़ ज्यों करतलते चिंतामणि डारे ॥ मणि लोचन चकोर शशि राघव शिव जीवनधन सोउ न विचारे ॥ ३ ॥ यद्यपि नाथ तात मायावश सुखनिधान सुत तुम्हहिं विसारे ॥ तदपि हमहिं त्यागहु जनि रघुपति दीन वंधु दयालु मेरे वारे ॥४॥ अतिशै प्रीति विनीत वचन सुनि प्रभुकोमल चित चलत न पारे ॥ तुलसीदास जो रहौं मातु हित को सुर विप्र भूमिभयटारे ॥ ५ । २ । ११२ ॥ रहिचलिए सुंदर रघु-

नायक ॥ जौं सुत तात वचन पालन रत जननिउ तात मानिवे ला-
यक ॥ १॥ वेद विदित यह वानि तुम्हारी रघुपति सदा संत सुखदा-
यक ॥ राखहु निजमरयाद निगमकी हौं वलिजाउँ धरहु धनुशाय
क ॥ २ ॥ शोककूपपुर परिहि मरिहि नृप सुनिसँदेश रघुनाथसिधाय
क ॥ यह दूषण विधि तोहिं होत अव रामचरण वियोग उपजायक
॥ ३ ॥ मातु वचन सुनि श्रवण नयन जल कछु सुभाउ जनु नर त-
नु पायक ॥ तुलसिदास सुर काजन साध्यौ तौ तो दोष मोहिं महि
आयक ॥ ४ ॥ ३ ॥ ११३ ॥ (राग सोरठ) ॥ राम हो कौन जतन
घर रहिहौं ॥ वार वार भरि अंक गोद लै ललन कौन सों कहिहौं
॥ १ ॥ इहि आँगन विहरत मेरे वारे तुम जो संग शिशु लीन्हे ॥
कैसे प्राण रहत सुमिरत सुत वहु विनोद तुम्ह कीन्हे ॥ २ ॥ जिन्ह
श्रवणनि कल वचन तिहारे सुनि सुनिहों अनुरागी ॥ तिन्ह श्र-
वणनि वन गवन सुनतिहों मोते कवन अभागी ॥ ३ ॥ युग सम
निमिष जाहिं रघुनंदन वदनकमल विनु देखे ॥ जो तनु रहै वर-
ष वीते बलि कहा प्रीति इहि लेखे ॥ तुलसीदास प्रेमवश श्रीहरि
देखि विकल महतारी ॥ गदगद कंठ नयन जल फिरि फिरि आवन
कह्यो मुरारी ॥ ५ ॥ ४ ॥ ११४॥ (राग विलावल)॥ रहहु भव-
न हमरे कहे कामिनि ॥ सादर सासु चरण सेवहु नित जो तुम्हरे
अतिहित गृह स्वामिनि ॥ १ ॥ राजकुमारि कठिन कंटक मग
क्यों चलिहो मृदु पद गजगामिनि ॥ दुसह वात वरषा हिम आतप
कैसे सहि हो अगणित दिन यामिनि ॥ २ ॥ हों पुनि पितु आज्ञा
प्रमाण करि ऐहों वेगि सुनहु द्युति दामिनि ॥ तुलसिदास प्रभु वि-
रह वचन सुनि सहि न सकी मुरछित भइ भामिनि ॥ ३ ॥ ५ ॥
॥ ११५ ॥ कृपानिधान सुजान प्राणपति संग विपिन हों आवोंगी॥
गृहते कोटि गुणित सुख मारग चलत साथ सचु पावोंगी ॥ १ ॥ था-
के चरण कमल चापोंगी श्रम भये वायु डोलावोंगी ॥ नयन चकोर-
नि मुखमयंक छवि सादर पान करावोंगी ॥ २ ॥ जोंहठि नाथ रा-
खिहौ मोकहँ तो सँग प्राण पठावोंगी ॥ तुलसिदास प्रभु विनु जी-

वत रहि क्यों फिरि वदन देखावोंगी ॥ ३ ॥ ६ ॥ ११६ ॥ कहो तु-
म्ह बिनु गृह मेरो कौन काजु ॥ विपिन कोटि सुरपुर समान मोको
जोपै पिय परिहरयो राजु ॥ १ ॥ वल्कल विमल दुकूल मनोहर कं-
द मूल फल अमि अनाजु ॥ प्रभु पदकमल विलोकिहों छिन छिन
इहिते अधिक कहा सुख समाजु ॥ २ ॥ हों रहों भवन भोग लोलु-
पह्वै पति कानन कियो मुनिको साजु ॥ तुलसिदास ऐसे विरह व-
चन सुनि कठिन हियो विहरयो न आजु ॥ ३ ॥ ७॥ ११७ ॥ प्रि-
य निठुर वचन कहे कारन कवन ॥ जानत हो सबके मनकी गति
मृदुचित परमकृपालु रवन ॥ १ ॥ प्राणनाथ सुंदर सुजान मणि
दीनबंधु जन आरतिदवन ॥ तुलसिदास प्रभु पदसरोज त-
जि रहि हौं कहा करोंगी भवन ॥ २ ॥ ८ ॥ ११८ ॥ मैं तुम्हसों स-
तिभाव कही है ॥ बूझति और भाँति भामिनि कत कानन कठि-
न कलेश सहीहै ॥ १ ॥ जो चलि हो तो चलो चलिकै वन सुनि
सिय मन अवलंब लही है ॥ बूड़त विरह वारिनिधि मानहुँ नाह
वचनमिस वाँह गही है ॥ २ ॥ प्राणनाथके साथ चली उठि अव
ध शोकसरि उमगि वही है ॥ तुलसी सुनि न कबहुँ काहू कहुँ
तनु परिहरि परिछाँह रही है ॥ ३ । ९ । ११९ ॥ जवहिं रघुपति
सँग सीय चली ॥ विकल वियोग लोग पुरतिय कहैं अति अन्याउ
अली ॥ १ ॥ कोउ कहै मणिगण तजत काँच लगि करत न भूप
भली ॥ कोउ कहै कुल कुवेलि कैकेयी दुख विष फलनि फली॥२॥
एक कहैं वन योग जानकी विधिवड़ विषम वली ॥तुलसी कुलिश-
हुकी कठोरता तेहि दिन दलकि दली ॥ ३ । १० । १२० ॥ ठाढ़े
हैं लषण कमल कर जोरे ॥ उर धकधकी न कहत कछु सकुचनि
प्रभु परिहरत सवनि तृण तोरे ॥ १ ॥ कृपासिंधु अवलोकि
बंधुतन प्राण कृपाण वीरसी छोरे ॥ तात विदा माँगिए मातु सों
बनि है वात उपाइ न औरे ॥ २ ॥ जाइ चरण गहि आयसु याच्यो
जननि कहत बहुभाँति निहोरे ॥ सिय रघुवर सेवा शुचि ह्वैहौ तौ
जानिहौं सही सुत मोरे ॥ ३ ॥ कीजहु इहै विचार निरंतर राम

समीप सुकृत नहिँ थोरे॥ तुलसी सुनि शिष चले चकित चित उड्यौ मानो विहग वधिक भये भोरे ॥ ४ । ११ । १२१ ॥ (राग सोरठ) मोको विधुवदन विलोकन दीजै ॥ राम लषण मेरी यहै भेंट वलि जाँउ मोहिँ मिलि लीजै ॥ १ ॥ सुनि पितु वचन चरण गहे रघुपति भूप अंक भरि लीन्हे ॥ अजहुँ अवनि विहरत दरार मिस सो अवसर सुधि कीन्हे ॥ २॥ पुनि शिरनाइ गवन कियो प्रभु मुरछित भयो भूप न जाग्यो ॥ करम चोर नृप पथिक मारि मानो राम रतन लै भाग्यो ॥ ३ ॥ तुलसी रविकुल रवि रथ चढ़ि चले तकि दिशि दक्षिण सुहाई ॥ लोगनलिन भए मलिन अवध सर विरह विषम हिम आई ॥ ४ । १२ । १२२ ॥ (राग विलावल) कहो सो विपिन है धौं केतिक दूरि ॥ जहाँ गवनकियो कुँवर कोशलपति बूझति सियपिय पतिहि विसूरि ॥१॥ प्राणनाथ परदेश पयादहि चले सुख सकल तजे तृण तूरि ॥ करौं वयारि विलंबिय विटपतर झारौं हों चरण सरोरुह धूरि ॥ २ ॥ तुलसिदास प्रभु प्रियावचन सुनि नीरजनयन नीर आए पूरि ॥ कानन कहा अवहिं सुनि सुंदरि रघुपति फिरि चितये हित भूरि ॥३।१३। १२३ ॥ फिरि फिरि राम सीयतनु हेरत ॥ तृषित जानि जललेन लषण गए भुज उठाइ ऊँचे चढ़ि टेरत ॥ १ ॥ अवनि कुरंग विहग द्रुम डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत॥मगन न डरत निरखि कर कमलनि सुभग शरासन शायक फेरत ॥ २ ॥ अवलोकत मग लोग चहूँदिशि मनहुँ चकोर चंद्रमहि घेरत॥ ते जन भूरिभाग्य भूतलपर तुलसी राम पथिक पद जे रत ॥ ३ । १४ । १२४ ॥ नृपति कुँवर राजत मग जात ॥ सुंदर वदन सरोरुह लोचन मर्कत कनकवरण मृदुगात ॥ १ ॥ अंशनि चाप तूण कटि मुनिपट जटा मुकुट बिच नूतन पात ॥ फेरत पाणि सरोजनि शायक चोरत चितहि सहज मुसुकात ॥ २ ॥ संगनारि सुकुमारि सुभग सुठि राजति विन भूषण नवसात ॥ सुखमा निरखि ग्राम वनितनिके नलिन नयन विकसित मानो प्रात ॥ ३ ॥ अंग अंग अगणित अ-

नंग छवि उपमा कहत सुकवि सकुचात ॥ सिय समेत नित तुलसि-
दास चित वसत किशोर पथिक दोउ भ्रात ॥ ४ । १५ । १२५ ॥
तू देखि देखिरी पथिक परम सुंदर दोऊ ॥ मरकत कल धौत वर-
ण काम कोटि कांति हरण चरण कमल कोमल अति राजकुँवर
कोऊ ॥ १ ॥ कर शर धनु कटिनिषंग मुनिपट सोहैं सुभग अंग संग चंद्र-
वदनि वधू सुंदरि सुठि सोऊ ॥ तापसवर वेष किये शोभा सव लूटि लि-
ये चितके चोर वयकिशोर लोचन भरि जोऊ ॥ २ ॥ दिनकर कुलमणिनि
हारि प्रेम मगन ग्राम नारि परस्पर कहैं सखि अनुराग ताग पोऊ ॥
तुलसी यह ध्यान सुधन जानि मानि लाभ सघन कृपण ज्यों सनेह
सोहिये सुगेह गोऊ ॥ ३ ॥ १६ । १२६ ॥ कुँवर साँवरोरी सजनी सुं-
दर सव अंग ॥ रोम रोम छवि निहारि आलि वारि फेरि डारि कोटि
भानु सुवन शरद सोम कोटि अनंग ॥ १ ॥ वाम अंग लसतचाप मौलि
मंजु जटा कलाप शुचि शरकर मुनिपट कटितट कसे निषंग ॥ आय-
त उर वाहु नैन मुख सुखमा को लहै न उपमा अवलोकि लोक गिराम
ति गति भंग ॥ २ ॥ योंकहि भईं मगनबाल विथकी सुनि युवति
जाल चितवत चले जात संग मधुप मृग विहंग ॥ वरणों किमि ति-
नकि दशहि निगम अगम प्रेम रसहि तुलसीमन वसन रंगे रुचिर
रूपरंग ॥ ३ । १७ । १२७ ॥ (राग कल्याण) ॥ देखु कोउ परम सुं-
दर सखि वटोही ॥ चलत महि मृदु चरण अरुण वारिजवरण भूप
सुत रूपनिधि निरखि हों मोही ॥ १ ॥ अमल मरकत श्याम शील
सुखमाधाम गौरतनु सुभग शोभासुमुखि जोही ॥ युगल विचनारि
सुकुमारि सुठि सुंदरी इंदिरा इंदु हरि मध्य जनु सोही ॥ २ ॥ कर-
निवर धनु तीर रुचिर कटि तूणीर धीर सुर सुखद मर्दन अवनि
द्रोही ॥ अंबुजायत नैन वदन छवि वहु मैन चारु चितवनि चतुर
लेत चित पोही ॥ ३ ॥ वचन प्रिय सुनि श्रवण राम करुणाभवन
चितै सव अधिक हित सहित कछु वोही ॥ दास तुलसीनेह
विवश विसरी देह जाननहि आपु तेहि काल धों कोही ॥ ४ । १८ ॥
॥ १२८ ॥ (राग केदारा) ॥ सखि नीकेकै निरखि कोऊ सुठि सुंदर

वटोही ॥ मधुर मूरति मनमोहन जोहन योगवदन शोभासदन देखिहों मोही ॥ १ ॥ साँवरे गोरे किशोर सुर मुनि चित्त चोर उभय अंतर एक नारि सोही ॥ मनहुँ वारिद विधु बीच ललित अति राजति तडित निज सहज विछोही ॥ २॥ उर धीरजहि धरि जन्म सफल करि सुनहि सुमुखि जिनि विकलहोही ॥ को जानै कौने सुकृत लह्यौहै लोचन लाहु ताहिते वारहिँ वार कहाति तोही ॥ ३ ॥ सखिहि सुसिख दई प्रेम मगन भई सुरति बिसरि गई आपनी वोही ॥ तुलसी रहीहै ठाढ़ी पाहन गढ़ी सी काढ़ी को न जानै कहाँते आई कौन की कोही॥४।१९।१२९॥माई मनके मोहन जोहन जोग जोही थोड़ेही बयस गोरे साँवरे सलोने लोने लोयन ललित विधुवदन वटोही ॥ १ ॥ शिरनि जटा मुकुट मंजुल सुमनयुत तैसिए लसति नव पल्लव खोही ॥ किये मुनि वेषवीर धरे धनु तूण तीर सोहैं मग कोहैं लखिपरे न मोही ॥ २ ॥ शोभाको साँचो सँवारि रूपजात रूपधारि नारि विरची विरंचि संग सो सोही ॥ राजत रुचिर तनु सुंदर श्रमके कन चाहे चकचौंधी लागै कहौं का तोही ॥ ३ ॥ सनेह शिथिल सुनि वचन सकल सिय चितई अधिक हित सहित वोही ॥ तुलसी मानहुँ प्रभु कृपाकी मूरति फिरि हेरिकै हरपि हिये लियोहै पोही ॥ ४ ॥ । २० । १३० ॥ सखि शरद विमल विधुवदनि वधूटी॥ ऐसी ललना सलोनी न भई न है न होनी रत्योरची विधि जो छोलत छवि छूटी ॥ १ ॥ साँवरे गोरे पथिक बीच सोहति अधिक तिहुँ त्रिभुवन शोभा मानहुँ लूटी ॥ तुलसी निरखि सिय प्रेम वश कहैं तिय लोचन शिशुन्ह देहु अमिय घूटी ॥। २॥२१॥ ॥१३१ सोहैं साँवरे पथिक पाछे ललना लोनी ॥दामिनि वरण गोरी लखि सखि तृणतोरि वीतीहैं वयकिशोरी जोवन होनी ॥१॥नीकेकै निकाई देखि जन्म सफल लेखि हमसो भूरि भागिनिनभनछोनी ॥तुलसी स्वामी स्वामिनिजोहे मोहीहैं भामिनि शोभा सुधा पियेकरि अँखियाँ दोनी॥२।२२।१३२।पथिक गोरे साँवरे सुठि लोने । संग सुतिय जाके तनुते लहीहै द्युति स्वर्ण सरोरुह सोने ॥ १ ॥ वयकिशोर सरि

पार मनोहर वयस शिरोमणि होने ॥ शोभा सुधा आलि अँचवहु करि नयन मंजु मृदु दोने ॥ २ ॥ हेरत हृदय हरत नाहिं फेरत चारु विलोचन कोने ॥ तुलसी प्रभु किधौं प्रभुके प्रेम पढ़े प्रगट कपट बिनु टोने ॥ ३ ॥ २३ ॥ १२३ ॥ मनोहरताके मानो ऐन ॥ श्यामल गौर किशोर पथिक दोउ सुमुखि निरखि भरिनैन ॥ १ ॥ वीच वधू विधुवदनि विराजति उपमा कहुँ कोउ हैन ॥ मानहुँ रति ऋतुनाथ सहित मुनि वेष बनायोहै मैन ॥ २ ॥ किधो शृंगार सुखमा सुप्रेम मिलि चले जग चितवितलैन ॥ अद्भुत त्रयी किधौं पठईहै विधि मग लोगन्हि सुखदैन ॥ ३ ॥ सुनि शुचि सरल सनेह सुहावने ग्राम वधुन्हके वैन ॥ तुलसी प्रभु तरु तर विलंबे किए प्रेम कनौड़ेकैन ॥ ४ ॥ २४ ॥ १२४ ॥ वे किशोर गोरे साँवरे धनुवाण धरेहैं ॥ सब अंग सहज सोहावने राजीव जिते नैनानि वदननि विधु निदरेहैं ॥ १ ॥ तूणस मुनिपट कटि कसे जटा मुकुट करेहैं ॥ मंजु मधुर मृदु मूरति पानहौं न पायानि कैसे धौं पंथ विचरेहैं ॥२॥ उभय वीच वनिता बनी लखि मोहि परेहैं॥मदन सप्रिया सप्रिय सखा मुनि वेष बनाए लिए मन जात हरेहैं ॥ ३ ॥ सुनि जहँ तहँ देखन चले अनुराग भरेहैं ॥ राम पथिक छबि निरखिकै तुलसी मग लोगनि धाम काम विसरेहैं ॥ ४ ॥ २५ ॥ १२५ ॥ कैसे पितु मातु कैसे ते प्रिय परिजनहैं ॥ जगजलधि ललाम लोने लोने गोरे श्याम जिन पठएहौं ऐसे बालकनि बनहैं ॥ १ ॥ रूपके न पारावार भूपके कुमार मुनि वेष देखत लोनाई लघु लागत मदनहैं ॥ सुखमाकी मूरतिसी साथ निशिनाथ मुखी नखशिख अंग सब शोभाके सदनहैं ॥ २ ॥ पंकज करनि चाप तीर तरकस कटि शरद सरोज हूते सुंदर चरनहैं ॥ सीता राम लषण निहारि ग्रामनारि कहैं हेरि हेरि हेरि हेलीहियके हरनहैं ॥ ३॥ प्राणहूके प्राणसे सुजीवनके जीवनसे प्रेम रंक कृपिणके धनहैं ॥ तुलसीके लोचन चकोरनके चंद्रमासे आछे मन मोर चित चातकके घनहैं ॥ ४ ॥ २६॥ १२६ ॥ (राग भैरव)॥ देखि ह्रै पथिक गोरे साँवरे सुभगहैं ॥ सुतिय सलोनी सं-

ग सोहते सुमगहैं ॥ १ ॥ शोभासिंधु संभवसे नीके नीके नगहैं ॥
मातु पितु भाग वश गए परि फँगहैं ॥ २ ॥ पाइ पनह्यौ न मृदु पंक-
जसे पगहैं ॥ रूपकी मोहनी मेलि मोहे अग जगहैं ॥ ३ ॥ मुनि वेष
धरे धनु शायक सुलगहैं ॥ तुलसी हिये लसत लोने लोने डगहैं
॥ ४ ॥ २७ ॥ १३७ ॥ पथिक पयादे जात पंकजसे पायहैं ॥ मार-
ग कठिन कुश कंटकनिकायहैं ॥ १ ॥ सखी भूखे प्यासे पै चलत
चित चायहैं ॥ इन्हके सुकृत सुर शंकर सहायहैं ॥ २ ॥ रूप शोभा
प्रेमकेसे कमनीय कायहैं ॥ मुनि वेष किये किधौं ब्रह्मजीव मायहैं
॥ ३ ॥ वीर वरियार धीर धनुधर रायहैं ॥ दशचारि पुर पाल आ-
ली उरगायहैं ॥ ४ ॥ मग लोग देखत करत हाय हायहैं ॥ वन इन
को तो वाम विधिके बनायहैं॥५॥धन्य ते जे मीनसे अवधि अंबुधि
आयहैं ॥ तुलसी प्रभुसो जिन्हहूँके भले भायहैं॥६॥२८॥ १३ ॥ ८॥
(राग आसावरी)॥सजनीहैं कोउ राजकुमार ॥ पंथ चलत मृदु पद
कमलनि दोउ शील रूप आगार ॥ १ ॥ आगे राजिवनैन श्यामतनु
शोभा अमित अपार ॥ डारों वारि अंग अंगनि पर कोटि कोटि श-
त मार ॥ २॥ पाछे गोरकिशोर मनोहर लोचन वदन उदार ॥ क-
टि तूणीर बाणवर कर धनु चले हरण क्षिति भार ॥ ३ ॥ युगल
वीच सुकुमारि नारि इक राजति विनहिं शृंगार ॥ इंद्र नील हाटक
मुकुतामणि जनु पहिरे महिहार ॥ ४ ॥ अवलोकहु भरि नैन विक-
ल जनि होहु करहु सुविचार ॥ पुनि कहँ यह शोभा कहँ लो-
चन देह गेह संसार ॥ ५ ॥ सुनि प्रियवचन चितै हितकै रघुनाथ
कृपा सुखसार ॥ तुलसी दास प्रभु हरे सबन्हिके मन तन रहि न सँ-
भार ॥ ६ ॥ २९ ॥१३९॥ देखु री सखी पथिक नख शिख नीकेहैं॥
नीले पीले कमलसे कोमल कलेवरनि तापसहूँ वेष किये काम को-
टि फीकेहैं ॥ १ ॥ सुकृत सनेह शील सुखमा सुख सकेलि विरंचे
विरंचि किधौं अमिय अमीकेहैं ॥ रूपकीसी दामिनी सुभामिनी सो-
हति संग उमहुँ रमाते आछे अंग अंगनीकेहैं ॥ २ ॥ वन पट कमे
कटि तूण तीर धनु धरे धीर वीर पालक कृपालु सबहीकेहैं ॥ पान-

ग सोहते सुमगहैं ॥ १ ॥ शोभासिंधु संभवसे नीके नीके नगहैं ॥ मातु पितु भाग वश गए पारि फँगहैं ॥ २ ॥ पाइ पनह्यौ न मृदु पंकजसे पगहैं ॥ रूपकी मोहनी मेलि मोहे अग जगहैं ॥ ३ ॥ मुनि वेष धरे धनु शायक सुलगहैं ॥ तुलसी हिये लसत लोने लोने डगहैं ॥ ४ ॥ २७ ॥ १२७ ॥ पथिक पयादे जात पंकजसे पायहैं ॥ मारग कठिन कुश कंटकनिकायहैं ॥ १ ॥ सखी भूखे प्यासे पै चलत चित चायहैं ॥ इन्हके सुकृत सुर शंकर सहायहैं ॥ २ ॥ रूप शोभा प्रेमकेसे कमनीय कायहैं ॥ मुनि वेष किये किधौं ब्रह्मजीव मायहैं ॥ ३ ॥ वीर वरियार धीर धनुधर रायहैं ॥ दशचारि पुर पाल आली उरगायहैं ॥ ४ ॥ मग लोग देखत करत हाय हायहैं ॥ वन इनको तो वाम विधिके वनायहैं॥५॥धन्य ते जे मीनसे अवधि अंबुधि आयहैं ॥ तुलसी प्रभुसो जिन्हहूँके भले भायहैं॥६॥२८॥ १२ ॥ ८ ॥ (राग आसावरी)॥सजनीहैं कोउ राजकुमार ॥ पंथ चलत मृदु पद कमलनि दोउ शील रूप आगार ॥ १ ॥ आगे राजिवनैन श्यामतनु शोभा अमित अपार ॥ डारों वारि अंग अंगनि पर कोटि कोटि शत मार ॥ २॥ पाछे गोरकिशोर मनोहर लोचन वदन उदार ॥ कटि तूणीर वाणवर कर धनु चले हरण क्षिति भार ॥ ३ ॥ युगल वीच सुकुमारि नारि इक राजति विनहिं शृंगार ॥ इंद्र नील हाटक मुकुतामणि जनु पहिरे महिहार ॥ ४ ॥ अवलोकहु भरि नैन विकल जनि होहु करहु सुविचार ॥ पुनि कहँ यह शोभा कहँ लोचन देह गेह संसार ॥ ५ ॥ सुनि प्रियवचन चितै हितकै रघुनाथ कृपा सुखसार ॥ तुलसी दास प्रभु हरे सवन्हिके मन तन रहि न सँभार ॥ ६ ॥ २९ ॥१२९॥ देखु री सखी पथिक नख शिख नीकेहैं॥ नीले पीले कमलसे कोमल कलेवरनि तापसहूँ वेष किये काम कोटि फीकेहैं ॥ १ ॥ सुकृत सनेह शील सुखमा सुख सकेलि विरचे विरंचि किधौं अमिय अमीकेहैं ॥ रूपकीसी दामिनी सुभामिनी सोहति संग उमहुँ रमाते आछे अंग अंगतीकेहैं ॥ २ ॥ वन पट कसे कटि तूण तीर धनु धरे धीर वीर पालक कृपालु सवहीकेहैं ॥ पान-

पार मनोहर वयस शिरोमणि होने ॥ ,शोभा सुधा आलि अँचवहु करि नयन मंजु मृदु दोने ॥ २ ॥ हेरत हृदय हरत नाहिं फेरत चारु विलोचन कोने ॥ तुलसी प्रभु किधौं प्रभुके प्रेम पढ़े प्रगट कपट विनु टोने ॥ ३ ॥ २३ ॥ १२३ ॥ मनोहरताके मानो ऐन ॥ श्यामल गौर किशोर पथिक दोउ सुमुखि निरखि भरिनैन ॥ १ ॥ वीच वधू विधुवदनि विराजति उपमा कहुँ कोउ हैन ॥ मानहुँ रति ऋतुनाथ सहित मुनि वेष वनायोहै मैन ॥ २ ॥ किधो शृंगार सुखमा सुप्रेम मिलि चले जग चितवितलैन ॥ अद्भुत त्रयी किधौं पठईहै विधि मग लोगन्हि सुखदैन ॥ ३ ॥ सुनि शुचि सरल सनेह सुहावने ग्राम वधुन्हके वैन ॥ तुलसी प्रभु तरु तर विलंबे किए प्रेम कनौड़िकैन ॥ ४ ॥ २४ ॥ १२४ ॥ वै किशोर गोरे साँवरे धनुबाण धरेहैं ॥ सव अंग सहज सोहावने राजीव जिते नैनानि वदनानि विधु निदरेहैं ॥ १ ॥ तूणस मुनिपट कटि कसे जटा मुकुट करेहैं ॥ मंजु मधुर मृदु मूरति पानह्यौ न पायानि कैसे धौं पंथ विचरेहैं ॥२ ॥ उभय वीच वनिता वनी लखि मोहि परेहैं॥मदन सप्रिया सप्रिय सखा मुनि वेप वनाए लिए मन जात हरेहैं ॥ ३ ॥ सुनि जहँ तहँ देखन चले अनुराग भरेहैं ॥ राम पथिक छवि निरखिके तुलसी मग लोगनि धाम काम विसरेहैं ॥ ४ ॥ २५ ॥ १२५ ॥ कैसे पितु मातु कैसे ते प्रिय परिजनहैं ॥ जगजलधि ललाम लोने लोने गोरे श्याम जिन पठएहौं ऐसे बालकनि वनहैं ॥ १ ॥ रूपके न पारावार भूपके कुमार मुनि वेष देखत लोनाई लघु लागत मदनहैं ॥ सुखमाकी मूरतिसी साथ निशिनाथ मुखी नखशिख अंग सव शोभाके सदनहैं ॥ २ ॥ पंकज करानि चाप तीर तरकस कटि शरद सरोज हूते सुंदर चरनहैं ॥ सीता राम लपण निहारि ग्रामनारि कहैं हेरि हेरि हेलीहियके हरनहैं ॥ ३॥ प्राणहूंके प्राणसे सुजीवनके जीवनसे प्रेम रंक कृपिणके धनहैं ॥ तुलसीके लोचन चकोरनके चंद्रमासे आछे मन मोर चित चातकके घनहैं ॥ ४ ॥ २६॥ १२६ ॥ (राग भैरव)॥ देखि द्वै पथिक गोरे साँवरे सुभगहैं ॥ सुतिय सलोनी सं-

पार मनोहर वयस शिरोमणि होने ॥ शोभा सुधा आलि अँचवहु करि नयन मंजु मृदु दोने ॥ २ ॥ हेरत हृदय हरत नाहिं फेरत चारु विलोचन कोने ॥ तुलसी प्रभु किधौं प्रभुके प्रेम पढ़े प्रगट कपट विनु टोने ॥ ३ ॥ २३ ॥ १२३ ॥ मनोहरताके मानो ऐन ॥ श्यामल गौर किशोर पथिक दोउ सुमुखि निरखि भरिनैन ॥ १ ॥ बीच बधू विधुवदनि विराजति उपमा कहुँ कोउ हैन ॥ मानहुँ रति ऋतुनाथ सहित मुनि वेष बनायोहै मैन ॥ २ ॥ किधो शृंगार सुखमा सुप्रेम मिलि चले जग चितवितलैन ॥ अद्भुत त्रयी किधौं पठईहै विधि मग लोगन्हि सुखदैन ॥ ३ ॥ सुनि शुचि सरल सनेह सुहावने ग्राम बधुन्हके बैन ॥ तुलसी प्रभु तरु तर विलंबे किए प्रेम कनौड़ेकैन ॥ ४ ॥ २४ ॥ १२४ ॥ वे किशोर गोरे साँवरे धनुवाण धरेहैं ॥ सब अंग सहज सोहावने राजीव जिते नैनानि वदननि विधु निदरेहैं ॥ १ ॥ तूणस मुनिपट कटि कसे जटा मुकुट करेहैं ॥ मंजु मधुर मृदु मूरति पानहौ न पायनि कैसे धौं पंथ विचरेहैं ॥२॥ उभय बीच वनिता बनी लखि मोहि परेहैं॥मदन सप्रिया सप्रिय सखा मुनि वेष बनाए लिए मन जात हरेहैं ॥ ३ ॥ सुनि जहँ तहँ देखन चले अनुराग भरेहैं ॥ राम पथिक छवि निरखिके तुलसी मग लोगनि धाम काम बिसरेहैं ॥ ४ ॥ २५ ॥ १२५ ॥ कैसे पितु मातु कैसे ते प्रिय परिजनहैं ॥ जगजलधि ललाम लोने लोने गोरे श्याम जिन पठएहौं ऐसे बालकनि बनहैं ॥ १ ॥ रूपके न पारावार भूपके कुमार मुनि वेष देखत लोनाई लघु लागत मदनहैं ॥ सुखमाकी मूरतिसी साथ निशिनाथ मुखी नखशिख अंग सब शोभाके सदनहैं ॥ २ ॥ पंकज करनि चाप तीर तरकस कटि शरद सरोज हूते सुंदर चरनहैं ॥ सीता राम लषण निहारि ग्रामनारि कहैं हेरि हेरि हेलीहियके हरनहैं ॥ ३॥ प्राणहूँके प्राणसे सुजीवनके जीवनसे प्रेम रंक कृपिणके धनहैं ॥ तुलसीके लोचन चकोरनके चंद्रमासे आछे मन मोर चित चातकके घनहैं ॥ ४ ॥ २६॥ १२६ ॥ (राग भैरव)॥ देखि है पथिक गोरे साँवरे सुभगहैं ॥ सुतिय सलोनी सं-

ग सोहते सुमगहैं ॥ १ ॥ शोभासिंधु संभवसे नीके नीके नगहैं ॥ मातु पितु भाग वश गए परि फँगहैं ॥ २ ॥ पाइ पनह्यो न मृदु पंकजसे पगहैं ॥ रूपकी मोहनी मेलि मोहे अग जगहैं ॥ ३ ॥ मुनि वेष धरे धनु शायक सुलगहैं ॥ तुलसी हिये लसत लोने लोने डगहैं ॥ ४ ॥ २७ ॥ १३७ ॥ पथिक पयादे जात पंकजसे पायहैं ॥ मारग कठिन कुश कंटकनिकायहैं ॥ १ ॥ सखी भूखे प्यासे पै चलत चित चायहैं ॥ इन्हके सुकृत सुर शंकर सहायहैं ॥ २ ॥ रूप शोभा प्रेमकेसे कमनीय कायहैं ॥ मुनि वेष किये किधौं ब्रह्मजीव मायहैं ॥ ३ ॥ वीर वरियार धीर धनुधर रायहैं ॥ दशचारि पुर पाल आली उरगायहैं ॥ ४ ॥ मग लोग देखत करत हाय हायहैं ॥ वन इनको तो वाम विधिके बनायहैं॥५॥धन्य ते जे मीनसे अवधि अंबुधि आयहैं ॥ तुलसी प्रभुसो जिन्हहूँके भले भायहैं॥६॥२८॥ १३ ॥ ८॥ (राग आसावरी)॥सजनीहैं कोउ राजकुमार ॥ पंथ चलत मृदु पद कमलनि दोउ शील रूप आगार ॥ १ ॥ आगे राजिवनैन श्यामतनु शोभा अमित अपार ॥ डारों वारि अंग अंगनि पर कोटि कोटि शत मार ॥ २॥ पाछे गोरकिशोर मनोहर लोचन वदन उदार ॥ कटि तूणीर बाणवर कर धनु चले हरण क्षिति भार ॥ ३ ॥ युगल वीच सुकुमारि नारि इक राजति विनहिं शृंगार ॥ इंद्र नील हाटक मुकुतामणि जनु पहिरे महिहार ॥ ४ ॥ अवलोकहु भरि नैन विकल जनि होहु करहु सुविचार ॥ पुनि कहँ यह शोभा कहँ लोचन देह गेह संसार ॥ ५ ॥ सुनि प्रियवचन चितै हितकै रघुनाथ कृपा सुखसार ॥ तुलसी दास प्रभु हरे सवन्हिके मन तन रहि न सँभार ॥ ६ ॥ २९ ॥१३९॥ देखु री सखी पथिक नख शिख नीकेहैं॥ नीले पीले कमलसे कोमल कलेवरनि तापसहूँ वेष किये काम कोटि फीकेहैं ॥ १ ॥ सुकृत सनेह शील सुखमा सुख सकेलि विरचे विरंचि किधौं अमिय अमीकेहैं ॥ रूपकीसी दामिनी सुभामिनी सोहति संग उमहुँ रमाते आछे अंग अंगतीकेहैं ॥ २ ॥ वन पट कसे कटि तूण तीर धनु धरे धीर वीर पालक कृपालु सवहीकेहैं ॥ पान-

ह्यो न चरण सरोजनि चलत मग कानन पठाए पितु मातु कैसे ही-केहैं ॥ ३ ॥ आली अवलोकिलेहु नयननिके फलु येहु लाभके सुलाभ सुखजीवनसे जीकेहैं ॥ धन्य नर नारि जे निहारि विनु गाहकहूँ आपने आपने मन मोल विनु वीकेहैं ॥ ॥ ४ ॥ विवुध वरषि फूल हरषिहिए कहत ग्राम लोक मगन सनेह सिय पीके हैं ॥ योगीजन अगम दरश पायो पावँरानि मुदित वचन सुनि सुरप सची केहैं ॥ ५ ॥ प्रीतिके सुबालकसे लालत सुजन मुनि मग चारु चरित लषण राम सीके हैं ॥ योग न विराग याग तप न तीरथ त्याग एहि अनुराग भाग खुले तुलसी के हैं ॥ ६ । ३० । १४० ॥ रीति चलिवेकी चाहि प्रीति पहिचानि के ॥ अपनी अपनी कहैं प्रेम परवश अहैं मंजु मृदु वचन सनेह सुधा सानिके ॥ १ ॥ साँवरे कुँवरके चरणके चिह्न वराइ वधू पगधरति कहा धौं जिय जानिकै ॥ युगल पद कमल अंक जोगवत जात गोरे गात कुँवर महिमा महा मानिके ॥ २ ॥ उनकी कहनि नीकी रहनि लषण सीकी तिनकी गहनि जे पथिक उर आनिकै ॥ लोचन सजल तन पुलक मगन मन होत भूरिभागी यश तुलसी वखानिकै ॥ ३ । ३१ । १४१॥ (राग केदारा) जेहि जेहि मग सिय राम लषण गए तहँ तहँ नर नारि विनु छरछरिगे ॥ निरखि निकाई अधिक विथकित भए विअ विधि नैन सर शोभा सुधा भरिगे॥१॥जो ते विनु वए विनु निफन निराए विनु सुकृत सुखेत सुख शालि फूलि फरिगे ॥ मुनिहुँ मनोरथको अगम अलभ्य लाभ सुगमसो राम लघु लोगनिको करिगे ॥ २ ॥ लालची कौड़ीके कूर पारस परेहैं पाले जानत न कोहैं कहा कीवो सो विसरिगे ॥ बुधि न विचार न विगार न सुधार सुधि देह गेह नेह नाते मनसे निसरिगे ॥ ३ ॥ वरषि सुमन सुर हरषि हरषि कहैं अनायास भवनिधि नीच नीके तरिगे ॥ सो सनेह समउ सुमिरि तुलसीहु केसे भली भाँति भले पैत भले पाँसे परिगे॥ ४ ॥ ३२ ॥ १४२॥ वोले राज देनको रजायसु भो कानन को आनन प्रसन्न मन मोद वड़ो काज भो॥मातु पितु वंधु हित आप-

नो परमहित मोको वीसहूको ईश अनुकूल आजु भो ॥ १ ॥ अशन अजीरनको समुझि तिलक तज्यौ विपिन गमन भले भूखेको सुनाज भो ॥ धरम धुरीण धीर वीर रघुवीर जूको कोटि राज सरिस भरतजूको राजुभो ॥ २ ॥ ऐसी बातैं कहत सुनत क्षग लोगनकी चले जात भ्राता दोउ मुनिको सो साजभो ॥ ध्याइवेको गाइवेको सेइवे सुमिरिवेको तुलसीको सब भाँति सुखद समाज भो ॥ ३ । ३३ । १४३ ॥ सिरससुमन सुकुमारि सुखमाकी सींव सीय राम बड़ेही सकोच संग लई है ॥ भाईके प्राण समान प्रियाके प्राणके प्राण जानि बानि प्रीति रीति कृपाशील मई है ॥ १ ॥ आलबाल अवध सुकामतरु काम वेलि दूरिकारि कैकयी विपत्ति वेलि वई है ॥ आप पति पूत गुरुजन प्रिय परिजन प्रजाहूको कुटिल दुसह दशा दई है ॥ २ ॥ पंकजसे पगनि पानह्यौ न परुष पंथ कैसे निबहैंगे निबहैंगे गति नई है ॥ एही शोच संकट मगन मग नर नारि सबकी सुमति राम राग रंग रई है ॥ ३ ॥ एक कहैं वाम विधि दाहिनो हमको भयो उतकीन्ही पीठि इतको सुडीठि भईहै ॥ तुलसी सहित वनवासी मुनिहमारि औ अनायास अधिक अघाइ बनिगईहै ॥ ३ । ३४ ॥ १४४ ॥ (राग गौरी) ॥ नीकेकै मैं न विलोकन पाये ॥ सखि यहि मग युगपथिक मनोहर वधु विधु वदनि समेत सिधाए ॥ १ ॥ नयन सरोज किशोर वयसवर शीश जटा रचि मुकुट बनाए ॥ करि मुनि वसन तूण धनु शरकर श्यामल गौर सुभाय सोहाए ॥ २ ॥ सुंदर वदन विशाल बाहु उर तनु छवि कोटि मनोज लजाए ॥ चितवत मोहिं लगी चौंधीसी जानौ न कौन कहाँते धों आए ॥ ३ ॥ मनुगयो संग सोचवश लोचन मोचत वारिकितौ समुझाए ॥ तुलसिदास लालसा दरशकी सोइ पुरवै जेहिं आनि देखाए ॥ ४ । ३५ ॥ १४५ ॥ पुनि न फिरे दोउ वीर बटाऊ ॥ श्यामल गौर सहज सुंदर सखि वारक बहुरि विलोकिवे काऊ ॥ १ ॥ कर कमलनि शर सुभग शरासन कटि मुनि वसन निषंग सोहाए ॥ भुज प्रलंब सब अंग मनोहर धन्य सो जनकजन-

नि जेहि जाए ॥ २ ॥ शरद विमल विधुवदन जटा शिर मंजुल अ-
रुण सरोरुह लोचन ॥ तुलसिदास मनमथ मारगमें राजत कोटि
मदन मदमोचन ॥ ३ ॥ ३६ । १४६ ॥ (राग केदारा) ॥ आली
काहूतो बूझै न पथिक कहा धौं सिधैहैं ॥ कहाँ ते आएहैं कोहैं कहा
नाम श्याम गोरे काज कै कुशल फिरि एहि मग ऐहैं ॥
॥ १ ॥ उठत वैस मसि भीजत सलोने सुठि शोभा देखवैया विनु
वित्तही विकैहैं ॥ हियेहेरि हरि लेत लोनी ललना समेत लोयन-
नि लाहु देत जहाँ जहाँ जैहैं॥ २॥ राम लषण सियपथकी कथा पृ-
थुल प्रेम विथकी कहति सुमुखि सवैहैं ॥ तुलसी तिन्ह सरिस तेऊ
भूरिभाग्य जेऊ सुनिकै सुचित तेहि समै समैहैं ॥ ३ । ३७।१४७ ॥
वहुत दिन वीते सुधि कछु न लही ॥ गए जो पथिक गोरे साँव-
सलोने सखि संग नारि सुकुमारि रही ॥ १ ॥ जानि पहिचानि वि-
नु आपुते आपनेहुते प्राणहुते प्यारे प्रिय तम उपही ॥ सुधाके
सनेहहूके सारलै सँवारे विधि जैसे भावते हैं भाँति जाति न कही॥२॥
वहुरि विलोकिवे कवहुँक कहत तनु पुलक नयन जलधार वही ॥
तुलसी प्रभु सुमिरि ग्राम युवती शिथिल विनु प्रयास परीं प्रेम सही
॥ ३ । ३८ । १४८ ॥ आलीरी पथिक जे एहिपथपरवाँसिधाए ॥
तेतौ राम लषण अवध ते आए ॥ १ ॥ संग सिय सव
अंग सहज सोहाये ॥ रति काम ऋतुपति कोटिक लजाये ॥ २ ॥
राजा दशरथ रानी कौशिलाजाये ॥ कैकेयी कुचालि करि कानन
पठाए ॥ ३ ॥ वचन कुभामिनिके भूपहि क्यों भाये ॥ हाय हाय
राउ वाम विधि भरमाये ॥ ४ ॥ कुलगुरु सचिव काहु न समुझा-
ये ॥ काँच मणिलै अमोल माणिक गवाँए ॥ ५॥ भाग्य मग लोगनि
के देखन पाये ॥ तुलसी सहित जिन गुण गण गाये॥६॥३९॥ १४९
सखि जवते सीता समेत देखे दोउ भाई ॥ तवते परै न कल कछू न
सोहाई ॥ १ ॥ नख शिख नीके नीके निरखि निकाई॥तन सुधि गई
मन अनत न जाई ॥ २ ॥ हेरनि विहँसनि हियलियेहैं चोराई ॥
पावन प्रेम विवश भई हौं पराई ॥ ३ ॥ कैसे पितु मातु प्रिय परि-

जन भाई ॥ जीवत जीवके जीवन बनहिं पठाई ॥ ४ ॥ समउसो चितकरि हित अधिकाई ॥ प्रीति ग्रामवधुनकी तुलसीहुँ गाई ॥ ५ । ४० । १५० ॥ (राग केदारा) जबते सिधारे यहि मारग लषण राम जानकी सहित तब ते न सुधि लही है ॥ अवधगए धौं फिरि कैधौं चढे विंध्यगिरि कैधौं कहुँ रहे सो कछु न काहू कही है ॥ १ ॥ एक कहै चित्रकूट निकट नदीके तीर परणकुटीरकारि वसे बातसही है ॥ सुनियत भरत मनाइवेको आवतहैं होइगी पै सोई जो विधाता चित्त चहीहै ॥ २ ॥ सत्यसिंध धरम धुरीण रघुनाथजूको आपनी निवाहिवे नृपकी निरवहीहै ॥ दशचारिव-रिस विहारवन पदचार करिवे पुनीत शैल सर सरि महीहै ॥ ३ ॥ मुनि सुर सुजन समाजके सुधारि काज विगारि विगरि जहाँ जहाँ जाकी रहीहै ॥ पुरपाँउ धारिहैं उधारिहैं तुलसीहूँसे जन जिन जानिकै गरीबी गाढ़ी गहीहै ॥ ४ । ४१ । १५१ ॥ (राग सारंग) ॥ ए उपही कोउ कुँवर अहेरी ॥ श्याम गौर धनु बाण तूणधर चित्रकूट अब आइ रहेरी ॥ १ ॥ इन्हहिं बहुत आदरत महामुनि समाचार मेरेनाह कहेरी ॥ वनिता बंधु समेत वसत वन पितु हित कठिन कलेश-शसहेरी ॥ २ ॥ वचन परस्पर कहति किरातिनि पुलक गात जल नयन वहेरी ॥ तुलसी प्रभुहि विलोकति यकटक लोचन जनु विनुपलक लहेरी ॥ ३ । ४२ । १५२ ॥ चित्रकूट अति विचित्र सुंदर वन महि पवित्र पावनि पयसरित सकल मल निकंदिनी ॥ सानुज जहँ वसत राम लोक लोचनाभिराम वाम अंग वामावर विश्व वंदिनी ॥ १ ॥ चितवत मुनिगण चकोर वैठे निज ठौर ठौर अक्षय अकलंक शरद चंद चंदिनी॥उदित सदावन अकाश मुदित वदत तुलसिदास जय जय रघुनंदन जयजनकनंदिनी ॥ २ । ४३ ॥ ॥ १५३ ॥ फटिकशिला मृदु विशाल संकुल सुरतरु तमाल ललित लता जालहराति छवि वितान की॥ मंदाकिनि तटनि तीरमंजुमृग विहंग भीर धीरमुनि गिरागँभीर सामगानकी ॥ १ ॥ मधुकर पिकवरहि मुखर सुंदर गिरि निर्झर झर जल कण घन छाँह छ-

ण प्रभान भानकी ॥ सब ऋतु ऋतुपति प्रभाउ संतत वहै त्रिविध वाउ जनु विहार वाटिका नृप पंचवानकी ॥ २ ॥ विरचित तहँ पर्णशाल अति विचित्र लषण लाल निवसत जहँ नित कृपाल राम जानकी ॥ निजकर राजीवनैन पल्लव दल रचितसैन प्यास परसपर पियूष प्रेम पानकी ॥ ३॥ सिय अँगलिखै धातुराग सुमननि भूषण विभाग तिलक करनि क्योंकहौं कलानिधानकी ॥ माधुरी विलास हास गावत यश तुलसिदास वसति हृदय जोरी प्रिय परम प्रानकी ॥ ४ ॥ ४४ ॥ १५४ ॥ (रागकेदारा) ॥ लोने लाललषण सलोने रामलोनी सियचारु चित्रकूट बैठे सुरतरु तरहैं ॥ गोरे साँवरे शरीर पीत नील नीरजसे प्रेम रूप सुखमाके मनसिज सरहैं ॥ १ ॥ लोने नख शिख निरुपम निरखिवे योग बड़े उरकंधर विशाल भुजवरहैं॥ लोने लोने लोचन जटनिके मुकुट लोने लोने वदननि जीते कोटि सुधाकरहैं ॥ २ ॥ लोने लोने धनुष विशिषकर कमलनि लोने मुनि पटकटि लोने शर वरहैं ॥ प्रिया प्रियबंधकों दिखावत विटपवेलि मंजु कुंज शिला तल दल फूल फरहैं ॥३॥ ऋषिनके आश्रम सराहैं मृगनाम कहैं लागी मधुसरित झरत निर्झरहैं ॥ नाचत वरहीनीके गावत मधुप पिक बोलत विहँग नभ जल थल चरहैं ॥४ ॥ प्रभुहि विलोकि मुनिगण पुलके कहत भूरिभाग्य भये सब नीच नारि नरहैं ॥ तुलसी सो सुखलाहु लूटत किरात कोल जाको सिसिकत सुर विधिहरी हरहैं ॥ ५ ॥ ४५ ॥ १५५ ॥ (राग सारंग) ॥ आइरहे जवते दोउभाई ॥ तवते चित्रकूटकानन छवि दिन दिन अधिक अधिक अधिकाई ॥ १ ॥ सीता राम लषण पद अंकित अवनि सोहावनि वरणि न जाई ॥ मंदाकिनि मज्जत अवलोकत त्रिविध पाप त्रयताप नशाई ॥ २ ॥ उकठेउ हरित भए जल थलरुह नित नूतन राजीव सुहाई ॥ फूलत फलत पल्लवित पलुहत विटप वेलि अभिमत सुखदाई ॥ ३ ॥ सरित सरनि सरसीरुह संकुल सदन सँवारि रमाजनु छाई ॥ कूजत विहँग मंजु गुंजत अलि जात पथिक जनु लेत बुलाई ॥ ४ ॥ त्रिविध समीर नीर

झरझरननि जहँ तहँ रहे ऋषि कुटी बनाई ॥ शीतल सुभग शिल-
निपर तापस करत योग जप तप मनलाई॥५॥ भए सब साधु कि-
रात किरातिनि राम दरश मिटिगै कलुषाई ॥ खग मृग मुदित एक
सँग विहरत सहज विषम बड़ वैर विहाई ॥ ६ ॥ कामकेलि वा-
टिका विबुध वन लघु उपमा कवि कहत लजाई ॥ सकल भुवन
शोभासकेलि मानौं राम विपिन विधि आनि वसाई ॥ ७ ॥ वन
मिस मुनि मुनि तिय मुनि बालक वरणत रघुवर विमल बड़ाई ॥
पुलक शिथिल तनु सजल सुलोचन प्रमुदित मन जीवन फलपाई८
क्यों कहौं चित्रकूट गिरि संपति महिमा मोद मनोहर ताई ॥ तुल-
सी जहँ वसि लषण राम सिय आनँद अवधि अवध विसराई ॥ ९ ।
४६ । १५६ ॥ (रागगौरी) ॥ देखत चित्रकूट वन मन अति होत
हुलास ॥ सीताराम लषण प्रिय तापस वृंद निवास ॥१॥ सुरित सो-
हावनि पावनि पापहरनि पयनाम ॥ सिद्ध साधु सुर सेवित देत
सकल मन काम ॥ २ ॥ विटप वेलि नव किसलय कुसुमित सघन
सुजाति ॥ कंदमूल जल थलरुह अगणित अनवन भाँति ॥ ३ ॥
वंजुल मंजु वकुल कुल सुरतरु ताल तमाल ॥ कदलि कंद वसु
चंपक पाटल पनस रसाल ॥ ४ ॥ भूरुह भूरिभरे जनु छवि अनुरा-
ग सुभाग ॥ वन विलोकि लघु लागहिं विपुल विबुध वन बाग ॥ ५ ॥
जाइ न वरणि राम वन चितवत चित हरिलेत ॥ ललित लताद्रुम
संकुल मनहुँ मनोज निकेत ॥ ६ ॥ सरित सरनि सरसीरुह फूले
नाना रंग ॥ गुंजत मंजु मधुप गण कूजत विविध विहंग ॥ ७ ॥
लषण कहेउ रघुनंदन देखिय विपिन समाज ॥ मानहुँ चयन मयन
पुर आयउ प्रिय ऋतुराज ॥ ८ ॥ चित्रकूट पर राउर जानि अधिक
अनुरागु ॥ सखा सहित जनु रतिपति आयउ खेलन फागु ॥ ९ ॥
झिल्लि झाँझ झरना डफ पणव मृदंग निशान ॥ भेरि उपंग भृंग रव
ताल कीर कलगान ॥ १० ॥ हंस कपोत कबूतर बोलत चक्क च-
कोर ॥ गावत मानहुँ नारि नर मुदित नगर चहुँ ओर ॥ ११ ॥
चित्र विचित्र विविध मृग डोलत डोंगर डाँग ॥ जनु पुर वीथिन विह-

रत छैल सँवारे स्वांग ॥ १२ ॥ नटहिं मोर पिक गावहिं सुस्वर सुराग वधान॥ निलज तरुण तरुणी जनु खेलहिं समय समान॥१३॥ भरि भरि शुंड करिनि कारि जहँ तहँ डारहिं वारि ॥ भरत परस्पर पिचकनि मनहुँ मुदित नर नारि ॥ १४ ॥ पीठि चढ़ाइ शिशुन्ह कपि कूदत डारहिं डार ॥ जनु मुँह लाइ गेरु मसि भए खरानि असवार ॥ १५ ॥ लिए पराग सुमनरस डोलत मलय समीर ॥ मनहुँ अरगजा छिरकत भरत गुलाल अबीर ॥ १६ ॥ काम कौतुकी यहि विधि प्रभुहित कौतुक कीन्ह ॥ रीझि राम रतिनाथहि जग बिजयी वरदीन्ह ॥ १७॥ दुख वहु मोर दास जनि मानेहु मोरि रजाइ ॥ भलेहि नाथ माथे धरि आयसु चलेउ बजाइ ॥ १८ ॥ मुदितकिरात किरातिनि रघुवर रूप निहारि ॥ प्रभुगुण गावत नाचत चले जोहारि जोहारि ॥ १९ ॥ देहिं अशीश प्रशंसहिं मुनि सुर वरषहिं फूल ॥ गवने भवन राखि उर मूरति मंगल मूल ॥ २० ॥ चित्रकूट कानन छवि को कवि वरणै पार ॥ जहँ सिय लषण सहित नित रघुवर करहिं विहार ॥ २१ ॥ तुलसिदास चाचरि मिस कहे राम गुण ग्राम ॥ गावहिं सुनहिं नारि नर पावहिं सब अभिराम ॥ २२ । ४७ । १५७ ॥ (राग वसंत)॥ आजु वन्योहै विपिन देखो राम धीर॥ मानो खेलत फागु मुद मदन वीर॥१॥वट वकुल कदंब पनस रसाल॥ कुसुमित तरु निकर कुरव तमाल॥मनो विविध वेष धरे छैल यूथ॥ विचवीच लता ललना वरूथ ॥ २ ॥ पन वानक निर्झर अलि उपंग ॥ वोलत पारावत मानो डफ मृदंग ॥ गायक शुक कोकिल झिल्लि ताल ॥ नाचत वहुभाँति बरही मराल ॥ ३ ॥ मलयानिल शीतल सुरभि मंद ॥ वहु सहित सुमन रसरेनु वृंद ॥ मानौ छिरकत फिरत सबनि सुरंग ॥ भ्राजत उदार लीला अनंग ॥ ४ ॥ क्रीड़तजीते सुर नर असुर नाग ॥ हठि सिद्ध मुनिनके पंथलाग ॥ कह तुलसिदास तेहि छाड़ुमैन ॥ जेहि राख राम राजीव नैन ॥ ५॥ ॥ ४८ ॥ १५८ ॥ ऋतुपति आए भलो वन्यो वन समाज ॥ मानो भए हैं मदन महाराज आज ॥ १ ॥ मनो प्रथम फागुमिस करि अ-

नीति ॥ होरी मिस अरिपुर जारि जीति ॥ मारुत मिस पत्र प्रजा उजारि ॥ नय नगर बसाये विपिन झारि ॥ २ ॥ सिंहासन शैल शिला सुरंग ॥ कानन छवि रति परिजन कुरंग ॥ सित छत्र सुमन वल्ली वितान ॥ चामर समीर निर्झर निसान ॥ ३ ॥ मानो मधु माधव दोउ अनिप धीर ॥ वर विपुल विटप बानैत वीर ॥ मधुकर शुक कोकिल वंदि वृंद ॥ वरणहिं विशुद्ध यश विविध छंद ॥ ४ ॥ माहि परत सुमन रसफल पराग ॥ जनु देत इतर नृपकर विभाग ॥ कलि सचिव सहित नय निपुण मार ॥ कियो विश्व विवश चारिहु प्रकार ॥ ५ ॥ विरहिन पर नितनइ परै मारि ॥ डाटहीं सिद्ध साधक प्रचारि ॥ तिनकी न काम सकै चापिछाहँ ॥ तुलसीजे बसहिं रघुवीर बाहँ ॥ ६ ॥ ४९ ॥ १५९ ॥(राग मलार)॥ सबदिन चित्रकूट नीको लागत ॥ वरषाऋतु प्रवेश विशेषि गिरि देखत मन अनुरागत ॥ १ ॥ चहुँदिशि वन संपन्न विहँग मृग बोलत शोभा पावत ॥ जनु सुनरेश देश पुर प्रमुदित प्रजा सकल सुख छावत ॥ ॥ २ ॥ सोहत श्याम जलद मृदु घोरत धातुरंगमगे शृंगनि ॥ मनहुँ आदि अंभोज विराजत सेवित सुर मुनि भृंगनि ॥ ३ ॥ शिखर परसि घन घटहिं मिलत बग पाँतिसो छवि कवि वरणी ॥आदि बराह विहरि वारिधि मानो उठयोहै दशन धरि धरणी ॥ ४ ॥ जलयुत विमल शिलनि झलकत नभ वन प्रतिबिंब तरंग ॥ मानहुँ जग रचना विचित्र बिलसत विराट अँग अंग ॥ ५ ॥ मंदाकिनिहि मिलत झरना झरि झरि भरि भरि जल आछे ॥ तुलसी सकल सुकृत सुख लागे मानौ राम भक्तिके पाछे ॥ ६ ॥ ५० ॥ १६० ॥ (राग सोरठ) ॥ आजको भोर और सो माई ॥ सुनो न द्वार वेद वंदी धुनि गुणि गण गिरा सोहाई ॥ १ ॥ निज निज पति सुंदर सदननि ते रूप शील छवि छाई ॥ लेन अशीश सीय आगे करि मोपैं सुत वधून आई ॥ २ ॥ बूझीहौंन विहँसि मेरे रघुवर कहाँरी सुमित्रा माता ॥ तुलसी मनहुँ महासुख मेरो देखि न सकेउ विधाता ॥ ३ ॥ ॥ ५१ ॥ १६१ ॥ जननी निरखति बाण धनुहियाँ ॥ बार बार उर

नैननि लावति प्रभुजीकी ललित पनहियाँ ॥ १ ॥ कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति कहि प्रिय वचन सवारे ॥ उठहु तात बलि मातु वदन पर अनुज सखा सबद्वारे ॥२ ॥ कबहुँ कहति यों बड़ी बार भइ जाहु भूप पहँ भइया॥ बंधु बोलि जेंइय जो भावै गई नेवछावरि मइया॥३॥कबहुँ समुझि वन गवन रामको रहि चकि चित्र लिखीसी ॥ तुलसिदास यह समय कहे ते लागत प्रीति सिखीसी ॥४॥ ॥ ५२ ॥ १६२ ॥ माईरी मोहिं न कोउ समुझावै ॥ राम गवन साँचो किधौं सपनो मन परतीति न आवै ॥ १ ॥ लगेइ रहत मेरे नैननि आगे राम लषण अरु सीता ॥ तदपि न मिटत दाह या उर को विधि जो भयो विपरीता ॥ २ ॥ दुख न रहै रघुपतिहि विलोकत तनु न रहै विनु देखे ॥ करत न प्राण पयान सुनहुँ सखि अरुझि परी यहि लेखे ॥ ३ ॥ कौशल्याके विरह वचन सुनि रोइ उठीं सब रानी ॥ तुलसिदास रघुवीर विरहकी पीर न जाति बखानी ॥ ४ ॥ ५३ ॥ १६३ ॥ जब जब भवन विलोकति सूनो ॥ तब तब विकल होति कौशल्या दिन दिन प्रति दुख दूनो ॥१॥ सुमिरत बाल विनोद रामके सुंदर मुनि मनहारी ॥ होत हृदय अति शूल समुझि पद पंकज अजिर विहारी ॥२ ॥ को अब प्रात कलेऊ मागत रूठि चलै गो माई ॥ श्याम तामरस नैन श्रवत जल काहि लेउँ उरलाई ॥ ३ ॥ जीवों तो विपति सहौं निशि वासर मरौं तौ मन पछितायो ॥ चलत विपिन भरि नयन राम को वदन न देखन पायो ॥ ४ ॥ तुलसिदास यह दुसह दशा अति दारुण विरह घनेरो ॥ दूरि करै को भूरि कृपा विनु शोकजनित रुज मेरो ॥ ५॥५४ ॥ ॥१६४॥मेरो यह अभिलाप विधाता॥कब पुरवै सखि सानुकूल ह्वैहरि सेवक सुखदाता ॥ १ ॥ सीता सहित कुशल कोशलपुर आवतहैं सुत दोऊ॥श्रवण सुधा सम वचन सखी कब आइ कहैगो कोऊ ॥ ॥२॥ सुनि संदेश प्रेम परिपूरण संभ्रम उठि धावोंगी ॥ वदन विलोकि रोकि लोचन जल हरपि हिये लावोंगी॥३॥जनकसुता कब सासु कहैं मोहिं राम लषण कहैं मैया॥बाहु जोरि कब अजिर चलहिंगे श्या-

म गौर दोउ भैया ॥४॥ तुलसिदास यहिभाँति मनोरथ करत प्रीति अति बाढ़ी॥थकित भई उर आनि राम छवि मनहुँ चित्र लिखि काढ़ी ॥८।८८।१६८॥ सुन्यो जब फिरि सुमंत पुर आयो ॥ कहिहै कहा प्राणपतिकी गति नृपति विकल उठि धायो ॥१॥ पाँय परत मंत्री अति व्याकुल नृप उठाइ उरलायो॥दशरथ दशा देखि न कह्यो कछु हरि जो सँदेश पठायो॥२॥बूझि न सकत कुशल प्रीतमकी हृदय यहै पछितायो ॥ साँचेहु सुत वियोग सुनिवे कहँ धिगविधि मोहिं जिआयो ॥ ३॥ तुलसिदास प्रभु जानि निठुर हौं न्याय नाथ विसरायो ॥ हा! रघुपति कहि पर्यौ अवनि जनु जलते मीन विलगायो ॥ ४ । ८६ । १६६ ॥ सुएहु न मिटैगो मेरो मानसिक पछिताउ ॥ नारि वश न विचारि कीन्हो काज सोचत राउ ॥ १ ॥ तिलकको बोले दियोवन चौगुणौ चित चाउ ॥ हृदय दाड़िम ज्यों न विहर्यो समुझि शील सुभाउ॥२॥ सीय रघुवर लषण विनु भए भभरि भग्यौ न आउ॥मोहिं बूझि न परत याते कौन कठिन कुघाउ ॥३॥ सुनि सुमंतकी आनि सुंदर सुवन सहित जिआउ ॥ दास तुलसी नतरु मोकों मरण अमिय पिआउ ॥ ४ ॥ ॥ ८७ ॥ १६७ ॥ अवध विलोकिहौं जीवत रामभद्र विहीन ॥ कहा करिहैं आइ सानुज भरत धर्मधुरीन ॥ १ ॥ राम शोक सनेह संकुल तनु विकल मनु लीन ॥ टूटि तारो गगन मग ज्यों होत छिन छिन छीन ॥ २ ॥ हृदय समुझि सनेह सादर प्रेम पावन मीन ॥ करी तुलसीदास दशरथ प्रीति परमिति पीन ॥ ३ ॥८८॥ १६८॥ (राग गौरी) करत राजा मनमो अनुमान॥ शोक विकल मुख वचन न आवैं विछुरे कृपानिधान ॥ १ ॥ राज देन कहँ बोलि नारि वश मैं जो कह्यौ वन जान ॥ आयसु शिर धरि चले हरषि हिय कानन भवन समान ॥ २ ॥ ऐसे सुतके विरह अवधि लौं जौं राखौं यह प्रान ॥ तौ मिटि जाइ प्रीतिकी परमिति अयश सुनौ निजकान ॥ ॥ ३ ॥ राम गये अजहूँ हौं जीवत समुझतहीं अकुलान ॥ तुलसिदास तनुतजि रघुपति हित कियो प्रेमपरवान ॥४॥८९॥१६९ ॥

ऐसे तैं क्यों कटुवचन कह्यो री॥ राम जाहु कानन कठोर तेरो कैसे धौं हृदय रह्योरी॥ १॥ दिनकर वंश पिता दशरथ से राम लषण से भाई॥जननी तू जननी तौ कहा कहौं विधिकेहि खोरि न लाई॥२॥हौं लहिहौं सुखराज मातुह्वै सुतशिर छत्र धरैगो॥ कुल कलंक मल मूल मनोरथ तो विनु कौन करैगो॥३॥ऐहैं राम सुखी सब ह्वैहैं ईश अयश मेरो हरिहैं॥तुलसिदास मोको बड़ो सोचहै तू जन्म कवनि विधि भरिहै॥४।६०।१७०॥ताते हौं देत न दूषण तोहू॥राम-विरोधीउर कठोरते प्रगट कियोहै विधि मोहू॥१॥सुंदर सुखद सुशील सुधानिधि जरनि जाइ जिहि जोये॥ विष वारुणी बंधुकहियत विधु नातो मिटत न धोये॥ २॥ होते जौन सुजान शिरोमणि राम सवके मन माहीं॥ तौ तेरी करतूति मातु सुनि प्रीति प्रतीति कहा हीं॥ ३ ॥ मृदु मंजुल सोची सनेह शुचि सुनत भरत वरवानी॥ तुलसी साधु साधु सुर नर मुनि कहत प्रेम पहिचानी४।६१।१७१॥ जो पै हौं मातुमतें महँ ह्वैहौं॥तौ जननी जगमें या मुखकी कहाँ कालिमा ध्वैहौं ॥ १ ॥ क्यों हौं आजु होत शुचि शपथनि कोन मानिहैं साँची॥महिमा मृगी कौन सुकृतीकी खलवचन विशिषतें बाँची२ गहि न जाति रसना काहूकी कहो जाहि जोइ सूझै॥ दीनबंधुकारुण्य सिंधुविनु कौन हियेकी बूझै॥ ३॥ तुलसी राम वियोग विषम विप विकलनारि नर भारी॥ भरत सनेह सुधा सींचे सब भए तेहिसमै सुखारी॥ ४। ६२। १७२॥ काहेको खोरि कैकयिहि लावों॥ धरहु धीर बलिजाँउ तात मोकों आज विधाता बावों॥ १ ॥ सुनिवे योग वियोग रामको हों न होउमे प्यारे॥ सो मेरे नयनानि आगे ते रघुपति वनहिं सिधारे॥ २॥ तुलसिदास समुझाइ भरत कहँ आँसु पोंछि उरलाये॥ उपजी प्रीति जानि प्रभुके हित मनहुँ राम फिरि आए॥ ३। ६३। १७३॥ मेरो अवधधों कहहु कहा है॥ करहु राज रघुराज चरण तजि लै लटिलागु रहा है॥१॥ धन्य मातु हों धन्य लागि जेहि राज समाजढहा है॥ तापर मोसों प्रभु करि चाहत सब विनु दहन दहा है॥ २॥ राम शपथ कोउ

कछू कहै जिनि मैं दुःख दुसह सहाहै ॥ चित्रकूट चलिए सब मिलि बलि क्षमिए मोहिं हहाहै ॥ ३ ॥ यों कहि भोर भरत गिरिवरको मारग बूझि गहाहै ॥ सकल सराहत एक भरत जग जन्मि सुलाहु लहाहै ॥ ४ ॥ जानहिं सिय रघुनाथ भरतको शील सनेह महाहै ॥ कै तुलसी जाको राम नाम सों प्रेम नेम निबहाहै ॥ ५ ६४।१७४॥ भाई हौं अवध कहा रहि लैहों ॥ राम लषण सिय चरण विलोकन कालिह काननहिं जैहों ॥ १ ॥ यद्यपि मोते कै कुमातुते ह्वै आई अति पोची॥सन्मुख गए शरण राखहिंगे रघुपति परमसकोची॥२॥ तुलसी यों कहि चले भोरहीं लोग सकल सँग लागे॥ जनु वनजरत देखि दारुण दव निकसि विहग मृग भागे॥ ३। ६५। १७५॥ शुकसों गहवरि हिय कहै सारो ॥ वीर कीर सिय राम लषण विनु लागत जग अँधियारो ॥ १ ॥ पापिनि चेरि अयानिरानि नृपहित अनहित न विचारो ॥ कुलगुरु सचिव साधु सोचत विधि कौन बसाइ उजारो ॥२॥ अवलोके न चलत भरि लोचन नगर कोलाहल भारो॥सुने न वचन करुणा करके जब पुरपरिवार सँभारो ॥३॥ भैया भरत भावतेके सँग वन सब लोग सिधारो ॥ हम पर पाँइ पींजरनि तरसत अधिक अभाग हमारो॥४॥सुनि खग कहत अंब उमगी रहि समुझि प्रेमपथन्यारो ॥ गएते प्रभुहि पहुँचाइ फिरे पुनि करत करम गुन गारो ॥५॥ जीवन जग जानकी लषणको मरण महीप सँवारो॥ तुलसी और प्रीतिकी चरचा करत कहा कछु चारो॥६।६६।१७६॥ कहै शुक सुनहिं सिखावन सारो ॥ विधि करतब विपरीत वामगति रामप्रेम पथ न्यारो ॥ १ ॥ को नर नारि अवध खग मृग जेहि जीवन रामते प्यारो ॥ विद्यमान सबके गवने वन वदन करमको कारो ॥ २ ॥ अंब अनुज प्रियसखा सु सेवक देखि विषाद विसारो ॥ पक्षी परवश परे पींजरनि लेखो कौनु हमारो ॥ ३ ॥ रही नृपकी बिगरीहै सबकी अब एक सँवारनिहारो ॥ तुलसी प्रभुनिज चरण पीठ मिस भरत प्राण रखवारो ॥ ४। ६७॥ १७७॥ तादिन शृंगवेरपुर आए॥राम सखाते समाचार सुनि वारि वि-

लोचन छाए ॥ कुश साथरी देखि रघुपतिकी हेतु अपनपौ जानी ॥ कहत कथा सिय राम लषणकी बैठेहि रैनि बिहानी ॥ भोरहि भरद्वाज आश्रमह्वै करि निषादपति आगे॥चले जनु तक्यो तड़ाग तृषित गज घोर घामके लागे ॥ बूझत चित्रकूट कहँ जेहि तेहि मुनि बालकनि बतायो ॥ तुलसी मनहुँ फणिक मणि ढूँढ़त निरखि हरषि हिय धायो॥१॥ ६८।१७८॥ (राग केदारा) ॥ बिलोके दूरिते दोउवीर ॥ उर आयत आजान सुभग भुज श्यामल गौर शरीर ॥ ॥ १ ॥ शीश जटा सरसीरुह लोचन बने परिधन मुनिचीर ॥ निकट निषंग संग सिय शोभित करनिधुनत धनु तीर ॥ २ ॥ मन अगहुँड़ तनुपुलकि शिथिल भयो नलिन नयन भरे नीर॥गड़त गोड़ मानो सकुच पंकमहँ कढ़त प्रेम बलधीर ॥ ३ ॥ तुलसिदास दशा देखि भरतकी उठिधाये अतिहिं अधीर ॥ लिय उठाइ उरलाइ कृपानिधि बिरह जनित हरिपीर ॥ ४ । ६९ । १७९ ॥ भरत भए ठाढ़े कर जोरि ॥ ह्वै न सकत सामुहे सकुचवश समुझि मातुकृत खोरि ॥ १ ॥ फिरिहैं किधौं फिरन कहिहैं प्रभु कलपि कुटिलता मोरि ॥ हृदय सोच जल भरे बिलोचन नेह देह भइ भोरि ॥ २ ॥ वनवासी पुरलोग महामुनि किएहैं काठ केसे कोरि॥ दै दै श्रवण सुनिवेको जहँ तहँ रहे प्रेम मनवोरि ॥३॥ तुलसीराम सुभाव सुमिरि उर धरि धीरजहि बहोरि ॥ बोले वचन विनीत उचित हित करुणा रसहि निचोरि ॥ ४ । ७० । १८० ॥ जानतहौ सबहीके मनकी ॥ तदपि कृपालु करौं विनती सोइ सादर सुनहुँ दीन हित जनकी ॥ १ ॥ एसेवक संतत अनन्य अति ज्यों चातकहि एकगति घनकी ॥ यह विचारि गवनहु पुनीत पुर हरहु दुसह आरत परिजनकी ॥२॥ मेरो पुनि जीवन जानिए ऐसोइ जिय जैसो अहि जासु गई मणि फनकी ॥ मेटहु कुलकलंक कौशलपति आज्ञा देहु नाथ मोहिं वनकी ॥ ३ ॥ मोको जोइ जोइ लाइये लागै सोइ सोइ जौं उतपति कुमातुते यातनकी ॥ तुलसिदास सब दोष दूरि करि प्रभु अब लाज करहु निज पनकी ॥ ४ । ७१ । १८१ तात विचारोधौं

हौं क्यौं आवौं ॥ तुम्ह शुचि सुहृद सुजान सकल विधि बहुत कहा
कहि कहि समुझावौं ॥ १॥ निजकर खाल खैंचि या तनुते जो पि-
तु पगपानहीं करावौं॥होउ न उऋण पिता दशरथते कैसे ताको व-
चन मेटि पतियावौं ॥ २ ॥ तुलसिदास जाको सुयश तिहूँ पुर
क्यौं तेहि कुलहि कालिमाँ लावौं ॥ प्रभु रुख निरखि निराश भरत
भए जान्योहै सबहि भाँति विधिवावौं ॥ ३ । ७२ । १८२ ॥ बहु-
रौं भरत कह्यो कछु चाहैं ॥ सकुच सिंधु बोहित विवेक करि बुधि
बल वचन निबाहैं ॥ १ ॥ छोटेहुते छोह करि आएमैं सामुहे न हे-
रो ॥ एकहि वार आजु विधि मेरो शील सनेह निवेरो ॥ २ ॥ तुल-
सी जौं फिरिबोन बनै प्रभुको तौहों आयसु पावौं॥घर फेरिए लषण
लरिका हैं नाथ साथहों आवौं ॥ ३ । ७३ । १८३ ॥रघुपति मो-
हिं संग किन लीजै॥बारबार पुर जाहु नाथ केहि कारण आयसुदी-
जै ॥१॥ यद्यपिहौं अति अधम कुटिल मति अपराधिनि को जायो ॥
प्रणतपालकोमल सुभाव जिय जानि शरणतकि आयो॥ २ ॥ जौंमेरे
तजि चरण आनगति कहौं हृदय कछु राखी ॥ तौ परिहरहु दयालु
दीनहित प्रभु अभिअंतरसाखी ॥३॥ताते नाथ कहौंमैं पुनि पुनि प्रभु
पितु मातु गोसाईं॥भजनहीन नरदेह वृथा खर श्वान फेरु की नाईं ॥
॥ ४ ॥ बंधु वचन सुनि श्रवण नयन राजीव नीरभरि आए ॥ तुल-
सिदास प्रभु परम कृपागहि बाँह भरत उरलाए ॥ ५ ।७४। १८४ ॥
काहे को मानत हानि हिएहो ॥ प्रीति नीति गुण शील धर्म कहँ
तुम अवलंब दिएहो ॥ १ ॥ तात जात जानिवे न ए दिन करि प्रमा-
ण पितु वानी ॥ ऐहौं वेगि धरहु धीरज उर कठिन कालगति जा-
नी ॥ २ ॥ तुलसिदास अनुजहिं प्रबोधि प्रभु चरणपीठ निज दी-
न्हे ॥ मनहुँ सबनिके प्राण पाहरू भरत शीश धरि लीन्हे ॥ ३ ॥
॥ ७५ ॥ १८५ ॥ विनती भरत करत कर जोरे॥ दीनबंधु दीनता
दीनकी कबहुँ परे जिनि भोरे॥१॥ तुम्हसे तुम्हहिं नाथ मोकों मोसे
जन तुमको बहु तेरे ॥ इहै जानि पहिचानि प्रीति क्षमिवे अघ औ-
गुण मेरे ॥ २ ॥ यों कहि सीय राम पाँयनि परि लषण लाइ उर

लीन्हे ॥ पुलक शरीर नीर भरि लोचन कहत प्रेम प्रण कीन्हे ॥३॥ तुलसी वीते अवधि प्रथम दिन जो रघुवीर न ऐहो ॥ तौ प्रभु चरण सरोज शपथ जीवत परिजनहि न पैहो ॥ ४ ॥ ७६ ॥ १८६ ॥ अवशि हौं आयसु पाइ रहौंगो॥जनमि कैकयी कोखि कृपानिधि क्यों कछु चपरि कहौंगो ॥ १ ॥ भरत भूप सिय राम लषण वन सुनि सानंद सहौंगो ॥ पुर परिजन अवलोकि मातु सव सुख संतोष लहौंगो ॥२॥ प्रभु जानत जेहि भाँति अवधिलौं वचन पालि निवहौंगो॥ आगेकी विनती तुलसी तव जव फिरि चरण गहौंगो ॥ ३ ॥ ७७॥ ॥ १८७॥ प्रभुसों मैं ढीठो वहुत दई है ॥ कीवी क्षमा नाथ आरतिते कही कुजुगुति नई है ॥ १ ॥ यों कहि वार वार पाँयनि परि पाँवरि पुलकि लई है ॥अपनो आदिन देखि हौं डरपत जेहि विष वेलि बई है ॥ २ ॥ आये सदा सुधारि गोसाँई जनते विगरि गई है ॥ थके वचन पैरत सनेह सर परचो मानो घोर घई है ॥ ३ ॥ चित्रकूट तेहि समै सवनिकी बुद्धि विषाद हई है॥ तुलसी राम भरतके विछुरत शिला सप्रेम भई है॥ ४॥ ७८॥ १८८॥जवते चित्रकूटते आए॥नंदिग्रामखनि अवनि डासि कुश पर्णकुटी करि छाये ॥ १ ॥ अजिन वसन फल अशन जटा धरे रहत अवधि चित दीन्हे ॥प्रभुपद प्रेम नेम व्रत निरखत मुनिन्ह नमित मुख कीन्हे ॥ २ ॥ सिंहासनपर पूजि पादुका वारहिंवार जोहारे ॥ प्रभु अनुराग माँगि आयसु पुर जन सवकाज सँवारे॥३॥तुलसी ज्यों ज्यों घटत तेजतनु त्यौं त्यौं प्रीति अधिकाई ॥ भए न हैं न होहिंगे कवहूं भुवन भरतसे भाई ॥४॥७९॥ १८९॥ (राग राम कली)॥ राखी भक्ति भली भलाई भली भली भाँति भरत ॥ स्वारथ परमारथ पथी जय जय जग करत ॥ १ ॥ जो व्रत मुनिवरनि कठिन मानस आचरत ॥ सो व्रत लिए चातक ज्यों सुनत पापहरत ॥ २ ॥ सिंहासन सुभग राम चरण पीठ धरत चालत सव राज काज आयसु अनुसरत॥ ३ ॥ आपु अवधविपिन वंधु सोच जरनि जरत॥ तुलसी सम विपम सुगम अगम लखि न परत ॥ ४।८०।१९० ॥ मोहिं भावत कहि आवत नहिं भरत

जूकी रहनि ॥ सजल नयन शिथिल बयन प्रभु गुण गण कहनि॥१॥
अशन वसन अयन शयन धरम गरुअ गहनि ॥ दिनादिन प्रणप्रेम ने-
म निरुपधि निरवहनि ॥ २ ॥ सीता रघुनाथ लषण विरह पीरस-
हनि ॥ तुलसीतजि उभय लोक रामचरण चहनि ॥३।८१।१९१॥
जानी है शंकर हनुमान लषण भरत राम भगति ॥ कहत सुगम
करत अगम सुनत मीठी लगति ॥ १ ॥ लहत सकृत चहत सकल
युगयुग जगजगति ॥ राम प्रेम पथते कबहुँ डोलति नाहिं डगति
॥ २ ॥ रिधि सिधि विधि चारि सुगति जा विनु गति अगति ॥
तुलसी तेहि सन्मुख विनुविषय ठगिनि ठगति॥३।८२।१९१॥ (राग
गौरी) ॥ कैकयी करि धौं चतुराई कौन॥राम लषण सिय वनहिं पठाए
पति पठए सुरभौन ॥ १ ॥ कहाँ भलो धौं भयो भरतको लगे
तरुण तन दौन ॥ पुरवासिन्हके नयन नीर विनु कबहुँ तो देखति
हौंन ॥ २ ॥ कौशल्या दिन राति विसूरति बैठि मनहिं मन मौन ॥
तुलसी उचित न होइ रोइबो प्राण गए सँग जौन ॥ ३।८३।१९३ ॥
हाथै मीजबो हाथ रह्यो ॥ लगी न संग चित्रकूटहु ते ह्याँ कहाँ जात
बह्यो ॥१॥ पति सुरपुर सिय राम लषण वन मुनिव्रत भरत गह्यौ॥
हौं रहि घर मशान पावक ज्यों मरिबोइ मृतक दह्यो ॥ २ ॥ मेरोइ
हियो कठोर करिबे कहँ विधि कहुँ कुलिशलह्यो ॥ तुलसीवन पहुँ-
चाइ फिरी सुत क्यों कछु परत कह्यो ॥ ३।८४।१९४ ॥ (राग सो-
रठ ॥ हौं तो समुझि रही अपनोसो ॥ राम लषण सियको सुखमो
कहँ भयो सखी सपनोसो ॥ १ ॥ जिन्हके विरह विषाद बढ़ाउन्ह
खग मृग जीव दुखारी ॥ मोहिं कहा सजनी समुझावति हौं तिन्हको
महतारी ॥२॥ भरत दशा सुनि सुमिरि भूपगति देखि दीन पुरवा-
सी ॥ तुलसी राम कहत हौं सकुचति ह्वै है जग उपहाँसी ॥ ३।८५
१९५ ॥ आली हौं इन्हहिं बुझावौं कैसे ॥ लेत हिये भरि भरि प-
तिके हित मातु हेतु सुत जैसे ॥ १ ॥ वारवार हिहिनात हेरि उत
जो बोलै कोउ द्वारे ॥ अंगलगाइ लिए वारेते करुणामय सुत प्यारे
॥ २ ॥ लोचन सजल सदा सोवतसे खान पान विसराये ॥ चितव-

त चौंकि नाम सुनि सोचत राम सुरति उर आये ॥ ३ ॥ तुलसी प्रभुके विरह वधिक हठि राजहंससे जोरे ॥ ऐसेहुँ दुखित देखिहों जीवति राम लषणके घोरे ॥ ४ । ८६ ॥ १९६ ॥ राघो एकवार फिरि आवो ॥ ए वर बाजि विलोकि आपने बहुरो वनहिं सिधावो १ जे पय प्याइ पोखिकर पंकज वारवार चुचुकारे ॥ क्यों जीवहिं मेरे राम लाड़िले ते अब निपट विसारे ॥२॥ भरत सौगुनी सार करत है अति प्रिय जानि तिहारे ॥ तदपि दिनहुँ दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिम मारे ॥ ३ ॥ सुनहु पथिक जो राम मिलहिं वन कहियो मातु सँदेशो ॥ तुलसी मोहिं और सबहिनते इन्हको बड़ो अँदेशो ॥ ४ ॥ ८७ ॥ १९७ ॥ (राग केदारा) ॥ काहूसों काहू समाचार ऐसे पाए ॥ चित्रकूटते राम लषण सिय सुनियत अनत सिधाये ॥ १ ॥ शैल सरित निर्झर वन मुनिथल देखि देखि सब आये ॥ कहत सुनत सुमिरत सुखदायक मानस सुगम सुहाये ॥ २ ॥ बाड़ि अवलंब वाम विधि विघटित विपम विपाद बढ़ाये ॥ सिरस सुमन सुकुमार मनोहर बालक विंधि चढ़ाये ॥ ३ ॥ अवध सकल नर नारि विकल अति अकनि वचन अनभाये ॥ तुलसी राम वियोग शोक वश समुझत नाहिं समुझाये ॥ ४ ॥ ८८ ॥ १९८ ॥ सुनीमैं सखि मंगल चाह सुहाई ॥ शुभ पत्रिका निषादराजकी आजु भरत पहँ आई ॥ १ ॥ कुँवरसो कुशल क्षेम अलि तेहि पल कुलगुरु कहँ पहुँचाई ॥ गुरु कृपालु संभ्रम पुर घर घर सादर सबहि सुनाई ॥ २ ॥ वधि विराध सुर साधु सुखी करि ऋपि शिख आशिष पाई ॥ कुंभज शिष्य समेत संग सिय मुदित चले दोउ भाई ॥३॥ रेवा विंधि वीच सुपास थल बसेहैं पर्ण गृह छाई ॥ पंथ कथा रघुनाथ पथिककी तुलसिदास सुनि गाई ॥ ४ ॥ ८९ ॥ १९९ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां अयोध्याकांड समाप्तः ॥

अथ आरण्यकाण्ड प्रारम्भः ॥ २ ॥

(राग मलार) ॥ देखे राम पथिक नाचत मुदित मोर ॥ मानत मनहुँ सताड़ित ललित वन धनु सुर धनु गरजनि टंकोर ॥ १ ॥

कंपै कलाप वर बरहि फिरावत गावत कल कोकिल किशोर ॥ जहँ जहँ प्रभु विचरत तहँ तहँ सुख दंडकवन कौतुक न थोर ॥ सघन छाँह तम रुचिर रजनि भ्रम वदन चंद चितवत चकोर ॥ तुलसी मुनि खग मृगनि सराहत भये हैं सुकुत सब इन्हकी ओर ॥ १ ॥ २०० ॥ (राग कल्यान) ॥ सुभग शरासन शायक जोरे ॥ खेलत राम फिरत मृगया वन वसति सो मृदु मूरति मन मोरे ॥ पीत वसन कटि चारु चारि शर चलत कोटि नट सो तृण तोरे॥श्यामल तनु श्रम कण राजत ज्यों नव घन सुधा सरोवर खोरे ॥ ललित कंध वर भुज विशाल उर लेहिं कंठ रेखें चित चोरे ॥ अवलोकत मुख देत परमसुख लेत शरद शशि की छबिछोरे ॥ जटा मुकुट शिर सारस नयननि गौहैं तकत सु भौंह सकोरे ॥ शोभा अमित समाति न कानन उमगि चली चहुँ दिशि मिति फोरे ॥ चितवत चकित कुरंग कुरंगिनि सब भये मगन मदनके भोरे ॥तुलसिदास प्रभु बाण न मोचत सहज सुभाय प्रेमवश थोरे ॥ २ ॥ २०१ ॥ (राग सोरठ) ॥ बैठेहैं रामलषण अरु सीता ॥ पंचवटीवर पर्णकुटीतर कहैं कछु कथा पुनीता ॥ कपट कुरंग कनकमणिमय लखि प्रिय सों कहति हँसि वाला ॥ पाए पालिवे योग मंजु मृग मारेहुँ मंजुल छाला ॥ प्रिया वचन सुनि विहँसि प्रेमवश गवहिं चाप शर लीन्हे ॥ चल्यो सो भाजि फिरि फिरि हेरत मुनि मख रखवारे चीन्हे ॥ सोहति मधुर मनोहर मूरति हेमहरिणके पाछे ॥ धावनि नवनि विलोकनि विथकनि वसै तुलसि उर आछे ॥ ३ ॥ २०२ ॥ (राग कल्यान) ॥ कर शर धनु कटि रुचिर निषंग ॥ प्रिया प्रीति प्रेरित वन वीथिन्ह विचरत कपट कनक मृग संग ॥ भुज विशाल कमनीय कंध उर श्रम सीकर सोहैं साँवरे अंग ॥ मनो मुकुतामणि मरकत गिरिपर लसत ललित रवि किरणि प्रसंग ॥ नलिन नयन शिर जटा मुकुट बिच सुमन माल मानो शिव शिरगंग ॥ तुलसिदास ऐसी मूरति की बलि छवि विलोकि लाजैं अमित अनंग ॥ ॥ ४ ॥ २०३ ॥ (राग केदारा ॥) राघव भावति मोहिं विपिन की

वीथिन्ह धावनि ॥ अरुण कंज वरण चरण शोक हरण अंकुश कु-
लिश केतु अंकित अवनि ॥ सुंदर श्यामल अंग वसन पीत सुरंग
कटि निपंग परिकरमिरवनि ॥ कनक कुरंग संग साजे कर शर
चाप राजिवनयन इत उत चितवनि ॥ सोहत शिर मुकुट जटा पट
ल निकर सुमन लता सहित रचीवनवनि ॥ तैसेई श्रम सीकर रु-
चिर राजत मुख तैसिए ललित भ्रकुटिन्हकी नवनि ॥ देखत खग
निकर मृग रवनिन्ह युत थकित विसारि जहाँ तहाँ की भवनि ॥
हरि दर्शन फल पायोहै ज्ञान विमल याचत भगति मुनि चाहत ज-
वनि॥जिन्हके मन मगन भयेहैं रस सगुण तिन्हके लेखे अगुण मु-
कुति कवनि ॥ श्रवण सुखकरनि भवसरिता तरनि गावत तुलसि-
दास कीरति पवनि ॥ ५ ॥ २०४॥ (राग सोरठ) ॥ रघुवर दूरि जा-
इ मृग मारयो ॥ लषण पुकारि राम हरुयैं कहि मरतहुँ वैरसँभा-
रयो ॥ सुनहु तात कोउ तुम्हहिं पुकारत प्राणनाथ की नाईं ॥ क-
ह्यो लषण हत्यौ हरिण कोपि सिय हठि पठये बरिआईं ॥ बंधु वि-
लोकि कहत तुलसी प्रभु भाई भली न कीन्ही ॥ मेरे जान जानकी
काहू खल छलकरि हरि लीन्ही ॥ ६ ॥ २०५ ॥ आरत वचन कह-
ति वैदेही॥ विलपति भूरि विसूरि दूरि गए मृग सँग परमसनेही ॥
कहे कटु वचन रेख नाँवी मैं तात क्षमा सो कीजै ॥ देखि
वधिक वश राज मरालिनि लषण लाल छिनि लीजै ॥ वन-
देवनि सिय कहनि कहति यों छल करि नीच हरीहों ॥ गोमर
कर सुरधेनुनाथ ज्यौं त्यौं पर हाथ परीहों ॥ तुलसिदास रघुनाथ
नाम धुनि अकनि गीध धुकि धायो ॥ पुत्रि पुत्रि जिनि डरहिं न
जैहै नीचु मीचुहौं आयो ॥ ७॥२०६ ॥ फिरत न वारहिं वार प्रचा-
रयौ ॥ चपरि चोंच चंगुल हय हतिरथ खंड खंड करि डारयौ ॥
विरथ विकल कियो छीन लीन्हि सिय घन वायनि अकुलान्यौ ॥
तव असि काढ़ि काटि पर पाँवर लै प्रभु प्रिया परान्यौ ॥ राम
काज खगराज आजु लरयौ जियत न जानकि त्यागी ॥ तुलसि
दास सुर सिद्ध सराहत धन्य विहँग बड़भागी ॥ ८॥२०७ ॥ (राग

गौरी)॥ हेमको हरिण हनि फिरे रघुकुल मणि लषणललित कर लिए मृगछाल॥ आश्रम आवत चले शकुन न भये भले फरकैं वामबाहु लोचन विशाल॥ १॥ सरित जल मलिन सरनि सूखे नलिन अलि न गुंजत कल कूजैं न मराल॥ कोलिनि कोल किरात जहाँ तहाँ बिलखात वन न विलोकि जात खग मृगमाल॥ २॥ तरु जे जानकी लाये ज्याये हरि करि कपि हेरैं नहुँकरि झरैं फल न रसाल॥जे शुक शारिका पाले मातु ज्यौं ललकि लाले तेउ न पढ़त न पढ़ावैं मुनिबाल॥ ३॥ समुझि सहमे सुठि प्रिया तो न आई उठि तुलसी बिचरण परण तृणशाल॥ औरैसो सब समाजु कुशल न देखों आजु गहव हिय कहैं कोशलपाल॥ ४। ९। २०८॥ आश्रम निरखि भूले द्रुम न फले न फूले अलि खग मृग मानो कबहुँ नहे॥ मुनि न मुनिवधूटी उजरी परणकुटी पंचवटी पहिचानि ठाढ़ेइ रहे॥ उठि न सलिल लिए प्रेम मुदित हिए प्रिया न पुलकि प्रिय वचन कहे॥ पल्लव सालन हेरी प्राणवल्लभा न टेरी विरह विथकि लखि लषण गहे॥ देखे रघुपति गति विवुध विकल अति तुलसी गहन विनुदहन दहे॥ अनुज दियो भरोसो तौलोंहै सोचु खरोसो सिय समाचार प्रभु जौलों न लहे॥ १०। २०९॥(राग सोरठ)॥ जबहिं सिय सुधि सब सुरनि सुनाई॥भएसुनि सजग विरहसरि पैरत थके थाह सी पाई॥कसि तूणीर तीर धनु धर धुर धीर वीर दोउ भाई॥ पंचवटी गोदहिं प्रणाम करि कुटी दाहिनी लाई॥चले बूझत वन वेलि विटप खग मृग आल अवलि सुहाई॥ प्रभुकी दशा सो समो कहिबेको कवि उर आहनआई॥ रटनि अकनि पहिचानि गीध फिरे करुणामय रघुराई॥ तुलसीरामहिं प्रिया विसरि गई सुमिरि सनेह सगाई॥ ११॥ २१०॥मेरे एको हाथ न लागी॥ गयो वपु वीति वादि कानन ज्यों कलपलता दव दागी॥ दशरथसों न प्रेम प्राति पाल्यो हुतो जो सकल जग साखी॥ वरवशहरत निशाचरपतिसों हठि न जानकी राखी॥मरत न मैं रघुवीर विलोके तापस वेष बनाए॥ चाहत चलन प्राण पाँवर विनु सिय सुधि प्रभुहि सु-

नाए ॥ वारवार कर मीजि शीश धुनि गीधराज पछिताई ॥ तुलसी प्रभुकृपालु तेहि औसर आइ गए दोउ भाई ॥ १२ ॥ २११ ॥ राखो गीध गोद करिलीन्हो ॥ नयन सरोज सनेह सलिल शुचि मनहुँ अरघजल दीन्हो ॥ सुनहु लषण खगपतिहि मिले वनमें पितु मरण न जान्यौ॥सहि न सक्यौ सो कठिन विधाता बड़ो पछु आजुहि भान्यौ॥ बहु विधि राम कह्यौ तनुराखन परमधीर नहिं डोल्यौ ॥ रोंकि प्रेम अवलोकि वदनविधु वचन मनोहर बोल्यो ॥ तुलसीप्रभु झूंठे जीवन लगि समय न धोखो लैहों॥जाको नाम मरत मुनि दुर्लभ तुमहिं कहाँ पुनि पैहों॥१३॥२१२॥नीकेकै जानत राम हियोहों ॥प्रणतपाल सेवक कृपालु चित पितु पटतरहि दियोहों ॥ त्रिजगयोनि गत गीध जनमभरि खाइ कुजंतु जियोहों ॥ महाराज सुकृती समाज सब ऊपर आजु कियोहों ॥ श्रवण वचन मुख नाम रूप चख राम उछंग लियोहों ॥ तुलसीमो समान बड़भागी कोकहिसकै वियोहों ॥ १४ । २१३ ॥ मेरे जान तात कछू दिन जीजे ॥ देखिए आपु सुवन सेवासुख मोहिं पितुको सुख दीजे॥ दिव्य देह इच्छा जीवनजग विधि मनाइ माँगिलीजे ॥ हरि हर सुयश सुनाइ दरशदै लोग कृतारथ कीजे ॥ देखि वदन सुनि वचन अमियतन रामनयन जल भीजे॥ बोल्यौ विहग विहँसि रघुवर बलि कहों सुभाय पतीजे॥ मेरे मरिबे सम न चारिफल होहिं तौ क्यों न कहीजे ॥ तुलसी प्रभु दियो उतरु मौनहीं परी मानो प्रेम सहीजे ॥ १५ ॥ २१४ ॥ मेरो सुनियो तात सँदेशो ॥ सीयहरण जानि कहेहु पितासों ह्वैहै अधिक अँदेशो ॥ रावरे पुण्यप्रताप अनल महँ अलप दिननि रिपु दहिहैं ॥ कुल समेत सुरसभा दशानन समाचार सब कहिहैं ॥ सुनि प्रभु वचन आनि उर मूरति चरणकमल शिरनाई ॥ चल्यो नभ सुनत राम कलकीरति अरु निजभाग बड़ाई ॥ पितु ज्यों गीध क्रिया करि रघुपति अपने धाम पठायो ॥ ऐसो प्रभु विसारि तुलसी शठ तू चाहत सुखपायो॥१६॥२१५॥(राग सूहो)॥शबरी सोइ उठी फरकत वाम विलोचन बाहु ॥ शकुन सुहावने सूचत मुनि मन अगम उ-

छाहु ॥ छंद ॥ मुनि अगम उर आनंद लोचन सजल तनु पुलका-
वली ॥ तृण पर्णशाल बनाइ जल भरि कलस फल चाहन चली ॥
मंजुल मनोरथ करत सुमिरत विप्र बरवाणी भली ॥ जो कल्प बे-
लि सकेलि सुकृत सुफूल फूली सुखफली ॥१॥ प्राणप्रिय पाहुने ऐहैं
राम लषण मेरे आजु ॥ जानत जन जियकी मृदु चित राम ग़रीब
निवाजु ॥ छंद ॥ मृदु चित ग़रीबनिवाज आजु विराजि हैं गृह
आइकै ॥ ब्रह्मादि शंकर गौरि पूजित पूजिहौं अब जाइकै ॥ ल-
हिनाथ हौं रघुनाथ बानो पतितपावन पाइकै ॥ दुहुँ ओर लाहु
अघाइ तुलसी तीसरेहु गुण गाइकै ॥ २ ॥ दोना रुचिर रचे पूरण
कंद मूल फल फूल ॥ अनुपम अमिय ते अंबक अवलोकत अन-
कूल ॥ छंद ॥ अनुकूल अंबक अंब ज्यों निज डिंभ हित सब आ-
निकै ॥ सुंदर सनेह सुधासहसजनु सरस राखे सानिकै ॥ छन भवन
छन बाहर विलोकति पंथ भूपर पानिकै ॥ दोउ भाइ आये शब-
रिकाको प्रेम प्रण पहिचानिकै ॥३॥ श्रवण सुनत चली आवत देखि
लषण रघुराउ ॥ शिथिल सनेह कहै है सपनो विधि कैधों सतिभाउ
॥ छंद ॥ सतिभाउ कै सपनो निहारि कुमार कौशलरायके ॥ गहे
चरण जे अघहरण नत जन बचन मानस कायके ॥ लघु भाग भा-
जन उदधि उमगे लाभ सुख चित चायकै ॥ सो जननि ज्यों आदरी
सानुज राम भूखे भायके ॥४॥ प्रेम पट पाँवड़े देत सु अरघ विलोचन
वारि ॥ आश्रम लै दिये आसन पंकज पाँय पखारि ॥ छंद ॥ पद पं-
कजात पखारि पूजे पंथ श्रम विरहित भये ॥ फल फूल अंकुर मूल
धरे सुधारि भरि दोना नये ॥ प्रभु खात पुलकित गात स्वाद सराहि
आदर जनु जये ॥ फल चारिहू फल चारिदहि परचारि फल शबरी
दये ॥५॥ सुमन बरषि हरषे सुर मुनि मुदित सराहि सिहात ॥ केहि
रुचिकेहि क्षुधा सानुज माँगि माँगि प्रभुखात ॥ छंद ॥ प्रभु खात
माँगत देति शबरी राम भोगी जागके ॥ पुलकत प्रशंसत सिद्ध शि-
व सनकादि भाजन भागके ॥ बालक सुमित्रा कौशिलाके पाहुने
फल सागके ॥ सुनु समुझि तुलसी जानु रामहिं वश अमल अनु-

रागके ॥ ६ ॥ रघुवर अँचइ उठे शवरी करि प्रणाम कर जोरि ॥ हौं बलि बलि गई पुरई मंजु मनोरथ मोरि ॥ छंद ॥ पुरई मनोरथ स्वारथहु परमारथहु पूरण करी ॥ अघ अवगुणन्हिकी कोठरी करि कृपा मुदमंगल भरी ॥ तापस किराततिन कोल मृदु मूरति मनोहर मन धरी ॥ शिरनाइ आयसु पाइ गवने परमानिधि पाले परी ॥ ७ ॥ सिय सुधि सब कही नख शिख निरखि निरखि दोउ भाइ ॥ दैदै प्रदक्षिणा करत प्रणाम न प्रेम अघाइ ॥ छंद ॥ अति प्रीति मानस राखि रामहिं राम धामहिं सोगई॥तेहि मातु ज्यों रघुनाथ अपने हाथ जल अंजलि दई ॥ तुलसी भणित शवरी प्रणति रघुवर प्रकृति करुणा मई ॥ गावत सुनत समुझत भगति हिए होय प्रभुपद नित नई ॥ ८ ॥ १७ ॥ २१६ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां आरण्यकांडः समाप्तः ॥

अथ किष्किन्धाकाण्ड प्रारंभः ॥

(राग केदारा) ॥ भूषण वसन विलोकत सियके ॥ प्रेम विवश मनमें पुलकित तनु नीरजनयन नीर भरे पियके ॥ १ ॥ सकुचत कहत सुमिरि उर उमगत शील सनेह सुगुणगण तियके ॥ स्वामिदशा लखि लषण सखा कपि पविले हैं आँच माठ मानो घियके ॥ २ ॥ सोचत हानि मानि मन गुणि गुणि गये निघटि फल सकल सुकियके ॥ बरणे जाम्बवंत तेहि अवसर वचन विवेक वीररस वियके ॥ ३ ॥ धीर वीर सुनि समुझि परसपर बल उपाय उघकत निज हियके ॥ तुलसिदास यह समउ कहेते कवि लागत निपट निठुर जड़ जियके ॥४॥१॥२१७॥ प्रभु कपिनायक बोलि कह्योहै॥वरषा गई शरद आई अब नाहिं सिय शोधु लह्योहै॥जा कारण तजि लोकलाज तनु राखि वियोग सह्योहै ॥ ताको तो कपिराज आज लग कछु न काज निवह्योहै ॥ २॥ सुनि सुग्रीव सभीत नमित मुख उतरु न देन चह्योहै ॥ आइ गये हरि यूथ देखि उर पूर प्रमोद रह्योहै ॥ पठये वदि वदि अवधि दशहुँ दिशि चले बलु सबनि

गह्योहै ॥ तुलसी सिय लागि भव दधि निधि मानो फिरि हरि चहत मह्योहै ॥ २ ॥ २१८ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां किष्किंधाकांडः समाप्तः ॥

अथ सुन्दरकाण्ड प्रारम्भः ॥

(राग केदारा)॥ रजायसु रामको जब पायो॥गालमेलि मुद्रिका मुदित मन पवनपूत शिरनायो ॥ भालुनाथ नल नील साथ चले बली बालिको जायो॥ फरकि सुअंग भये शकुन कहत मानो मग मुद मंगल छायो॥ देखि विवरु सुधि पाइ गीधसों सबनि अपनो बलु मायो॥ सुमिरि राम तकि तरकि तोयनिधि लंक लूकसों आयो॥ खोजत घर घर जनु दरिद्र मन फिरत लागि धन धायो॥ तुलसी सिय विलोकि पुलक्यौ तनु भूरिभाग्य भयो भायो॥ १ ॥ ॥ २१९ ॥ देखी जानकी जब जाइ॥ परमधीर समीरसुतके प्रेम उर न समाइ॥ कृशशरीर सुभाय शोभित लगी उड़ि उड़ि धूलि॥ मनहुँ मनसिज मोहनी मणि गयो भोरे भूलि ॥ रटति निशि बासर निरंतर राम राजिवनैन॥ जात निकट न विरहिनी अरि अकनि ताते बैन॥ नाथके गुणगाथ कहि कपि दई मुदरी डारि ॥ कथा सुनि उठि लई कर वर रुचिर नाम निहारि ॥ हृदय हरष विषाद अति पति मुद्रिका पहिचानि ॥ दास तुलसी दशा सो केहिभाँति कहै बखानि॥ २ ॥ २२० ॥ (राग सोरठ)॥ बोलि बलि मूदरी सानुज कुशल कोशलपालु ॥ अमिय वचन सुनाइ मेटहि विरह ज्वाला जालु ॥ कहत हित अपमान मैं कियो होत हिय सोइ सालु ॥ रोष क्षमि सुधि करत कबहूँ ललित लछिमन लालु ॥ परस्पर पति देवरहि का होति चरचा चालु ॥ देवि कहु केहि हेत बोले विपुल वानर भालु ॥ शीलनिधि समरथ सुसाहिब दीन बंधु दयालु ॥ दास तुलसी प्रभुहि काहु न कह्यो मेरो हालु ॥ ३ ॥ ॥ २२१ ॥ सदल सलपणहैं कुशल कृपालु कोशल राउ ॥ शील सदन सनेह सागर सहज सरल सुभाउ ॥ नींद भूपण देवरहि

परिहरे को पछिताउ ॥ धीर धुर रघुवीरको नाहिं सपनेहूँ चितचाउ ॥ सोधु विनु अनरोधु ऋतुको बोध विहित उपाउ ॥ करतहैं सोइ समय साधन फलति बनत बनाउ ॥ पठे कपि दिशि दशहुँ जे प्रभुकाज कुटिल न काउ॥बोलि लियो हनुमान करि सनमान जानि समाउ ॥ दईहों संकेत कहि कुशलात सियहि सुनाउ ॥ देखि दुर्ग विशेषि जानकि जानि रिपु गति आउ॥ कियो सीय प्रबोध मुदरी दियो कपिहि लखाउ ॥ पाइ अवसर नाइशिर तुलसी सगुण गण गाउ॥४॥२२२॥सुवन समीर को धीर धुरीन वीर बड़ोइ॥ देखि गति सिय मुद्रिका की बाल ज्यौं दियो रोइ ॥ अकनि कटुवाणी कुटिलकी क्रोध विंधि बढ़ोइ ॥ सकुचि सम भयो ईश आयसु कलस भव जिय जोइ ॥ बुद्धि बल साहस पराक्रम अछत राखे गोइ॥ सकल साज समाज साधक समउ कहै सब कोइ ॥ उतारि तरुते नमत पद सकुचात सोचत सोइ॥चुके अवसर मनहुँ सुजनहिं सुजन सनमुख होइ ॥ कहे वचन विनीत प्रीति प्रतीत नीति निचोइ॥ सीय सुनि हनुमान जान्यो भली भाँति भलोइ ॥ देवि विनु करतूति कहिबो जानिहै लघु लोइ॥कहोंगो मुखकी समरसरि कालि कारिख धोइ ॥ करत कछू न बनत हारिहिय हरष शोक समोइ ॥ कहत मन तुलसी सलंका करों सघन घमोइ ॥ ५ ॥ २२३ ॥ (राग केदारा ॥ हों रघुवंशमणिकोदूत ॥ मातु मानु प्रतीति जानकि जानि मारुतपूत ॥ मैं सुनी बातैं असैली जे कही निशिचर नीच ॥ क्यों न मारै गाल बैठो काल डाढ़नि बीच ॥ निदरि आरि रघुवीर बल लैजाउँ जो हठि आज ॥ डरौं आयसु भंग ते अरु बिगरि है सुरकाज ॥ बाँधि बारिधि साधि रिपु दिनचारि में दोउ वीर ॥ मिलहिंगे कपि भालु दल सँग जननि उर धरु धीर ॥ चित्रकूट कथा कुशल कहि शीश नायो कीश ॥ सुहृद सेवक नाथको लखि दई अचल अशीश॥ भये शीतल श्रवण तन मन सुने वचन पियूप ॥दासै तुलसी रही नयननि दरशही की भूख ॥ ६ ॥ २२४ ॥ तात तोहूँ सों कहत होति हिये गलानि॥मनको प्रथम प्रण समुझि अछत तनु

लखि नई मति भई गति मलानि ॥ पियको वचन परिहरचो जियके भरोसे संग चली वन बड़ो लाभ जानि ॥ पीतम विरह तौ सनेह सरवसु सुत औसरको चूकिबो सरिस न हानि ॥ आरजसुवन के तो दया दुअनहुँ पर मोहिं सोच मोते सब विधि नसानि ॥आपनी भलाई भलो कियो नाथ सबही को मेरे हिय दिन वश विसरी वानि ॥ नेम तौ पपीहाहीके प्रेम प्यारो मीनही के तुलसी कहीहै नीके हृदय आनि ॥ इतनी कही सो कही सीय ज्योहों त्यौहीं रही प्रीति परी सही विधिसों न वसानि ॥ ७ ॥ २२५ ॥ मातु काहेको कहति अति वचन दीन ॥ तबकी तुहीं जानति अबकि होहीं कहत सबके जियकी जानत प्रभु प्रवीन ॥ ऐसे तो सोचाहिं न्याय निठुर नायक रत सुलभ खग कुरंग कमल मीन ॥ करुणानिधानको तो ज्यों ज्यों तनु छीन भयो त्यों त्यों मनु भयो तेरे प्रेम पीन ॥ सियको सनेह रघुवरकी दशा सुमिरि पवनपूत देख्यो प्रीति लीन ॥ तुलसी जनको जननिहिं प्रबोध कियो समुझि तात जग विधि अधीन ॥ ८ ॥ २२६ ॥ (राग जयतश्री) ॥ कहो कपि कब रघुनाथ कृपा करि हरिहैं निज वियोग संभव दुख ॥ राजिवनयन मयन अनेक छवि रविकुल कुमुद सुखद मयंक मुख ॥ विरह अनल सहाय समीर निज तनु जरिवे कहँ रहि न कछू शक ॥ अति बल जल वरषत दोउ लोचन दिन अरु रैन रहत एकहिं तक ॥ सुदृढ़ ज्ञान अवलंबी सुनहु सुत राखति प्राण विचारि दहन मत ॥ सगुण रूप लीला विलास सुख सुमिरत करत रहत अंतरगत ॥ सुनु हनुमंत अनंत बंधु करुणा सुभाव सुशील कोमल अति ॥ तुलसिदास यहि त्रास जानि जिय वरु दुख सहों प्रगट कहि न सकति ॥ ९ ॥ २२७ ॥ (राग केदारा) कबहुँ कपि राघव आवहिंगे ॥ मेरे नयनचकोर प्रीतिवश राकाशशि मुख दिखरावहिंगे ॥ मधुप मराल मोर चातकह्वै लोचन बहु प्रकार धावहिंगे ॥ अंग अंग छवि भिन्न भिन्न सुख निरखि निरखि तहँ तहँ छावहिंगे ॥ विरह अगिनि जरिरही लता ज्यों कृपादृष्टि जल पलु

हावहिंगे ॥ निज वियोगदुख जानि दयानिधि मधुर वचन कहि समुझावहिंगे ॥ लोकपाल सुरनाग मनुज सब परे बंदि कब मुकता वहिंगे ॥ रावणवध रघुनाथ विमलयश नारदादि मुनिजन गावहिंगे ॥ यह अभिलाष रैनदिन मेरे राज्य विभीषण कब पावहिंगे ॥ तुलसिदास प्रभु मोहजनित भ्रम भेद बुद्धि कब विसरावहिंगे ॥ ॥ १० ॥ २२८ ॥ सत्यवचन सुनु मातु जानकी ॥ जनके दुख रघुनाथ दुखित अति सहज प्रकृति करुणानिधान की ॥ तुव वियोग संभव दारुण दुख बिसरिगई महिमा सुबानकी ॥ नतकहुँ कहँ रघुपति शायक रवि तम अनीक कहँ यातुधानकी ॥ २ ॥ कहँ हम पशु शाखामृग चंचल बात कहौं मैं विद्यमानकी ॥ कहँ हरि शिव अज पूज्य ज्ञानघन नहिं विसरति वह लगनि कानकी ॥ ३ ॥ तुव दरशन सँदेश सुनि हरिको बहुत भई अवलंब प्राणकी ॥ तुलसिदास गुण सुमिरि रामके प्रेम मगन नहिं सुधि अपानकी ॥ ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२९ ॥ (राग कान्हरा) ॥ रावण जौपै रामरण रोषे॥को कहिसकै सुरासुर समरथ विशिष काल सदननि ते चोषे॥ ॥ १ ॥ तप बल भुजबल कै सनेह बल शिव विरंचि नीकी विधि तोषे ॥ सोफल राज समाज सुवनजन आपुन नाश आपने पोषे ॥ २ ॥ तुला पिनाक साहु नृप त्रिभुवन भट बटोरि सबके बल जोषे ॥ परशुरामसे शूर शिरोमणि पलमें भये खेतके धोपे ॥ ३ ॥ कालिकी बात वालिकी सुधिकरि समुझिहि ताहित खोलि झरोषे ॥ कह्यो कुमंत्रिनको न मानिए बड़ी हानि जिय जानि त्रिदोषे ॥ ४ ॥ जासु प्रसाद जनमि जग पुरपनि सागर सृजे खने अरु सोखे ॥ तुलसिदास सो स्वामिन सूझ्यो नयन वीस मंदिरकेसे मोखे ॥ ५ ॥ ॥ १२ ॥ २३० ॥ (राग मारू) ॥ जोहों प्रभु आयसु लै चलतों॥ तौ यहि रिस तोहिं सहित दशानन यातुधान दल दलतो ॥ १ ॥ रावण सो रसराज सुभट रस सहित लंक खल खलतो ॥ करि पुट पाक नाक नायकहित घने घने घर घलतो ॥ बड़े समाज लाज भाजन भयो बड़ो काज बिनु छलतो ॥ लंकनाथ रघुनाथ वैरु तरु

आजु फैलि फूलि फलतो ॥ ३ ॥ कालकरम दिगपाल सकल जग जाल जासु करतलतो ॥ तारिपुसों पर भूमि रारि रण जीवन मरण सुथलतो ॥४॥ देखी मैं दशकंठ सभा सब मोते कोउ न सबलतो ॥ तुलसी अरि उर आनि एक अब एती गलानि न गलतो ॥५॥१३॥ ॥ २३१ ॥ तौलों मातु आपु नीके रहिवो ॥ जौलों हों ल्यावों रघुवीरहिं दिन दश और दुसह दुख सहिवो ॥ १ ॥ सोखिके खेतके बाँधि सेतुकरि उतरिबो उदधि न वोहित चहिवो ॥ प्रबल दनुज दल दलि पल आधमें जीवत दुरित दशानन गहिवो ॥ २ ॥ वैरिवृंद विधवा वनितनिको देखिवो वारि विलोचन बहिवो ॥ सानुज सैन समेत स्वामिपद निरखि परममुद मंगल लहिवो ॥३॥ लंक दाह उर आनि मानिवो साँचु राम सेवकको कहिवो॥तुलसी प्रभुको सुर सुयश गाइहैं मिटि जैहैं सबको सोचु दौ दहिवो ॥ ४।१४।२३२ ॥ कपिके चलत सियको मनु गहवरि आयो ॥ पुलक शिथिल भयो शरीर नीर नयनन्हि छायो ॥ १ ॥ कहन चह्यो संदेश नाहिं कह्यो पियके जियकी जानि हृदय दुसह दुख दुरायो॥ देखि दशा व्याकुल हरीश ग्रीषमके पथिक ज्यों धरणि तरणि तायो ॥ २ ॥ मीच ते नीच लगी अमरता छलको न बलको थल निरखि परुष प्रेम पायो ॥ कै प्रवोध मातु प्रीति सों मन अशीश दीन्ही ह्वैहै तिहारोइ भायो ॥ ३॥ करुणा कोप लाज भय भरयो कियो गौन मौनहीं चरण कमल शीश नायो ॥ यह सनेह सरवस समौ तुलसी रसना रूखी ताहीते परत गायो ॥ ४ ॥ १५ ॥ २३३ ॥ (राग वसंत) रघुपति देखो आयो आयो हनुमंत ॥ लंकेश नगर खेलयो वसंत ॥ श्रीराम काजहित सुदिन सोधि ॥ साथी प्रवोधि लांघ्यो पयोधि॥१॥ सिय पाँय पूजि आशिषापाइ ॥ फल अमिय सरिस खाये अघाइ ॥ कानन दलि होरी रचि बनाइ ॥ हठि तेल वसन बालधि वधाइ ॥ ॥ २ ॥ दिये ढोल चले सँग लोग लागि॥ वरजोर दई चहुँ ओर आगि ॥ आखत आहुति किये यातुधान ॥ लखि लपट भभरि भागे विमान ॥ ३ ॥ नभतल कौतुक लंका विलाप ॥ परिणाम पचहि

कोउ न अपान ॥ दिग्गज कमठ कोल सहसानन धरत धरणि धरि धीर ॥ वारहिं वार अमरषत करषत करकैं परी शरीर ॥ चली चमू चहुँ ओर सोर कछु वनै न वर्णत भीर ॥ किलकिलात कसमसत कोलाहल होत नीरनिधि तीर॥यातुधानपति जानि कालवश मिले विभीषण आइ॥शरणागत पालक कृपालु कियो तिलक लियो अपनाइ॥कौतुकहीं वारिधि बँधाइ उतरे सुवेल तट जाइ॥तुलसिदास गढ़ देखि फिरे कपि प्रभु आगमन सुनाइ ॥ २२ ॥ २४० ॥ (राग आसावरी) ॥ आये देखि दूत सुनि सोच शठ मनमैं ॥ वाहर वजावैं गाल भालु कपि कालवश मोसे वीरसों चहत जीत्यो रारिरणमैं ॥ रामछाम लरिका लषण वालि वालकहि पालिको गनत रीछ जल ज्यौं न घनमैं ॥ काज को न कपिराज कायर कपि समाज मेरे अनुमान हनुमान हरिगनमैं ॥ समय सयानी रानी मृदुवानी कहै पिय पावक न होइ यातुधान वेनु वनमै ॥ तुलसी जानकी दिये स्वामी सो सनेह किये कुशल नतरु सव ह्वैहैं छार छनमैं ॥ ॥ २३ ॥ २४१ ॥ आपनी आपनी भाँति सव काहू कही है ॥ मंदोदरी महोदर मालवान महामति राजनीति पाहुँच जहाँलौं जाकी रहीहै ॥ महामद अंध दशकंध न करत कान मीचुवश नीच हठि कुगहानि गहीहै ॥ हँसि कहै सचिव सयाने मोसों कहत चहत मेरु उड़न वड़ी वयारि वहीहै ॥ भालु नर वानर अहार निशिचर निको सोऊ नृप वालकनि माँगी धारि लहीहै ॥ देखो काल कौतुक पिपीलिकनि पंख लागे भाग्यमेरे लोगनिके भई चित चहीहै॥ तोसों न तिलोक आजु साहस समाज साजु महाराज आयसु भो जोई सोई सहीहै ॥ तुलसी प्रणामकै विभीपण विनती करै ख्याल वेधेताल कपिकेलि लंका दहीहै ॥ २४ ॥ २४२ ॥ दूसरो न देखतु साहिव सम रामैं ॥ वेदऊ पुराण कवि कोविद विरत रत जाको यश सुनत गावत गुण ग्रामैं ॥ माया जीव जग जाल सुभाउ करमकाल काल सवको शासकु सव मे सव जामैं ॥ विधिसे करनिहार हरिसे पालनिहार हरसे हरनिहार जपै जाके

नामैं ॥ सोई नरवेष जानि जनकी विनती मानि मतो नाथ सोई जातैं भलो परिनामैं ॥ सुभट शिरोमणि कुठारपाणि सारिखे हुँ लखी औलखाई इहाँ किये शुभसामैं ॥ वचन विभूषण विभीषण वचन सुनि लागे दुख दूषणसे दाहिनेउ वामैं ॥ तुलसी हुमुकि हिये हन्यो लात भलेतात चल्यो सुरतरु ताकि तजि घोर घामैं ॥ २५ ॥ २४३ ॥ जाय माय पाँय परि कथासो सुनाई है ॥ समाधान करति विभीषणको वार वार कहा भयो तात लात मारे वड़ो भाई है ॥ साहिब पितु समान यातुधानको तिलक ताके अपमान तेरी बांड़िए बड़ाई है ॥ गरत गलानि जानि सनमानि सिख देति रोष किये दोष सहें समुझें भलाई है ॥ इहाँते विमुख भये रामकी शरण गये भलो नेकु लोक राखे निपट निकाई है ॥ मातु पग शीशनाइ तुलसी अशीश पाइ चले भले शकुन कहत मन भाई है ।२६ ।२४४॥ भाईकोसो करों डरों कठिन कुफेरैं॥सुकृत संकट परचौ जातु गलानिन्हगरचो कृपानिधिको मिलो पै मिलिकै कुवेरैं । जाइ गहे पाँय धाइ धनद उठाइ भेंटचौ समाचार पाइ पोच सोचत सुमेरैं ॥ तहँई मिले महेश दियो हित उपदेश रामकी शरण जाहि सुदिनु नहेरै ॥ जाको नाम कुंभज कलेश सिंधु सोखिवेको मेरो कह्यौ मानि तात बाँधै जिनिवेरै ॥ तुलसी मुदित चले पाये हैं शकुन भले रंकलूटिवेको मानो मणिगण ढेरै ॥ २७ । २४५ (रागकेदारा)॥ शंकर सिख आशिष पाइकै ॥ चले मनहिं मन कहत विभीषण शीश महेशहि नाइकै ॥गये सोच भये शकुन सुमंगल दश दिशि देत देखाइकै॥ सजल नयन सानंद हृदय तनु प्रेम पुलक अधिकाइकै॥अंतहु भाव भलो भाईको कियो अनभलो मनाइकै ॥ भइ कुवेरकी लात विधाता राखी वात वनाइकै ॥नाहित क्यों कुवेर घर मिलि हर हितुकहते चितलाइकै॥जो सुनि शरण राम ताकेमैं निज वामता विहाइकै॥ अनायास अनुकूल शूलधर मगमुद मूल जनाइकै ॥ कृपासिंधु सनमानि जानि जन दीन लियो अपनाइकै ॥ स्वारथ परमारथ कर तलगत श्रम पथगयो सिराइकै ॥ सपने कै सौतुक सुख शशि सुर

सींचत देत निराइकै ॥ गुरु गौरीश साँइ सीतापति हित हनुमान-हिं जाइकै ॥ मिलिहौं मोहिं कहा कीवे अव अभिमत अवधि अघा-इकै ॥ मरतो कहाँ जाइको जानै लटि लालची ललाइकै ॥ तुलसि दास भाजि हों रघुवीरहि अभय निसान वजाइकै ॥ २८ । २४६ ॥ पदपङ्कगरीबनिवाजके ॥ देखिहौं जाइ पाइ लोचन फल हित सुर साधु समाजके ॥ गईबहोर ओर निरवाहक साजक विगरे साजके ॥ शवरी सुखद गीध गतिदायक शमनशोक कपिराजके ॥ आरति-हरण शरण समरथ सब दिन अपनेकी लाजके॥तुलसी पाहि कहत नत पालक मोहुँसे निपट निकाजके ॥ २९ । २४७ ॥ महाराज राम पहँ जाउँगो ॥ सुखस्वारथ परिहरि करिहों सोइ ज्यों साहिबहि सुहाउँगो ॥ शरणागत सुनि वेगि बोलि हैं हों निपटहि सकुचाउँ गो॥ रामगरीबनिवाज निवाजिहैं जानिहैं ठाकुर ठाउँगो ॥ धरि हैं नाथ हाथ माथे एहिते केहि लाभ अघाउँगो ॥ सपनो सो अपनो न कछूलखि लघु लालच न लोभाउँगो॥कहिहों वलि रोटिहारा वरोबिनु मोलहि विकाउँगो ॥ तुलसी पट ऊतरे ओढ़ि हों उवरी जूठनि खा-उँगो॥३०।२४८॥ आइ सचिव विभीषणके कही ॥ कृपासिंधु दशकं-धवंधु लघु चरण शरण आयो सही॥विषम विपाद वारिनिधि बूड़त थाह कपीश कथा लही ॥ गये दुख दोष देखि पदपंकज अब न साध एको रही॥शिथिलसनेह सराहत नखशिख नीक निकाई निरवही ॥ तुलसी मुदित दूत भयो मानहुँ अमियलाहु माँगत मही ॥ ३१ ॥ ॥२४९॥विनती सुनि प्रभु प्रमुदित भये ॥ रीछराज कपिराज नील नल वोलि वालिनंदन लये ॥वूझिये कहा रजाइ पाइनय धरम सहि-त ऊतरदये ॥ वलीबंधु ताको जेहि विमोह वश वैर वीज बरवश वये ॥ वाँह पगार द्वार तेरे तैं सभय न कबहूँ फिरिगये ॥ तुलसी अ-शरण शरण स्वामिके विरद विराजत नितनये ॥ ३२ ॥ २५० ॥ हिय विहँसि कहत हनुमानसो ॥ सुमति साधु शुचि सुहृद विभीषण वूझि परत अनुमानसो॥हौ वलि जाउँ औँर को जानै कहि कपि कृपा निधानसों ॥ छली न होइ स्वामि सनमुख ज्यों तिमि रसातहय

जानसों ॥ खोटो खरो सभीत पालिये सो सनेह सनमानसों तुलसी प्रभुकी वोजो भलो सोइ बूझि शरासन वानसों ॥ ३३ ॥ २५१ ॥ साँचेहु विभीषण आयहै ॥ बूझतविहँसि कृपालु लषणसु नि-कहत सकुचि शिरनायहै ॥ ऐहैं कहा नाथ आयोह्याँ क्यों कहि जाति बनायहै ॥ रावण रिपुहि राखि रघुवर विनु को त्रिभुवन पति पायहै॥ प्रभु प्रसन्न सब सभा सराहति दूत वचन मन भायहैं तुलसी बोलिये वेगि लषण सों भइ महाराज रजायहै ॥ ३४ ॥ २५२ ॥ चले लेन लषण हनुमानहैं ॥ मिले मुदित बूझि कुशल परस्पर सकुचत करि सनमानहैं ॥ भयो रजायसु पाँउ धारिये बोलत कृपानिधानहैं ॥ दूरिते दीनबंधु देखे जनु देत अभय वरदानहैं ॥ शील सहस हिम भानुतेज शतकोटि भानुहूंके भानुहैं ॥ भगतनि को हित कोटि मातु पितु अरिन्हको कोटि कृशानुहैं ॥ जन गुण रजगिरि गणि सकुचत निज गुण गिरितर वर वानुहैं ॥ बाँहपमारु बोलको अविचल वेद करत गुणगानहैं ॥ चारु चाप तूणीर तामरस करनि सुधारत वानहैं॥चरचा चलति विभीषणकी सोइ सुनत सुचित दैकानहैं ॥ हरषत सुरवरषत प्रसून शुभ शकुन कहत कल्याणहैं ॥ तुलसीते कृतकृत्य जे सुमिरत समय सुहावनो ध्यानहैं ॥ ३५ ॥ २५३ ॥ रामहिं करत प्रणाम निहारिकै ॥ उठे उँमगि आनंद प्रेम परिपूरण विरद विचारिकै ॥ भयो विदेह विषण उत इत प्रभु अपनपौ विसारिकै ॥ भली भाँति भावते भरत ज्यों भेंट्यो भुजा पसारिकै ॥ सादर सबहिं मिलाइ समाजहिं निपट निकट बैठारिकै ॥ बूझत कुशल क्षेम सप्रेम अपनाइभरोसे भारिकै ॥ नाथ कुशल कल्याण सुमंगल विधि सुख सकल सुधारिकै ॥ देत लेत जे नाम रावरो विनय करत मुख चारिकै ॥ जो मूरति सपने न विलोकत मुनि महेश मन मारिकै ॥ तुलसी तेहिहों लियो अंक भरि कहत कछू न सँवारिकै ॥ ३६ ॥ २५४ ॥ करुणाकरकी करुणाभई॥ मिटी मीचु लहि लंक शंक गइ काहू सों न खुनिसभई॥दशमुख तज्यों दूधमाखीज्यों आपु काढि साढी लई॥

भव भूषण सोइ कियो विभीषण मुद मंगल महिमामई॥ विधि हरि हर मुनि सिद्ध सराहत मुदित देव दुंदुभी दई॥ बारहिंवार सुमन वरषत हिय हरषत कहि जैजै जई ॥ कौशिक शिला जनक संकट हरि भृगु पतिकी टारी टई ॥ खग मृग सबर निशाचर सबकी पूँजी बिनु बाढ़ी सई ॥ युग युग कोटि कोटि करतब करणी न कछू वरणीनई ॥ राम भजन महिमा हुलसी हिय तुलसीहूकी बनि गई ॥ ॥ ३७ ॥ २५५ ॥ मंजुल मूरति मंगल मई ॥ भयो विशोक विलोकि विभीषण नेह देह सुधिसी गई ॥ उठि दाहिनी ओरते सन्मुख सुखद बागिवैठक लई ॥ नख शिख निरखि निरखि सुख पावत भावत कछू कछुऐभई ॥ वार कोटि शिरकाटि साटि लटि रावणशंकर पैलई ॥ सोइ लंका लखि अतिथि अनवसर राम तृणासन ज्यों दई ॥ प्रीति प्रतीति रीति शोभासरि थाहत जहँ जहँ तहँ घई ॥ बाहु बली बानैत बोलको बीरविश्व विजयी नई ॥ कोदयालु दूसरो दुनी जेहि जरनि दीन हियकी हई ॥ तुलसीकाको नाम जपत जग जगती जामति विनुवई ॥ ३८ ॥ २५६ ॥ सभाँति विभीषणकी बनी ॥ कियो कृपालु अभय कालहुते गई संसृति सासति घनी ॥ सखा लषण हनुमान शंभु गुरु धनी रामकोशल धनी ॥ हियही और और कीन्ही विधि रामकृपा औरैठनी ॥ कलुष कलंक कलेश कोसभयो जो पदपाय रावण रनी ॥ सोइ पदपाय विभीषण भोभव भूषण दलि दूषण अनी॥ बाँह पगार उदार शिरोमणि नत पालक पावन पर्नी ॥ सुमन वरषि रघुवर गुणवर्णत हरषि देव दुंदुभी हनी ॥ रंक निवाज रंक राजा किये गए गरब गरि गरि गनी ॥ राम प्रणाम महा महिमा खनि सकल सुमंगल मनिजनी ॥ होय भलो ऐसेही अजहुँ गये राम शरण परिहरि मनी॥ भुजा उठाइ साखि शंकर करि कसमखाइ तुलसी भनी ॥ ३९ ॥ २५७॥ कहो क्यों न विभीषणकी बनै ॥ गयो छाँड़ि छल शरण रामकी जो फलचारि चारचौं जनैं ॥ मंगलमूल प्रणाम जासु जग मूल अमंगलके खनै ॥ तेहि रघुनाथ हाथ माथे दियो को ताकी महिमा

भनै ॥ नाम प्रताप पतित पावन किये जेन अघाने अघ अनै ॥को-र उलटो कोउ सूधो जपिभये राजहंस वायसतनै ॥ हुतो ललात कृशगात खात खरि मोद पाइ कोदोकनै ॥ सो तुलसी चातक भयो याचत राम श्याम सुंदर घनै ॥ ४० ॥ २५८ ॥ अतिभाग विभीषणके भले ॥ एक प्रणाम प्रसन्न राम भये दुरित दोष दारिद दले ॥ रावण कुंभकर्ण वरमाँगत शिव विरंचि वाचा छले ॥ राम दरश पायो अविचल पद सुदिन शकुन नीके चले ॥ मिलनि विलोकि स्वामि सेवककी उकठे तरु फूले फले ॥ तुलसी सुनि सनमान बंधुको दशकंधर हँसि हिये जले ॥ ४१ ॥ २५९ ॥ गये राम शरण सबको भलो ॥ गनी गरीब बड़ो छोटो बुध मूढ हीनबल अति बलो ॥ पंगु अंध निर्गुणी निसंबल जो न लहै जाँचे जलो ॥ सो निबह्यो नीके जो जनमि जग राम राज मारग चलो ॥ नाम प्रताप दिवाकर कर खर गरत तुहिन ज्यों कलिमलो ॥ सुत हित नाम लेत भवनिधि तरिगयो अजामिलसो खलो ॥ प्रभुपद प्रेम प्रणाम कामतरु सद्य विभीषणको फलो ॥ तुलसी सुमिरत नाम सबनिको मंगलमय नभ जलथलो ॥ ४२ ॥ २६० ॥ सुयश सुनि श्रवण हों नाथ आयों शरन ॥ उपल केवट गीध शबरि संसृत शमन शोक श्रमसीव सुग्रीव आरतिहरन ॥ रामराजीव लोचन विमोचन विपति श्माम नवतामरस दाम वारिदवरन ॥ लसत जट जूट शिर चारु मुनि चीर कटि धीर रघुवीर तूणीर शर धनु धरन ॥ यातुधानेश भ्राता विभीषण नाम बंधु अपमान गुरु ग्लानि चाहत गरन ॥ पतितपावन प्रणतपाल करुणासिंधु राखिये मोहिं सौमित्र सेवित चरन ॥ दीनता प्रीति संकलित मृदुवचन सुनि पुलकितन प्रेम जल नयन लागे भरन ॥ बोलि लंकेश कहि अंक भरि भेंटि प्रभु तिलक दियो दीन दुख दोष दारिद दरन ॥ रातिचर जाति आराति सब भाँति गत कियो सो कल्याण भाजन सुमंगल करन ॥ दास तुलसी सदय हृदय रघुवंश मणि पाहि कहे काहि कीन्हो न तारनतरन ॥ ४३ ॥ २६१ ॥ दीनहित विरद पुराणनि गायो ॥ आरत

बंधु कृपालु मृदुल चित जानि शरण हौं आयो॥तुम्हरे रिपुकोहौं अनुज विभीषण वंश निशाचर जायो ॥ सुनि गुण शील स्वभाउ नाथ को मैं चरणनि चितुलायो॥जानत प्रभु दुख सुख दासनिको ताते कहि न सुनायो ॥ करि करुणा भरि नयन विलोकहु तउ जानौं अपनायो ॥ वचन विनीत सुनत रघुनायक हँसि करि निकट बुलायो ॥ भेंट्यो हरि भरि अंक भरत ज्यौं लंकापति मन भायो ॥ कर पंकज शिरपरसि अभय कियो जन पर हेतु दिखायो ॥तुलसिदास रघुवीर भजनकरिको न परमपद पायो ॥४४ ।२६२॥ राग धनाश्री ॥ सत्य कहौं मेरो सहज स्वभाउ ॥ सुनहु सखा कपिपति लंकापति तुम्हसन कौन दुराउ ॥ सब विधि हीन दीन अति जड़ मति जाको कतहुँ न ठाउ ॥ आये शरण भजो न तजो तिहि यह जानत ऋषिराउ ॥ जिन्हके हौ हित सब प्रकार चित नाहि न और उपाउ ॥ तिनहिं लागि धरि देह करौ सब डरौ न सुयश न शाउ ॥ पुनि पुनि भुजा उठाइ कहतहौं सकल सभापतिआउ ॥ नहिं कोउ प्रिय मोहिं दास सम कपट प्रीति बहिजाउ ॥ सुनि रघुपतिके वचन विभीपण प्रेम मगन मन चाउ ॥ तुलसिदास तजि आशत्रास सब ऐसे प्रभुकहँ गाउ ॥ ४५ । २६३ ॥ नाहिंन भजिवे योग बियो ॥ श्रीरघुवीर समान आनको पूरण कृपाहियो ॥ कहहु कौन सुर शिलातारि पुनि केवटमीत कियो ॥ कौने गीध अधमको पितु ज्यों निजकर पिंड दियो ॥ कौन देव शवरीके फलकरि भोजन सलिल पियो ॥ वालित्रास वारिधिबूड़तकपि केहि गहि बाहँ लियो ॥ भजन प्रभाउ विभीषण भाष्यौ सुनि कपिकटकजियो ॥ तुलसिदासको प्रभु कोशलपति सबप्रकार बरियो ॥ ४६ ॥ २६४ ॥ राग जयतश्री ॥ कब देखोंगी नयन वह मधुर मूरति ॥ राजिवदलनयन कोमल कृपाअयन मयनानि वह छबिअंगनिदूरति ॥ शिरसिजटाकलाप पाणि शायक चाप उरसिरुचिर वनमाल लूरति ॥ तुलसिदास रघुवीरकी शोभा सुमिरि भई है मगन नहिं तनकी सूरति ॥ ४७ ॥ २६५ ॥ (राग केदारा)

कहु कबहुँ देखिहों आय सुवन ॥ सानुज सुभग तनु जबतें बिछुरे वन तबते दवसी लगी तीनिहूँ भुवन॥ मूरति सूरति किये प्रगट प्रीतमहिये मनके करन चाहैं चरण छुवन ॥ चित चढ़िगो वियोग दशा न कहिवेयोग पुलकगात लागे लोचन चुवन ॥ तुलसी त्रिजटा जानी सिय अति अकुलानी मृदुवानी कह्यो ऐहैं दवन दुवन ॥ तमचिर तमहारी सुरकंज सुविकारी रविकुल रवि अब चाहत उवन ॥ ४८ ॥ २६६ ॥ अबलों मैं तोसों न कहेरी ॥ सुन त्रिजटा प्रिय प्राणनाथ विनु वासर निशि दुख दुसह सहेरी ॥ विरह विषम विष वेलि बढ़ी उरतें सुख सकल सुभाय दहेरी ॥ सोइ सींचिवे लागि मनसिजके रहट नयन नित रहत नहेरी॥सर शरीर सूखे प्राण वारिचर जीवन आश तजि चलनु चहेरी॥तैं प्रभु सुयश सुधा शीतल करि राखे तदपि न तृप्ति लहेरी ॥ रिपु रिस घोर नदी विवेक बल धीर सहितहुते जात बहेरी ॥ दै मुद्रिका टेक तेहि औसर शुचि समीर सुतपैरि गहेरी ॥ तुलसिदास सब सोच पोच मृग मन कानन भरि पूरि रहेरी ॥ अब सखि सिय सदेह परिहरुहिय आइ गए दोउवीर अहेरी ॥ ४९ ॥ २६७ ॥ (राग विलावल) ॥ सोदिन सोनेको कहु कब ऐहै॥जादिन बँध्यो सिंधु त्रिजटा सुनु तू संभ्रम आनि मोहिं सुनैहै ॥ विश्वदवन सुर साधु सतावन रावन कियो आपनो पैहै ॥कनक पुरी भयो भूप विभीषण विबुध समाज विलोकन धैहै ॥ दिव्य दुंदुभी प्रशंसिहैं मुनिगण नभतल विमल विमाननि छैहैं ॥ वरपिहैं कुसुम भानुकुल मणि पर तब मोंको पवनपूत लै जैहै ॥ अनुज सहित सोभिहैं कपिनमहँ तनु छवि कोटि मनोजहितैहै ॥ इन नयनन्हि यहि भाँति प्राणपति निरखि हृदय आनंद न समैहै ॥ वहुरो सदल सनाथ सलछिमन कुशल कुशल विधि अवध देखैहै ॥ गुरु पुर लोग सास दोउ देवर मिलत दुसह उर तपति बुतैहै॥मंगल कलश बधावने घर घर पैहैं माँगने जोजेहि भैहै॥विजयराम राजाधिराजको तुलसिदास पावन यश गैहै ॥ ५० ॥ २६८ ॥ सिय धीरज धरिये रावौ अब ऐहैं ॥ पवन

पूत पै पाइ तिहारी सुधि सहजकृपालु विलंब न लैहैं ॥ सैन साजि कपि भालु कालसम कौतुकही पाथोधि बँधैहैं ॥ घेरोइपैदेखिवो लंकगढ विकल यातुधानी पछितैहैं ॥ निशिचर सलभ कृशानु रामशर उड़ि उड़ि परत जरत जडजैहैं ॥ रावण करि परिवार अगमनो यमपुर जात बहुत सकुचैहैं ॥ तिलकसारि अपनाय विभीषण अभय बाँहदै अमर बसैहैं ॥ जयधुनि मुनि वरषि हैं सुमन सुर व्योम विमान निसान बजे हैं ॥ बंधु समेत प्राणवल्लभपद परसि सकल परिताप नशै हैं ॥ राम वाम दिशि देखि तुमहिं सब नयन वंत लोचन फल पैहैं ॥ तुम अति हित चितैहो नाथतनु बारबार प्रभु तुमहिं चितैहैं ॥ यह शोभा सुख समय विलोकत काहूतो पलकै न हितैहैं ॥ कपिकुल लषण सुयश जय जानकि सहित कुशल निजनगर सिधैहैं ॥ प्रेम पुलकि आनंद मुदित मन तुलसिदास कलकीरति गैहैं ॥ ५१ ॥ २६१ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां सुंदरकांडः समाप्त ॥

अथ लंका काण्ड ॥

(राग मारू) मानु अजहूँ शिष परिहरि क्रोधु ॥ पियपूरो आयो अब काहि कहु करि रघुवीर विरोधु ॥ जेहि ताड़का सुबाहु मारि मख राखि जनायो आपु ॥ कौतुकही मारीच नीचमिस प्रगट्यौ विशिप प्रतापु ॥ सकल भूप बलगर्व सहित तोरचौ कठोर शिवचापु ॥ व्याही जेहि जानकी जीति जग हरचौ परशुधर दापु॥ कपट काक शासति प्रसादकरि विनु श्रम वध्यो विराधु ॥ खर दूषण त्रिशिरा कवंधहति कियो सुखी सुर साधु ॥ एकहि बाण बालि मारचो जेहि जो बल उदधि अगाधु ॥ कहुधों कंत कुशल बीतीकेहि किये राम अपराधु॥लांघि न सके लोक विजयी तुम जासु अनुज कृतरेपु॥उतारि सिंधु जारचो प्रचारि पुर जाको दूत विशेपु॥ कृपासिंधु खलवन कृशानु सम यश गावतश्रुति शेपु ॥ सोइ विरदैत वीरकोशलपति नाथ समुझि जिय देपु ॥ मुनि पुलस्त्यके यशम-

यंकमहँ कत कलंक हठि होहि ॥ और प्रकार उबार नहीं कहुँ मैं देख्यों जगुजोहि॥ चलु मिलु वेगि कुशल सादर सिय सहित अग्र करि मोहिं ॥ तुलसिदास प्रभु शरण शब्द सुनि अभय करैंगे तोहि ॥ १ ॥ २७० ॥ (राग कान्हरा) ॥ तू दशकंठ भले कुल जायो ॥ तामहँ शिव सेवा विरंचिवर भुजवल विपुल जगत यश पायो ॥ खर दूषण त्रिशिरा कबंध रिपु जेहि वाली यमलोक पठायो॥ ताको दूत पुनीत चरित हरि शुभसंदेश कहनहों आयो ॥ श्रीमदनृप अभिमान मोहवश जानत अन जानत हरिलायो ॥ तजिव्यलीक भजु कारुणीक प्रभु दैजानकिहि सु नहिं समुझायो ॥ याते तव हित होइ कुशल कुल अचलराज चलिहै न चलायो ॥ नाहिंत रामप्रताप अनल महँ ह्वै पतंग परिहै शठ धायो॥ यद्यपि अंगद नीतिपरमहित कह्यौ तथापि न कछु मनभायो॥तुलसिदास सुनि वचन क्रोध अति पावक जरत मनहुँ घृतनायो २।२७१ तैं मेरो मरम कछू नहिं पायो॥रेकपि कुटिल ढीठ पशु पाँवर मोहिं दास ज्यौं डाटन आयो। भ्राता कुंभकरण रिपुघातक सुतसुरपतिहि बंदि कर ल्यायो॥निज भुजवल अति अतुल कहौं क्यौं कंदुक लौं कैलास उठायो ॥ सुर नर असुर नाग खग किन्नर सकल करत मेरे मन भायो ॥ निशिचर रुचिर अहार मनुज तनु ताको यश खल मोहिं सुनायो ॥ कहा भयो वानर सहाय मिलि करि उपाय जो सिंधु बँधायो॥जो तरिहै भुज वीस वोरनिधि ऐसो को त्रिभुवन में जायो ॥ सुनि दशशीश वचन कपि कुंजर विहँसि ईशमाथहि शिरनायो ॥ तुलसिदास लंकेश कालवश गनत न कोटि यतन समुझायो ॥ ३ ॥ ॥ २७२ ॥ सुनु खल मैं तोहिं बहुत बुझायो ॥ एते मान शठ भयो मोहवश जानतहूँ चाहत विष खायो ॥ जगत विदित अति वीर वालि वल जानत हौ किधौं अब विसरायो ॥ विनु प्रयास सोउ हत्यौ एक शर शरणागतपर प्रेम देखायो ॥ पावहुगे निजकरम जनित फल भले ठौर हठि वैर बढ़ायो ॥ वानर भालु चपेट लपेटनि मारत तब ह्वैहै पछितायो ॥ होहीं दशन तोरिवेलायक कहा

करौं जो न आयसु पायो ॥ अब रघुवीर बाण विदलित उर सोवहि गो रणभूमि सुहायो॥अविचल राज्य विभीषणको सब जेहि रघुनाथ चरण चितलायो ॥ तुलसिदास यहि भाँति वचन कहि गर्जत चल्यो बालिनृपजायो ॥ ४ ॥ २७३ ॥ (राग केदारा) ॥ राम लषण उरलाय लयेहैं ॥ भरे नीर राजीव नयन सब अँग परिताप तयेहैं॥कहत सशोक विलोकि बंधु मुख वचन प्रीति गथयेहैं ॥ सेवक सखा भगति भायप गुण चाहत अब अथयेहैं ॥ निज कीरति करतूति तात तुम सुकृती सकल जयेहैं ॥ मैं तुम्ह बिनु तनु राखि लोक अपने अपलोक लयेहैं ॥ मेरे पणकी लाज इहाँ लौं हठि प्रियप्राण दयेहैं॥ लागत साँगि विभीषण ही परसीपर आपु भयेहैं ॥ सुनि प्रभु वचन भालु कपि गण सुर सोच सुखाइ गयेहैं ॥ तुलसी आइ पवनसुत विधि मानो फिरि निरमये नयेहैं ॥ ॥ ५ ॥ २७४ ॥ (राग सोरठ) ॥ मोपै तौ न कछू ह्वै आई ॥ और निबाहि भलीविधि भायप चल्यौ लषण सो भाई।।पुर पितु मातु सकल सुख परिहरि जेहि वन विपति बटाई ॥ ता सँगहों सुरलोक शोकतजि सक्यौ न प्राण पठाई ।। जानत हों या उर कठोर ते कुलिश कठिनतापाई ॥ सुमिरि सनेह सुमित्रासुतको दरकि दरार न जाई । तात मरण तिय हरण गीध वध भुज दाहिनी गँवाई ॥ तुलसी मैं सब भाँति आपने कुलहि कालिमालाई ॥ ६ ॥ २७५ ॥ मेरो सब पुरुषारथ थाको ॥ विपति बटावन बंधु बाहु बिनु करौं भरोसो काको ॥ सुनु सुग्रीव साँचेहूँ मोपर फेर्यो वदन विधाता॥ऐसे समय समर संकट हों तज्यों लषण सो भ्राता ॥ गिरिकानन जैहैं शाखामृग हों पुनि अनुज सँघाती ॥ ह्वैहै कहा विभीषणकी गति रही सोच भरि छाती ॥ तुलसी सुनि प्रभु वचन भालु कपि सकल विकल हिय हारे ॥ जाम्बवंत हनुमंत बोलि तब औसर जानि प्रचारे ॥ ७ ॥ २७६ ॥ (राग मारू) ॥ जोहों अब अनुशासन पावों ॥ तौ चंद्रमहिं निचोरि चैल ज्यों आनि सुधा शिरनावों ॥ कैपाताल दलौं व्यालावलि अमृत कुंड महि लावों ॥ भेदि भुवन करि भानु

वाहिरो तुरत राहु दै तावौं ॥ विबुध वैद वरबश आनौं धरि तौ प्रभु अनुग कहावों ॥ पटकों मीच नीच मूषकज्यों सबहि को पापु बहावों ॥ तुम्हरिहि कृपा प्रताप तिहारेहि नेकु विलंब न लावों ॥ दीजे सोइ आयसु तुलसी प्रभु जेहि तुम्हरे मन भावों ॥ ॥ ८ ॥ २७७ ॥ सुनि हनुमंत वचन रघुवीर ॥ सत्य समीर सुवन सब लायक कह्यो राम धरि धीर ॥ चाहिय वैद ईश आयसुधरि शीश कीश बलऐन ॥ आन्यो सदन सहित सोवतही जौलों पलक परैन ॥ जियै कुँवर निशि मिलै मूलिका कीन्ही विनय सुषेन ॥ उठ्यो कपीश सुमिरि सीतापति चल्यो सजीवनिलैन ॥ कालनेमिदलि वेगि विलोक्यौ द्रोणाचल जिय जानि ॥ देखी दिव्यौषधी जहाँ तहँ जरी न परी पहिचानि ॥ लियो उठाय कुधर कंदुक ज्यों वेग न जाइ बखानि ॥ ज्यों धाये गजराज उधारन सपदि सुदरशनपानि ॥ आनि पहार जोहारे प्रभु कियो वैदराज उपचार ॥ करुणासिंधु बंधु भेंट्यो मिटि गयो सकल दुखभार ॥ मुदित भालु कपि कटक लह्यो जनु समर पयोनिधि पार ॥ बहुरि ठौरही राखि महीधर आयो पवन कुमार ॥ सेन सहित सेवकहि सराहत पुनि पुनि राम सुजान॥ वरषि सुमन हियहरषि प्रशंसत विबुध बजाइ निसान ॥ तुलसिदास सुधि पाइ निशाचर भये मनहुँ विनु प्रान॥परी भोरही रोर लंक गढ़ दई हाँक हनुमान ॥९॥२७८ ॥(राग केदारा)॥ कौतुकही कपि कुधर लियोहै ॥ चल्यो नभ नाइ माथ रघुनाथहि सरिसन वेग वियोहै ॥ देख्यो जात जानि निशिचर विनु फरसर हयो हियोहै ॥ पर्यो कहि राम पवन राख्यो गिरि पुर तेहि तेज पियोहै ॥ जाइ भरत भरि अंक भेंटि निज जीवन दान दियोहै दुखलघु लषण मरम घायल सुनि सुख वड़ो कीश जियोहै ॥ आयसु इतहि स्वामि संकट उत परत न कछू कियोहै॥तुलसिदास विहर्यो अकास सो कैसेकै जात सियोहै ॥ १० ॥ २७९ ॥ भरत शत्रुसूदन विलोकि कपि चकित भयोहै ॥ राम लषण रण जीति अवध आये

कैधों मोहिं भ्रम कैधों काहू कपट ठयोहै ॥ प्रेम पुलकि पहिचानिकै पदपदुम नयोहै ॥ कह्यो न परत जेहि भाँति दुहूँ भाइन सनेह सों सो उर लाय लयोहै ॥ समाचार कहि गहरुभो तेहि ताप तयोहै ॥ कुधर सहित चढ़ो विशिष वेगि पठवों सुनि हरिहि अगरव गूढ़ उपयोहै ॥ तीर ते उतारि यश कह्यो चहै गुण गण निज योहै ॥ धन्य भरत धन्य भरत करत भयो मगन मौन रह्यो मन अनुराग रयोहै॥यह जलनिधि खन्यो मथ्यो लँघ्यो बाँध्यो अँचयोहै॥तुलसिदास रघुवीर बंधु महिमाको सिंधु तरि को कवि पार गयोहै॥११।२८०॥ होतो नहिं जो जग जनम भरतको ॥ तौ कपि कहत कृपान धार मग चलि आचरत वरतको ॥ धीरज धरम धरणिधर धुरहुँते गुरु धुर धरणि धरतको ॥ सब सद्गुण सनमानि आनि उर अघ औगुण निदरतको ॥ शिवहु न सुगम सनेह रामपद सुजनानि सुलभ करतको॥सृजि निज यश सुरतरु तुलसी कहँ अभिमत फरनि फरतको ॥ १२।२८१ ॥ सुनि रण घायल लषण परेहैं ॥ स्वामि काज संग्राम सुभट सों लोहे ललकारि लरेहैं ॥ सुवन शोक संतोष सुमित्रहि रघुपति भगति वरेहैं ॥ छिन छिन मात सुखात छिनहिं छिन हुलसत होत हरेहैं ॥ कपि सों कहति सुभाय अंबके अंबक अंबु भरेहैं ॥ रघुनंदन विनु बंधु कुअवसर यद्यपि धनु दुसरेहैं ॥ तात जाहु कपि सँग रिपुसूदन उठि कर जोरि खरे हैं ॥ प्रमुदित पुलकि पैत पूरे जनु विधिवश सुढर ढरेहैं ॥ अंब अनुज गति लखि पवनज भरतादि गलानि गरेहैं ॥ तुलसी सब समुझाइ मातु तेहि समय सचेत करेहै ॥ १३ ॥ २८२ ॥ विनय सुनाइवी परि पाय॥ कहौं कहा कपीश तुम्ह शुचि सुमति सुहृद सुभाय॥ स्वामि संकट हेतुहों जड जननि जनम्यो जाय ॥ समो पाइ कहाइ सेवक घटचो तौन सहाय ॥ कहत शिथिल सनेह भो जनु धीर घायल घाय ॥ भरत गति लखि मातु सब रहि ज्यो गुडीं विनु वाय ॥ भेंट कहि कहिवो कह्योयों कठिन मानस माय ॥ लाल लोने लषण सहित सुललित लागत नाय ॥ देखि बंधु सनेह अंब सुभाउ

लषण कुठाय ॥ तपत तुलसी तरनि त्रासकु येहिनये तिहुँ ताय ॥ १४ ॥ २८३ ॥ हृदय घाउ मेरे पीर रघुवीरै ॥ पाइ सजीवन जागि कहत यों प्रेमपुलकि विसरे शरीरै ॥ मोहिं कहा बूझत पुनि पुनि जैसे पाठ अरथ चरचा कीरै ॥ शोभा सुख क्षति लाहु भूपकहँ केवल कांति मोलहीरै ॥ तुलसी सुनि सौमित्र वचन सब धारि न सकत धरो धीरै ॥ उपमा राम लषणकी प्रीतिकी क्यौं दीजे पीरै नीरै ॥ १५ ॥ २८४ ॥ (राग कान्हरा) ॥ राजत राम काम शत सुंदर ॥ रिपुरण जीति अनुज सँग शोभित फेरत चाप विशिष वन रुहकर ॥ श्याम शरीर रुचिर श्रमसीकर शोणित कण विच वीच मनोहर ॥ जनु खद्योत निकर हरहित गण भ्राजत मर्कत शैल शिखरपर ॥ घायलवीर विराजत चहुँ दिशि हरषित सकल ऋच्छ अरु वनचर ॥ कुसुमित किंशुक तरु समूह महँ तरुण तमाल विशाल विटपवर ॥ राजिवनयन विलोकि कृपाकारि किये अभय मुनि नाग विवुध नर ॥ तुलसिदास यह रूप अनूपम हृदि सरोज वसि दुसह विपतिहर ॥ १६ ॥ २८५ ॥ (राग आसावरी) ॥ अवधि आजु किधों औरो दिनह्वैहैं ॥ चढ़ि धवरहर विलोकि दक्षिण दिशि वूझधों पथिक कहाँते आयेवैहैं ॥ वहुरि विचारि हारि हिय सोचति पुलकि गात लागे लोचन च्वैहैं ॥ निजवासरनि वरष पुरवैगो विधि मेरे तहाँ करम कठिन कृत कैहैं ॥ वन रघुवीर मातु गृह जीवति निलज प्राण सुनि सुनि सुखस्वैहैं ॥ तुलसिदास मोसी कठोर चित कुलिशशाल भंजिको न ह्वैहैं ॥ ॥ १७ ॥ २८६ ॥ आली अव राम लषण कितह्वैहैं ॥ चित्रकूट तज्यो तवते न लही सुधि वधूसमेत कुशल सुतद्वैहैं ॥ वारि वयारि विषम हिम आतप सहि विनु वसन भूमितल स्वैहैं ॥ कंद मूल फल फूल अशनवन भोजन समय मिलत कैसेवैहैं ॥ जिन्हहिं विलोकि सोचिहैं लता द्रुम खग मृग मुनि लोचन जल च्वैहैं ॥ तुलसिदास तिन्हकी जननीहों मोसी निठुर चित औरो कहुँ ह्वैहैं ॥ १८ ॥ २८७ ॥ (राग सोरठ) ॥ बैठी शकुन मनावति माता ॥ कब ऐहैं मेरे बाल कुशल घर कहहु

काग फुरिवाता ॥ दूधभातकी दोनी देहौं सोने चोंच मढ़ैहौं ॥ जब सिय सहित विलोकि नयन भरि राम लषण उर लैहौं ॥अवधि समीप जानि जननी जिय अति आतुर अकुलानी ॥ गणक बोलाइ पाँय पारि पूछति प्रेम मगन मृदुबानी ॥ तेहि अवसर कोउ भरत निकट ते समाचार लैआयो ॥ प्रभु आगमन सुनत तुलसी मानो मीन भरत जल पायो ॥ १९ ॥ २८८ ॥ (राग गौरी) ॥ क्षेमकरी बलि बोलि सुबानी ॥ कुशल क्षेम सिय राम लषण कब ऐहैं अंब अवध रजधानी ॥ शशिमुखि कुंकुम वरणि सुलोचनि मोचनि सोचहुँ वेद बखानी ॥ देवि दयाकरि देहि दरशफल जोरि पानि विनवहिं सब रानी ॥ सुनि सनेहमय वचन निकटह्वै मंजुल मंडलकै मड़रानी ॥ शुभ मंगल आनंद गगन धुनि अकनि अकनि उर जरनि जुड़ानी॥फरकन लगे सुअंग विदिशि दिशिमन प्रसन्न दुख दशा सिरानी ॥ करहिं प्रणाम सप्रेम पुलकि तनु मानि विविध बलि शकुन सयानी ॥ तेहि अवसर हनुमान भरतसों कही सकल कल्याण कहानी ॥ तुलसिदास सोइ चाह सजीवनि विषम वियोग विथा बड़ि भानी ॥ २० ॥ २८९ ॥ (राग धनाश्री)॥ सुनियत सागरसेतु बँधायो ॥ कौशलपतिकी कुशल सकल सुधि कोउ इक दूत भरत पहँ ल्यायो ॥ वध्योविराध त्रिशिरा खर दूषण शूर्पणखा को रूप नशायो ॥हति कवंध बलअंध वालिदलि कृपासिंधु सुग्रीव बसायो ॥ शरणागत अपनाइ विभीषण रावण सकुल समूल बहायो॥विबुध समाज निवाजि बाँह दै बंदिछोरि वर विरद कहायो॥ एक एक सों समाचार सुनि नगरलोग जहँ तहँ सब धायो॥घन धुनि अकनि मुदित मयूर ज्यों बूड़त जलधि पार सो पायो॥ अवधि आजु ये कहत परस्पर वेगि विमान निकट पुर आयो ॥ उतरि अनुज अनुगानि समेत प्रभु गुरु द्विजगण चरणनि शिरनायो॥जो जेहि योग राम तेहि विधि मिलि सबके मन अतिमोद बढ़ायो ॥ भेंटी मातु भरत भरतानुज क्यों कहों प्रेम अमित अनुमायो ॥ तेही दिन मुनि वृंद अनंदित तुरत तिलकको साज सजायो ॥ महाराज रघुवंश

नाथको सादर तुलसिदास गुण गायो ॥ २१ ॥ २९० ॥ (राग जयतश्री) ॥ रण जीति राम राउ आये ॥ सानुज सदल ससीय कुशल आजु अवध अनंद बधाए ॥ अरिपुर जारि उजारि मारि रिपु विबुध सुवास बसाए ॥ धरणि धेनु महिदेव साधु सबके सब सौंच नशाए ॥ दई लंक थिर थपे विभीषण वचन पियूष पिआए ॥ सुधा सींचि कपि कृपा नगर नर नारि निहारि जिआए ॥ मिलि गुरु बंधु मातु जन परिजन भए सकल मन भाए ॥ दरश हरष दशचारि वरषके दुख पल में विसराए ॥ बोलि सचिव शुचि सोधि सुदिन मुनि मंगल साज सजाए ॥ महाराज अभिषेक वरषि सुर सुमन निसान बजाए ॥ लैलै भेंट नृप अहिपलोकपाति अति सनेह शिरनाये ॥ पूजि प्रीति पहिचानि राम आदरे अधिक अपनाए ॥ दान मान समानि जानि रुचि याचक जन पहिराए ॥ गए शोक सर सूखि मोद सरिता समुद्र गहिराए ॥ प्रभु प्रताप रवि अहित अमंगल अघ उलूक तम ताए ॥ किये विशोक हित कोक कोकनद लोक सुयश शुभ छाये ॥ राम राज कुलि काज सुमंगल सबनि सबै सुख पाए ॥ देहिं अशीश भूमिसुर प्रमुदित प्रजा प्रमोद बढ़ाए ॥ आश्रम धरम विभाग वेद पथ पावन लोग चलाए ॥ धर्म निरत सिय राम चरण रत मनहुँ राम सिय जाए ॥ कामधेनु महि विटप कामतरु कोउ विधि वाम न लाए ॥ ते ते तव अब तुलसी तेउ जिन्ह हित सहित राम गुण गाए ॥ २२ ॥ ॥ २९१ ॥ (राग टोड़ी) ॥ आजु अवध आनंद वधावन रिपु रण जीति राम आए ॥ साजि सुविमान निशान बजावत मुदित देव देखन धाये ॥ घर घर चारु चौक चंदन मणि मंगल कलश सबनि साजे ॥ ध्वज पताक तोरण वितान वर विविध भाँति बाजन बाजे ॥ राम तिलक सुनि द्वीप द्वीपके नृप आए उपहार लिये ॥ सीय सहित आसीन सिंहासन निरखि जोहारत हरष हिए ॥ मंगल गान वेद धुनि जय धुनि मुनि अशीश धुनि भुवन भरे ॥ वरषि सुमन सुर सिद्ध प्रशंसत सबके सब संताप हरे ॥ राम राज भइ कामधेनु महि

सुख संपदा लोक छाए ॥ जनम जनम जानकीनाथके गुणगण तुलसिदास गाये ॥ २३ ॥ २९२ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां लंकाकांडः समाप्तः ॥

अथ उत्तरकाण्ड प्रारम्भः ॥

(राग सोरठ) ॥ वनते आइकै राजाराम भये भुवाल॥मुदित चौदह भुवन सब सुख सुखी सब सबकाल ॥ मिटे कलुष कलेश कुलषन कपट कुपथ कुचाल ॥ गए दारिद दोप दारुण दंभ दुरित दुकाल ॥ काम धुक महिकाम तरु तरु उपल मणिगण लाल ॥ नारि नर तेहि समय सुकृती भरे भाग सुभाल ॥ वर्ण आश्रम धरमरत मन वचन वेष मराल ॥ राम सिय सेवक सनेही साधु सुमुख रसाल ॥ राम राज समाज वर्णत सिद्ध सुर दिगपाल ॥ सुमिरि सो तुलसी अजहुँ हिय हरष होत विशाल ॥ १ ॥ २९३ ॥ (राग ललित) ॥ भोर जानकीजीवन जागे ॥ सूत मागध प्रवीण वेणु वीणा धुनि द्वारे गायक सरसराग रागे ॥ श्यामल सलोने गात आलसवश जँभात प्रिया प्रेमरस पागे ॥ उनींदे लोचन चारु मुख सुखमा शृँगार हेरि हारे मार भूरि भागे॥ सहज सुहाई छवि उपमा न लहै कवि मुदित विलोकन लागे॥तुलसिदास निशि वासर अनूप रूप रहत प्रेम अनुरागे ॥ २ ॥ २९४ ॥ (राग कल्याण) ॥ रघुपति राजीवनयन शोभातनु कोटिमयन करुणारस अयन चयन रूप भूप माई ॥ देखो सखि अतुलित छवि संत कंज कानन रवि गावत कल कीरति कवि कोविद समुदाई ॥ मज्जन करि सरयुतीर ठाढ़े रघुवंशवीर सेवत पद कमल धीर निर्मल चितलाई ॥ ब्रह्ममंडली मुनिंद्र वृंद मध्य इंदुवदन राजत सुखसदन लोक लोचन सुखदाई ॥ विथुरित सिररुह वरूथ कुंचित विच सुमन यूथ मणियुत शिशु फणि अनीक शशि समीप आई ॥ जनु सभीतदै अकोर राखे युग रुचिर मोर कुंडल छवि निरखि चोर सकुचत अधिकाई ॥ ललित भृकुटि तिलक भाल चिवुक अधर द्विज रसाल हास चारु तर क-

पोल नासिका सुहाई ॥ मधुकर युग पंकज विच शुकविलोकि नीरजपर लरत मधुप अवली मानो वीच कियो जाई ॥ सुंदर पटपीत विशद भ्राजत वनमाल उरासि तुलसिका प्रसून रचित विविध विधि वनाई ॥ तरु तमाल अधविच जनु त्रिविध कीरपाँति रुचिर हेमजाल अंतरपरि ताते न उड़ाई ॥ शंकर हृदि पुण्डरीक निवसत हरि चंचरीक निर्व्यलीक मानस गृह संतत रहे छाई ॥ अतिशय आनंदमूल तुलसिदास सानुकूल हरण सकल शूल अवध मंडन रघुराई ॥ ३ ॥ २९५ ॥ राजत रघुवीर धीर भंजन भव भीर पीर हरण सकल सरयुतीर निरखहु सखि सोहैं ॥ संग अनुज मनुज निकर दनुज बल विभंग करन अंग अंग छवि अनंग अगणित मन मोहैं ॥ सुखमा सुख शील अयन नयन निरखि निरखि नील कुंचित कच कुंडल कल नासिक चित पोहैं ॥ मनहुँ इंदु बिंब मध्य कंजमीन खंजनलखि मधुप मकर कीर आए तकि तकि निजगोहैं॥ ललित गंड मंडल सुविशाल भाल तिलक झलक मंजुवर मयंक अंक रुचिर बंक भौहैं ॥ अरुण अधर मधुर बोल दशन दमक दामिनि द्युति हुलसति हिय हँसनि चारु चितवनि तिरछौहैं ॥ कंबु कंठ भुज विशाल उरसि तरुण तुलसिमाल मंजुल मुकुतावलि युत जागति जिय जोहैं ॥ जनु कलिंदनंदिनि मणि इंद्रनील शिखर परसि धसति लसति हंससे निसंकुल अधिकोहैं ॥ दिव्य तर दुकूल भव्य नव्य रुचिर चंपक चय चंचला कलाप कनक निकर अलि किधौंहैं ॥ सज्जन चख झख निकेत भूषण मणि गण समेत रूप जलधि वपुष लेत मन गयंदवोहैं ॥ अकनि वचन चातुरी तुरीय पेखि प्रेम मगन पगन परत इत उत सब चकित तेहि समोहैं ॥ तुलसिदास यह सुधि नहिं कौनकी कहाँते आई कौन काज काके ढिग कौन ठाउँकोहैं ॥ ४ ॥ २९६ ॥ देखु सखि आजु रघुनाथ शोभावनी ॥ नील नीरद वरण वपुष भवनाभरण पीत अंवर धरण हरण द्युति दामिनी ॥ सरयु मज्जनकिए संग सज्जन लिए हेतु जनपर हिये कृपा कोमल घनी ॥ सजनि आवत भवन मत्त गजवर

गवन नृपति मृगपति ठवनि कवन कौशलधनी ॥ सवन चिक्क-
न कुटिल चिकुर विलुलित मृदुल करनि विवरत चतुर सरस सुख
माजनी ॥ ललित अहि शिशु निकर मनहुँ शशि सन समर लरत
धरहरि करत रुचिर जनु युग फनी ॥ भाल भ्राजत तिलक जल-
ज लोचन पलक चारु भ्रूनासिका सुभग शुक आननी ॥ चिबुक
सुंदर अधर अरुण द्विज द्युति सधर वचन गंभीर मृदुहास भव
भाननी ॥ श्रवण कुंडल विमल गंड मंडित चपल कलित कल
कांति अति भाँति कछु तिन्हतनी ॥ युगल कंचन मकर मन-
हुँ विधुकर मधुर पियत पहिचानि करि सिंधुकीरति भनी ॥
उरसि राजत पदिक ज्योति रचना अधिक माल सुविशाल चहुँ
पास बनि गज मनी ॥ श्याम नव जलद पर निरखि दिनकर कला
कौतुकी मनहुँ रही घेरि उडुगण अनी ॥ मंदिरनि पर खरी नारि
आनँद भरी निरखि वरषहिं विपुल कुसुम कुंकुम कनी ॥ दास तु-
लसी राम परम करुणाधाम काम शत कोटि मद हरत छवि आप-
नी ॥ ८ ॥ २९७ ॥ आजु रघुवीर छवि जाति नहिं कछु कही ॥ सु-
भग सिंहासनासीन सीतारमण भुवन अभिराम बहु काम शोभा-
सही ॥ चारु चामर व्यजन छत्र मणिगण विपुल दाम मुकुतावली
जोति जगमगिरही ॥ मनहुँ राकेश सँग हंस उडुगण वरहि मिलन
आये हृदय जानि निज नाथही ॥ मुकुट सुंदर सिरसि भाल वर
तिलक भ्रूकुटिल कच कुंडलनि परम आभा लही ॥ मनहुँ हर डर
युगुल मार ध्वजके मकर लागि श्रवणनि करत मेरु की बत-
कही ॥ अरुण राजीव दल नयन करुणाअयन वदन सुखमासद-
न हास त्रय तापही ॥ विविध कंकण हार उरसि गजमणि माल
मनहुँ बग पाँति युग मिलि चली जल दही ॥ पीत निर्मल चैल म-
नहुँ मरकत शैल पृथुल दामिनि रही छाइ तजि सहजही ॥ ललित
शायक चाप पीन भुज बल अतुल मनुजतनु दनुजवनु दहन मं-
डन मही ॥ जासु गुण रूप नहिं कलित निर्गुण सगुण शंभु सनका-
दि शुक भक्ति दृढ़ करि गही ॥ दास तुलसी राम चरण पंकज सदा

वचन मन कर्म चहै प्रीति नित निर्वहीं ॥ ६ ॥ २९८ ॥ राम राज राजि मौलि मुनिवर मनु हरण शरण लायक सुखदायक रघुनायक देखोरी ॥ लोक लोचनाभिराम नील मणि तमाल श्याम रूप शील धाम अंग छवि अनंग कोरी ॥ भ्राजत शिर मुकुट पुरट निर्मित मणि रचित चारु कुंचित कच रुचिर परमशोभा नाहिं थोरी ॥ मनहुँ चंचरीक पुंज कंज वृंद प्रीति लागि गुंजत कलगान तान दिनमणि रिझयोरी ॥ अरुण कंज दल विशाल लोचन भ्रू तिलक भाल मंडित श्रुति कुंडल वर सुंदर तर जोरी ॥ मनहुँ संवरारि मारि ललित मकर युग विचारि दीन्हे शशि कहँ पुरारि भ्राजत दुहुँ ओरी ॥ सुंदर नासा कपोल चिबुक अधर अरुण बोल मधुर दशन राजत जब चितवत मुख मोरी ॥ कंज कोश भीतर जनु कंज राग शिखर निकर रुचिर रचित विधि विचित्र तड़ित रंग बोरी ॥ कंबु कंठ उर विशाल तुलसिका नवीन माल मधुकर वर वास विव उपमा सुनु सोरी ॥ जनु कलिंदजात नील शैल ते धसी समीप कंद वृंद वरषत छवि मधुर घोरि घोरी ॥ निर्मल अति पीत चैल दामिनि जनु जलद नील राखी निज शोभाहित विपुल विधि निहोरी ॥ नयनन्हिको फल विशेषि ब्रह्म अगुण सगुण वेष निरखहु तजि पलक सफल जीवन लेखोरी ॥ सुंदर सीता समेत शोभित करुणानिकेत सेवक सुख देत लेत चितवत चित चोरी ॥ वर्णत यह अमित रूप थकित निगम नाग भूप तुलसिदास छवि विलोकि शारद भइ भोरी ॥ ७ ॥ २९९ ॥ (राग केदारा) ॥ सखि रघुनाथ रूप निहारु ॥ शरद विधु रवि सुवन मनसिज मान भंजनिहारु ॥ श्याम सुभग शरीर जनु मन काम पूर निहारु ॥ चारु चंदन मनहुँ मरकत शिखर लसत निहारु ॥ रुचिर उर उपवीत राजत पदिक गज मणि हारु ॥ मनहुँ सुरधनु नखतगण बिच तिमिर गंजनिहारु ॥ विमल पीत दुकूल दामिनि द्युति विनिंदनिहारु ॥ वदन सुखमासदन शोभित मदन मोहनिहारु ॥ सकल अंग अनूप नहिं कोउ सुकवि वरणनिहारु ॥ दास तुलसी निरखतहि

सुखलहत निरखनि हारु ॥ ८ ॥ ३०० ॥ सखि रघुवीर मुख छवि देखु ॥ चित्त भीत सुप्रीति रंग सुरूपता अवरेखु ॥ नयन सुखमा निरखि नागरि सफल जीवन लेखु ॥ मनहुँ विधि युग जलज विरचे शशिसु पूरण मेखु ॥ भ्रुकुटि भाल विशाल राजत रुचिर कुंकुम रेखु ॥ भ्रमर द्वै रविकिरणि ल्याये करन जनु उनमेखु॥ सुमुखि केश सुदेश सुंदर सुमन संयुत पेखु ॥ मनहुँ उडुगन वाह आए मिलन तम तजि द्वेषु ॥श्रवण कुंडल मनहुँ गुरु कवि करत वाद विशेषु ॥ नासिका द्विज अधर जनु रह्यौ मदनु करि वहु वेषु ॥ रूप वरणि न सकत नारद शंभु शारद शेषु ॥ कहै तुलसी दास क्यों मतिमंद सकल नरेशु ॥ ९ ॥ ३०१ ॥ (राग जयतश्री) ॥ देखो राघो वदन विराजत चारु ॥ जात न वरणि विलोकतही सुख मुख किधौ छवि वर नारि शृंगारु ॥ रुचिर चिबुक रद ज्योति अनूपम अधर अरुण सितहास निहारु ॥ मनो शशि कर बसेउ चहत कमल महँ प्रगटत दुरत न वनत विचारु ॥ नासिक सुभग मनहुँ शुक सुंदर चितवत चकित अचरज अपारु ॥ कल कपोल मृदु वोल मनोहर रीझि चित चतुर अपनपौ वारु ॥ नयनसरोज कुटिल कच कुंडल भ्रुकुटि सुभाल तिलक शोभा सारु ॥ मनहुँ केतु के मकर चाप शर गयो विसारि भयो मोहित मारु ॥ निगम शेष शारद शुक शंकर वर्णत रूप न पावत पारु ॥ तुलसिदास कहै कहौ धौं कौन विधि अति लघुमति जड़ कूर गँवारु ॥ १० ॥ ॥ ३०२ ॥ (राग ललित) ॥ आज रघुपति मुख देखत लागत सुख सेवक सुरुप शोभा शरद शशि सिहाई॥दशन वसन लाल विशद हास रसाल मानो हिमकर कर राखे राजीव मनाई ॥ अरुण नैन विशाल ललित भ्रुकुटि भाल तिलक चारु कपोल चिबुक नासा सुहाई ॥ विथुरे कुटिल कच मानहुँ मधु लालच अलिनलिन युगल उपर रहे लोभाई ॥ श्रवण सुंदर सम कुंडल कल युगम तुलसिदास अनूप उपमा कही न जाई॥ मानो मरकत सीप सुंदर शशि समीप कनक मकरयुत विधि विरची वनाई ॥ ११ ॥ ३०२ ॥

(राग भैरव)॥ प्रातकाल रघुवीर वदन छबि चितै चतुर चित मे-रे॥ होहिं विवेक विलोचन निर्मल सुफल सुशीतल तेरे॥ भाल विशाल विकट भ्रुकुटी विच तिलक रेख रुचिराजै॥ मनहुँ मदन तम तकि मरकत धनु युगल कनक शर साजै॥ रुचिर पलक लोचन युग तारक श्याम अरुण अति कोये॥ जनु अलिनलिन कोश महँ बंधुक सुमन सयन सजि सोये॥ विलुलित ललित क-पोलनिपर कच मेचक कुटिल सुहाये॥ मनो विधु महँ वनरुह वि-लोकि अलि विपुल सकौतुक आये॥ शोभित श्रवण कनक कुंड-ल कल लंबित विवि भुज मूले॥ मनहुँ केकि तकि गहन चहत यु-ग उरग इंदु प्रतिकूले॥ अधर अरुण तर दशन पाँति वर मधुर म-नोहरहासा॥ मनहुँ सोन सरसिज महँ कुलिशनि तड़ित सहित कृत वासा॥चारु चिबुक शुकतुंड विनिंदक सुभग सुउन्नत नासा॥ तुलसिदास छविधाम रामसुख सुखद शमन भवत्रासा॥ १२॥

॥ ३०४॥(राग केदारा)॥ सुमिरत श्रीरघुवीरकी बाहैं॥ होत सु-गम भव उदधि अगम अति कोउ लाँघत कोउ उतरत थाहैं॥ सुंदर श्याम शरीर शैलते धसि जनु युग यमुना अवगाहैं॥ अमित अ-मल जल बल परिपूरण जनु जनमी शृँगार सविताहैं॥ धारैं बाण कूल धनु भूषण जलचर भवर सुभग सब घाहैं॥ विलसति वीचि विजय विरदावलि कर सरोज सोहत सुखमाहैं॥ सकल भुवन मं-गल मंदिरके द्वार विशाल सुहाई साहैं॥ जे पूजी कौशिक मख ऋ-षयनि जनक गणप शंकर गिरिजाहैं॥ भव धनु दलि जानकी वि-वाही भये विहाल नृपाल त्रपाहैं॥ परशु पाणि जिन्ह किये महामुनि जे चितये कबहूँ न कृपाहैं॥ यातुधान तिय जानि वियोगिनि दुखई सीय सुनाइ कुचाहैं॥जिन्ह रिपु मारि सुरारि नारि तेइ शीश उघारि दिवाईधाहैं॥ दशमुख विवश तिलोक लोकपति विकल विना ये नाक चनाहैं॥ सुवशवसे गावत जिन्हके यश अमर,नाग,नर सुमुखि सनाहैं॥ जे भुज वेद पुराण शेष शुक शारद सहित सनेह सरा-हैं॥ कलपलताहु कि कलपलतावर कामदुहाहुकि काम दुहाहैं॥

शरणागत आरत प्रणतनिको दैदै अभयपद ओर निवाहैं ॥ कारि आई करिहैं करतीहैं तुलसिदास दासनिपर छाहैं ॥ १३ ॥ ३०५ ॥ ॥ (राग भैरव) ॥ रामचंद्र करकंज कामतरु वामदेव हितकारी ॥ सियसनेह वर वेलि वलित वर प्रेमवंधु वरवारी ॥ मंजुल मंगल मूल मूल तनु करज मनोहर शाखा ॥ रोमपरण नख सुमन सुफल सव काल सुजन अभिलाषा ॥ अविचल अमल अनामय अविरल ललित रहित छल छाया ॥ शमन शकल संताप पापरुज मोह मान मद माया ॥ सेवहिं शुचि मुनि भृंग विहगमन मुदित मनोरथ पाये ॥ सुमिरतहिय हुलसति तुलसी अनुराग उमगि गुणगाये ॥ ॥१४ ॥ ३०६॥ रामचरण अभिरामकामप्रद तीरथ राज विराजै ॥ शंकर हृदय भक्ति भूतलपर प्रेम अक्षयवट भ्राजै ॥ श्यामवरण पद पीठ अरुण तल लसति विशद नख श्रेणी ॥ जनु रविसुता शारदा सुरसरि मिलि चली ललित त्रिवेणी ॥ अंकुश कुलिश कमलध्वज सुंदर भवँर तरंग विलासा ॥ मज्जहिं सुर सज्जन मुनिजन मन मुदित मनोहरवासा ॥ विनु विराग जप याग योग व्रत विनु तपविनु तनुत्यागे ॥ सव सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभु पद प्रयाग अनुरागे ॥ १५ ॥ ३०७ ॥ (राग विलावल) ॥ रघुवर रूप विलोकु नेकुमन ॥ सकल लोक लोचन सुखदायक नख शिख सुभग श्याम सुंदर तन ॥ चारु चरण तल चिह्न चारि फल चारि देत पर चारि जानिजन ॥ राजत नख जनु कमल दलनिपर अरुण प्रभारंजित तुपारकन॥जंघा जानु आनु के दलि उर कटि किंकिणि पटपीत सुहावन ॥रुचिर निषंग नाभि रोमावलि त्रिवलि वलित उपमा कछु आवन ॥भृगुपद चिह्न पदिक उर शोभित मुकुतमाल कुंकुम अनुलेपन ॥ मनहुँ परस्पर मिलि पंकज रवि प्रगट्यौ निज अनुराग सुयश धन॥ वाहु विशाल ललित शायक धनु कर कंकण केयूर महाधन ॥ विमल दुकूल दलन दामिनि द्युति यज्ञोपीत लसत अति पावन ॥ कंबुग्रीव छवि सींव चिवुक द्विज अधरकपोल वोल भय मोचन॥नासिक सुभग कृपापरिपूरण तरुण अरुण राजीव विलोच-

न॥कुटिल भ्रुकुटिवर भाल तिलक रुचि शुक सुंदरतर श्रवण विभूषण॥मनहुँ मारि मनसिज पुरारि दिय शशिहि चाप शर मकर अदूषण ॥ कुंचित कच कंचन किरीट शिर जटित ज्योतिमय बहु विधि मणिगण ॥ तुलसिदास रविकुल रवि छवि कवि कहि न सकत शुक शंभु सहसफण ॥ १६ ॥ ३०८ ॥ (राग कान्हरा)॥ देखो रघुपति छवि अतुलित अति ॥ जनु तिलोक सुखमा सकेलि विधि राखी रुचिर अंग अंगनि प्रति ॥ पद्मराग रुचि मृदुपदतल ध्वज अंकुश कुलिश कमल यहि सूरति॥रही आनि चहुँ विधि भगतनि की जब अनुराग भरी अंतरगति ॥ सकल सुचिह्न सुजन सुखदायक ऊरधरेख विशेष विराजति ॥ मनहुँ भानु मंडलहि सवाँरत धरचो सूतविधि सुत विचित्र मति ॥ सुभग अंगुष्ठ अंगुली अविरल कछुक अरुणनख ज्योति जगमगति ॥ चरण पीठ उन्नत नत पालक गूढ गुलफ जंघा कदली जति ॥ काम तूण तल सरिस जानु युग उरु करि कर करभहि विलखावति ॥ रसना रचित रतन चामीकर पीत वसन कटिकसे सरवसति ॥ नाभि सरसि त्रिवली निसेनिका रोमराजि सैवल छवि पावति ॥ उर मुकुतामणि माल मनोहर मनहुँ हंस अवली उड़ि आवति ॥ हृदय पदिक भृगुचरणचिह्न वर बाहु विशाल जानु लगि पहुँचति ॥ कल केयूर पूर कंचन मणि पहुँची मंजु कंजकर सोहति ॥ सुजव सुरेख सुनख अंगुलियुत सुंदर पाणि मुद्रिका राजति ॥ अंगुलित्राण कमान बानछवि सुरनि सुखद असुरनि उर शालति ॥ श्याम शरीर सुचंदन चर्चित पीत दुकूल अधिक छवि छाजति ॥ नील जलद पर निरखि चंद्रिका दुरनि त्यागि दामिनि जनु दमकति ॥ यज्ञोपवीत पुनीत विराजत गूढ़जत्रुवनी पीन अंसतति ॥ सुगढ पृष्ठ उन्नत कि काठिका कंबु कंठ शोभा मन मानति ॥ शरद समय सरसीरुह निंदक मुख सुखमा कछु कहत नहिं बनति ॥ निरखतहीं नयननि निरुपम सुख रवि सुत मदन सोम द्युति निदरति॥ अरुण अधर द्विजपाँति अनूपम ललित हँसनि जनु मन आकरप-

ति ॥ विद्रुम रचित विमान मध्य जनु सुरमंडली सुमन चय वरषति ॥ मंजुल चिबुक मनोरम हनुथल कल कपोल नासा मन मोहति॥पंकज मान विमोचन लोचन चितवनि चारु अमृत जल सीचति ॥ केश सुदेश गंभीर वचनवर श्रुति कुंडल डोलनि जिय जागति ॥ लखि नव नील पयोदर सित सुनि रुचिर मोर जोरी जनु नाचति ॥ भौंहैं वंक मयंक अंक रुचि कुंकुमरेख भाल भलि भ्राजति॥ सिरसि हेम हीरक माणिकमय मुकुट प्रभा सब भुवन प्रकाशति ॥ वरणत रूप पारनहिं पावत निगम शेष शुक शंकर भारति ॥ तुलसिदास केहि विधि वखानि कहै यह मन वचन अगोचर मूरति ॥ १७।३०९॥(रागमलार)॥ आलीरी रावोके रुचिर हिंडोलना झूलन जै ए ॥ टेक ॥ फटिक भीति सुचारु चहुँ दिशि मंजु मणिमय पौंरि ॥ गच कांचलखि मनु नाच सखि जनु पाँचसर सुफसौरि ॥ तोरण वितान पताक चामर ध्वज सुमन फलघोरि ॥ प्रतिछाँह छवि कवि साखि दै प्रति शोकहै गुर होंरि ॥१॥ मदन जयके खंभसे रचे खंभ सरल विशाल ॥ पाटीर पाँटि विचित्र भँवरा वलित वेलना लाल॥डांड़ी कनक कुंकुम तिलक रेखैंसिमनसिज भाल ॥ पटुली पदिकरति हृदय जनु कलधौंत कोमल माल ॥ २ ॥ उनये सघन धनघोर मृदु झरि सुखद सावन लाग ॥ वग पाँति सुर धनु दमकदामिनि हरित भूमि विभाग ॥ दादुर मुदित भरे सरित सरमहि उमग जनु अनुराग ॥ पिक मोर मधुप चकोर चातक सोर उपवन वाग ॥३॥ सोसमौ देखि सुहावनो नवसत सँवारि सँवारि ॥ गुण रूप यौवन सींव सुंदरि चलीं झुंडनि झारि ॥हिंडोल साल विलोकि सव अंचल पसारि पसारि ॥ लागी अशीशन राम सीतहि सुख समाजु निहारि ॥ ४ ॥ झूलहिं झुलावहिं ओसरिन्ह गावहिं सुहव गौड़ मलार ॥ मंजीर नूपुर वलय धुनि जनु काम करतल तार ॥ अति मचत श्रम कण मुखनि विथुरे चिकुर विलुलित हार ॥ तम तड़ित उड़गण अरुण विधु जनु करत व्योम विहार॥ ५ ॥ हिय हरषि वरषि प्रसून निरखति विबुध तिय तृण तूरि ॥ आनंद जललो-

चन मुदित मन पुलकतनु भरिपूरि ॥ सब कहहिं अविचल राज नित कल्याण मंगल भूरि ॥ चिरजियो जानकिनाथ जग तुलसी सजीवनि मूरि ॥१८।३१०॥ रागसूहो ॥ कोशलपुरी सुहावनि सरि सरयूके तीर ॥ भूपावली मुकुटमणि नृपति जहाँ रघुवीर॥पुरनर नारी चतुर अति धरम निपुण रत नीति॥सहज सुभाय सकल उर श्रीरघु वर पद प्रीति॥(छंद)॥श्रीरामपद जलजात सबके प्रीति अविरल पावनी ॥ जो चहत शुक सनकादि शंभु विरंचि मुनिमन भावनी ॥ सवहीके सुंदर मंदिराजिर राउ रंक न लखिपरै ॥ नाकेश दुर्लभ भोग लोग करहिं न मन विषयनि हरै ॥१ ॥ सब ऋतु सुखप्रद सो पुरी पावस अति कमनीय ॥ निरखत मनहिं हरत हठि हरित अवनि रमनीय ॥ वीर वहूटि विराजहि दादुर धुनि चहुँ ओर ॥ मधुर गरजि घन वरषहिं सुनि सुनि बोलत मोर ॥ (छंद)॥ बोलत जो चातक मोर कोकिलकीर पारावत घने ॥ खग विपुल पाले बालकनि कूजत उड़ात सुहावने ॥ वक राजि राजति गगन हरि धनु तड़ित दिशि दिशि सोहहीं ॥ नभ नगरकी शोभा अतुल अवलोकि मुनि मन मोहहीं ॥ २ ॥ गृह गृह रचे हिँडोलना महि गच काँच सुढार ॥ चित्र विचित्र चहूँ दिशि परदा फटिक पगार॥ सरल विशाल विराजहिं विद्रुम खंभ सुजोर ॥ चारु पाटिपटि पुरटकी झरकत मरकत भोर ॥ (छंद) ॥ मरकत भँवर डाँड़ी कनक मणि जटित द्युति जगमग रही ॥ पटुली मनहुँ विधि निपुणता निज प्रगट करि राखी सही ॥ वहुरंग लसत वितान मुकुता दाम सहित मनोहरा ॥ नव सुमन माल सुगंध लोभे मंजु गुंजत मधुकरा ॥ ३ ॥ झुंड झुंड झूलत चलीं गजगामिनि वर नारि ॥ कुसुँभि चीर तनुसोहहिं भूषण विविध सँवारि ॥ पिकवयनी मृगलोचनी शारद शशि सम तुंड ॥ राम सुयश सब गावहि सुस्वर सुसारंग गुंड ॥ (छंद) ॥ सारंग गुंड मलार सोरठ सुहव सुघर निवाजहीं ॥ वहु भाँति तान तरंग सुनि गंधर्व किन्नर लाजहीं ॥ अति मचत छूटत कुटिल कच छवि अधिक सुंदरि पावहीं ॥ पट उड़त भूषण खसत हँसि हँसि अपर

सखी झुलावहीं॥४॥फिरि फिरि झूलहिं भामिनि अपनी अपनी वार॥ विबुध विमान थकित भये देखत चरित अपार ॥ बरषि सुमन हरषहिं उर वरणहिं हरिगुण गाथ ॥ पुनि पुनि प्रभुहि प्रशंसहिं जय जय जानकिनाथ ॥ (छंद) ॥ जय जानकीपति विशद कीरति सकल लोक मलापहा ॥ सुरवधू देहिं अशीश चिरजीवहु राम सुख संपति महा॥ पावस समय कछु अवध वर्णत सुनि अघौघ नशावहीं ॥ रघुवीरके गुण गण नवल नित दास तुलसी गावहीं ॥ ५ ॥ ॥ १९ ॥ ३११ ॥ (राग असावरी) ॥ साँझ समै रघुवीर पुरीकी शोभा आजु बनी ॥ ललित दीपमालिका विलोकहिं हितकारि अवध धनी ॥ फटिक भीत शिखरनपर राजति कंचन दीप अनी ॥ जनु अहिनाथ मिलन आयो मणि शोभित सहस फनी ॥ प्रतिमंदिर कलशनि पर भ्राजहिं मणि गण द्युति अपनी ॥ मानहुँ प्रगटि विपुल लोहित पुर पठइ दिये अवनी ॥ घर घर मंगलचार एक रस हरषित रंक गनी ॥ तुलसिदास कल कीरति गावहिं जो कलिमल शमनी ॥ २० ॥ ३१२ ॥ (राग गौरी) ॥ अवध नगर अति सुंदर वर सरिताके तीर ॥ नीति निपुण नर निवसहि धरम धुरंधर धीर ॥ सकल ऋतुन्ह सुखदायक तामहँ अधिक वसंत ॥ भूप मौलि मणि जहँ वस नृपति जानकीकंत ॥ वन उपवन नव किशलय कुसुमित नाना रंग॥ बोलत मधुर मुखर खग पिकवर गुंजत भृंग॥ समय विचारि कृपानिधि देखि द्वार अति भीर ॥ खेलहु मुदित नारि नर विहँसि कहेउ रघुवीर॥नगर नारि नर हरषित सब चले खेलन फागु ॥ देखि राम छवि अतुलित उमगत उर अनुरागु ॥ श्याम तमाल जलदतनु निर्मल पीत दुकूल ॥ अरुण कंज दल लोचन सदा दास अनुकूल ॥ शिर किरीट श्रुति कुंडल तिलक मनोहर भाल ॥ कुंचित केश कुटिल भ्रू चितवनि भगत कृपाल ॥ कल कपोल शुक नाशिक ललित अधर द्विज जोति ॥ अरुण कंजमहँ जनु युगपाँति रुचिर गज मोति ॥ वरदरग्रीव अमित बल बाहु सुपीन विशाल ॥कंकण हार मनोहर उरसि लसति वनमाल ॥

उर भृगु चरण विराजत द्विज प्रिय चरित पुनीत ॥ भगत हेतु नर विग्रह सुरवर गुण गोतीत॥ उदर त्रिरेख मनोहर सुंदर नाभि गँभीर ॥ हाटक घटित जटित मणि कटितट रट मंजीर॥ उरु अरु जानु पीन मृदु मरकत खंभ समान ॥ नुपुर मुनि मन मोहन करत सुकोमल गान ॥ अरुण वरण पदपंकज नख द्युति इंदु प्रकाश ॥ जनक सुताकर पल्लव ललित विपुल विलास ॥ कंज कुलिश ध्वज अंकुश रेख चरण शुभचारि ॥ जनु मन मीन हरण कहँ बनसी रची सँवारि ॥ अंग अंग प्रति अतुलित सुखमा वरणि न जाइ ॥ एहि सुख मगन होइ मन फिरि नहिं अनत लोभाइ ॥ खेलत फागु अवधपति अनुज सखा सब संग ॥ वरषि सुमन सुर निरखहिं शोभा अमित अनंग ॥ ताल मृदंग झाँझ डफ बाजहिं पणव निसान ॥ सुघर सरस सहनाइन्ह गावहिं समय समान॥ वीणा वेणु मधुर धुनि सुनि किन्नर गंधर्व ॥ निज गुण गरुअ हरुअ अति मानहिं मन तजि गर्व ॥ निज निज अटनि मनोहर गान करहिं पिक वैनि ॥ मनहुँ हिमालय शिखरनि लसहिं अमर मृग नैनि ॥ धवल धामते निकसहिं जहँ तहँ नारि वरूथ ॥ मानहुँ मथत पयोनिधि विपुल अपसरा यूथ ॥ किंशुक वरण सुअंशुक सुखमा सुखनि समेत ॥ जनु विधु निवहरहे करि दामिनि निकर निकेत ॥ कुंकुम सुरस अवीरनि भरहिं चतुर वर नारि ॥ ऋतु सुभाय सुठि शोभित देहिं विविध विधि गारि ॥ जो सुख योग याग जप तप तीरथते दूरि ॥ राम कृपाते सोइ सुख अवध गलिन्ह रह्यो पूरि ॥ खेलि वसंत कियो प्रभु मज्जन सरयूनीर॥ विविध भाँति याचक जन पाये भूषण चीर ॥ तुलसिदास तेहि अवसर माँगी भगति अनूप ॥ मृदु मुसुकाइ दीन्हि तव कृपादृष्टि रघु भूप ॥ २१ ॥ २१२ ॥

(राग वसंत)॥ खेलत वसंत राजाधिराज ॥ देखत नभ कौतुक सुर समाज ॥ सोहैं सखा अनुज रघुनाथ साथ ॥ झोलिन्ह अबीर पिचकारि हाथ ॥ बाजहिं मृदंग डफ ताल वेणु ॥ छिरकें सुगंध भरे मलय रेणु ॥ उत युवति यूथ जानकी संग ॥ भूषण पट समय

सरिस सुरंग ॥ लिये छरी बेत सोधें विभाग॥ चाचरि झूमक कहैं सरसराग ॥ नूपुर किंकिणि धुनि अति सोहाइ ॥ ललना गण जब जेहि धरइँ धाइ ॥ लोचन आँजहिं फगुआ मनाइ ॥ छाड़हिं नचाइ हाहा कराइ ॥ चढ़े खरनि विदूषक स्वांग साजि ॥ करैं कूटि निपट गइ लाज भाजि ॥ नर नारि परसपर गारिदेत ॥ सुनि हँसत राम भाइन समेत ॥ बरषत प्रसून वर विबुध वृंद ॥ जय जय दिनकर कुल कुमुद चंद ॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध वास ॥ गावत कल कीरति तुलसिदास ॥ २२ ॥ ३१४ ॥ (राग केदारा) ॥देखत अवधको आनंद ॥ हरषि बरषत सुमन दिन दिन देवतनिको वृंद ॥ नगर रचना सिखनको विधि तकत बहु विधिवंद ॥निपट लागत अगम ज्यों जलचरहि गमन सुछंद ॥ मुदित पुर लोगनि सराहत निरखि सुखमाकंद ॥जिन्हके सुअलि चख पियत राम मुखारविंद मरंद॥मध्य व्योम विलंबि चलत दिनेश उडुगण चंद॥राम पुरी विलोकि तुलसी मिटत सब दुख द्वंद ॥ २३ ॥ ३१५ ॥ (रागसोरठ)॥पालत राज यों राजाराम धरम धुरीन॥ सावधान सुजान सब दिन रह तनय लयलीन ॥श्वान खग यति न्याउ देख्यो आपु बैठि प्रवीन॥नीचुहति महिदेव बालक कियो मीचुविहीन ॥ भरत ज्यों अनुकूल जग निरुपाधि नेह नवीन ॥ सकल चाहत रामही ज्यों जल अगाधहि मीन ॥ गाइ राज समाज याचत दास तुलसी दीन ॥ लेहु निज करि देहु निज पदप्रेम पावन पीन ॥२४॥३१६॥ संकट सुकृत को सोचत जानि जिय रघुराउ॥सहस द्वादश पंचशत में कछुकहै अब आउ॥ भोग पुनि पितु आपुको सोउ किए बनै बनाउ ॥परिहरे बिनु जानकी नहिं और अनघ उपाउ ॥ पालिबे असिधार व्रत प्रिय प्रेम पाल सुभाउ ॥ होइ हित केहिभाँति नित सुविचारुनहिं चितचाउ ॥ निपट असमंजसहुँ विलसति मुख मनोहर ताउ ॥ परम धीर धुरीन हृदय कि हरप विसमय काउ ॥ अनुज सेवक सचिवहैं सब सुमति साधु सखाउ ॥ जानकोउ न जानकी बिनु अगम अलख लखाउ ॥ रामजोगवत सीय मनु प्रिय मनहि प्राण पियाउ ॥ परम

पावन प्रेम परमिति समुझि तुलसी गाउ ॥ २५ ॥ ३१७ ॥ राम विचारिकै राखी ठीक दै मन माहिं ॥ लोक वेद सनेह पालत पल कृपालहि जाहिं ॥ प्रियतमा पति देवता जिहि उमा रमा सिहाहिं॥ गुरुविनी सुकुमारि सियतियमणि समुझि सकुचाहिं ॥ मेरेही सुख सुखी सुख अपनो सपनेहूँ नाहिं ॥ गेहिनी गुण गेहनी गुण सुमिरि सोच समाहिं ॥ राम सीय सनेह वरणत अगम सुकवि सकाहिं॥ रामसीय रहस्य तुलसी कहत राम कृपाहिं ॥ २६ ॥ ३१८ ॥ चरचा चरनि सो चरची जानमणि रघुराइ ॥दूत मुख सुनि लोक धुनि घर घरनि बूझी आइ ॥ प्रिया निज अभिलाष रुचि कहि कहति सिय सकुचाइ ॥ तीय तनय समेत तापस पूजिहौं वन जाइ ॥ जानि करुणासिंधु भावी विवश सकल सहाइ ॥ धीर धरि रघुवीर भोरहि लिये लषण बोलाइ ॥ तात तुरतहि साजि स्यंदन सीय लेहु चढ़ाइ ॥ वालमीकि मुनीश आश्रम आइयहु पहुँचाइ ॥ भलेहि नाथ सुहाथ माथे राखि राम रजाइ ॥ चले तुलसी पालि सेवक धरम अवधि अघाइ ॥ २७ ॥ ३१९ ॥ आये लषण लै सौंपी सिय मुनीशहि आनि ॥ नाइ शिररहे पाइ आशिष जोरि पंकजपानि ॥ वालमीकि विलोकि व्याकुल लषण गरत गलानि ॥सर्वविद वूझत न विधिकी वामता पहिचानि ॥जानि जिय अनुमानही सिय सहस विधि सनमानि॥राम सद्गुण धाम परमिति भई कछुक मलानि ॥ दीनवंधु दयालु देवर देखि आति अकुलानि ॥ कहति वचन उदास तुलसीदास त्रिभुवन रानि ॥ २८ ॥ ३२० ॥ तौलोंवलि आपुहीकीवी विनय समुझि सुधारि ॥ जौलोंहों सिख लेउ वन ऋषि रीति वसि दिनचारि॥तापसी कहि कहा पठवति नृपनिको मनुहारि ॥ वहुरि तिहि विधि आइ कहिहै साधु कोउ हितकारि।लषण लाल कृपाल निपटहि डारिवी न विसारि॥पालवी सव तापसनि ज्यों राजधरम विचारि॥सुनत सीतावचन मोचत सकल लोचन वारि॥ वालमीकि न सके तुलसी सो सनेह सँभारि।२९।३२१।मुनि व्याकुल भये उतरु कछु कह्यो न जाइ॥जानिजिय विधि वाम दीन्हो मोहिं सरुप सजाइ ॥ कहत

यहि मेरी कठिनई लखि गई प्रीति लजाइ॥ आजु अवसर ऐसे हूँ जौं न चले प्राण बजाइ॥ इतहि सीय सनेह संकट उतहि राम रजाइ॥ मौनहीं गहि चरण गौने सिख सुआशिष पाइ॥ प्रेम निधि पितुको कहे मैं परुष वचन अघाइ॥पाप तेहि परिताप तुलसी उचित सहे सिराइ॥ ३०॥ ३२२॥ गौने मौनही बारहि बार परि परि पायँ॥ जात जनु रथ रचीकर लछिमन मगन पछितायँ॥ अशन बिनु बन बरम बिनु रन बच्यौ कठिन कुघायँ॥ दुसह सासति सहनको हनुमान ज्यायो जाय॥ हेतु हो सियहरणको तब अबहुँ भयो सहाय॥ होत हठि मोहि दाहिनो दिन दैवदारुण दाय॥ तज्यो तनु संग्राम जेहिं लगि गीधयशी जटाय॥ ताहि हों पहुँचाइ कानन चल्यों अवध सुभाय॥ घोर हृदय कठोर करतब सृज्योहों विधिबाय॥ दास तुलसी जानि राख्यो कृपानिधि रघुराय॥ ३१॥ ॥३२३॥पुत्रि न सोचिये आइहों जनक गृह जिय जानि॥कालिही कल्याण कौतुक कुशल तव कल्याणि।राजऋपि पितु श्वशुर प्रभु पति तू सुमंगल खानि॥ ऐसेहूँ थल बामता बड़ि बाम विधिकी बानि॥ बोलि मुनि कन्या सिखाईं प्रीति गति पहिचानि॥ आलसिन्ह की देवसरिसिय सेययहु मन मानि॥ न्हाइ प्रातहि पूजिबो बट विटप अभिमत दानि॥ सुवन लाहु उछाहु दिन दिन देवि अनहित हानि॥ पाप ताप बिमोचनी कहि कथा सरस पुरानि॥ बालमीकि प्रबोधि तुलसी गई गरुइ गलानि॥ ३२॥ ३२४॥ जबते जानकी रही रुचिर आश्रम आइ॥ गगन जल थल विमल तबते सकल मंगलदाइ॥ निरस भूरुह सरस फूलत फलत अति अधिकाइ॥ कंद मूल अनेक अंकुर स्वाद सुधा लजाइ॥ मलय मरुत मराल मधुकर मोर पिक समुदाइ॥ मुदित मन मृग विहग विहरत विषम बैर बिहाइ॥ रहत रवि अनुकूल दिन शशि रजनि सजनि सुहाइ॥ सीय सुनि सादर सराहति सखिन्ह भलो मनाइ॥ मोद बिपिन विनोद चितवत लेत चितहि चोराइ॥ राम बिनु सिय सुखद बन तुलसी कहै किमि गाइ॥ ३३॥ ३२५॥ शुभ दिन शुभ घरी

नीको नखत लगन सुहाइ ॥ पूत जाये जानकी द्वै मुनिबधू उ-
ठि गाइ ॥ हरषि वरषत सुमन सुर गहगहे बधाये बजाइ ॥ भुवन
कानन आश्रमनि रहे मोद मंगल छाइ ॥ तेहि निशा तहँ शत्रुसूद-
न रहे विधि वश आइ ॥ माँगि मुनिसों विदा गवने भोर सोसुख
पाइ ॥ मातु मौसी बहिनिहूँते सासुते अधिकाइ ॥ करहिं तापस
तीय तनया सीयहित चितलाइ ॥ किये विधि व्यवहार मुनि वर
विप्रवृंद बोलाइ ॥ कहत सब ऋषि कृपा को फल भयो आजु अ-
घाइ॥सुरुष ऋषिसुख सुतनिको सिय सुखद सकल सहाइ॥शूल रा-
म सनेह की तुलसी न जियते जाइ ॥ ३४ ॥ ३२६॥ मुनिवर करि
छठी कीन्ही बारहें की रीति ॥ वन वसन पहिराइ तापस तोवि पोषे
प्रीति ॥ नामकरण सुअन्नप्रासन वेदबाँधी नीति ॥ समय सब ऋ-
षिराज करत समाज साज सप्रीति ॥ बाल लालहिं कहहिं करिहैं
राज सब जगजीति ॥ राम सिय सुत गुरु अनुग्रह उचित अचल प्र-
तीति ॥ निरखि बाल विनोद तुलसी जात वासर वीति ॥ पिय च-
रित सिय चित चितेरो लिखत नित हित भीति ॥ ३५ ॥ ३२७॥
बालक सीयके बिहरत मुदित मन दोउ भाइ ॥ नाम लव कुश रा-
म सिय अनुहरत सुंदरताइ ॥ देत मुनि मुनि शिशु खेलौना तेलै
धरत दुराइ ॥ खेल खेलत नृप शिशुन्हके बालवृंद बोलाइ ॥ भूप
भूषण वसन बाहन राज साज सजाइ ॥ वरम चर्म कृपाण शर धनु
तूण लेत वनाइ ॥ दुखी सिय पिय विरह तुलसी सुखी सुत सुख पा-
इ ॥ आँच पय उफनात सींचत सलिल ज्यों सकुचाइ ॥ ३६ ॥
॥३२८॥ कैकयी जौलों जियत रही ॥ तौलों वात मातुसों मुहँ भरि
भरत न भूलि कही ॥ मानी राम अधिक जननीते जननिहु ग-
सन गही ॥ सीय लषण रिपुदवन राम रुख लखि सबकी निबही ॥
लोक वेद मरजाद दोष गुण गति चित चखन चही ॥ तुलसी भरत
समुझि सुनि राखी राम सनेह सही ॥ ३७ ॥ ३२९ ॥ (राग रा-
मकली) ॥ रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर गावहिं सकल अवधवा-
सी ॥ अतिउदार अवतार मनुज वपु धरे ब्रह्म अज अविनासी ॥१॥

प्रथम ताडका हति सुबाहु वधि मखराख्यो द्विज हितकारी ॥ देखि दुखी अति शिला शापवश रघुपति विप्रनारि तारी ॥ सब भूपनको गरब हरचो हरि भंज्यो शंभु चाप भारी ॥ जनक सुता समेत आवत गृह परशुराम अति मदहारी ॥ तात वचन तजि राज काज सुर चित्रकूट मुनिवेष धरचो ॥ एक नयन कीन्हो सुरपतिसुत वधि विराध ऋषि शोक हरचो ॥ पंचवटी पावन राघव करि शूर्पणखा कुरूप कीन्ही ॥ खर दूषण संहारि कपट मृग गीधराज कहँ गति दीन्ही ॥ हति कवंध सुग्रीव सखा करि वेधे ताल वालि मारचो ॥ वानर रीछ सहाय अनुज सँग सिंधु बाँधि यश विस्तारचो ॥ सकुल पुत्र दल सहित दशानन मारि अखिल सुर दुख टारचो ॥ परमसाधु जिय जानि विभीषण लंकापुरी तिलक सारचो ॥ सीता अरु लछिमन सँग लीन्हे औरहु जिते दास आए ॥ नगर निकट विमान आये सब नर नारी देखन धाए ॥ शिव विरंचि शुक नारदादि मुनि स्तुति करत विमल बानी ॥ चौदह भुवन चराचर हरषित आये राम राजधानी ॥ मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम अनंद भरे ॥ दुसह वियोग जनित दारुण दुख रामचरण देखत विसरे ॥ वेद पुराण विचारि लगन शुभ महाराज अभिषेक कियो ॥ तुलसिदास जिय जानि सुअवसर भगति दान तब माँगि लियो ॥ ३८ ॥ ३३० ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां उत्तरकाण्डः समाप्तः ॥

इति गीतावली समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना

बंबई.

श्रीराधाकृष्णाभ्यांनमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

श्रीकृष्ण गीतावली ।

जिसमें

श्रीकृष्णचरित्र परम पवित्र अनेक प्रकारके मनोहर मनहरन राग रागिनियोंमें कलिमल विनाशार्थ वर्णित है ।

जिसको

प्रथमवार

खेमराज-श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें छापकर

प्रकट किया ।

आषाढ संवत् १९५१
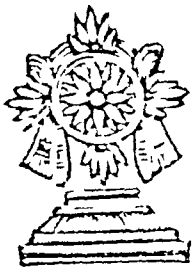
श्रीगणेशायनमः ।

श्रीजानकीवल्लभोविजयते ॥

श्रीकृष्णगीतावली ॥

राग विलावल ॥

माता लै उछंग गोविंदमुख वार वार निरखै । पुलकित तनु आनंदघन छन छन मन हरषै । पूछत तोतरात वात मातहि यदुराई । अतिशय सुख जाते तोहिं मोहिं कहु समुझाई । देखत तव बदन कमल मन अनंद होई । कहै कौन रसनमौन जानै कोइ कोई । सुंदर मुख मोहिं देखाउ इच्छा अति मोरे।मम समान पुण्यपुंज बालक नहिं तोरे । तुलसी प्रभु प्रेमवश्य मनुजरूप धारी । बालकेलि लीलारस ब्रजजन हितकारी ॥ १ ॥(राग ललित)॥ छोटी मोटी मीसी रोटी चिकनी चुपरिकै तू देरी मैया लै कन्हैया सो कब अबहिं तात॥सिगरियैहौंहीं खैहौं बलदाऊ को न देहौं सो क्यौं भटू तेरो कहा कहि इत उत जात । बालबोलि डहकि विरावत चरित लखि गोपीगण महरि मुदित पुलकित गात॥नूपुरकी धुनि किंकिणीकी कलरव सुनि कूदि कूदि किलकि किलकि ठाढ़े ठाढ़े खात।तनिया ललित कटि विचित्र टेपारो शीश मुनि मन हरत वचन कहै तोतरात। तुलसी निरखि हरषत वरषत फूल भूरिभागी ब्रजवासी विबुध सिद्धसिहात ॥ २ ॥ ॥ (राग आसावरी) ॥ तोहिं श्यामकी शपथ यशोदा आइदेखु गृह मेरे॥ जैसी हाल करी यहि ढोटा छोटे निपट अनेरे।गोरसहानि सहौं न कहौं कछु यह ब्रजवास बसेरे।दिनप्रति भाजन कौन वेसाहै घरनिधि काहूकेरे । किए निहोरो हँसत खिझेते डाटत नयन तरेरे । अबहींते ए सीख कहाधौं चरित ललित सुत तेरे । बैठे सकुचि साधु भयो चाहत मातुबदन तन हेरे । तुलसिदास प्रभु कहौं ते बातैं जे करि भजे सवेरे ॥ ३ ॥ मोकहँ झूठेहु दोष लगावहिं । मैया इन्हहिं बानि परगृहकी नाना युगुति बनावहिं । इन्हके लिये खेलिबो छाँ-

ड़्यौ तऊ न उबरन पावहिं । भाजन फोरि बोरिकर गोरस देन उर-
हनो आवहिं । कबहुँक बाल रोवाइ पाणि गहि मिसकरि उठि उठि
धावहिं । करहिं आपु शिर धरहिं आनके वचन विरंचि हरावहिं॥मेरी
टव बूझि हलधरको संतत संग खेलावहिं । जे अन्याउ करहिं काहू-
को ते शिशु मोहिं न भावहिं । सुनि सुनि वचन चातुरी ग्वालिनि
हँसि हँसि वदन दुरावहिं । बाल गोपाल केलि कलकीरति तुलसि-
दास मुनि गावहिं ॥ ४ ॥ कबहूँ जात पराये धामहिं ॥ खेलतही
देखों निज आँगन सदा सहित बलरामहिं । मेरे कहा थाकु गोरस
को नवनिधि मंदिर यामहिं । ठाली ग्वालि ओरहनेके मिस आइ
कहि बेकामहिं । हों बलिजाउँ जाहु कितहूँजनि मातु सिखावति
श्यामहिं । विनुकारण हठि दोष लगावति तात गये गृहतामहिं ।
हरिमुख निरखि परुषबानी सुनि अधिक अधिक अभिरामहिं ।
तुलसिदास प्रभु देख्योइ चाहति श्रीउरललित ललाम-
हिं ॥ ५ ॥ अब सब साँची कान्ह तिहारी । जौं हम तजे पाइ
गौं मोहन गृह आए दैगारी । सुसुकि सभीत सकुचि रूखेमुख बा-
तैं सकल सवाँरी । साधुजानि हँसि हृदय लगाए परमप्रीति मह-
तारी । कोटिजतन करि शपथ कहैं हम मानै कौन हमारी ॥ तुमहिं
विलोकि आनकी ऐसी क्यों कहिहै वरनारी । जैसे हो तैसे सुखदा-
यक व्रजनायक बलिहारी । तुलसिदास प्रभु मुखछवि निरखत मन
सब जुगुति बिसारी ॥६॥ (राग केदारा) ॥ महरि तिहारे पाँयपरौं
अपनो व्रज लीजै। सहि देख्यो तुम्हसों कह्यो अब नाकहि आई कौ-
न दिनहु दिन छीजै।ग्वालिनि तौ गोरस सुखी ताविनु क्यों जीजै॥
सुत समेत पाउँ धारिये आपुहि भवन मेरे देखिये जो न पतीजै ।
अतिअनीति नीकी नहीं अजहूं सिख दीजै । तुलसिदास प्रभुसों कहैं
उरलाइ यशोमति ऐसी बलि कबहूं नहिं कीजै ॥ ७ ॥ अबहिं ओर-
हनो देगई बहुरो फिरिआई । सुनु मैया तेरीसौं करौं याकी टेव ल-
रनकी सकुच बेंचिसी खाई ॥ या व्रजमें लरिका घने होंहि अन्याई ।
मुँहलाये मूड़हि चढ़ी अंतहु अहिरिनि तू सूधी करि पाई। सुनि सु-

तकी अतिचातुरी यशुमति मुसुकाई। तुलसिदास ग्वालिनि ठगी आयो न उतर कछु कान्ह ठगौरी लाई ॥ ८॥ (राग गौरी) ॥ अब ब्रजवास महरि किमि कीबो ॥ दूध दहिउ माखन ढारतहैं हुँतो पोसात दान दिन दीबो। अबतो कठिन कान्हके करतब तुम्हहो हँसति कहा काहि लीबो। लीजै गाँउ नाउँले रावरो है जग ठाउँ कहूँ है जीबो। ग्वालिवचन सुनि कहति यशोमति भलो न भूमि पर बादर छीबो। दैअहि लागि कहो तुलसी प्रभु अजहुँ न तजत पयोधर पीबो॥ ९ ॥ जानीहै ग्वालि परी फिरि फीके॥मातुकाज लागी लखि डाटत है बाधनो दियो घरनीके। अब कहिदेउँ कहति किन यों कहि माँगत दहिउ धरयो जो है छीके॥तुलसी प्रभुमुख निरखि रही चकि रह्यो न सयानप तन मन तीके ॥ १० ॥ जौलों हौं कान्हरहों गुणगोए। तौलों तुम्हहिं पत्यात लोग सब सुसुकि सभीत साँचुसो रोए। हो भले नग फग परे गढीवे अब ए गढत महरि मुख जोए। चुपकि न रहत कह्यो कछु चाहत ह्वैहै कीच कोठिला धोए। गरजति कहा तरज जिन्ह तरजत वरजत सयन नयनके कोए ॥ तुलसी मुदित मातु सुत गति लखि विथकी है ग्वालि मैन मन मोए॥ ११॥ भूलि न जात हों काहूके काऊ। साखि सखा सब सुवल सुदामा देखिधौं बूझि बोलि बलदाऊयह तो मोहिं खिझाइ कोटि विधि उलटि विवादन आइ अगाऊ। याहि कहा मैया मुँह लावति गनति कि एक लँगरि झगराऊ। कहति परस्पर वचन यशोमति लखि नहिं सकति कपट सतिभाऊ। तुलसिदास ग्वालिनि अति नागरि नट नागरमणिनंदललाऊ॥ १२॥ छाँड़ो मेरे ललित ललन लरिकाई॥ ऐहैं सुत देखुवार कालि तेरे बबैं व्याहकी बात चलाई। डरिहैं सासु ससुर चोरी सुनि हँसिहै नई दुलहिया सुहाई। उबटो न्हाहु गुहों चोटिया बलि देखि भलो वर करिहिं बड़ाई। मातु कह्यो करि करत बोलिदै भइ बडि बार कालितो न आई। जब सोइबो तात यों हौंकहि नयन मीचि रहे पौढ़ि कन्हाई। उठिकह्यो भोरभयो झँगुलीदै मुदित महरि लखि आतुरताई। बिहँसीग्वालि जानि तुलसी

प्रभु सकुचि लगे जननी उर धाई ॥ १३ ॥ (राग केदारा) ॥ हरि-को ललितवदननिहारु । निपटहिँ डाटति निठुर जौं लकुट करते डारु॥मंजु अंजन सहित जल कण चुवत लोचनचारु । श्यामसारस मग मनो शशि स्रवत सुधा शृंगारु । सुभग उर दधि बुंद सुंदर लखि अपनपौ वारु । मनहुँ मरकत मृदु शिखर पर लसत विशद तुषारु । कान्हहू परसतर भौहैं महरि मनहिं विचारु । दासतुलसी रहति क्यों रिस निरखि नंदकुमारु ॥ १४ ॥ लेत भरि भरि नीर कान्ह कमलनैन । फरक अधर डर निरखि लकुट कर कहि न सकत कछु बैन । दुसह दावरी छोरि थोरी खोरि कहा कीन्हो चीन्होरी सुभाय तेरो आजु लगे माई गैन । तुलसिदास नंदललन ललित लखि रिस क्यों रहति उर ऐन ॥ १५ ॥ हाहारी महरि वारो कहा रिसवश भई कोखिके जाए सो रोषु केतो वड़ो कियोहै । ढीलीकरि दावरी बावरी साँवरेह देखि सकुचि सहमि शिशु भारी भय भियोहै । दूध दधि माखन भी लाखन गोधन धन जबते जनम हलधर हरि लियोहै । खायो कै खवायो कै बिगार्‌यो ढार्‌यो लरिकारी ऐसे सुतपर कोहु कैसो तेरो हियोहै।सुनिकहैं सुकृती न नंद यशोमति सम न भयो न भावी नाहिं विद्यमान वियोहै।कौन जानै कौन तप कौने योग जाग जप कान्हसो सुवन तो को महादेव दियोहै । इन्हहींके आएते वधाये व्रज नित नये नांदत बाढ़त सब सब सुख जियोहै । नंदलाल बालजस संत सुर सरवस गाइसो अमिय रस तुलसिहु पियोहै ॥ १६ ॥ ललित लाल निहारि महरि मन विचारि डारिदे घर वसी लकुट वेगि करते।कछु न कहि सकत सुसुकत सकुचत डरहूँको डर कान्ह डरै तेरे डरते॥कह्यो मेरो मानि हित जानि तू सयानी वड़ी वड़भाग्य पायो पूत विधि हरि हरते॥ताहि बांधिवेकों धाई ग्वालिनी गोरस हाँई लै लै आई बावरी दावरी घर घर ते ॥ कुलगुरु तियके वचन कमनीय सुनि सुधिभए वचन जे सुनि मुनिवरते। छोरि लिये लाये उर बरषै सुमन सुर मंगलहै तिहूँ पुर हरि हलधर ते । आनंद वधावनो मुदित गोप गोपीगण आजु परी कुश-

प्रभु सकुचि लगे जननी उर धाई ॥ १३ ॥ (राग केदारा) ॥ हरि-को ललितवदननिहारु । निपटहिँ डाटति निठुर जौं लकुट करते डारु॥मंजु अंजन सहित जल कण चुवत लोचनचारु । श्यामसारस मग मनो शशि स्रवत सुधा शृंगारु । सुभग उर दधि बुंद सुंद-र लखि अपनपौ वारु । मनहुँ मरकत मृदु शिखर पर लसत विशद तुषारु । कान्हहू परसतर भौहैं महरि मनहिं विचारु । दासतुलसी रहति क्यों रिस निरखि नंदकुमारु ॥ १४ ॥ लेत भ-रि भरि नीर कान्ह कमलनैन । फरक अधर डर निरखि लकुट कर कहि न सकत कछु बैन । दुसह दावरी छोरि थोरी खोरि कहा कीन्हो चीन्होरी सुभाय तेरो आजु लगे माई गैन । तुलसिदास नं-दललन ललित लखि रिस क्यों रहति उर ऐन ॥ १५ ॥ हाहारी महरि वारो कहा रिसवश भई कोखिके जाए सो रोषु केतो बड़ो कियोहै । ढीलीकरि दावरी बावरी साँवरेह देखि सकुचि सहमि शि-शु भारी भय भियोहै । दूध दधि माखन भो लाखन गोधन धन जबते जनम हलधर हरि लियोहै । खायो कै खवायो कै बिगार्यो ढार्यो लरिकारी ऐसे सुतपर कोहु कैसो तेरो हियोहै।सुनिकहैं सुकृ-ती न नंद यशोमति सम न भयो न भावी नाहिं विद्यमान वियोहै।कौन जानै कौन तप कौने योग जाग जप कान्हसो सुवन तो को महादेव दि-योहै । इन्हहींके आएते बधाये व्रज नित नये नांदत बाढ़त सब सब सुख जियोहै । नंदलाल बालजस संत सुर सरवस गाइसो अमिय रस तुलसिहु पियोहै ॥ १६ ॥ ललित लाल निहारि महरि मन विचारि डारिदे वर वसी लकुट बेगि करते।कछु न कहि सकत सुसुकत सकु-चत डरहूँको डर कान्ह डरै तेरे डरते।कह्यौ मेरो मानि हित जानि तू सयानी बड़ी बड़भाग्य पायो पूत विधि हरि हरते।ताहि बांधिवेको धाई ग्वालिनी गोरस हाँई लै लै आई बावरी दावरी वर वर ते॥ कु-लगुरु तियके वचन कमनीय सुनि सुधिभए वचन जे सुनि मुनिवरते। छोरि लिये लाये उर वरषै सुमन सुर मंगलहै तिहूँ पुर हरि हलधर ते । आनंद बधावनो मुदित गोप गोपीगण आजु परी कुश-

ल कठिन करवरते । तुलसी जे तोरे तरु किए देव दिये वरु कै न लह्यो कौन फरु देव दामोदरते ॥१७॥(राग मल्लार) ॥ ब्रजपर वन घमण्ड करि आये॥अति अपमान विचारि आपनो कोपि सुरेश पठाए। दमकति दुसह दशहुदिशि दामिनि भयो तम गगन गँभीर। गरजत घोर वारिधर धावत प्रेरित प्रवल समीर ॥ वार वार पविपात उपल घन वरपत बूंद विशाल । सीत सभीत पुकारत आरत गो गोसुत गोपी ग्वाल। राखहु राम कान्ह यहि अवसर दुसह दशा भइ आइ ॥ नंद विरोध कियो सुरपतिसों सो तुम्हरो वलपाइ। सुनि हँसिउठ्यो नंदको नाहरु लियो कर कुधर उठाइ॥ तुलसिदास मघवा अपने सों करिगयो गर्व गँवाइ ॥ १८ ॥ (राग गौरी) ॥ टेरि कान्ह गोवर्धन चढ़ि गैया ॥ मथि मथि पियो वारि चारिक में भूषण ज्योति अघाति न धैया॥शैल शिखर चढ़ि चितै चकित चित अति हित वचन कह्यो वलभैया । बाँधि लकुट पट फेरि बोलाई सुनि कलवेणु धेनु धुकि धैया। बलदाऊ देखियत दूरिते आवति छाक पठाई मेरी मैया॥ किलकि सखा सव नटत मोर ज्यों कूदत कपि कुरंगकी नैया । खेलत खात परस्पर डहँकत छीनत कहा करत रोगदैया। तुलसी बालकेलि सुख निरखत वरपत सुमन सहित सुरसैया ॥ १९ ॥ (राग नट) ॥ गावत गोपाललाल नीके राग नटहैं। चलि री आली देखन लोयन लाहु पेखन ठाढ़े सुरतरु तर तटिनिकि तटहैं। मोरचंदा चारु शिर मंजु गुंजा पुंज धरे बनि वनधातु तन ओढ़े पीतपटहैं। मुरली तान तरंग मोहे कुरंग विहंगं जोहैं मूरति त्रिभंग निपट निकट हैं। अंवर अमर हरपत वरपत फूल सनेह सिथिल गोप गाइन्हके ठटहैं। तुलसी प्रभु निहारि जहाँ तहाँ व्रजनारि ठगी ठाढ़ी मगलिये रीते भरे घटहैं ॥ २० ॥ (राग विलावल) ॥ देखु सखी हरिवदन इंदु पर ॥ चिक्कन कुटिल अलक अवली छवि कहि न जाइ शोभा अनूप वर । बालभुअंगिनि निकर मनहुँ मिलि रही घेरि रस जानि सुधाकर । तजि न सकहिं नहिं करहिं पान कहो कारन कौन विचारि डरहिं डर । अरुण वनज

लोचन कपोल शुभ श्रुति मंडित कुंडल अतिसुंदर । मनहु सिंधु निज सुतहि मनावन पठए युगुल बसीठ वारिचर॥नँदनंदन मुखकी सुंदरता कहि न सकत श्रुति शेष उमावर । तुलसिदास त्रैलोक्य विमोहन रूप कपट नर त्रिविध शूलहर ॥ २१ ॥ आजु उनींदे आए मुरारी ॥ आलसवंत सुभग लोचन सखि छिन मूँदत छिन देत उघारी । मनहु इंदु पर खंजरीट दोउ कछुक अरुण विधि रचे सँवारी । कुटिल अलक जनु मार फंद कर गहे सजग ह्वै रह्यो संभारी । मनहुँ उड़न चाहत अति चंचल पलक पंखछिन देत पसारी ॥ नासिक कीर वचन पिक सुनिकरि संगति मनु गुनि रहति विचारी । रुचिर कपोल चारु कुंडल बर भ्रुकुटि शरासन की अनुहारी । परमचपल तेहि त्रास मनहु खग प्रगटत दुरत न मानत हारी । यदुपति मुख छबि कलप कोटि लगि कहि न जाइ जाके मुखचारी । तुलसिदास जेहि निरखि ग्वालिनी भजीं तात पति तनय बिसारी ॥ २२ ॥ (राग गौरी) ॥ गोपाल गोकुल वल्लवी प्रिय गोप गोसुत वल्लभं । चरणारविंद अहं भजे भजनीय सुर मुनि दुर्लभं । नवश्याम काम अनेक छबि लोकाभिराम मनोहरं । किंजल्क वसन किशोर मूरति भूरि गुण करुणाकरं ॥ शिर केकिपक्ष विलोल कुंडल अरुण वनरुह लोचनं । गुंजावतंश विचित्र सब अंग धातु भवभय मोचनं । कच कुटिल सुंदर तिलक भ्रू राका मयंक समाननं । अपहरण तुलसीदास त्रास विहार वृंदाकाननं ॥ २३ ॥ (राग विलावल) ॥ बिछुरत श्रीव्रजराज आजु इन नयनकी परतीति गई॥उड़ि न लगे हरि संग सहज तजि ह्वै न गए सखि श्याममई। रूपरसिक लालची कहावत सो करनी कछु तो न भई ।साँचेहु कूर कुटिल सित मेचक वृथा मीनछबि छीनिलई । अब काहे सोचत मोचत जलसमय गए चित शूल नई । तुलसिदास तब अजहुँसे भए जड जब पलकनि हठि दगादई ॥२४॥(राग कान्हरा)॥ नहिं कछु दोप श्यामको माई । जो दुख मैं पायो सुन सजनी सोतो मेंच मनकी चतुराई॥निजहित लागि तबहिं ए वंचक सबअंगनि व-

सि प्रीति बढ़ाई।लियो जो सकल सुख हारि अंग संगको जहँ जीहि विधि तहँ सोइ बनाई।अब नंदलाल गवन सुनि मधुवन तनहिं तजत नहिं बार लगाई । रुचिर रूप जल मोर शेश है मिलि न फिरनकी बात चलाई । एहि शरीर वसि सखि वा सठकहु कहि न जाइ जो निधि फवि आई । तदपि कछू उपकार न कीन्हो निज मिलन्यो नहिं मोहि सिखाई । आपु मिल्यो ओहि भाँति जाति ताजि तन मिलयो जल पयकी नाई । है मराल आयो सुफलकसुत लैगयो क्षीर नीर विलगाई । मन हौं तजी कान्ह हौ त्यागी प्राणो चलि हैं परमिति पाई । तुलसिदास रीतेहु तनु ऊपर नयनन की ममता अधिकाई ॥ २५ ॥ (राग धनाश्री) ॥ करीहै हरि बालक की सी केलि । हरष न रचत विषाद न विचरत डगरि चले हँसिखेलि। वई बनाइ वारि वृंदावन प्रीति सजीवनि वेलि । सींचि सनेहसुधा खनि काढ़ी लोक वेद पर हेलि । तृण ज्यों तजी पालितनु ज्यों हम विधि बासव वल पेलि । एतेहुँ पर भावत तुलसी प्रभु गए मोहनी मेलि ॥ २६ ॥ आली अब कहो निज नेह निहारि । समुझे सहे हमारो है हित विधि वामता विचारि॥सत्यसनेह शील शोभा सुख सब गुण उदधि अवारि॥देख्यो सुन्यो न कबहुँ काहु कहुँ मीन वियोगी वारि । कहियत काकु कूबरीहूँको सो कुवाणि वश नारि । विष ते विषम विनय अनहित की सुधासनेही गारि । मन फेरियत कुतर्क कोटि करि कुबल भरोसे भारि ॥ तुलसी जग दूजो न देखियत कान्हकुवँर अनुहारि ॥ २७ ॥ लागिये रहति नयननि आगेते न टरति मोहनमूरति॥ नीलनलिन श्याम शोभा अगणित काम पावन हृदय जेहि उर फूरति॥शारद अमित शेष नाहिं कहि सकत अंग अंग सूरति॥तुलसिदास बड़े भाग्य मन लागेहुते सबसुख पूरति ॥२८॥ जबते ब्रजतजिगए कन्हाई।तबते विरह रवि उदित एकरस सखि विछुरनि वृषपाई॥घटत न तेज चलत नाहिंन रथ रह्यो उर नभ पर छाई॥इंद्रिय रूपराशि सोचहिं सुठि सुधि सबहीकी बिसराई।भए विशोक शोक कोक कोकनद भ्रम भ्रमरनि सुखदाई। चित चकोर मनमोर

कुमुद मुद सकल विकल अधिकाई॥ तनु तडाग बलवारि सूखन लाग्यो परि कुरूपता काई॥ प्राणमीन दिनदीन दूबरे दशा दुसह अब आई॥ तुलसीदास मनोरथ मनमृग मरत जहाँ तहँ धाई। रामश्याम सावन भादौं विनु जियकी जरनि न जाई॥ २९॥ शशिते शीतल मोक लागै माइरी तरनि॥ याके उए बरति अधिक अँग अँग दावाके उए मिटति रजनि जनित जरनि॥ सब विपरीत भए माधौ विनु हित जो करत अनहित सतकी करनि॥ तुलसिदास श्याम सुंदर विरहकी दुसह दशा सो मोपै परति नहीं बरनि॥ ३०॥ संतत दुखद सखी रजनीकर॥ स्वारथरत तब अबहुँ एकरस मोको अब कबहुँ न भयो तापहर॥ निज अंशिक सुख लागि चतुर अति कीन्हींहै प्रथम निशा शुभ सुंदर॥ अब विनु मन तन दहत दयातजि राखत रवि है नयन वारिधर॥ यद्यपिहै दारुण बड़वानल राख्योहै जलधि गँभीर धीरतर॥ ताहूते परम कठिन जान्यो शशि तज्यो पिता तब भयो व्योम चर॥ सकल विकार कोस विरहिनि रिपु काहेते याहि सराहत सुर नर॥ तुलसिदास त्रैलोक्य मान्य भयो कारण इहै गह्यौ गिरिजावर॥ ३१॥ (राग मलार)॥ कोउ सखि नई चाह सुनि आई॥ यह व्रजभूमि सकल सुरपति सों मदन मिलिक करिपाई॥ बन धावन बगपाँति पटोसिर बैरख तडित सोहाई॥ बोलत पिक नकीब गरजनि मिस मानहुँ फिरति दोहाई॥ चातक मोर चकोर मधुप शुक सुमन समीर सहाई॥ चाहत कियो बास वृंदावन विधिसों कछु न बसाई॥ सींव न चाँपि सकी काहू तब जब हुते राम कन्हाई॥ अब तुलसी गिरिधर विनु गोकुल कौनु करिहि ठकुराई॥ ३२॥ ॥ (राग सोरठ)॥ ऊधो या व्रजकी दशा विचारो॥ तापाछे यह सिद्धि आपनी योगकथा विस्तारो॥ जाकारन पठए तुव माधव सो सोचहु मनमाहीं॥ कितिक बीच विरह परमारथ जानतहौ किधौं नाहीं॥ परमचतुर निजदास श्यामके संतत निकट रहतहौ॥ जलबूडत अवलंब फेन को फिरि फिरि कहा कहतहौ॥ वह अतिललित मनोहर आनन कौने जतन विसारों। योग जुगुति अरु मुकुति विविध विधि

वा मुरलीपर वारों।जेहि उर वसत श्याम सुंदरवन तेहि निर्गुण कैसे आवै। तुलसिदास सो भजन वहावो जाहि दूसरोभावे ॥ ३३ ॥ मधुकर कहहु कहन जो पारो ॥ नाहिंन वलि अपराध रावरो सकुचि साध जनि मारो ॥ नहिं तुम ब्रजवासि नंदलालको वालविनोद निहारो ॥ नाहिंन रासरसिक रसचाख्यो ताते डेलसो डारो॥ तुलसी जो न गए प्रीतमसँग प्राणत्यागि तनु न्यारो॥तौ सुनिवो देखिवो वहुत अव कहा कर्म सों चारो ॥ ३४ ॥ ऊधोजू कह्यो तिहारोइ कीवो।नीके जियकी जानि अपनपो समुझि सिखावन दीवो। श्यामवियोगी ब्रजके लोगनि योग योग्य जो जानो। तौ सकोच परिहरि पालागौं परमारथहि वखानो। गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सव रहत रूप अनुरागे। दीन मलीन छीन तनुडोलत मीन मजाँसो लागे ॥ तुलसी है सनेह दुखदायक नहिं जानत ऐसो कोहै। तऊ न होत कान्हको सो मन सवै साहिवहि सोहै ॥ ३५ ॥ (रागविलावल)॥ सो कहो मधुप जो मोहन कहि पठई। तुम सकुचत हौंहीं नीके जानति नँदनंदन हो निपट करी शठई। हुतो न साँचो सनेह मिट्यो मनको सँदेह हरि परे उघरि संदेशहु ठठई। तुलसिदास को न आश मिलनकी कहि गए सो तौ कछु एकौ न चितठई ॥ ३६ ॥ मेरे जान और कछु न मन गुनिए। कूवरीरवनकान्ह कही जो मधुप सों सोई सिख सजनी सुचित दै सुनिए।काहेको करति रोष देहै धौं कौने को दोष निज नयननिको वयो सव लुनिए। दारु शरीर कीट पहिले सुख सुमिरि सुमिरि वासर निशि घुनिये॥ येसनेह शुचि अधिक अधिक रुचि वरज्यो न करत कितो शिर धुनिये॥तुलसिदास अव नंदसुवनहित विपन वियोग अनल तनु हुनिये ॥ ३७ ॥ भली कही आली हमहुँ पहिचाने। हरि निर्गुण निर्लेप निरापने निपट निठुर निज काज सयाने। ब्रजको विरह अरु संग महरको कुवरिहि वरत न नेकु लजाने। समुझि सो प्रीति कि रीति श्यामकी सोइ वावरि जो परेपो उर आने। सुनत न सिख ललची विलोचन एतेहु पर रुचि रूप लोभाने ॥ तुलसिदास इहै अधिक कान्हपहि नीकेइ लागत मन रहत समाने ॥ ३८ ॥ (राग मलार)॥ जोपै अलि अंत देह करिवेहो॥तौ अतुलित अहीर अवलनिको हठि न हियो हरि-

वेहो।जो प्रपंच परिणाम प्रेम फिरि अनुचित आचरिवेहो।तौ मथुरहि महामहिमा लहि सकल ढरनि ढरिवेहो।दै कुवरिहि रूप व्रजसुधिभ ये लौकिक डर डरिवेहो। ज्ञान विराग काल कृत करतव हमरेहि शिर धरिवेहो। उन्हहिं राग रवि नीरद जल ज्यों प्रभु परमित परिवेहो। हमहुँ निठुर निरुपाधि नेहनिधि निज भुजवल तरिवेहो। भलो भयो सब भाँति हमारो एकबार मरिवेहो॥ तुलसी कान्हविरह नित नवजर जरि जीवन भरिवेहो॥ ३९॥ ऊधो यह ह्यां न कछू कहिवेही॥ ज्ञानगिरा कूवरीरवनकी सुनि विचारि गहिवेही॥ पाइ रजाइ नाइ शिर गृहहै गति परमिति लहिवेही। माति मटुकी मृगजल भरि घृतहित मनहीं मन महिवेही॥ गाढ़े भली उखारे अनुचित वनिआये वहिवेही। तुलसी प्रभुहिं तुम्हहिं हमहूँ हिय शासति सी सहिवेही॥ ४०॥ मधुकर कान्ह कही ते न होहीं॥ कै ये नई सिखी सिखई हरि निज अनुराग विछोहीं। राखी सचि कूवरी पीठ पर ये वातै वकुचोहीं। श्यामसों गाहक पाइ सयानी खोलि देखाइहै गोही। नागरमणि शोभासागर जेहि जग युवती हँसि मोही। लियोरूप दै ज्ञान गांठरी भलो ठग्यो ठगु वोही॥हैनिर्गुन सारी वारिकवलि घरी करो हम जोही। तुलसी येनागरिन्ह योगपट जिन्हहिं आजु सब सोही॥४१॥मधुप तुम्ह कान्हहींकी कही क्यों न कहीहै॥ यह वतकही चपल चेरीकी निपट चरेरीऐरहीहै॥कब व्रज तज्यौ ज्ञान कब उपज्यो कब विदेहता लहीहै॥ गये विसारि रीति गोकुलकी अब निर्गुन गति गहीहै॥आयसु देहु करहिं सोइ शिर धरि प्रीति परमिति निरवहीहै॥ तुलसी परमेश्वर न सहैगो हम अवलनि सब सहीहै॥ ४२॥ दीन्हीहै मधुप सबहि सिख नीकी॥ सोइ आदरो आश जाके जिय वारि विलोवत घीकी। बूझीबात कान्ह कुवरीकी मधुकरहू जानिपूछो। ठालीं ग्वालि जानि पठये अलि कह्योदै पछोरन छूछो। हमहू कछुक लखीहो तबकी औरेवै नंदललाकी॥ येअवलही चतुर चेरीपै चोखी चालि चलाकी। गये करते वरते आँगनते व्रजहूते व्रजनाथ॥ तुलसी प्रभु गयो चहत मनहुंते सोतोहै हमारे हाथ॥४३॥ताकी सिख व्रज न सुनैगो कोउ भोरे॥ जाकी कहनि रहनि अनमिल अलि सुनत समुझियत थोरे॥ आपु कंजमकरंद

सुधाह्रद हृदय रहत नित बोरे ॥ हमसों कहत विरह श्रम जैहै गगन कूप खनि खोरे । धानको गाँव पयार जानियत ज्ञान विषय मनमोरे ॥ तुलसी अधिक किए न रहेगो रसगूलरि को सो फल फोरे ॥४४॥ आली अति अनुचित उतरु न दीजे ॥ सेवक सखा सनेही हरिके जो कछु कहैं सो कीजे ॥ देश काल उपदेश सँदेसो सादर सब सुनिलीजे ॥ कै समुझिवो किए समुझैहै हारेहु मानि सहीजे ॥ सखिसरोष प्रियदोष विचारत प्रेमपीनपन छीजे ॥ खग मृग मीन सलभ सरसिज गति सुनि पाहनौ पसीजे ॥ ऊधो परमहितू हित सिखवत परमिति पहुँचि पतीजे ॥ तुलसिदास अपराध आपनो नंदलाल विनु जीजे॥४५॥ऊधौहैं बड़े कहैं सोइ कीजे ॥ अलि पहिचानि प्रेमकी परमिति उतरु फेरि नहिं दीजे ॥ जननी जनक जरठ जानै जन परिजन लोगु न छीजे । दै पठयो पहिलो विढतो ब्रज सादर शिर धरिलीजे ॥ कंस मारि यदुवंश सुखी कियो श्रवण सुयश सुनि जीजे ॥ तुलसी त्यों त्यों होइगी गरुई ज्यों ज्यों कामरि भीजे ॥ ४६ ॥ कान्ह अलि भए नए गुरु ज्ञानी ॥ तुम्हरे कहत आपने समुझत बात सही उर आनी ॥ लिए अपनाइ लाइ चंदनतन कछु कटु चाह उड़ानी ॥ जरीं सुवाइ कूबरी कौतुक कारि योगीबवा जुडानी ॥ ब्रजबसि रासविलास मधुपुरी चेरीसों रतिमानी॥योग योग ग्वालिनीवियोगिनि जान शिरोमणि जानी ॥कहिबे कछू कछू कहि जैहै रहौ आलि अरगानी ॥ तुलसी हाथ पराए प्रीतम तुम्ह प्रियहाथ विकानी ॥ ॥ ४७ ॥ सबमिलि साहस करिय सयानी ॥ ब्रज आनियहि मनाइ पाँयपरि कान्ह कूबरी रानी ॥ बसै सुवास सुपास होहि सब फिरि गोकुल रजधानी ॥ महरि महर जीवहिं सुख जीवन खुलहि मोदमणि खानी ॥ तजि अभिमान अनख अपनोहित कीजिय मुनिवर वानी ॥ देखिवो दरश दूसरेहु चौथेहु बड़ोलाभ लघुहानी ॥ पावक परत निषिद्ध लाकरी होत अनल जगजानी ॥ तुलसी सो तिहुँभुवन गाइवी नंदसुवन सनमानी ॥ ४८ ॥ कहाँहै भली बात सबके मनमानी ॥ प्रियसम प्रियसनेह भाजन सखि प्रीति रीति जगजानी ॥ भूषण भूति गरल परिहरिकै हरमूरति उरआनी ॥ मज्जनपानकियो कै सुरसरि

कर्मनाश जल छानी॥पूछसों प्रेम विरोध सींग सों यहिविचार हितहा-
नी॥कीजे श्याम कूवरीसों नित नेह करम मन वानी ॥ तुलसी तजिय
कुचालि आलि अब सुधरै सबइ नसानी ॥आगेकरि मधुकर मथुराकहँ
सोधिय सुदिन सयानी ॥ ४९ ॥ (राग कान्हरा) ॥ हे हम समा-
चार सबपाए ॥ अब विशेष देखे तुम्ह देखेहैं कुवरी कहाँसे लाए॥ म-
थुरा बड़ो नगर नागरजन जिन्हजातहि यदुनाथ पठाए ॥ समुझि रह-
नि सुनि कहनि विरह व्रण अनष अमिय ओषध सरुहाए ॥ मधुकर
रसिकशिरोमणि कहियत कौने यह रसरीति सिखाए ॥ बिनु आषर
को गीतगाइगाइ चाहत ग्वालिनि ग्वाल रिझाए॥ फल पहिलेही लह्यो
ब्रजवासिन्ह अब साधन उपदेशन आए॥ तुलसी अलि अजहूँ
नहिं बूझत कौनहेतु नँदलाल पठाए ॥ ५० ॥ कौन सुनै अलिकी
चतुराई॥ अपनिहि मति विलास अकाशमहँ चाहत सियनि चलाई ॥
सरल सुलभ हरिभक्ति सुधाकर निगम पुराणनि गाई॥ तजि सोइ सुधा
मनोरथ करिकरि को मरिहैरी माई ॥ यद्यपि ताके सोइ मारगप्रिय जा-
हि जहाँ बनिआई॥मैनके दशन कुलिशके मोदक कहतसुनत बौराई॥
सगुन क्षीरनिधि तीरबसत ब्रज तिहुँपर विदित बड़ाई ॥ आक दुहन
तुम्ह कह्यो सो परिहरि हम यह मति नहिं पाई ॥ जानतहैं यदुनाथ
सबनकी बुधिविवेक जड़ताई।तुलसिदास जनि बकहिं मधुप शठ हठ
निशिदिन अवराई ॥५१॥ (राग केदारा) ॥ गोकुल प्रीति नितनई
जानि।जाइ अनत सुनाइ मधुकर ज्ञानगिरा पुरानि ॥ मिलहिं योगी
जरठ तिन्हहिं दिखाउ निरगुण खानि ॥ नवलनंदकुमारके ब्रज स-
गुन सुयश बखानि ॥ तूजो हम आदरयो सोतो नवकमलहीकी
कानि ॥ तजहिं तुलसी समुझि एह उपदेशिवेकी बानि ॥ ५२ ॥ का-
हेको कहत बचन सवाँरि ॥ ज्ञानगाहक नाहिंनै ब्रज मधुप अनत
सिधारि ॥ जुगुति धूम बघारिवेको समुझिहैं न गँवाँरि ॥ योगिजन
मुनिमंडलीमें जाइ रीती ढारि ॥ सुनै तिन्हकी कौन तुलसी जिन्ह-
हिं जीति न हारि ॥ सकति खारो कियो चाहत मेवहूको वारि ॥५३॥
ऐसे हौंहूँ जानति भृंग॥नाहिंने काहू लह्यो सुख प्रीतिकरि इक अंग ॥
कौनभीर जो नीरदहि जेहि लागि रटत विहंग ॥ मीन जलबिनु

तलफि तनुतजै सलिल सहज असंग ॥ पीर कछू न मनहिं जाके विरह विकल भुअंग ॥ व्याध विशिष विलोक नहिं कलगान लुब्ध कुरंग॥ श्यामघन गुनवारि छविमणि मुरलि तान तरंग॥ लग्यो मन बहुभाँति तुलसी होइ क्यों रसभंग ॥ ५४ ॥ ऊधो प्रीति करि निर-मोहियनसों को न भयो दुखदीन ॥सुनत समुझत कहत हम सब भई अति अप्रवीन॥अहिकुरंग पतंग पंकज चोर चातक मीन॥ बैठि इन की पाँति अब सुख चहत मन मतिहीन ॥ निठुरता अरु नेहकी गति कठिन परति कहीन ॥ दास तुलसी सोचनित निजप्रेम जानि मलीन ॥ ५५ (रागगौरी) ॥ सुनत कुलिशसम वचन तिहारे ॥ चितदै मधुप सुनहु सोउ कारण जाते जात न प्राणहमारे ॥ ज्ञान कृपान समान लगत उर विहरत छिन छिन होत निनारे॥अवधि ज-रा जोरति हठि पुनि पुनि याते तनु रहत सहत दुखभारे ॥ पावक विरह समीर श्वासतनु तूलमिले तुम्ह जारनिहारे॥तिन्हहिं निदरि अ-पनेहित कारण राखत नयननि पुनि रखवारे ॥ जीवत कठिन मरन की यह गति दुसह विपति ब्रजनाथ निवारे॥तुलसिदास यह दशा जा-निजिय उचितहोइ सो कहो अलिप्यारे ॥ ५६ ॥ छपदसुनहु वर वचन हमारे ॥ विनुब्रजनाथ ताप नयननको कौनहरै हरिअंतरका-रे ॥ कनककुंभ भरि भरि पियूषजल वरषत शक्र कलपशत हारे ॥ कदलि सीप चातकको कारज स्वाति वारिविनु कोउ न सँवारे ॥ सब अँग रुचिर किशोर श्यामघन जेहि हृदि जलज बसत हरिप्यारे॥ तेहिउर क्यों समात विराटवपु सोमहि सरित सिंधु गिरि भारे ॥ बढ़्यो अतिप्रेम प्रलयके वट ज्यौं विपुल योगजल बोरि न पारे ॥ तुलसिदास ब्रजवनितनको व्रत समरथको करि जतन निवारे ॥ ॥ ५७ ॥ मधुप समुझि देखहु मनमाहीं ॥ प्रेमपियूषरूप उड़पति विनु कैसे हौ अलि पैयत रविपाहीं ॥ यद्यपि तुमहितलागि कहत सु-नि श्रवण वचन नहिं हृदय समाहीं ॥ मिलहि न पावक महँ तुपार कण जो खोजत शतकलप सिराहीं ॥ तुम कहिरहे हमहुँ पचिहारी लोचनहठी तजत हठनाहीं ॥ तुलसिदास सोइ जतन करहु कछु बारक श्याम इहाँ फिरि जाहीं ॥ ५८ ॥ मोको अब नयनभए रिपु

माई ॥ हरिवियोग तनुतजेहि परमसुख ए राखहिं सोइहै वरियाई ॥ वरु मनकियो बहुतहित मेरो बारहिंबार कामदव लाई ॥ वराषि नीर एतबहिं बुझावहिं स्वारथ निपुण अधिक चतुराई ॥ ज्ञानपरशुदै मधुप पठायो विरहवेलि कैसेहु कहिजाई॥सो थाक्यौ वरहचों एकहि तकदेखत इन्हकी सहज सिचाई ॥ हारतहू न हारिमानत सखि शठ सुभाव कंदुककी नांई ॥ चातक जलज मिनहुँते भोरे समुझत नहिं उन्हकी निठुराई ॥ एहठनिरत दरशलालचवश परे जहाँ बुधिवल न वसाई ॥ तुलसिदास इन्हिपर जो द्रवहिंहरि तौ पुनि मिलौं वयरु विसराई ॥ ५९ ॥ (राग आसावरी) ॥ कहाभयो कपटजुआँ जो हौं हारी॥ समरधीर महावीर पाँचपति क्यौं देहैं मोहिं होन उवारी ॥ राजसमाज सभासद समरथ भीषम द्रोण धर्मधुरधारी॥अबला अनघ अनवसर अनुचित होति हेरि करिहैं रखवारी ॥ यों मनगुनति दुशासन दुरजन तमक्यो तकि गहि दुहुँकर सारी ॥ सकुचि गात गोवति कमठी ज्यौं हहरी हृदय विकल भइ भारी ॥ अपनेनिको अपनो विलोकिबल सकल आश विश्वास विसारी ॥ हाथउठाइ अनाथ नाथसों पाहिपाहि प्रभु पाहि पुकारी ॥ तुलसी परखि प्रतीति प्रीतिगति आरतपाल कृपालुमुरारी ॥ वसनवेष राखी विशेषिलखि विरदावलि मूरति नरनारी ॥६०॥ गहगह गगनदुंदुभी बाजी ॥ वरषि सुमन सुरगण गावतयश हरष मगनमुनि सुजन समाजी ॥ सानुज सगण ससचिव सुयोधन भए मुखमलिन खाइखल खाजी ॥ लाज गाज उनवनि कुचालिकलि परी वजाइ कहूँकहुँ गाजी ॥ प्रीति प्रतीति द्रुपदतनयाकी भली भूरि भय भभरि न भाजी ॥ कहि पारथ सारथिहि सराहत गई बहोरि गरीब निवाजी ॥ शिथिल सनेह मुदित मनहींमन वसन वीचाविच वधूविराजी ॥ सभासिंधु यदुपति जयमयजनु रमाप्रगटि त्रिभुवनभरि भ्राजी ॥ युग युगजगसाके केशवके शमन कलेश कुसाज सुसाजी ॥ तुलसीको न होइ सुनि कीरति कृष्णकृपालु भगतिपथ राजी ॥ ६१ ॥

इति श्रीगुसाईंतुलसीदासजीविरचितंकृष्णगीतावलीसंपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ ॥

श्रीसीता रामचन्द्राभ्यांनमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

रामाज्ञा प्रश्न ।

जो

श्रीहरिपदपद्मपरागलुब्धक भगवतविश्वासी संत महंत गृहस्थ तथा सबी हरिभक्तजनोंको अपना २ शुभाशुभ फल जाननेके लिये आईना (दर्पण) है

जिसको

खेमराज-श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें छापकर

प्रकट किया ।

आषाढ संवत् १९५१

श्रीसीतारामजी।
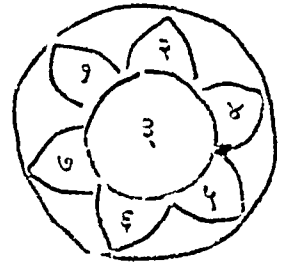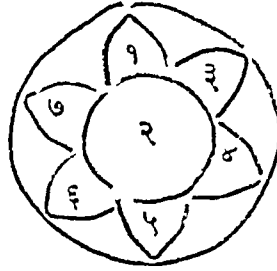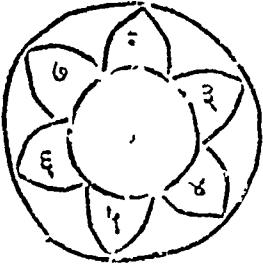
१	२	३	४	५	६	७
२४	२५	२६	२७	२८	२९	८
२३	४०	४१	४२	४३	३०	९
२२	३९	४८	४९	४४	३१	१०
२१	३८	४७	४६	४५	३२	११
२०	३७	३६	३५	३४	३३	१२
१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३

सूचना।

इस प्रश्नके जानने की यह रीति है कि प्रथम ऊपर (अध्याय) के अंकचक्रमें किसी अंकपर अंगुली रक्खो पश्चात् नीचे (दोहा) के अंकचक्रमें किसी अंकपर अँगुली रक्खो तत्पश्चात् जिस अध्यायका जो दोहा हो उसका फल बाँचकर (अपना) हानि लाभ समझलो।

श्रीगणेशायनमः ।

श्रीजानकी वल्लभो विजयते

रामाज्ञा प्रश्न ।

दोहा

वाणि विनायक अंब रवि, गुरु हर रमा रमेश ॥
सुमिरि करहु सबकाज शुभ, मंगल देश विदेश ॥ १ ॥
गुरु सरसइ सिंधुरवदन, शशि सुरसरि सुरगाइ ॥
सुमिरि चलहु मग मुदितमन, होइहि सुकृत सहाइ॥ २ ॥
गिरा गौरि गुरु गणप हर, मंगल मंगल मूल ॥
सुमिरत करतल सिद्धि सब, होइ ईश अनुकूल ॥ ३ ॥
भरत भारती रिपुदवन, गुरु गणेश बुधवार ॥
सुमिरत सुलभ सुधर्म फल, विद्या विनय विचार ॥ ४ ॥
सुरगुरु गुरु सिय रामगण, राउ गिरा उर आनि ॥
जो कछु करिय सो होइ शुभ, खुलहिं सुमंगलखानि॥ ५ ॥
शुक्र सुमिरि गुरु शारदा, गणप लषण हनुमान ॥
करिय काज सब साज भल, निपटहि नीक निदान ॥ ६ ४ ॥
तुलसी तुलसीराम सिय, सुमिरि लषण हनुमान ॥
काज विचारेहु सोकरहु, दिन दिन बड़ कल्यान ॥ ७ ५ ॥
दशरथ राज न ईति भय, नहिं दुख दुरित दुकाल॥
प्रमुदित प्रजा प्रसन्न सब, सब सुख सदा सुकाल ॥ ८ ३ ॥
कौशल्यापद नाइशिर, सुमिरि सुमित्रापाँय ॥
करहु काज मंगल कुशल, विधि हरि शंभुसहाय ॥ ९ ॥
विधिवश वन मृगया फिरत, दीन्ह अंध मुनि शाप॥
सोसुनि विपति विषाद बड़, प्रजहि शोक संताप ॥ १० ॥
सुत हित बिनती कीन्हि नृप, कुलगुरु कहा उपाउ ॥
होइहि भल संतति सुनि, प्रमुदित कोशलराउ ॥ ११॥

पुत्र यज्ञ करवाइ ऋषि, रजाहि, दीन्ह प्रसाद ॥
सकल सुमंगल मूलजग, भूसुर आशिरवाद ॥ १२ ॥
राम जन्म घर घर अवध, मंगल गान निसान ॥
शकुन सुहावन होइ सुत, मंगल मोद निधान ॥ १३ ॥
राम भरत सानुज लषण, दशरथ बालक चारि ॥
तुलसी सुमिरत शकुन शुभ, मंगल कहव प्रचारि ॥ १४ ॥
भूप भवन भाइन्ह सहित, रघुवर बाल विनोद ॥
सुमिरत सब कल्याण जग, पगपग मंगल मोद ॥ १५ ॥
करनवेध चूड़ाकरन, श्रीरघुवर उपवीत ॥
समय सकल कल्याणमय, मंजुल मंगल गीत ॥ १६ ॥
भरत शत्रुसूदन लषण, सहित सुमिरि रघुनाथ ॥
करहु काज शुभ साज सब, मिलहि सुमंगल साथ॥ १७ ॥
राम लषण कौशिक सहित, सुमिरहु करहु पयान ॥
लक्षि लाभ जय जगत यश, मंगल शकुन प्रमान॥ १८ ॥
मुनि मखपाल कृपालु प्रभु, चरणकमल उर आनु ॥
तजहु सोच संकट मिटिहि, सत्य शकुन जिय जानु॥ १९ ॥
हानि मीचु दारिद दुरित, आदि अंत गत बीच ॥
रामविमुख अब आपने, गए निशाचर नीच ॥ २० ॥
शिला शाप मोचन चरण, सुमिरहु तुलसीदास ॥
तजहु सोच संकट मिटिहि, पूजिहि मनकै आस ॥ २१ ॥
इस ऽसीय स्वयंवर समउ भल, शकुन साध सब काज ॥
के कीरति विजय विवाह विधि, सकल सुमंगल साज॥ २२ ॥
राजत राजसमाज महँ, राम भंजि भवचाप ॥
शकुन सुहावन लाभ बड़, जय पर सभा प्रताप ॥ २३ ॥
लाभ मोद मंगल अवधि, सिय रघुवीर विवाहु ॥
सकल सिद्धिदायक समउ, शुभ सब काज उछाहु ॥ २४ ॥
कोशलपालक बाल उर, सिय मेली जयमाल ॥
समउ सुहावन शकुन भल, मुद मंगल सब काल॥ २५ ॥

हरषि विबुध बरषहिं सुमन, मंगल गान निसान ॥
जय जय रविकुल कमल रवि, मंगल मोद निधान ॥ २६ ॥
सतानंद पठये जनक, दशरथ सहित समाज ॥
आए तिरहुति शकुन शुभ, भये सिद्ध सब काज ॥ २७ ॥
दशरथ पूरण परब विधु, उदित समय संयोग ॥
जनकनगर सर कुमुद गण, तुलसी प्रमुदित लोग ॥ २८ ॥
मन मलीन मानी महिप, कोककोकनद वृंद ॥
सुहृद समाज चकोर चित, प्रमुदित परमानंद ॥ २९ ॥
तेहि अवसर रावण नगर, अशकुन अशुभ अपार ॥
होहिं हानि भय मरन दुख, सूचक बारहिं बार ॥ ३० ॥
मधु माधव दशरथ जनक, मिलब राज ऋतुराज ॥
शकुन सुवन नव दल सुतरु, फूलत फलत सुकाज ॥ ३१ ॥
विनय पराग सुप्रेम रस, सुमन सुभग संवाद ॥
कुसुमित काज रसाल तरु, शकुन सुकोकिल नाद ॥ ३२ ॥
उदित भानुकुल भानु लखि, लुके उलूक नरेश ॥
गये गँवाइ गरूरपति, धनु मिस हये महेश ॥ ३३ ॥
चारि चारु दशरथ कुँवर, निरखि मुदित पुर लोग ॥
कोशलेश मिथिलेश को, समउ सराहन योग ॥ ३४ ॥
एक वितान विवाहि सब, सुवन सुमंगल रूप ॥
तुलसी सहित समाज सुख, सुकृत सिंधु दोउ भूप ॥ ३५ ॥
दाइज भयउ अनेक विधि, सुनि सिहाहिं दिशिपाल ॥
सुख संपति संतोष मय, शकुन सुमंगल माल ॥ ३६ ॥
वर दुलहिनि सब परस्पर, मुदित पाइ मन काम ॥
चारु चारि जोरी निरखि, दुहुँ समाज अभिराम ॥ ३७ ॥
चारिउ कुँवर विवाहि पुर, गवने दशरथ राउ ॥
भये मंजु मंगल शकुन, गुरु सुर शंभु पसाउ ॥ ३८ ॥
पंथ परशुधर आगमन, समय सोच सब काहु ॥
राज समाज विषाद बड़, भयवश मिटा उछाहु ॥ ३९ ॥

रोष कलुष लोचन भ्रुकुटि, पाणि परशु धनु बान॥
काल कराल विलोकि मुनि,सब समाज बिलखान॥ ४० ॥
प्रभुहि सौंपि शारंग मुनि, दीन्ह सुआशिरवाद ॥
जय मंगल सूचक शकुन, राम राम संवाद ॥ ४१ ॥
अवध अनंद बधावनो, मंगल गान निसान ॥
तुलसी तोरन कलश पुर, चँवर पताक वितान ॥ ४२ ॥
साजि सुमंगल आरती, रहस विवस रनिवास ॥
मुदित मातु परिछन चली, उमगत हृदय हुलास ॥ ४३ ॥
करहिं निछावरि आरती, उमगि उमगि अनुराग ॥
वर दुलहिनि अनुरूप लखि, सखी सराहहिं भाग ॥ ४४ ॥
मुदित नगर नर नारि सब, शकुन सुमंगल मूल ॥
जय धुनि मुनि सुर दुंदुभी, बाजहिं बरषहिं फूल ॥ ४५ ॥
आए कोशलपाल पुर, कुशल समाज समेत ॥
समउ सुनत सुमिरत सुखद, सकल सिद्धि शुभदेत॥ ४६ ॥
रूपशील वय वंश गुण, सम विवाह भये चारि ॥
मुदित राउ रानी सकल, सानुकूल त्रिपुरारि ॥ ४७ ॥
विधि हरि हर अनुकूल अति, दशरथ राजहिं आजु॥
देखि सराहत सिद्ध सुर, संपति समउ समाजु ॥ ४८ ॥
शकुन प्रथम उनचास शुभ, तुलसी अति अभिराम ॥
सब प्रसन्न सुर भूमिसुर, गोगण गंगा राम ॥ ४९ ॥

अथ द्वितीयोध्याय ॥ २ ॥

समउ राम युवराज कर, मंगल मोद निकेतु ॥
शकुन सुहावन संपदा, सिद्ध सुमंगल हेतु ॥ १ ॥
सुरमायावश कैकयी, कुसमय कीन्हि कुचालि ॥
कुटिल नारि मिस होइ छल, अनभल आजु कि कालि ॥ २ ॥
कुसमय कुशकुन कोटि सम, राम सीय वनवास ॥
अनरथ अनभल अवधि जग, जानब तरवस नास ॥ ३ ॥

शोचत पुर परिजन सकल, विकल राउ रीनवास ॥
छल मलीन मन तीयमिस, विपति विषाद विनाश ॥ ४ ॥
लषण राम सिय वनगमन, सकल अमंगल मूल ॥
सोच पोच संताप वश, कुसमय संशय शूल ॥ ५ ॥
प्रथम वास सुरसरि निकट, सेवा कीन्हि निषाद ॥
कहब शुभाशुभ शकुन फल, विसमय हरष विषाद ॥ ६ ॥
चले नहाइ प्रयाग प्रभु, लषण सीय रघुराज ॥
तुलसी जानव शकुन फल, होइहि साधु समाज ॥ ७ ॥
सीय राम लोने लषण, तापस वेष अनूप ॥
तप तीरथ जप जाग हित, शकुन सुमंगल रूप ॥ ८ ॥
सीता लषण समेत प्रभु, यमुना उतरि नहाइ ॥
चले सकल संकट शमन, शकुन सुमंगल पाइ ॥ ९ ॥
अवध शोक संताप वश, विकल सकल नर नारि ॥
वाम विधाता राम बिनु, माँगत मीचु पुकारि ॥ १० ॥
लषण सीय रघुवंश मणि, पथिक पाय उर आनि ॥
चलहु अगम मग सुगम शुभ, शकुन सुमंगल खानि ॥ ११ ॥
ग्राम नारि नर मुदित मन, लषण राम सिय देखि ॥
होइ प्रीति पहिचान बिनु, मान विदेश विशेषि ॥ १२ ॥
वन मुनि गण रामहिं मिलहिं, मुदित सुकृत फल पाइ ॥
शकुन सिद्ध साधक दरश, अभिमत होइ अघाइ ॥ १३ ॥
चित्रकूट पयतीर प्रभु, वसे भानुकुल भानु ॥
तुलसी तप जप योगहित, शकुन सुमंगल जानु ॥ १४ ॥
हंसवंशअवतंश जब, कीन्ह वास पयपास ॥
तापस साधक सिद्ध मुनि, सब कहँ शकुन सुपास ॥ १५ ॥
विटप वेलि फूलहिं फलहिं, जल थल विमल विशेषि ॥
मुदित किरात विहंग मृग, मंगल मूरति देखि ॥ १६ ॥
सींचत सीय सरोज कर, बये विटप वट वेलि ॥
समट सुकाल किसानहित, शकुन सुमंगल केलि ॥ १७ ॥

हयहाँके दक्षिण दिशा, हेरिहेरि हिहिनात ॥
भये निषाद विषाद वश, अवध सुमंतहि जात ॥ १८ ॥
सचिव सोच व्याकुल सुनत, अशकुन अवध प्रवेश ॥
समाचार सुनि शोकवश, माँगी मीचु नरेश ॥ १९ ॥
राम राम कहि राम सिय, रामशरन भये राउ ॥
सुमिरहु सीता राम अब, नाहिंन आन उपाउ ॥ २० ॥
राम विरह दशरथ मरन, मुनि मन अगम सुमीचु ॥
तुलसी मंगल मरण तरु, शुचि सनेह जल सींचु ॥ २१ ॥
धीर वीर रघुवीरप्रिय, सुमिरि समीरकुमारु ॥
अगम सुगम सब काज करु, करतल सिद्ध विचारु ॥ २२ ॥
सुमिरि शत्रुसूदन चरण, शकुन सुमंगल मानि ॥
पर पुर वाद विवाद जय, जूझ जुआ जय जानि ॥ २३ ॥
सेवक सखा सुबंधु हित, शकुन विचारु विशेषि ॥
भरत नाम गुणगण विमल, सुमिरि सत्य सब लेषि ॥ २४ ॥
साहिब समरथ शीलनिधि, सेवत सुलभ सुजान ॥
राम सुमिरि सेइय सुप्रभु, शकुन कहब कल्यान ॥ २५ ॥
सुकृत शील शोभा अवधि, सीय सुमंगल खानि ॥
सुमिरि शकुन तिय धरम हित, कहब सुमंगल जानि ॥ २६ ॥
ललित लषण मूरति हृदय, आनि धरे धनुबान ॥
करहु काज शुभ शकुन सब, मुद मंगल कल्यान ॥ २७ ॥
राम नाम पर रामते, प्रीति प्रतीति भरोस ॥
सो तुलसी सुमिरत सकल, शकुन सुमंगल कोस ॥ २८ ॥
गुरु आयसु आए भरत, निरखि नगर नर नारि ॥
सानुज सोचत पोच विधि, लोचन मोचत वारि ॥ २९ ॥
भूप मरन प्रभु वन गवन, सबविधि अवध अनाथ ॥
रोवत समुझि कुमातु कृत, मीजि हाथ धुनिमाथ ॥ ३० ॥
वेद विहित पितु करम करि, लिए संग सब लोग ॥
चले चित्रकूटहिं भरत, व्याकुल राम वियोग ॥ ३१ ॥

राम दरश हिय हर्ष बड़, भूपति मरन विषाद ॥
सोचत सकल समाज सुनि, राम भरत संवाद ॥ ३२ ॥
सुनि शिष आशिष पावरी, पाइ नाइ पद माथ ॥
चले अवध संताप वश, विकल लोग सब साथ ॥ ३३ ॥
भरत नेम व्रत धर्म शुभ, रामचरण अनुराग ॥
शकुन समुझि साहस करिय, सिद्ध होइ जप जाग ॥ ३४ ॥
चित्रकूट सब दिन बसत, प्रभु सिय लषण समेत ॥
राम नाम जप जापकहि, तुलसी अभिमत देत ॥ ३५ ॥
पय पावनि वन भूमि भलि, शैल सुहावन पीठ ॥
रागिहि सीठ विशेषि थलु, विषय विरागिहि मीठ॥ ३६ ॥
फटिकशिला मंदाकिनी, सिय रघुवीर विहार ॥
राम भगत हित शकुन शुभ, भूतल भगति भँडार॥ ३७॥
शकुन सकल संकट शमन, चित्रकूट चलि जाहु॥
सीता राम प्रसाद शुभ, लघु साधन बड़ लाहु ॥ ३८ ॥
दिये अत्रितिय जानकिहि, वसन विभूषण भूरि ॥
रामकृपा संतोष सुख, होहिं, सकल दुखदूरि ॥ ३९ ॥
काक कुचालि विराध वध, देह तजी शरभंग ॥
हानि मरन सूचक शकुन, अनरथ अशुभ प्रसंग ॥ ४० ॥
राम लषण मुनि गण मिलन, मंजुल मंगल मूल ॥
सत समाज तब होइ जब, रमा राम अनुकूल ॥ ४१ ॥
मिले कुंभसंभव मुनिहि, लषण सीय रघुराज ॥
तुलसी साधु समाज सुख,सिद्ध दरश शुभ काज॥ ४२ ॥
सुनि मुनि आयसु प्रभुकियो, पंचवटी वसि वास॥
भइ महि पावनि परसि पद, भा सबभाँति सुपास ॥ ४३ ॥
सरित सरोवर सजल सब, जलज विपुल बहुरंग ॥
समउ सुहावन शकुन शुभ, राजा प्रजा प्रसंग ॥ ४४ ॥
विटप वेलि फूलहिं फलहिं, शीतल सुखद समीर॥
मुदित विहग मृग मधुप गण, वन पालक दोउ वीर ॥ ४५ ॥

मोदाकर गोदावरी, विपिन सुखन सबकाल ॥
निर्भय मुनि जप तप करहिं, पालक राम कृपाल ॥ ४६ ॥
भेंट गीध रघुराज सन, दुहुँदिशि हृदय हुलास ॥
सेवक पाइ सुसाहिबहि, साहिब पाइ सुदास ॥ ४७ ॥
पढ़हिं पढ़ावहिं मुनितनय, आगम निगम पुरान ॥
शकुन सुविद्या लाभहित, जानब समय समान ॥ ४८ ॥
निजकर सींचति जानकी, तुलसी लाइ रसाल ॥
शुक दूती उनचास भलि, बरषा कृषी सुकाल ॥ ४९ ॥

अथ तृतीयोध्याय ॥ ३ ॥

दंडकवन पावन करन, चरण सरोज प्रभाउ ॥
ऊपर जामहिं खल तरहिं, होइ रंकते राउ ॥ १ ॥
कपटरूप मन मलिन गइ, शूपनखा प्रभुपास ॥
कुशकुन कठिन कुनारि कृत, कलह कलुष उपहास ॥ २ ॥
नाक कान बिनु बिकल भइ, विकट कराल कुरूप ॥
कुशकुन पाउ न देब मग, पग पग कंटक कूप ॥ ३ ॥
खर दूषण देखी दुखित, चले साजि सब साज ॥
अनरथ अशकुन अव अशुभ, अनभल अखिल अकाज ॥ ४ ॥
कटु कुठाय करटारटहिं, फेकरहिं फेरु कुभाँति ॥
नीच निशाचर मीचु कस, अनी मोह मद माति ॥ ५ ॥
राम रोष पावक प्रबल, निशिचर शलभ समान ॥
लरत परत जरि जरि मरत, भये भसम जग जान ॥ ६ ॥
सीता लषण समेत प्रभु, सोहत तुलसीदास ॥
हरषत सुर बरषत सुमन, शकुन सुमंगल वास ॥ ७ ॥
सुभट सहस चौदह सहित, भाइ कालवश जानि ॥
शूपणखा लंकहि चली, अशुभ अमंगल खानि ॥ ८ ॥
वसन सकल शोणित समल, विकट वदन गत गात ॥
रोवति रावण की सभा, तात मात हा ! भ्रात ॥ ९ ॥

कालकि मूरति कालिका, कालराति विकराल ॥
विन पहिचाने लंकपति, सभा सभय तेहि काल ॥ १० ॥
शूपनखा सब भाँति गत, अशुभ अमंगल मूल ॥
समयसाढ़साती सरिस, नृपहि प्रजहि प्रतिकूल ॥ ११ ॥
वरवश गवनत रावणहिं, अशकुन भये अपार ॥
नीच गनत नहिं मीचुवश, मिलि मारीच विचार ॥ १२ ॥
इत रावण उत रामकर, मीचु जानि मारीच ॥
कपट कनक मृग वेष तव, कीन्ह निशाचर नीच ॥ १३ ॥
पंचवटी वट विटपतर, सीता लषण समेत ॥
सोहत तुलसीदास प्रभु, सकल सुमंगल देत ॥ १४ ॥
माया मृग पहिचानि प्रभु, चले सीयरुचि जानि ॥
वंचक चोर प्रपंचकृत, शकुन कहव हित हानि ॥ १५ ॥
सीयहरण अवसर शकुन, भय संशय संताप ॥
नारि काजहित निपट गत, प्रगट पराभव पाप ॥ १६ ॥
गीधराज रावण समर, घायल वीर विराज ॥
सूर सुयश संग्राम महि, मरण सुसाहिवकाज ॥ १७ ॥
राम लषण वनवन विकल, फिरत सीय सुधिलेत ॥
सूचत शकुन विषाद बड़, अशुभ अरिष्ट अचेत ॥ १८ ॥
रघुवर विकल विहंगलखि, सो विलोकि दोउवीर ॥
सिय सुधि कहि सिय राम कहि, तजीदेह मतिधीर ॥ १९ ॥
दशरथ ते दशगुणभगति, सहित तासु करि काज ॥
सोचत बंधुसमेत प्रभु, कृपासिंधु रघुराज ॥ २० ॥
तुलसी सहित सनेह नित, सुमिरहु सीताराम ॥
शकुन सुमंगल शुभसदा, आदि मध्य परिणाम ॥ २१ ॥
सकलकाज शुभसमउ भल, शकुन सुमंगल जानु ॥
कीरति विजय विभूति भलि, हिय हनुमानहिं आनु ॥ २२ ॥
सुमिरि शत्रुसूदन चरण, चलहु करहु सबकाज ॥
शत्रु पराजय निज विजय शकुन सुमंगल साज ॥ २३ ॥

भरत नाम सुमिरत मिटहिं, कपट कलेश कुचालि॥
नीति प्रीति परतीति हित, शकुन सुमंगल शालि ॥ २४ ॥
राम नाम कलि कामतरु, सकल सुमंगल कंद ॥
सुमिरत करतल सिद्धि जग, पग पग परमानंद ॥ २५ ॥
सीताचरण प्रणाम करि, सुमिरि सुनाम सनेम ॥
सुतिय होहिं पतिदेवता, प्राणनाथ प्रिय प्रेम ॥ २६ ॥
लषण ललित मूरति मधुर, सुमिरहु सहित सनेह ॥
सुख संपति कीरति विजय, शकुन सुमंगल गेह ॥ २७ ॥
तुलसी तुलसी मंजरी, मंगल मंजुल मूल ॥
देखत सुमिरत शकुन शुभ, कलपलता फल फूल ॥ २८ ॥
खलबल अंध कबंध वश, परे सुबंधु समेत ॥
शकुन सोच संकट कठिन, भूत प्रेत दुख देत ॥ २९ ॥
पाइ नीच सुमीचु भलि, मिटा महामुनि शाप ॥
विहग मरण सिय सोच मन; शकुन सभय संताप ॥ ३० ॥
कहि शबरी सब सीय सुधि, प्रभु सराहि फलखात॥
सोच समय संतोष सुनि, शकुन सुमंगल बात ॥ ३१ ॥
पवनसुवन सन भेंट भइ, भूमिसुता सुधिपाइ ॥
सोच विमोचन शकुन शुभ, मिला सुसेवक आइ॥ ३२ ॥
राम लषण हनुमान मन, दुहुँ दिशि परमउछाहु ॥
मिला सुसाहिब सेवकहि, प्रभुहि सुसेवक लाहु ॥ ३३ ॥
कीन्ह सखा सुग्रीव प्रभु, दीन्हि बाहँ रघुबीर ॥
शुभ सनेह हित शकुन फल, मिटइ सोच भयभीर॥ ३४ ॥
बली बालि बलशालि दलि, सखा कीन्ह कपिराज॥
तुलसी रामकृपालुको, विरद गरीब नेवाज ॥ ३५ ॥
बंधु विरोध न कुशल कुल, कुशकुन कोटि कुचालि॥
रावण रविको राहुसो, भयो कालवश बालि ॥ ३६ ॥
कीन्ह वास वरषा निरखि, गिरिवर सानुज राम ॥
काज विलंबित शकुन फल, होइहि भल परिणाम॥ ३७ ॥

सीयसोध कपि भालु सब, विदा किए कपिनाथ ॥
जतन करहु आलस तजहु, नाइ रामपद माथ ॥ ३८ ॥
हनूमान हियहरषि तब, राम जोहारे जाइ ॥
मंगल मूरति मारुतिहि, सादर लीन्ह बुलाइ ॥ ३९ ॥
डाटे वानर भालु सब, अवधिगये बिनकाज ॥
जो आइहि सो कालवश, कोपि कहा कपिराज ॥ ४० ॥
जान शिरोमणि जानिजिय, कपि बल बुद्धिनिधान ॥
दीन्हि मुद्रिका मुदित प्रभु, पाइ मुदित हनुमान॥ ४१ ॥
तुलसी करतल सिद्धि सब, शकुन सुमंगल साज ॥
करि प्रणाम रामहिं चलहु, साहस सिद्ध सुकाज ॥ ४२ ॥
नाथ हाथ माथे धरेउ, प्रभु मुदरी मुहँ मेलि ॥
चलेउ सुमिरि शारंगधर, आनिहि सिद्धि सकेलि ॥ ४३ ॥
संग नील नल कुमुद गद, जाम्बवंत युवराज ॥
चले रामपद नाइ शिर, शकुन सुमंगल साज ॥ ४४ ॥
पैठि बिवर मिलितापसिहि, अचइ पानि फल खाइ॥
शकुन सिद्ध साधक दरश, अभिमत होइ अघाइ ॥ ४५ ॥
वनचर विकल विषाद वश, देखि उदधि अवगाह ॥
असमंजस बड़ शकुन गत, विधिवश होइ निबाह ॥ ४६ ॥
सब सभीत संपाति लखि, हहरे हृदय हरास ॥
कहत परस्पर गीध गति, परिहरि जीवन आस ॥ ४७ ॥
नव तनु पाइ देखाइ प्रभु, महिमा कथा सुनाइ ॥
धरहु धीर साहस करहु, मुदित सीय सुधि पाइ ॥ ४८ ॥
तुलसीराम प्रभाउ कहि, मुदित चले संपाति ॥
शुभ तीसर उनचास भल, शकुन सुमंगल पाँति ॥ ४९ ॥

अथ चतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥

राम जनम शुभ शकुन भल, सकल सुकृत समुसार ॥
पुत्र लाभ कल्यान बड़, मंगलचार विचार ॥ १ ॥

दशरथ कुलगुरुकी कृपा, सुतहित यज्ञ कराइ ॥
पायसपाइ विभाग करि, रानिन्ह दीन्ह बुलाइ ॥ २ ॥
सब सगरभ सोहहिं सदन, सकल सुमंगलखानि ॥
तेज प्रताप प्रसन्नता, रूप न जाहिं बखानि ॥ ३ ॥
देखि सुहावन स्वप्न शुभ, शकुन सुमंगल पाइ ॥
कहहिं भूपसन मुदित मन, हर्ष न हृदय समाइ ॥ ४ ॥
स्वप्न शकुन सुनि राउ कह, कुल गुरु आशिर्वाद ॥
पूजिहि सब मनकामना, शंकर गौरि प्रसाद ॥ ५ ॥
मास पाष तिथि योग शुभ, नखत लगन ग्रह वार ॥
सकल सुमंगल मूल जग, राम लीन्ह अवतार ॥ ६ ॥
भरत लषण रिपुदवन सब, सुवन सुमंगल मूल ॥
प्रगट भये नृप सुकृत फल, तुलसी विधि अनुकूल ॥ ७ ॥
घर घर अवध वधावने, मुदित नगर नर नारि ॥
वराषि सुमन हरषहिं विबुध, विधि त्रिपुरारि मुरारि ॥ ८ ॥
मंगल गान निसान नभ, नगर मुदित नर नारि ॥
भूप सुकृत सुरतरु निरखि, फरे चारुफल चारि ॥ ९ ॥
पुत्र काज कल्याण नृप, दिये दान बहु भाँति ॥
रहस विवश रनिवास सब, मुद मंगल दिन राति ॥ १० ॥
अनुदिन अवध बधावने, नितनव मंगलमोद ॥
मुदित मातु पितु लोगलखि, रघुवर बालविनोद ॥ ११ ॥
कर्णवेध चूड़ाकरन, लौकिक वैदिक काज ॥
गुरु आयसु भूपति करत, मंगल साज समाज ॥ १२ ॥
राजअजिर राजत रुचिर, कोशलपालक बाल ॥
जानु पानि चर चरित वर, शकुन सुमंगल माल ॥ १३ ॥
लहे मातु पितु भागवश, सुत जग जलधि ललाम ॥
पुत्रलाभ हित शकुन शुभ, तुलसी सुमिरहु राम ॥ १४ ॥
बाल विभूषण वसन धर, धूरि धूसरित अंग ॥
बालकेलि रघुवर करत, बाल बंधु सब संग ॥ १५ ॥

राम भरत लछिमन ललित, शत्रुशमन शुभ नाम ॥
सुमिरत दशरथसुवन सब, पूजिहि सब मनकाम ॥ १६ ॥
नाम ललित लीला ललित, ललित रूप रघुनाथ ॥
ललित वसन भूषण ललित, ललित अनुज शिशु साथ ॥ १७ ॥
सुदिन साधि मंगल किये, दिये भूप व्रत बंध ॥
अवध बधाव विलोकि सुर, बरषत सुमन सुगंध ॥ १८ ॥
भूपति भूसुर भाट नट, याचक पुर नर नारि ॥
दिये दान सनमानि सब, पूजे कुल अनुहारि ॥ १९ ॥
सखी सुआसिनि विप्रतिय, सनमानी सबराय ॥
ईश मनाय अशीश शुभ, देहिं सनेह सुभाय ॥ २० ॥
राम काज कल्याण सब, शकुन सुमंगल मूल ॥
चिरजीवहु तुलसीश सब, कहि सुर बरषहिं फूल ॥ २१ ॥
रामजनम शुभकाज सब, कहत देवऋषि आइ ॥
सुनि सुनि मन हनुमानके, प्रेम उमँग न अमाइ ॥ २२ ॥
भरत श्याम तन राम सम, सब गुण रूपनिधान ॥
सेवक सुखदायक सुलभ, सुमिरत सब कल्यान ॥ २३ ॥
ललित लाहु लोने लषण, लोयन लाहु निहारि ॥
सुत ललाम लालहु ललित, लेहु ललकि फलचारि ॥ २४ ॥
मंगलमूरति मोदनिधि, मधुर मनोहर वेष ॥
राम अनुग्रह पुत्रफल, होइहि शकुन विशेष ॥ २५ ॥
सोवत सख महि जनकपुर, सीय सुमंगलखानि ॥
भूपति पुण्य पयोधि जनु, रमा प्रगट भइ आनि ॥ २६ ॥
नाम शत्रुसूदन सुभग, सुखमा शील निकेत ॥
सेवत सुमिरत सुलभ सुख, सकल सुमंगल देत ॥ २७ ॥
बालक कोशलपालके, सेवकपाल कृपाल ॥
तुलसी मन मानस बसत, मंगल मंजु मराल ॥ २८ ॥
जनकनंदिनी जनकपुर, जबते प्रगटीं आइ ॥
तबते सब सुख संपदा, अधिक अधिक अधिकाइ ॥ २९ ॥

सीय स्वयंवर जनकपुर, सुनि सुनि सकल नरेश ॥
आए साज समाज सजि, भूषण वसन सुदेश ॥ ३० ॥
चले मुदित कौशिक अवध, शकुन सुमंगल साथ ॥
आए सुनि सनमानि गृह, आने कोशलनाथ ॥ ३१ ॥
सादर सोरह भाँति नृप, पूजि पहुनई कीन्हि ॥
विनय बड़ाई देखि मुनि, अभिमत आशिष दीन्हि ॥ ३२ ॥
मुनि माँगे दशरथ दिये, राम लषण दोउ भाइ ॥
पाइ शकुन फल सुकृत फल, प्रमुदित चले लेवाइ ॥ ३३ ॥
श्यामल गौर किशोर वर, धरेतूण धनुबान ॥
सोहत कौशिक सहित मग, मुद मंगल कल्यान ॥ ३४ ॥
शैल सरित सर बाग वन, मृग विहंग बहुरंग ॥
तुलसी देखत जात प्रभु, मुदित गाधिसुत संग ॥ ३५ ॥
लेत विलोचन लाभ सब, बड़भागी मगलोग ॥
रामकृपा दरशन सुगम, अगम जाग जप योग ॥ ३६ ॥
जलद छाँह मृदु मग अवनि, सुखद पवन अनुकूल ॥
हरषत विबुध विलोकि प्रभु, वरषत सुरतरु फूल ॥ ३७ ॥
दले मलिन खल राखि मख, मुनि शिष आशिष दीन्हि ॥
विद्या विश्वामित्र सब, सुथल समरपित कीन्हि ॥ ३८ ॥
अभयकिये मुनि राखिमख, धरे बाण धनु भाथ ॥
धनु मख कौतुक जनकपुर, चले गाधिसुत साथ ॥ ३९ ॥
गौतमतिय तारन चरण, कमल आनिउर देखु ॥
सकल सुमंगल सिद्धि सब, करतल शकुन विशेषु ॥ ४० ॥
जनक पाइ प्रिय पाहुने, पूजे पूजन योग ॥
बालक कोशलपालके, देखि मगन पुरलोग ॥ ४१ ॥
सनमाने आने सदन, पूजे अति अनुराग ॥
तुलसी मंगल शकुन शुभ, भूरि भलाई भाग ॥ ४२ ॥
कौशिक देखन धनुप मख, चले संग दोउभाइ ॥
कुँवर निरखि पुर नारि नर, मुदित नयनफल पाइ ॥ ४३ ॥

भूप सभा भवचाप दलि, राजत राजकिशोर ॥
सिद्धि सुमंगल शकुन शुभ, जय जय जय सब ओर ॥ ४४ ॥
जय मय मंजुल माल उर, मंगल मूरति देषि ॥
गान निसान प्रसून झरि, मंगल मोद विशेषि ॥ ४५ ॥
समाचार सुनि अवधपति, आए सहित समाज ॥
प्रीति परस्पर मिलत मुद, शकुन सुमंगल साज ॥ ४६ ॥
गान निसान वितान वर, विरचे विविध विधान ॥
चारिविवाह उछाह बड़, कुशल काज कल्यान ॥ ४७ ॥
दाइज पाइ अनेक विधि, सुत सुतवधुन समेत ॥
अवधनाथ आए अवध, सकल सुमंगल लेत ॥ ४८ ॥
चौथ चारु उनचास पुर, घर घर मंगलचार ॥
तुलसिहि सबदिन दाहिने, दशरथ राजकुमार ॥ ४९ ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

रामनाम कलिकामतरु, रामभगति सुरधेनु ॥
शकुन सुमंगल मूल जग, गुरुपदपंकज रेनु ॥ १ ॥
जलधि पार मानस अगम, रावण पालित लंक ॥
सोच विकल कपि भालु सब, दुहुँदिशि शंकट संक ॥ २ ॥
जाम्बवंत हनुमंत बल, कहा प्रचारि प्रचारि ॥
राम सुमिरि साहसकरिय, मानिय हिये न हारि ॥ ३ ॥
रामकाज लगि जनमजग, सुनि हरषे हनुमान ॥
होइ पुत्र फल शकुन शुभ, राम भगत बलवान ॥ ४ ॥
करत उछाहु बड़ाइ कपि, साथी सकल प्रबोधि ॥
लागत रामप्रसाद मोहिं, गोपदसरिस पयोधि ॥ ५ ॥
राखितोपि सब साध शुभ, शकुन सुमंगल पाइ ॥
कूदि कुधर चढ़ि आनि उर, सीयसहित दोउ भाइ ॥ ६ ॥
हरषि सुमन बरषत विबुध, शकुन सुमंगल होत ॥
तुलसी प्रभु लंघेउ जलधि, प्रभु प्रतापकरि पोत ॥ ७ ॥

राहु मातु माया मलिन, मारी मारुतपूत ॥
समय शकुन मारग मिलहिं, छल मलीन खलभूत ॥ ८ ॥
पूजा पाइ मिनाकपहँ, सुरसा कपि संवाद ॥
मारग अगम सहाय शुभ, होइहि रामप्रसाद ॥ ९ ॥
लंका लोलुप लंकिनी, काली काल कराल ॥
काल करालहि दीन्हिवलि, कालरूप कपिकाल ॥ १० ॥
मशकरूप दशकंध पुर, निशि कपि घर घर देषि ॥
सीयविलोकि अशोकतर, हरष विषाद विशेषि ॥ ११ ॥
फरकत मंगल अंगसिय, वाम विलोचन बाहु ॥
त्रिजटा सुनि कह शकुनफल, प्रिय सँदेश बड़लाहु॥ १२ ॥
शकुन समुझि त्रिजटा कहति, सुनि सिय अबहीं आज॥
मिलिहि रामसेवक काहिहि, कुशल लषण रघुराज ॥ १३ ॥
तुलसी प्रभु गुणगण वरणि, आपनि बात जनाइ ॥
कुशल क्षेम सुग्रीवपुर, रामलषण दोउ भाइ ॥ १४ ॥
सुरुप जानकी जानि कपि, कहे सकल संकेत ॥
दीन्हि मुद्रिका लीन्हिसिय, प्रीति प्रतीति समेत ॥ १५ ॥
पाइ नाथकर मुद्रिका, सियाहिय हरष विषाद ॥
प्राणनाथ प्रियसेवकहि, दीन्ह सुआशिरवाद ॥ १६ ॥
नाथ शपथ पणरोपि कपि, कहत चरण शिरनाइ ॥
नहिं विलंब जगदंब अब, आइगए दोउभाइ ॥ १७ ॥
समाचार कहि सुनत प्रभु, सानुज सहित सहाय ॥
आए अब रघुवंशमणि, सोच परिहरिय माय ॥ १८ ॥
गये शोच संकट सकल, भये सुदिन जियजान ॥
कौतुक सागरसेतुकरि, आए कृपानिधान ॥ १९ ॥
सकल सदल यमराजपुर, चलन चहत दशकंध ॥
काल न देखत कालवश, वीस विलोचन अंध ॥ २० ॥
आशिष आयसु पाइ कपि, सीयचरण शिरनाइ ॥
तुलसी रावण बाग फल, खात बराइ बराइ ॥ २१ ॥

शूर शिरोमणि साहसी, सुमति समीरकुमार ॥
सुमिरत सब सुख संपदा, मुद मंगल दातार ॥ २२ ॥
शत्रुशमन पद पंकरुह, सुमिरि करहु सब काज ॥
कुशल क्षेम कल्याण शुभ, शकुन सुमंगल साज ॥ २३ ॥
भरत भलाई की अवधि, शील सनेह निधान ॥
धरमभगति भायप समय, शकुन कहब कल्यान ॥ २४ ॥
सेवकपाल कृपालुचित, रविकुल कैरवचंद ॥
सुमिरि करहु सब काज शुभ, पगपग परमानंद ॥ २५ ॥
सियपद सुमिरि सुतियहित, शकुन सुमंगल जान ॥
स्वामि सोहागिल भागवड़, पुत्रकाज कल्यान ॥ २६ ॥
लछिमन पदपंकज सुमिरि, शकुन सुमंगल पाइ ॥
जय विभूति कीरति कुशल, अभिमत लाभ अघाइ ॥ २७ ॥
तुलसी कानन कमलवन, सकल सुमंगल वास ॥
राम भगतिहित शकुन शुभ, सुमिरत तुलसीदास ॥ २८ ॥
रूख निपातत खात फल, रक्षक अक्ष निपाति ॥
कालरूप विकराल कपि, सभय निशाचर जाति ॥ २९ ॥
वन उजारि जारेउ नगर, कूदि कूदि कपिनाथ ॥
हाहाकार पुकार सब, आरत मारत माथ ॥ ३० ॥
पूछि बुताइ प्रबोधि सिय, आइ गहे प्रभुपांय ॥
क्षेम कुशल जय जानकी, जय जय जय रघुराय ॥ ३१ ॥
सुनि प्रमुदित रघुवंशमणि, सानुज सेन समेत ॥
चले सकल मंगल शकुन, विजय सिद्धि कहि देत ॥ ३२ ॥
राम पयान निसान नभ, बाजहिं गाजहिं वीर ॥
शकुन सुमंगल समर जय, कीरति कुशल शरीर ॥ ३३ ॥
कृपासिंधु प्रभु सिंधुसन, माँगेउ पंथ न देत ॥
विनय न मानहि जीवजड़, डाटे नवहि अचेत ॥ ३४ ॥
राम रामभलो भा कहत, क्षेम करी कह क्षेम ॥
चलत विभीषण शकुन सुनि, तुलसी पुलकत पेम ॥ ३५ ॥

पाहि पाहि अशरण शरण, प्रणतपाल रघुराज ॥
दियो तिलक लंकेश कहि, राम ग़रीबनेवाज ॥ ३६ ॥
लंक अशुभ चरचा चलति, हाट बाट घर घाट ॥
रावण सहित समाज अब, जाइहि बारहबाट ॥ ३७ ॥
ऊकपात दिकदाह दिन, फेकरहिं श्वान सियार ॥
उदित केतु गत हेतु महि, कंपति बारहि बार ॥ ३८ ॥
रामकृपा कपि भालु करि, कौतुक सागर सेतु ॥
चले पार बरषत विबुध, सुमन सुमंगल हेतु ॥ ३९ ॥
नीच निशाचर मीचु वश, चले साजि चतुरंग ॥
प्रभु प्रताप पावक प्रबल, उड़ि उड़ि परत पतंग ॥ ४० ॥
साजि साजि बाहन चलहिं, यातुधान बलवान ॥
अशकुन अशुभ न गनहिं गत,आइ काल नियरान॥ ४१ ॥
लरत भालु कपि सुभट सब,निदरि निशाचर घोर ॥
शिरपर समरथ रामसो, साहिब, सब तुलसी तोर॥ ४२ ॥
मेघनाद अतिकाय भट, परे महोदर खेत ॥
रावण भाइ जगाइ तब, कहा प्रसंग अचेत ॥ ४३ ॥
उठि विशाल विकराल बड़, कुंभकरण जमुहान ॥
लखि सुदेश कपि भालु दल, जनु दुकाल समुहान॥ ४४ ॥
राम श्याम बारिद सघन, बसन सुदामिनि माल ॥
बरषत शर हरषत विबुध, दला दुकालु दयाल ॥ ४५ ॥
राम रावणहिं परस्पर, होति रारि रणघोर ॥
लरत प्रचारि प्रचारि भट, समर शोर दुहुँओर ॥ ४६ ॥
बीसबाहु दशशीश दलि, खंड खंड तनु कीन्ह ॥
सुभट शिरोमणि लंकपति, पाछे पाँउ न दीन्ह ॥ ४७ ॥
विबुध बजावत दुंदुभी, हरषत बरषत फूल ॥
राम विराजत जीति रण, सुर सेवक अनुकूल ॥ ४८ ॥
लंका थापि विभीषणहिं, विबुध बसाइ सुवास ॥
तुलसी जय मंगल कुशल, शुभ पंचम उनचास ॥ ४९ ॥

षष्ठमाध्याय ॥ ६ ॥

रघुवर आयसु अमरपति, अमिय सींचि कपि भालु ॥
सकल जिआये शकुन शुभ, सुमिरहु राम कृपालु ॥ १ ॥
सादर आनी जानकी, हनूमान प्रभुपास ॥
प्रीति परस्पर समउ शुभ, शकुन सुमंगल वास ॥ २ ॥
सीता शपथ प्रसंग शुभ, शीतल भयउ कृशानु ॥
नेम प्रेम व्रत धरम हित, शकुन सुहावन जानु ॥ ३ ॥
सनमाने कपि भालु सब, सादर साजि विमानु ॥
सीय सहित सानुज सदल, चले भानुकुल भानु ॥ ४ ॥
हरपत सुर बरपत सुमन, शकुन सुमंगल गान ॥
अवधनाथ गवने अवध, क्षेम कुशल कल्यान ॥ ५ ॥
सिंधु सरोवर सरित गिरि, कानन भूमि विभाग ॥
राम दिखावत जानकिहि, उमगि उमगि अनुराग ॥ ६ ॥
तुलसी मंगल शकुन शुभ, कहत जोरि युगहाथ ॥
हंस वंश अवतंस जय, जय जय जानकिनाथ ॥ ७ ॥
अवध अनंदित लोग सब, व्योम विलोकि विमानु ॥
मनहुँ कोकनद कोकगन, मुदित उदित लखि भानु ॥ ८ ॥
मिले गुरुहि जन परिजनहिं, भेंटत भरत सप्रीति ॥
लषण राम सिय कुशल पुर, आये रिपु रणजीति ॥ ९ ॥
उदवश अवध अनाथ सब, अंबदशा दुख देखि ॥
राम लषण सीता सकल, विकल विषाद विशेखि ॥ १० ॥
मिलीं मातु हित मीत गुरु, सनमाने सब लोग ॥
शकुन समय विसमय हरप, प्रिय संयोग वियोग ॥ ११ ॥
अमर अनंदित मुनि मुदित, मुदित भुवन दशचारि ॥
घर घर अवध बधावने, मुदित नगर नर नारि ॥ १२ ॥
सुदिन सोधि गुरु वेद विधि, कियो राज अभिषेक ॥
शकुन सुमंगल सिद्धि सब, दायक दोहा एक ॥ १३ ॥
भाँति भाँति उपहार टइ, मिलत नुहारत भूप ॥

पहिराये सनमानि सब, तुलसी शकुन अनूप ॥ १४ ॥
जयधुनि गान निसान सुर, बरषत सुरतरु फूल ॥
भये राम राजा अवध, शकुन सुमंगल मूल ॥ १५ ॥
भालु विभीषण कीशपति, पूजे सहित समाज ॥
भलीभाँति सनमानि सब, विदा किये रघुराज ॥ १६ ॥
राम राज संतोष सुख, घर वन सकल सुपास ॥
तरु सुरतरु सुरधेनु महि, अभिमत भोग बिलास ॥ १७ ॥
राम राज सबकाज कहँ, नीक एकही आँक ॥
सकुल शकुन मंगल कुशल, होइहि बारु न बाँक ॥ १८ ॥
कुंभकरण रावण सरिस, मेघनादसे वीर ॥
ढहे समूल विशाल तरु, काल नदीके तीर ॥ १९ ॥
सकल सदल रावण सरिस, कवलित काल कराल ॥
सोच पोच अशकुन अशुभ, जाय जीव जंजाल ॥ २० ॥
अविचल राज विभीषणहिं, दीन्ह राज रघुराज ॥
अजहुँ विराजत लंकपर, तुलसी सहित समाज ॥ २१ ॥
मंजुल मंगल मोद मय, मूरति मारुतपूत ॥
सकल सिद्धिकरकमल तल, सुमिरत रघुवर दूत ॥ २२ ॥
शकुन समय सुमिरत सुखद, भरत आचरण चारु ॥
स्वामि धरम व्रत प्रेम हित, नेम निबाहनिहारु ॥ २३ ॥
ललित लषण लघु बंधु पद, सुखद शकुन सबकाहु ॥
सुमिरत शुभकीरति विजय, भूमि ग्राम गृह लाहु ॥ २४ ॥
रामचंद्रमुख चंद्रमा, चित चकोर जब होइ ॥
राम राज सब काज शुभ, समउ सुहावन सोइ ॥ २५ ॥
भूमिनंदिनी पदपद्दुम, सुमिरत शुभ सबकाज ॥
बरषा भलि खेती सुफल, प्रमुदित प्रजा सुराज ॥ २६ ॥
सेवक सखा सुबंधु हित, नाइ लषणपद माथ ॥
कीजिय प्रीति प्रतीति शुभ, शकुन सुमंगल साथ ॥ २७ ॥

रामनाम रति नामगति, राम नाम विश्वास ॥
सुमिरत शुभ मंगल कुशल, तुलसी तुलसीदास ॥ २८ ॥
विप्र एक बालक मृतक, राखेउ रामदुआर ॥
दंपति विलपत शोकअति, आरत करत पुकार ॥ २९ ॥
राम शोच संकोच सब, सचिव विकल संताप ॥
बालक मीचु अकाल भइ, रामराज केहिपाप ॥ ३० ॥
विबुध विमल वाणी गगन, हेतु प्रजा अपचारु ॥
रामराज परिणाम भल, कीजिय बेगि विचारु ॥ ३१ ॥
कोशलपाल कृपालु चित, बालक दीन्ह जिआइ ॥
शकुन कुशल कल्याण शुभ, रोगी उठै नहाइ ॥ ३२ ॥
बालक जिया विलोकि सब, कहत उठा जनु सोइ॥
शोच विमोचन शकुन शुभ, राम कृपा भल होइ॥ ३३ ॥
शिला सुतिय भइ गिरि तरे, मृतक जिए जगजान॥
राम अनुग्रह शकुन शुभ, सुलभ सकल कल्यान ॥ ३४ ॥
केवट निशिचर विहँग मृग, किए साधु सनमानि ॥
तुलसी रघुवरकी कृपा, शकुन सुमंगलखानि ॥ ३५ ॥
रामराज राजत सकल, धरम निरत नर नारि ॥
राग न रोष न द्वेष दुख, सुलभ पदारथ चारि ॥ ३६ ॥
बक उलूक झगरत गये, अवध जहाँ रघुराउ ॥
नीक शकुन विवरिहि झगर, होइहि धरम निआउ॥ ३७ ॥
यती श्वान संवाद सुनि, शकुन कहब जिय जानि ॥
हंस वंश अवतंस पुर, विलग होन पय पानि ॥ ३८ ॥
राम कुवरचा करहिं सब, सीतहि लाइ कलंक ॥
सदा अभागी लोग जग कहत सकोच न शंक ॥ ३९ ॥
सती शिरोमणि सीय तजि, राखि लोग रुचि राम॥
सहे दुसह दुख शकुन गत, प्रिय वियोग परिणाम॥ ४० ॥
वरण धरम आश्रम धरम, निरत सुखी सब लोग ॥

राम राज मंगल शकुन, सुफल जाग जप योग ॥ ४१ ॥
वाजिमेध अगणित किये, दिये दान बहुभाँति ॥
तुलसी राजा राम जग, शकुन सुमंगल पाँति ॥ ४२ ॥
असमंजस बड़ शकुन गत, सीता राम वियोग ॥
गवन विदेश कलेश कलि, हानि पराभव रोग ॥ ४३ ॥
तिय मणि सिय अपराध बिनु, प्रभु परिहरि पछितात ॥
सोच समाज न राजसुख, मन मलीन कृशगात ॥ ४४ ॥
पुत्र लाभ लव कुश जनम, शकुन सुहावन होइ ॥
समाचार मंगल कुशल, सुखद सुनावै कोइ ॥ ४५ ॥
रामसभा लव कुश ललित, किये राम गुण गान ॥
राज समागम शकुन शुभ, सुयश लाभ सनमान ॥ ४६ ॥
वालमीकि लव कुश सहित, आनी सिय सुनि राम ॥
हृदय हरष जानब प्रथम, शकुन शोक परिणाम ॥ ४७ ॥
अनरथ अशकुन अति अशुभ, सीता अवनि प्रवेश ॥
समय शोक संताप भय, कलह कलंक कलेश ॥ ४८ ॥
सुभग शकुन उनचास रस, रामचरितमय चारु ॥
राम भगत हित सफल सब, तुलसी विमल विचारु ॥ ४९ ॥

अथ सप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

राम लषण सानुज भरत, सुमिरत शुभ सब काज ॥
सहित प्रीति प्रतीति हित, शकुन सकल शुभकाज ॥ १ ॥
सुख मुद मंगल कुमुद विधु, शकुन सरोरुह भानु ॥
करहु काज सब सिद्धि शुभ, आनि हिये हनुमानु ॥ २ ॥
राज काज मणि हेम हय, राम रूप रविवार ॥
कहब नीक जय लाभ शुभ, शकुन समय अनुसार ॥ ३ ॥
रस गोरस खेती सकल, विप्र काज शुभसाज ॥
राम अनुग्रह सोमदिन, प्रमुदित प्रजा सुराज ॥ ४ ॥
मंगल मंगल भूमिहित, नृपहित जय संग्राम ॥

शकुन विचारब समय सम, करि गुरुचरण प्रणाम॥ ५ ॥
विपुल बनिज विद्या बसन, बुध विशेषि गृहकाज॥
शकुन सुमंगल कहब शुभ, सुमिरि सीय रघुराज॥ ६ ॥
गुरु प्रसाद मंगल सकल, रामराज सब काज ॥
यज्ञ विवाह उछाह व्रत, शुभ तुलसी सब साज ॥ ७ ॥
शुक्र सुमंगल काज सब, कहब शकुन शुभ देखि॥
यंत्र मत्र मणि औषधी, साहस सिद्धि विशेषि॥ ८ ॥
रामकृपा थिर काज शुभ, शनि बासर विश्राम॥
लोह महिष गज बनिज भल, सुख सुपास गृहग्राम॥ ९ ॥
राहु केतु उलटे चलहिं, अशुभ अमंगल मूल॥
रुंड मुंड पापंड प्रिय, असुर अमर प्रतिकूल ॥ १० ॥
समउ राहु रवि गहनु गत, राजहिं प्रजहिं कलेश॥
शकुन सोच संकट विकट, कलह कलुष दुख देश॥ ११ ॥
राहु सोम संगम विषम, अशकुन उदधि अगाधु ॥
ईति भीति खल दल प्रबल, सीदहिं भूसुर साधु ॥ १२ ॥
सात पाँच ग्रह एक थल, चलहिं वाम गति वाम॥
राज विराजी समउ गत, शुभहित सुमिरहु राम ॥ १३ ॥
खेती बनि विद्या बनिज, सेवा शिलिप सुकाज ॥
तुलसी सुरतरु सरिस सब, सुफल रामके राज ॥ १४ ॥
सुधा साधु सुरतरु सुमन, सुफल सुहावनि बात ॥
तुलसी सीतापति भगति, शकुन सुमंगल सात ॥ १५ ॥
सिद्ध समागम संपदा, सदन शरीर सुपास ॥
सीतानाथ प्रसाद शुभ, शकुन सुमंगल वास ॥ १६ ॥
कौशल्या कल्याण मय, मूरति करत प्रणाम ॥
शकुन सुमंगल काज शुभ, कृपा करहिं सिय राम ॥ १७ ॥
सुमिरि सुमित्रा नाम जग, जे तिय लेहिं सुनेम ॥
सुवन लखन रिपुदवन से, पावहिं पतिपद प्रेम ॥ १८ ॥

दशरथ नाम सुकामतरु, फलइ सकल कल्याण ॥
धरणि धाम धन धरम सुख, सुत गुण रूप निधान ॥ १९ ॥
कलह कपट कलिकैकयी, सुमिरत काज नशाइ ॥
हानि मीचु दारिद दुरित, अशकुन अशुभ अघाइ॥ २० ॥
राम वाम दिशि जानकी, लषण दाहिनी ओर ॥
ध्यान सकल कल्याणमय, सुरतरु तुलसी तोर ॥ २१ ॥
मध्यमदिन मध्यमदशा, मध्यम सकल समाज ॥
नाइ माथ रघुनाथ पद, जानब मध्यम काज ॥ २२ ॥
हितपर बढ़ै विरोध जब, अनहित पर अनुराग ॥
राम विमुख विधि वाम गत, शकुन अघाइ अभाग ॥ २३ ॥
कृपण देइ पाइय परेउ, विन साधन सिधि होइ ॥
सीतापति सनमुख समुझि, जो कीजिय शुभ सोइ ॥ २४ ॥
पहिले हित परिणाम गत, वीच वीच भलपोच ॥
शकुन कहव अस राम गति, कहवि समेत सकोच॥ २५ ॥
रमा रमापति गौरि हर, सीताराम सनेह ॥
दंपति हित संपति सकल, शकुन सुमंगल गेह ॥ २६ ॥
प्रीति प्रतीति न रामपद, बड़ी आश बड़ लोभ ॥
नहिं सपनेहुँ संतोष सुख, जहाँ तहाँ मन छोभ ॥ २७ ॥
पय नहाइ फल खाइ जपु, रामनाम षट मास ॥
शकुन सुमंगल सिद्धि सब, करतल तुलसीदास ॥ २८ ॥
बड़कलेश कारज अलप, बड़ी आश लहु लाहु ॥
उदासीन सीतारमण समय सरिस निरवाहु ॥ २९ ॥
दशदिशि दुख दारिद दुरित, दुसह दशा दिन दोष ॥
फेरे लोचन राम अब, सब सुख साज सरोष ॥ ३० ॥
खेती बनिज न भीख भलि, अफल उपाय कदंब ॥
कुसमय जानब वाम विधि, रामनाम अवलंब ॥ ३१ ॥
पुरुषारथ स्वारथ सकल, परमारथ परिणाम ॥

सुलभ सिद्धि सब शकुन शुभ, सुमिरत सीताराम ॥ ३२ ॥
भाग भागतजि भालतलु आलस ग्रसे उपाय ॥
अशुभ अमंगल शकुन सुनि शरण रामके पाय ॥ ३३ ॥
गइबरषा करषक विकल, सूखत सालि सुनाज ॥
कुसमय कुशकुन कलह कलि, प्रजहि कलेश कुराज॥ ३४ ॥
तुलसी तुलसीराम सिय, सुमिरहु लषण समेत ॥
दिन दिन उदय अनंद अब, शकुन सुमंगल देत ॥ ३५ ॥
उदवस अवधनरेश बिनु, देश दुखी नर नारि ॥
राज भंग कुसमाज बड़, गत ग्रह चालि विचारि ॥ ३६ ॥
अवध प्रवेश अनंद बड, शकुन सुमंगल माल ॥
राम तिलक अवसर कहब, सुख संतोप सुकाल ॥ ३७ ॥
राम राज बाधक विबुध, कहब शकुन सतिभाउ ॥
देखि दैवकृत दोप दुख, कीजिय उचित उपाउ ॥ ३८ ॥
मंद मंथरा मोहवश, कटिल कैकई कीन्ह ॥
व्याधि विपति सब देव कृत, समय शकुन कहि दीन्ह॥ ३९॥
राम विरह दशरथ दुखित कहति कैकई काक ॥
कुसमय जाय उपाय सब, केवल करम विपाक ॥ ४० ॥
लषण राम सिय बसत वन, विरह विकलपुर लोग॥
समय शकुन कह करमवश, दुख सुख योग वियोग॥ ४१ ॥
तुलसी लाइ रसाल तरु, निजकर सींचति सीय ॥
कृपी सफल भल शकुन शुभ, समउ कहब कमनीय ॥४२॥
सुदिन साँझ पोथी नेवति, पूजि प्रभात सप्रेम ॥
शकुन विचारब चारु मति, सादर सत्य सनेम ॥ ४३ ॥
मुनि गनि दिन गनि धातु गनि, दोहा देखि विचारि॥
देश करम करता बचन, शकुन समय अनुहारि॥ ४४ ॥
शकुन सत्य शशि नयन गुन, अवधि अधिक नयवान॥
होइ सफल शुभ जासु जसि, प्रीति प्रतीति प्रमान ॥ ४५ ॥

गुरु गणेश हरगौरि सिय, राम लषण हनुमान ॥
तुलसी सादर सुमिरि सब, शकुन विचार विधान ॥ ४६ ॥
हनूमान सानुज भरत, राम सीय उर आनि ॥
लषण सुमिरि तुलसी कहत, शकुन विचार बखानि॥ ४७ ॥
जो जेहि काजहि अनुहरै, सो दोहा जब होइ ॥
शकुन समय सब सत्य सब, कहब राम गति गोइ॥ ४८ ॥
गुण विश्वास विचित्र मणि, शकुन मनोहर हार॥
तुलसी रघुवर भगत उर, विलसत विमल विचार॥ ४९ ॥

हस्ताक्षर श्री गुसाईंजी सं० १६५५ रविवार ज्येष्ठशुक्ल १०

॥ इति श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास कृत
रामाज्ञाप्रश्न समाप्तम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.
खेमराज श्रीकृष्णदास
श्रीवेङ्कटेश्वर छापखाना मुंबई.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

दोहावली ।

जिसमें

अत्युत्तम सामयिक, राजनीतिके दोहा हैं

जिसको

खेमराज-श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें छापकर

प्रकट किया ।

आषाढ संवत् १९५[illegible]

श्रीरामपंचायतन ॥

श्रीवेंकटेशायनमः ।

अथ
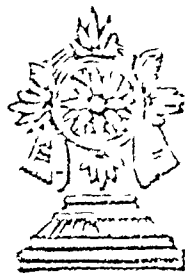
श्री मद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

दोहावली।

दोहा ॥

रामवामदिशि जानकी, लपण दाहिनी ओर ॥ ध्यान सकल कल्याणमय, सुरतरु तुलसी तोर ॥ १ ॥ सीता लपण समेत प्रभु, सोहत तुलसीदास ॥ हर्षतसुर वर्षत सुमन, सगुण सुमंगलवास ॥ २ ॥ पंचवटी वट बिटपतरु, सीता लपण समेत ॥ सोहत तुलसीदास प्रभु, सकल सुमंगल देत ॥ ३ ॥ चित्रकूट सब दिन बसत, प्रभु सिय लपण समेत ॥ रामनाम जप जापकहि, तुलसी अभिमतदेत ॥ ४ ॥ पय अहार फल खाइ जो, रामनाम पटमास ॥ सकल सुमंगल सिद्धिसब, करतल तुलसीदास ॥ ५ ॥ रामनाम मणि दीपधरु, जीह देहरी द्वार ॥ तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहसि उजियार ॥ ६ ॥ हिय निर्गुण नयननसगुण, रसना राम सुनाम ॥ मनहुँ पुरट संपुट लसत, तुलसी ललित ललाम ॥ ७ ॥ सगुण वान रुचि सरसनहिं, निर्गुण मनते दूरि ॥ तुलसी सुमिरहु रामको, नाम सजीवन मूरि ॥ ८ ॥ एकछत्र इक मुकुटमणि, सब वर्णनपर जोइ ॥ तुलसी रघुवर नाम के, वरण विराजत दोइ ॥ ९ ॥ रामनामको अंकहै, सब साधनहै सून ॥ अंक गये कछु हाथ नहिं, अंक रहे दशगून ॥ १० ॥ नाम रामको कल्पतरु कलि कल्याण निवास ॥ जो सुमिरत भयो भांगते, तुलसी तुलसीदास ॥ ११ ॥ रामनाम जपि जीहजन, भये सुकृत सुख सालि ॥ तुलसी यहां जो आलसी, गयो आजुकी कालि ॥ १२ ॥ नाम गरीबनिवाजको, राजदेत जनजान ॥ तुलसी मन परिहरत नहिं, घुरनिनिआकीबान ॥ १३ ॥ काशी विधि बसि तनुतजे, हठ तन

तजै प्रयाग ॥ तुलसी जो फल सो सुलभ, राम नाम अनुराग ॥१४॥ मीठो अरु कठुवतिभरो, रौताई अरु प्रेम ॥ स्वारथ परमारथ सुलभ, राम नामके प्रेम ॥ १५ ॥ रामनाम सुमिरत सुयश, भाजन भयो कुजात ॥ कुतरुकु सुरपुर राजमग, लहत भुवन विख्यात ॥ १६ ॥ स्वारथ सुख सपनेहुँ अगम, परमारथ परवेश ॥ रामनाम सुमिरत मिटहिं, तुलसी कठिन कलेश ॥ १७ ॥ मोर मोर सब कह कहसि, तूंको कहु निजनाम॥ कै चुप साधहि सुन समुझि, कै तुलसी जपु राम ॥ १८ ॥ तुम लखु हमहिं हमार लखु, हम हमारके बीच ॥ तुलसी अलखहि का लखहि, रामनाम जपनीच ॥ १९ ॥ रामनाम अवलंब बिनु, परमारथकी आश ॥ बर्षत बारिदबूंद गहि, चाहत चढ़न अकाश ॥ २० ॥ तुलसी हठि हठि कहत नित, चित सुन हितकर मान ॥ लाभ राम सुमिरन बड़ो, बड़ी बिसारे हान ॥ २१ ॥ बिगरी जन्म अनेककी, सुधरै अबहीं आजु ॥ होहिरामको रामजपु, तुलसी तजि कुसमाजु ॥ २२ ॥ प्रीति प्रतीति सुरीतिसों, रामनाम जपु राम ॥ तुलसी तेरो है भलो, आदि मध्य परिणाम ॥ २३ ॥ दंपति रस रसना दशन, परिजन बदनसगेह ॥ तुलसी हराहित वरण शिशु, संपति सहज सनेह ॥ २४ ॥ वर्षाऋतु रघुपति भगति, तुलसी शालि सुदास ॥ रामनाम वर, वरण जग, सावन भादौंमास ॥ ॥ २५ ॥ रामनाम नरकेशरी, कनककशिपु कलिकाल ॥ जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालहिंदलि सुरसाल ॥ २६ ॥ रामनाम कलि कामतरु, सकल सुमंगल कंद ॥ सुमिरत करतल सिद्धिसब, पग पग परमानंद ॥ २७ ॥ रामनाम कलि कामतरु, रामभक्ति सुरधेनु ॥ सकल सुमंगल मूल जग, गुरुपद पंकज रेनु ॥ २८ यथा भूमिवश बीजमें, नखत निवास अकाश ॥ रामनाम सब धरममय, जानततुलसीदास ॥ २९ ॥ सकल कामना हीन जे, रामभक्त रसलीन ॥ नामप्रेम पीयूष ह्रद, तिनहुँ किये मनमीन ॥ ३० ॥ ब्रह्मरामते नामबड़, वरदायक वरदान॥ रामचरित शतकोटिमहँ, लिय महेश जियजान॥३१॥ शवरी गीध सुसेवकन, सुगति दीन्हि रघुनाथ ॥ नाम उधारे अमित

खल, वेद विदित गुणनाथ ॥ ३२ रामनाम परतापते, प्रीति प्रतीति भरोस ॥ सोतुलसी सुमिरत सकल, सगुण सुमंगल कोस ॥ ३३ ॥ लंक विभीषण राजकपि, पति मारुत खग मीच ॥ लहीराम सो नामरति, चाहत तुलसी नीच ॥ ३४ ॥ हरन अमंगल अघ अखिल, करन सकल कल्याण ॥ रामनाम नित कहत हर, गावत वेद पुराण ॥ ३५ ॥ तुलसी प्रीति प्रतीतिसों, रामनाम जप जागु ॥ किये होय विधि दाहिनो, देइ अगेही भागु ॥ ३६ ॥ जल थल नभ गति अमित अति, अग जग जीव अनेक ॥ तुलसी तोहिंसे दीनको, रामनाम गति एक ॥ ३७ ॥ राम भरोसो रामबल, रामनाम विश्वास ॥ सुमिरि नाम मंगल कुशल, माँगत तुलसीदास ॥ ३८ ॥ रामनाम रति राम गति, रामनाम विश्वास ॥ सुमिरत शुभ मंगल कुशल, चहुँदिशि तुलसीदास ॥ ३९ ॥ रसना साँपिनि वदनबिल, जे न जपहिं हरिनाम ॥ तुलसी प्रेम न रामसों, ताहि विधाता वाम ॥ ४० ॥ हिय फाटहु फूटहु नयन, जरउ ते तन केहि काम ॥ द्रवहिंश्रवण पुलकहिं नहीं, तुलसी सुमिरत राम ॥ ४१ ॥ रामहिं सुमिरत रण भिरत, देत परत गुरुपाय ॥ तुलसी जिनहिं न पुलकतनु, ते जगजीवत जाय ॥ ॥ ४२ ॥ (सोरठा) ॥ हृदय सो कुलिश समान, जो न द्रवहि हरिगुण सुनत ॥ कर न रामगुण गान, जीह सो दादुर जीह सम ॥ ४३ ॥ श्रवै न सलिल सनेहु, तुलसी सुनि रघुवीर यश ॥ ते नयना जनि देहु, राम करहु वरु आंधरे ॥ ४४ ॥ रहै न जल भरिपूरि, राम सुयश सुन रावरो ॥ तिन आँखिनमें धूरि, भरभर मूठी मेलिये ॥ ४५ ॥ चातक सुमिरत तोहिं, होहिं तिनहिं सन्मुख सदा ॥ क्यों न सम्हारहि मोहिं, दयासिंधु समरत्थके ॥ ४६ ॥ साहिब होत सरोष, सेवकको अपराध सुनि ॥ अपने देखे दोष, राम न कबहूं उरधरे ॥ ४७ ॥ (दोहा) ॥ तुलसी रामहिं आपुते, सेवककी रुचि मीठ ॥ सीतापतिसे साहिबहि, कैसे दीजै पीठ ॥ ४८ ॥ तुलसी जदपि हेयगति, अंतर बाहर दीठ ॥ सो क्यों [illegible] पीठ ॥ ४९ ॥ प्रभु तरुतर कपि डार पर, [illegible] किये आपु समान ॥ तुलसी कहूं न राम सो, साहिब सीलनि-

तजै प्रयाग ॥ तुलसी जो फल सो सुलभ, राम नाम अनुराग ॥ १४ ॥ मीठो अरु कठुवतिभरो, रौताई अरु प्रेम ॥ स्वारथ परमारथ सुलभ, राम नामके प्रेम ॥ १५ ॥ रामनाम सुमिरत सुयश, भाजन भयो कुजात ॥ कुतरुकु सुरपुर राजमग, लहत भुवन विख्यात ॥ १६ ॥ स्वारथ सुख सपनेहुँ अगम, परमारथ परवेश ॥ रामनाम सुमिरत मिटहिं, तुलसी कठिन कलेश ॥ १७ ॥ मोर मोर सब कह कहसि, तूंको कहु निजनाम ॥ कै चुप साधहि सुन समुझि, कै तुलसी जपु राम ॥ १८ ॥ तुम लखु हमहिं हमार लखु, हम हमारके बीच ॥ तुलसी अलखहि का लखहि, रामनाम जपनीच ॥ १९ ॥ रामनाम अवलंब बिनु, परमारथकी आश ॥ वर्षत वारिदबूंद गहि, चाहत चढ़न अकाश ॥ २० ॥ तुलसी हठि हठि कहत नित, चित सुन हितकर मान ॥ लाभ राम सुमिरन बड़ो, बड़ी बिसारे हान ॥ २१ ॥ बिगरी जन्म अनेककी, सुधरै अबहीं आजु ॥ होहिरामको रामजपु, तुलसी तजि कुसमाजु ॥ २२ ॥ प्रीति प्रतीति सुरीतिसों, रामनाम जपु राम ॥ तुलसी तेरो है भलो, आदि मध्य परिणाम ॥ २३ ॥ दंपति रस रसना दशन, परिजन बदनसगेह ॥ तुलसी हरहित वरण शिशु, संपति सहज सनेह ॥ २४ ॥ वर्षाऋतु रघुपति भगति, तुलसी शालि सुदास ॥ रामनाम बर, वरण जग, सावन भादौंमास ॥ ॥ २५ ॥ रामनाम नरकेशरी, कनककशिपु कलिकाल ॥ जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालहिंदलि सुरसाल ॥ २६ ॥ रामनाम कलि कामतरु, सकल सुमंगल कंद ॥ सुमिरत करतल सिद्धिसब, पग पग परमानंद ॥ २७ ॥ रामनाम कलि कामतरु, रामभक्ति सुरधेनु ॥ सकल सुमंगल मूल जग, गुरुपद पंकज रेनु ॥ २८ यथा भूमिवश बीजमें, नखत निवास अकाश ॥ रामनाम सब धरममय, जानततुलसीदास ॥ २९ ॥ सकल कामना हीन जे, रामभक्त रसलीन ॥ नामप्रेम पीयूष ह्रद, तिनहुँ किये मनमीन ॥ ३० ॥ ब्रह्मरामते नामबड़, बरदायक बरदान ॥ रामचरित शतकोटिमहँ, लिय महेश जियजान ॥ ३१ ॥ शवरी गीध सुसेवकन, सुगति दीन्ह रघुनाथ ॥ नाम उधारे अमित

खल, वेद विदित गुणनाथ ॥ ३२ रामनाम परतापते, प्रीति प्रतीति भरोस ॥ सोतुलसी सुमिरत सकल, सगुण सुमंगल कोस ॥ ३३ ॥ लंक विभीषण राजकपि, पति मारुत खग मीच ॥ लहीराम सो नामरति, चाहत तुलसी नीच ॥ ३४ ॥ हरन अमंगल अघ अखिल, करन सकल कल्याण ॥ रामनाम नित कहत हर, गावत वेद पुराण ॥ ३५ ॥ तुलसी प्रीति प्रतीतिसों, रामनाम जप जागु ॥ किये होय विधि दाहिनो, देइ अभागेही भागु ॥ ३६ ॥ जल थल नभ गति अमित अति, अग जग जीव अनेक ॥ तुलसी तोहिंसे दीनको, रामनाम गति एक ॥ ३७ ॥ राम भरोसो रामबल, रामनाम विश्वास ॥ सुमिरि नाम मंगल कुशल, माँगत तुलसीदास ॥ ३८ ॥ रामनाम रति राम गति, रामनाम विश्वास ॥ सुमिरत शुभ मंगल कुशल, चहुँदिशि तुलसीदास ॥ ३९ ॥ रसना साँपिनि बदनबिल, जे न जपहिं हरिनाम ॥ तुलसी प्रेम न रामसों, ताहि विधाता बाम ॥ ४० ॥ हिय फाटहु फूटहु नयन, जरउ ते तन केहि काम ॥ द्रवहिंश्रवण पुलकहिं नहीं, तुलसी सुमिरत राम ॥ ४१ ॥ रामहिं सुमिरत रण भिरत, देत परत गुरुपाय ॥ तुलसी जिनहिं न पुलकतनु, ते जगजीवत जाय ॥ ॥ ४२ ॥ (सोरठा) ॥ हृदय सो कुलिश समान, जो न द्रवहि हरिगुण सुनत ॥ कर न रामगुण गान, जीह सो दादुर जीह सम ॥ ४३ ॥ श्रवै न सलिल सनेहु, तुलसी सुनि रघुबीर यश ॥ ते नयना जनि देहु, राम करहु बरु आंधरे ॥ ४४ ॥ रहै न जल भरिपूरि, राम सुयश सुन रावरी ॥ तिन आँखिनमें धूरि, भरभर मूठी मेलिये ॥ ४५ ॥ बारक सुमिरत तोहिं, होहिं तिनहिं सन्मुख सदा ॥ क्यों न सम्हारहि मोहिं, दयासिंधु समरत्थके ॥ ४६ ॥ साहिब होत सरोष, सेवकको अपराध सुनि ॥ अपने देखे दोष, राम न कबहूं उरधरे ॥ ४७ ॥ (दोहा) ॥ तुलसी रामहिं आपुते, सेवककी रुचि मीठ ॥ सीतापतिसे साहिबहि, कैसे दीजै पीठ ॥ ४८ ॥ तुलसी जाके होयगी, अंतर बाहरदीठ ॥ सोक्यों कृपालुहि देइगो, केवटपालहि पीठ ॥ ४९ ॥ प्रभुतरुतर कपि डार पर, ते किये आपु समान ॥ तुलसी कहूं न राम सों, साहिब शीलनि-

धान ॥ ५० ॥ रेमन सबसों निरसकै, सरस रामसों होहि ॥ भलो सि-
खावन देतहै, निशि दिन तुलसी तोहि ॥ ५१ ॥ हरो चरहिं तापहिं
बरत, फरे पसारहिं हाथ ॥ तुलसी स्वारथ मीत सब, परमारथ रघु-
नाथ ॥ ५२ ॥ स्वारथ सीतारामसों, परमारथ सियराम ॥ तुलसी
तेरो दूसरे, द्वारकहाँ कहु काम ॥ ५३ ॥ स्वारथ परमारथसकल,
सुलभ एकही ओर ॥ द्वार दूसरे दीनता, उचित न तुलसी तोर ॥
॥ ५४ ॥ तुलसी स्वारथ रामहित, परमारथ रघुबीर ॥ सेवक जाके
लषणसे, पवनतनय रणधीर ॥ ५५ ॥ ज्यों जग बैरी मीनको, आपु
सहित परिवार ॥ त्यों तुलसी रघुबीर बिनु, गति आपनी बिचार ॥
॥ ५६ ॥ रामप्रेम बिन दूसरो, रामप्रेमही पीन ॥ रघुवर कबहूँ कर-
हिंगे, तुलसी ज्यों जलमीन ॥ ५७ ॥ राम सनेही रामगति, रामचरण
रतिजाहि ॥ तुलसी फल जग जन्मको, दियो बिधाता ताहि ॥ ५८ ॥
आपु आपनेतें अधिक, जेहि प्रिय सीताराम ॥ तेहिके पगकी पा-
नहीं, तुलसी तनुको चाम ॥ ५९ ॥ स्वारथ परमारथ रहित, सीता-
राम सनेह ॥ तुलसीसो फल चारिको, फल हमार मत एह ॥ ६० ॥
जेजन रूखे विषय रस, चिकने राम सनेह ॥ तुलसी ते प्रिय रामको,
कानन बसहिं कि गेह ॥ ६१ ॥ यथा लाभ संतोष सुख, रघुबर चरण
सनेह ॥ तुलसी ज्यों मन मूढ़सों, जस कानन तस गेह ॥ ६२ ॥ तुल-
सी जोपै रामसों, नाहिंन सहज सनेह ॥ मूड़ मुड़ायो बादिही, भाँड़
भयो तजि गेह ॥ ६३ ॥ तुलसी श्रीरघुबीर तजि, करै भरोसो और ॥
सुख संपतिकी काचली, नरकहु नाहीं ठौर ॥ ६४ ॥ तुलसी परि-
हरि हरि हरहि, पाँवर पूजहिं भूत ॥ अंत फजीहत होहिंगे, ज्यों गणि-
काके पूत ॥ ६५ ॥ सेये सीताराम नहिं, भजे न शंकर गौरि ॥ जन्म
गँवायो बादिही, रटत पराई पौरि ॥ ६६ ॥ तुलसी हरि अपमानतें, हो-
इ अकाज समाज ॥ राजकरत रज मिलगये, सदल सकुल कुरुराज
॥ ६७ ॥ तुलसी रामहिं परिहरे, निपट हानि सुनिबेउ ॥ सुरसरिग-
त सोई सलिल, सुरा सरिस गंगेउ ॥ ६८ ॥ राम दूरि माया बढ़ति,
घटति जान मनमाँह ॥ भूरि होति रवि दूरि लखि, शिरपर पगतर छाँ-
ह ॥ ६९ ॥ साहिब सीतानाथसों, जब घटिहै अनुराग ॥ तुलसी त-

बहीं भालते, भभरि भागिहै भाग ॥ ७० ॥ करिहौ कोशलनाथ तजि, जबहीं दूसरि आस ॥ जहाँ तहाँ दुखपाइहौ, तबहीं तुलसीदास ॥ ७१ ॥ विंधनईंधन पाइये, सागर जुरै न नीर ॥ पड़ै उपास कुबेर घर, जो विपक्ष रघुबीर ॥ ७२ ॥ वर्षाको गोबर भयो, कोचहै कोकरै प्रीति ॥ तुलसी तू अनुभवहि अब, राम विमुखकी रीति ॥ ७३ ॥ सबहि समाथहि सुखदप्रिय, अच्छम प्रिय हितकारि ॥ कबहुँ न काहुहि रामपै, तुलसी कहाँ विचारि ॥ ७४ ॥ तुलसी उद्यम करम-युग, तब जहँ राम सुडीठ ॥ होइ सफल सोइ ताहि सब, सन्मुख प्रभु तन पीठ ॥ ७५ ॥ प्रेमकाम तरु परिहरत, सेवत कलि तरु ठूंठ ॥ स्वारथ परमारथ चहत, सकल मनोरथ झूंठ ॥ ७६ ॥ निज दूपण गुण रामके, समुझे तुलसीदास ॥ होय भलो कलिकालहू, उभय लोक अनयास ॥ ७७ ॥ कै तोहिं लागे रामप्रिय, कै तू प्रभु प्रिय होहि ॥ द्वैमहँ रुचै जो सुगमसो, कीवै तुलसी तोहि ॥ ७८ ॥ तुलसी द्वै महँ एकही, खेल छाँड़ि छल खेलु ॥ कैकरु ममता राम सों, कै ममता परहेलु ॥ ७९ ॥ निगम अगम साहेब सुगम, राम साँचिली चाह ॥ अंबु अशन अवलोकियत, सुलभ सबै जग माह ॥ ८० ॥ सन्मुख आवत पथिक ज्यों, दिये दाहिना बाम ॥ तैसोइ होत सुआपकी, त्योंहीं तुलसीराम ॥ ८१ ॥ रामप्रेम पथपेपिथे, दिये विपय तनुपीठ ॥ तुलसी केंचुलि परिहरे, होत साँपहूंडीठ ॥ ॥ ८२ ॥ तुलसी जौलों विपयकी, सुधामाधुरीमीठ ॥ तौलों सुधा सहस्रसम, रामभगत सुठ सीठ ॥ ८३ ॥ जैसो तैसो रावरो, केवल कोशलपाल ॥ तौ तुलसीको है भलो, तिहूँ लोक तिहुँकाल ॥ ८४ ॥ है तुलसीके एकगुण, अवगुणनिधि कहैं लोग ॥ भलो भरोसो रावरो, राम रीझिबे योग ॥ ८५ ॥ प्रीति राममो नीतपथ, चलियरागरिसजीत ॥ तुलसी संतनके मते, इहै भक्तिकी रीत ॥ ८६ ॥ सत्य वचन मानस विमल, कपटरहित करतूति ॥ तुलसी रघुवर सेवकहि, सकै न कलियुग धूति ॥ ८७ ॥ तुलसी सुख जो रामसो, दुखी सो निज करतूति ॥ करम वचन मन ठीक जेहि, तेहि न सकै कलि धूति ॥ ८८ ॥

नातो नाते रामके, राम सनेह सनेहु ॥ तुलसी माँगत जोरि कर, जन्म जन्म बुधिदेहु ॥ ८९ ॥ सब साधनको एकफल, जेहिजानै सोइ जान ॥ ज्यों त्यों मन मंदिर बसहिं, राम धरे धनु बान ॥९० ॥ जो जगदीश तौ अति भलो, जो महीश तौ भाग॥ तुलसी चाहत जन्मभरि, रामचरण अनुराग ॥ ९१ ॥ परहु नरक फल चार शिशु, मीचु डाँकिनी खाउ ॥ तुलसी राम सनेहको, जो फल सो जरिजाउ॥ ॥ ९२ ॥ हितसों हित रति रामसों, रिपुसों वैर तिहाउ ॥ उदासीन सबसों सरल, तुलसी सहज स्वभाउ ॥ ९३ ॥ तुलसी ममता रामसों, समता सब संसार॥ राग न रोष न द्वेष दुख, दासभये भवभार ॥ ॥ ९४॥ रामहिं डरु करु रामसों, ममता प्रीति प्रतीत ॥ तुलसी निरुपधि रामको, भये हारिहूं जीत ॥ ९५ ॥ तुलसी राम कृपालुसों, कहि सुनाउ गुण दोष ॥ होय दूबरी दीनता, परम पीन संतोष ॥९६॥ सुमिरण सेवा रामसों, साहबसों पहिंचान ॥ ऐसेहु लाभ न ललकजो, तुलसी नित हितहान ॥९७॥ जाने जानत जोइये,बिनु जाने को जान॥ तुलसी यह सुनि समुझि हिय,आनि धरे धनुबान ॥९८॥ करमठ कठमलिया कहै,ज्ञानी ज्ञान विहीन॥तुलसी त्रिपथ विहायगो, रामदुआरे दीन॥९९॥वाधक सब सबके भये,साधक भये न कोइ॥तुलसी राम कृपालुते,भलीहोय सो होइ॥१००॥ शंकरप्रिय ममद्रोही, शिवद्रोही मम दास ॥ ते नर करहिं कलपभरि, घोर नरकमहँ वास ॥१०१ ॥ बिलग बिलग सुख संगदुख, जियन मरण सोइ रीति ॥ रहेते राखे रामके, भयेते उचित अनीति ॥ १०२ ॥ जाय कहब करतूति बिनु, जाय योग बिनुक्षेम ॥ तुलसी जाइ उपाय सब, विना रामपद प्रेम ॥ १०३॥ लोग मगनु सब योगही, योग जाय बिनुक्षेम ॥ त्यों तुलसीके भावगतु, रामप्रेम बिनुनेम ॥ १०४ ॥ रामनिकाई रावरी, है सबहीकी नीक ॥ जो यह साँचीहै सदा, तौ नीको तुलसीक ॥ १०५ ॥ तुलसी राम जो आदरो, खोटो खरो खरोइ ॥ दीपक काजर शिर धरो, धरो सुधरो धरोइ ॥ १०६ ॥ तनु विचित्र कायर वचन, अहि अहार मन घोर ॥ तुलसी हरि भये पक्ष धर, ताते कह सब मोर ॥ १०७ ॥

लहै न फूटीकौड़िहू,को चाहै क्यहि काज ॥ सो तुलसी महँगो कियो, राम गरीबनिवाज ॥ १०८ ॥ घर घर माँगे टूक पुनि, भूपति पूजे पायँ ॥ ते तुलसी सब राम विनु, ते अब राम सहायँ ॥ १०९ ॥ तुलसी राम सुदीठते, निबल होत बलवान ॥ बालि वैर सुग्रीवके, कहा कियो हनुमान ॥ ११० ॥ तुलसी रामहुते अधिक, रामभक्त जिय जान ॥ ऋणियाँ राजा रामसों, धनीभये हनुमान ॥ १११ ॥ कियो सो सेवक धर्म कपि, प्रभुकृतज्ञ जिय जान ॥ जोरि हाथ ठाढ़े भये, वरदायक वरदान ॥ ११२ ॥ भक्तहेतु भगवान प्रभु, राम धरो तनुभूप ॥ किय चरित्र पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप ॥ ११३ ॥ ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया गुण गोपार ॥ सोई सच्चिदानंद घन, करत चरित्र उदार ॥ ११४ ॥ हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान ॥ जेहि मारे सो अवतर्‌यो, कृपासिन्धु भगवान ॥ ११५ ॥ शुद्ध सच्चिदानंद मय, कंद भानु कुलकेतु ॥ चरित करत नर अनुहरत, संसृत सागरसेतु ॥ ११६ ॥ बाल बिभूषण बसनबर, धूरिधूसरित अंग ॥ बालकेलि रघुबर करत, बाल बंधु सब संग ॥ ११७ ॥ अनुदिन अवध बधावने, नितनव मंगल मोद ॥ मुदित मातु पितु लोग लखि, रघुवर बाल विनोद ॥ ११८ ॥ राज अजिर राजत रुचिर, कोशलपालक बाल ॥ जानु पाणि चर चरितवर, सगुण सुमंगल माल ॥ ११९ ॥ नाम ललित लीला ललित, ललित रूप रघुनाथ ॥ ललित बसन भूपण ललित, ललित अनुज शिशुसाथ ॥ १२० ॥ राम भरत लक्ष्मण ललित, शत्रुशमन शुभनाम ॥ सुमिरत दशरथ सुवन सब, पूजहिं सब मनकाम ॥ १२१ ॥ बालक कोशलपालके, सेवक बाल कृपाल ॥ तुलसी मन मानस बसत, मंगल मञ्जुमराल ॥ १२२ ॥ भक्त भूमि भूसुर सुरभि, सुर हित लागि कृपाल ॥ करत चरित धरि मनुज तनु, सुनत मिटाहिं जञ्जाल ॥ १२३ ॥ निज इच्छा प्रभु अवतरैं, सुर गो द्विज हितलागि ॥ सगुण उपासक संगतहँ, रहे मोक्ष सब त्यागि ॥ १२४ ॥ परमानंद कृपायतन, मनपरिपूरणकाम ॥ प्रेमभक्ति अनपावनी, हमहिं देहु श्रीराम ॥ १२५ ॥ वारि मथे घृत

होय वरु, सिकताते वरु तेल ॥ विनु हरि भजन न भवतरै, यह सिद्धान्त अपेल ॥ १२६ ॥ हरिमाया कृत दोष गुण, विनु हरि भजन न जाहिं ॥ भजिय राम सब काम तजि, अस विचारि मनमाहिं॥१२७॥ जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़ै करहि चैतन्य॥ अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य॥१२८॥ श्रीरघुवीर प्रतापते, सिंधु तरे पाषान॥ ते मतिमंद जे रामतजि, भजहिं जाय प्रभु आन ॥ १२९ ॥ लवणमेष परमान युग, वर्षकल्प शरचण्ड ॥ भजहि न मन त्यहि राम कहँ, काल जासु कोदण्ड ॥१३०॥ तब लगि कुशल न जीवकहँ, सपन्यहुँ मन विश्राम॥ जवलगि भजत न रामपद, शोकधाम तजिकाम॥१३१॥ विनुसतसंग न हरिकथा, त्यहि विनु मोह न भाग ॥ मोहगये विनु रामपद, होय न दृढ़ अनुराग ॥१३२॥विनु विश्वासे भक्ति नहिं, तेहि विनु द्रवहिं न राम ॥ रामकृपा विनु सपन्यहुँ, जीव न लह विश्राम ॥ ॥ १३३ ॥ (सोरठा) ॥ अस विचारि मन धीर, तजि कुतर्क संशय सकल ॥ भजहु राम रघुबीर, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥ १३४॥ भाव वश्य भगवान, सुखनिधान करुणाभवन ॥ तजि ममता मदमान, भजिय सदा सीतारमन ॥ १३५॥कहहिं विमल मति सन्त, वेद पराण विचारि सब ॥ द्रवैं जानकीकन्त, तब छूटै संसार दुख ॥ १३६ ॥ विनु गुरु होइ न ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग विनु॥ गावहिं वेद पुरान, सुख कि लहिय हरिभक्ति विनु ॥१३७॥ (दोहा) ॥ रामचंद्रके भजन विनु, जो चह पद निर्वान ॥ ज्ञानवंत अपि सोइ नर, पशु बिन पूँछ वखान ॥१३८॥ जरो सो संपति सदन सुख, सुहृद मातु पितु भाइ॥ विमुखहोत जो रामपद, करै न सहज सहाइ ॥ १३९ ॥ सोइ साधु सुनि समुझि कर, रामभक्ति थिरताइ ॥ लरिकाईको पैरिबो, तुलसी विसरि न जाइ ॥ १४० ॥ सबै कहावत रामके, सबहि रामकी आस ॥ रामकहैं ज्यहि आपनो, त्यहि भजु तुलसीदास ॥ १४१ ॥ ज्यहि शरीर रति रामसों, सोइ आदरैं सुजान ॥ रुद्रदेह तजि नेह वश, वानर भे हनुमान ॥१४२॥ जानि रामसेवा सरस, समुझि करव अनुमान ॥ पुरुखाते सेवकभये, हरते भये हनुमान॥१४३तुल-

सी रघुबर सेवकहि, खल डांडस मन माख॥बाजराजके बालकहि, लवा दिखावत आँख ॥ १४४ ॥ रावण रिपुके दास सों, कायर करहिं कुचालि ॥ खर दूषण मारीच ज्यों, नीच जाहिंगे कालि ॥ १४५ ॥ पुण्य पाप यश अयशके, भावी भाजन भूरि॥ संकट तुलसीदासको रामकरहिंगे दूरि ॥ १४६ ॥ खेलत बालक व्यालसँग, मेलत पावक हाथ ॥ तुलसी शिशु पितु मातु ज्यों, राखत सिय रघुनाथ ॥ ॥ १४७ ॥ तुलसी दिनभल शाहकहँ, भली चोर कहँ राति ॥ निशि बासर ताकहँ भलो, मानै रामइताति ॥ १४८ ॥ तुलसी जनि सुनि समुझिये, कृपासिंधु रघुराज ॥ महँगेमणि कंचन किये, सोधो जग जल नाज ॥ १४९ ॥ सेवा शील सनेह वश, करि परिहरि प्रियलोग ॥ तुलसी ते सब रामसों, सुखद सुयोग वियोग ॥१५०॥ चारि चहत मानस अगम, चनक चारिको लाहु॥चारि परिहरे चारिको, दानि चारि चख चाहु ॥ १५१ ॥ सूधे मन सूधे वचन, सूधी सब करतूति ॥ तुलसी सूधी सकलविधि, रघुबर प्रेम प्रतीति ॥१५२॥ वेषविशद बोलनि मधुर, मन कटु हृदय मलीन ॥ तुलसी राम न पाइये, भये विषय जल मीन॥१५३॥वचन वेषते जो बनै,सो बिगरै परिणाम ॥ तुलसी मन ते जो बनै, बनी बनाई राम ॥१५४ ॥ नीच मीचुलै जाइ जो, राम रजायसु पाइ ॥ तो तुलसी तेरो भलो, नत अनभलो अघाइ॥१५५॥ जातिहीन अवजन्म महि, मुक्तिकीनि असनारि ॥ महामन्द मन सुख चहहिं, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ १५६ ॥ बंधु बधू रत क्यहि कियो, वचन निरुत्तरबालि ॥ तुलसी प्रभु सुग्रीवकी, चितै न कछू कुचालि ॥ १५७ ॥ बाली बलि बलशालि दल, सखा कीन्ह कपिराज ॥ तुलसी राम कृपालु को,विरद गरीबनिवाज ॥ १५८ ॥ कहा विभीषण लै मिलो,कहा बिगारो बालि ॥ तुलसी प्रभु शरणागतहि, सब दिन आयो पालि ॥ १५९ ॥ तुलसी कोशलपालसों, को शरणागत पाल ॥ भज्यो विभीषण वन्धु भय, भंज्यो दारिद काल ॥ १६० ॥ कुलिशहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि ॥ चित खगेश अस रामकर, समुझि परै कहुकाहि॥ १६१ ॥ वल्कल भूषण फल अ-

होय बरु, सिकताते बरु तेल ॥ विनु हरि भजन न भवतरै, यह सि-
द्धान्त अपेल ॥ १२६ ॥ हरिमाया कृत दोष गुण, विनु हरि भजन
न जाहिं ॥ भजिय राम सब काम तजि, अस विचारि मनमाहिं॥१२७॥
जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़ै करहि चैतन्य॥ अस समर्थ रघुनायकहि
भजहिं जीव ते धन्य॥१२८॥ श्रीरघुवीर प्रतापते, सिंधु तरे पाषान॥
ते मतिमंद जे रामतजि, भजहिं जाय प्रभु आन ॥ १२९ ॥ लवणमेघ
परमान युग, वर्षकल्प शरचण्ड ॥ भजहि न मन त्यहि राम कहँ,
काल जासु कोदण्ड ॥१३०॥ तब लगि कुशल न जीवकहँ, सपन्यहुँ
मन विश्राम॥ जबलगि भजत न रामपद, शोकधाम तजिकाम॥१३१॥
बिनुसतसंग न हरिकथा, त्यहि बिनु मोह न भाग ॥ मोहगये विनु
रामपद, होय न दृढ़ अनुराग ॥१३२॥विनु विश्वासे भक्ति नहिं,तेहि
विनु द्रवहिं न राम ॥ रामकृपा बिनु सपन्यहुँ, जीव न लह विश्राम ॥
॥ १३३ ॥ (सोरठा) ॥ अस विचारि मन धीर, तजि कुतर्क संशय स-
कल ॥ भजहु राम रघुवीर, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥ १३४॥ भाव
वश्य भगवान, सुखनिधान करुणाभवन ॥ तजि ममता मदमान, भ-
जिय सदा सीतारमन ॥ १३५॥कहहिं विमल मति सन्त, वेद पराण
विचारि सब ॥ द्रवैं जानकीकन्त, तब छूटै संसार दुख ॥ १३६ ॥
विनु गुरु होइ न ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग विनु ॥ गावहिं वेद पुरान,
सुख कि लहिय हरिभक्ति विनु ॥१३७॥ (दोहा) ॥ रामचंद्रके भजन
बिनु, जो चह पद निर्वान ॥ ज्ञानवंत अपि सोइ नर, पशु बिन पूँछ
बखान ॥१३८ ॥ जरो सो संपति सदन सुख, सुहृद मातु पितु भाइ ॥
विमुखहोत जो रामपद, करै न सहज सहाइ ॥ १३९ ॥ सोइ साधु
सुनि समुझि कर, रामभक्ति थिरताइ ॥ लरिकाईको पैरिबो, तुलसी
बिसरि न जाइ ॥ १४० ॥ सबै कहावत रामके, सबहि रामकी आस ॥
रामकहैं ज्यहि आपनो, त्यहि भजु तुलसीदास ॥ १४१ ॥
ज्यहि शरीर रति रामसों, सोइ आदरै सुजान ॥ रुद्रदेह त-
जि नेह वश, वानर भे हनुमान ॥१४२॥ जानि रामसेवा सरस, समुझि
करब अनुमान ॥ पुरुखाते सेवकभये, हरते भये हनुमान॥१४३तुल-

सी रघुबर सेवकहि, खल ढांढस मन माख॥बाजराजके बालकहि, लवा दिखावत आँख ॥ १४४ ॥ रावण रिपुके दास सों, कायर करहिं कुचालि ॥ खर दूषण मारीच ज्यों, नीच जाहिंगे कालि ॥ १४५ ॥ पुण्य पाप यश अयशके, भावी भाजन भूरि॥ संकट तुलसीदासको रामकरहिंगे दूरि ॥ १४६ ॥ खेलत बालक व्यालसँग, मेलत पावक हाथ ॥ तुलसी शिशु पितु मातु ज्यों, राखत सिय रघुनाथ ॥ ॥ १४७ ॥ तुलसी दिनभल शाहकहँ, भली चोर कहँ राति ॥ निशि बासर ताकहँ भलो, मानै रामइताति ॥ १४८ ॥ तुलसी जनि सुनि समुझिये, कृपासिंधु रघुराज ॥ महँगेमणि कंचन किये, सोधो जग जल नाज ॥ १४९ ॥ सेवा शील सनेह वश, करि परिहरि प्रियलोग ॥ तुलसी ते सब रामसों, सुखद सुयोग वियोग ॥१५०॥ चारि चहत मानस अगम, चनक चारिको लाहु॥चारि परिहरे चारिको, दानि चारि चख चाहु ॥ १५१ ॥ सूधे मन सूधे वचन, सूधी सब करतूति ॥ तुलसी सूधी सकलविधि, रघुबर प्रेम प्रतीति ॥१५२॥ वेषविशद बोलनि मधुर, मन कटु हृदय मलीन ॥ तुलसी राम न पाइये, भये विषय जल मीन॥१५३॥वचन वेषते जो बनै,सो बिगरै परिणाम ॥ तुलसी मन ते जो बनै, बनी बनाई राम ॥१५४ ॥ नीच मीचुलै जाइ जो, राम रजायसु पाइ ॥ तो तुलसी तेरो भलो, नत अनभलो अघाइ॥१५५॥ जातिहीन अवजन्म महि, मुक्तिकीनि असनारि ॥ महामन्द मन सुख चहहिं, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ १५६ ॥ बंधु बधू रत क्यहि कियो, वचन निरुत्तरबालि ॥ तुलसी प्रभु सुग्रीवकी, चितै न कछू कुचालि ॥ १५७ ॥ बाली बलि बलशालि दल, सखा कीन्ह कपिराज ॥ तुलसी राम कृपालु को,विरद गरीबनिवाज ॥ १५८ ॥ कहा विभीषण लै मिलो,कहा बिगारो बालि ॥ तुलसी प्रभु शरणागतहि, सब दिन आयो पालि ॥ १५९ ॥ तुलसी कोशलपालसों, को शरणागत पाल ॥ भञ्ज्यो विभीषण बन्धु भय, भंज्यो दारिद काल ॥ १६० ॥ कुलिशहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि ॥ चित खगेश अस रामकर, समुझि परै कहुकाहि॥ १६१ ॥ वल्कल भूषण फल अ-

शन,बिन शय्या द्रुम प्रीति ॥ तेहि समय लंका दई, यह रघुवरकी रीति ॥ १६२॥ जोसंपति शिव रावणहि, दीन दिये दशमाथ ॥ सोइ संपदा विभीषणहिं, सकुचि दीन रघुनाथ ॥ १६३ ॥ अविचल राज विभीषणहिं, दीन राम रघुराज ॥ अजहुँ विराजत लंकपर, तुलसी सहित समाज ॥ १६४ ॥ कहा विभीषण लै मिल्यो, कहादियो रघुनाथ ॥ तुलसी यह जाने बिना, मूढ मीजिहैं हाथ ॥ १६५ ॥ वैरि बंधु निशिचर अधम, तजो न भरे कलंक ॥ झूंठे अघ सिय परिहरी, तुलसी सोय अशंक ॥ १६६॥ त्यहि समाजकियो कठिनपण, जेहि तौल्यो कैलास ॥ तुलसी प्रभु महिमा कहौं, सेवकको विश्वास ॥ १६७ ॥ सभा सभासद निरखि पट, पकरि उठाये हाथ ॥ तुलसी किये इगारहौं, बसन वेष यदुनाथ ॥ १६८ ॥ त्राहि तीन कहि द्रौपदी, तुलसी राजसमाज ॥ प्रथम बढेपट चित विकल, चहत चकित निजकाज ॥ ॥ १६९ ॥ सुखजीवन सबकोउ चहत, सुखजीवन हरिहाथ ॥ तुलसी दाता माँगन्यो, द्यखियत अबुधअनाथ ॥ १७० ॥ कृपणदेइ पाँइय परो, बिनु साधन सिधिहोय ॥ सीतापतिसंमुख समुझि, जो कीजै शुभसोइ ॥ १७१ ॥ दंडकवन पावन करन, चरण सरोज प्रभाउ ॥ ऊसर जामहि खलतरहि, होइ रंकते राउ ॥ १७२॥ विनहीं ऋतु तरुवर फरहिं, शिला द्रवहिं जलजोर ॥ राम लषण सिय करि कृपा,जब चितवहिं जेहि ओर ॥१७३॥शिला सो तियभइ गिरितरे, मृतक जिये जगजान ॥ राम अनुग्रह शकुन शुभ, सुलभ सकल कल्यान ॥ १७४ ॥ शिलाशापमोचनचरण, सुमिरहु तुलसीदास ॥ तजहु शोच संकट मिटहिं, पूजहिं मनकी आस ॥ १७५ ॥ मरे जिआये भालु कपि, अवध विप्रकोपूत ॥ सुमिरहु तुलसी ताहितू, जाको मारुत दूत॥१७६॥ काल करम गुण दोष जग, जीव तिहारे हाथ ॥ तुलसी रघुवर रावरो, जान जानकी नाथ ॥ १७७ ॥ रोग निकर तनु जरठपन, तुलसी संगको लोग ॥ राम कृपालय पालिये, दीनपालिवे योग ॥ १७८ ॥ मोसम दीन न दीनहित, तुम समान रघुवीर ॥ अस विचारि रघुवंशमणि, हरहु विषम भवभीर ॥ १७९ ॥

भव भुवंग तुलसी नकुल, डसत ज्ञान हरिलेत ॥ चित्रकूट इक औ-षधी, चितवत होत सचेत ॥ १८० ॥ हौंहुँ कहावत सब कहत, राम सहत उपहास ॥ साहब सीताराम सों, सेवक तुलसीदास ॥ १८१ ॥ राम राज राजत सकल, धरम निरत नर नारि ॥ राग न रोष न द्वेष दुख, सुलभ पदारथ चारि ॥ १८२ ॥ रामराज संतोष सुख, घर वन सकल सुपास ॥ सुरतरु तरु सुरधेनु महि, अभिमत भोग बिलास ॥१८३॥खेती बणि विद्या बणिज, सेवा शिल्प सोकाज ॥ तुलसी सु-रतरु सहित सब, सफल रामके राज ॥ १८४ ॥ दंडयतिनकरभेदजहँ, नरतक नृत्य समाज ॥ जीतहु मनहि सुनिय अस, रामचंद्रके राज ॥ १८५॥ कोपे शोचत पोचकर, करिय निहारन काज ॥ तुलसी पर-मित प्रीतिकी, रीते रामके राज ॥१८६ ॥ मुकुर निरखि मुख रामभ्रू, गनत गुणहिं दै दोष ॥ तुलसीसे शठ सेवकनि, लखि जिन परहि सरोष ॥ १८७ ॥ सहसनाम सुनि भनित सुनि, तुलसी वल्लभ नाम॥ सकुचतहिय हँसि निरखि सिय, धरमधुरंधर राम ॥ १८८ ॥ गौतम तिय गति सुरति करि, नहिं परसति पगपानि ॥ हियहर्षै रघुवंशमणि, प्रीति अलौकिकजानि ॥ १८९ ॥ तुलसी बिलसतनखत निशि, श-रद सुधाकर साथ ॥ मुक्ताझालरझलकजनु, राम सुयश शिशुहाथ ॥ ॥ १९० ॥ रघुपति कीरति कामिनी, क्यों कहै तुलसीदास ॥ शरद प्रकाश अकाश छवि, चारुचिबुक तिलजास ॥ १९१ ॥ प्रभु गुणग-ण भूषण बसन, विशद विशेष सुदेश ॥ राम सुकीरति कामिनी, तु-लसी करतब केश ॥ १९२ ॥ रामचरित राकेशकर, सरिस सुखद सब काहु॥सज्जन कुमुद चकोरचित, हित विशेष बड़लाहु॥१९३॥रघु-वरकीरतिसज्जननि, शीतलखलनि सुताति॥ज्यों चकोर चपचक्कवनि, तुलसी चाँदनिराति॥१९४॥रामकथा मंदाकिनी,चित्रकूट चित चारु॥ तुलसी सुभग सनेह वन,सिय रघुवीर विहारु॥१९५॥श्याम सुरभि प-य विशद अति, गुणद करहिं तेहि पान ॥ गिराग्राम सियराम यश, गावहिं सुनहिं सुजान ॥ १९६ ॥ हरि हर यश सुर नर गिरन, वर्णहिं सुकवि समाज ॥ हाटी हाटक घटित चरु, रांधे स्वाद सुनाज ॥१९७॥

तिलपर राख्यो सकल जग, विदित विलोकत लोग ॥ तुलसी महिमा रामकी, कोउ न जानि वियोग ॥ १९८॥ (सोरठा) ॥ रामस्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिपर ॥ अविगति अकथ अपार, नेति नेति नित निगम कह ॥ १९९॥ (दोहा) ॥ मायाजीव स्वभाव गुण, काल करम महदाद ॥ ईश अंकते बढ़त सभ, ईशअंक विनुवाद ॥ २००॥ हित उदास रघुबर विरह, विकल सकल नर नारि ॥ भरत लषण सियगति समुझि, प्रभु चख सदा सुवारि ॥ २०१ ॥ सीय सुमित्रासुवनगति, भरत सनेह सुभाउ ॥ कहिवेको शारद सरस, जनिवेको रघुराउ ॥ २०२ ॥ जानहिं राम न कहि सके, भरत लषण सियप्रीति ॥ सो सुनि समुझि तुलसी कहत, हठ शठताकी रीति ॥ ॥ २०३ ॥ सब बिधि समरथ सकल कहि, सहि शासन दिन राति ॥ भलो निबाहो सुनि समुझि, स्वामिधर्म सब भाँति ॥ २०४ ॥ भरतहि होइ न राजमद, विधि हरि हर पदपाइ ॥ कबहुँक काजी सीकरनि, क्षीरसिंधु विनशाय ॥ २०५ ॥ संपति चकई भरत चक, मुनि आयसु खिलवार ॥ तेहि निशि आश्रमपींजरा, राखे भा भिनुसार ॥ ॥ २०६ ॥ सधन चोर सँग मुदित मन, धनी गहै ज्यों फेंट ॥ त्यों सुग्रीव विभीषणहिं, भई भरतकी भेंट ॥ २०७ ॥ राम सराहे भरत उठि, मिले राम सम जानि ॥ तदपि विभीषणकीशपति, तुलसी गरन गलानि ॥ २०८॥ भरतश्यामतन रामसम, सब गुण रूपनिधान ॥ सेवक सुखदायक सुलभ, सुमिरत सब कल्यान ॥ २०९ ॥ लसत लषण मूरति मधुर, सुमिरहु सहित सनेह ॥ सुखसंपति कीरति विजय, शकुन सुमंगल गेह ॥ २१० ॥ नाम शत्रुसूदन शुभग, सुखमाशील निकेत ॥ सेवत सुमिरत सुलभ सुख, सकल सुमंगल देत ॥ ॥२११॥ कौशल्या कल्याणमय, मूरति करति प्रणाम ॥ शकुन सुमंगल काज शुभ, कृपा करहिं सियराम ॥ २१२॥ सुमिरि सुमित्रानाम जग, जेतिय लेहिं सुनेम ॥ सुवन लषण रिपुदमनसे, पावहिं पति पद प्रेम ॥ २१३ ॥ सीता चरण प्रणामकरि, सुमिरि सुनाम सुनेम ॥ सोतिय होहिं पतिदेवता, प्राणनाथ प्रियप्रेम ॥ २१४ ॥ तुलसी केवल काम-

तरु, रामचरित्र अराम ॥ कलितरु कपि निश्चर कहत, हमहिं किये बिधिबाम ॥ २१५ ॥ मातु सकल सानुज भरत, गुरु पुरलोग सुभाउ ॥ देखत देखत कैकयिहि, लंकापति कपिराउ ॥ २१६ ॥ सहज सरल रघुबर वचन, कुमति कुटिल करि जान ॥ चलै जोंक जल वक्रगति, यद्यपि सलिल समान ॥ २१७ ॥ दशरथ नाम सुकामतरु, फलै सकल कल्यान ॥ धरणि धाम धन धरमसुत, सद्गुण रूपनिधान ॥ ॥ २१८ ॥ तुलसी जान्यो दशरथहि, धर्म न सत्य समान ॥ राम तजे ज्यहि लागि वन, आपु परिहरे प्रान ॥ २१९ ॥ रामविरह दशरथ मरण, मुनिमन अगम सुमीचु ॥ तुलसी मंगल मरण तरु, शुचि सनेह जल सींचु ॥ २२० ॥ (सोरठा) ॥ जीवन मरण समान, जैसे दशरथ रायको ॥ जियत खिलाये राम, रामबिरह तनु परिहरेउ ॥ २२१ ॥ (दोहा) ॥ प्रभुहि विलोकत गीधगति, सिय हित घायल नीचु ॥ तुलसी पाई गीधपति, मुक्ति मनोहर मीचु ॥ २२२ ॥ विरत कर्मरत भरत मुनि, सिद्ध ऊंच अरु नीच ॥ तुलसी सकल सिहात सुनि, गीधराजकी मीच ॥ २२३ ॥ मुये मरत मरिहैं सकल, घरी पहरके बीच ॥ लही न काहू आजुलौं, गीधराजकी मीच ॥ २२४ ॥ मुये मुक्तजवित मुकत, मुकत मुकतहूं बीच ॥ तुलसी सबहीते अधिक, गीधराज की मीच ॥ २२५ ॥ रघुबर बिकल बिहंग लखि, सो बिलोकि दोउ वीर ॥ सिय सुधि कहि सियराम कहि, तजी देह मतिधीर ॥ २२६ ॥ दशरथते दशगुण भगति, सहित तासु कर काजु ॥ शोचत बंधु समेत प्रभु, कृपासिंधु रघुराज ॥ २२७ ॥ केवट निशिचर विहँग मृग, किये साधु सनमानि ॥ तुलसी रघुवरकी कृपा, सकल सुमंगलखानि ॥ ॥ २२८ ॥ मंजुल मंगल मोदमय, मूरति मारुतपूत ॥ सकल सिद्धिकर कमलतल, सुमिरत रघुवर दूत ॥ २२९ ॥ धीर बीर रघुबीर प्रिय, सुमिरि समीर कुमार ॥ अगम सुगम सब काजकर, करतल सिद्धिविचार २३० सुखमुद मंगलकुमुद विधु, शकुन सरोरुह भानु ॥ करहु काज सबसिद्धि शुभ, आनि हिये हनुमानु ॥ २३१ ॥ सकल काज शुभ समउ भल, शकुन सुमंगल जानु ॥ कीरति विजय विभूति भलि, हिय

हनुमानहि आनु ॥ २३२ ॥ शूर शिरोमणि साहसी, सुमति समीरकु
मार ॥ सुमिरत सब सुख संपदा, मुदमंगल दातार ॥ २३३ ॥ तुल-
सी तनु सर सुख जलज, भुजरुजगज बरजोर ॥ दलत दयानिधि दे-
खिये, कपि केशरीकिशोर ॥ २३४ ॥ भुजतरु कोटर रोग अहि,बर-
बश कियो प्रवेश ॥ विहँगराज बाहन तुरत, काढ़िय मिटै कलेश ॥
॥ २३५ बाहु विटप सुख विहंग थल, लगी कुपीर कुआगि ॥ रामकृ-
पा जल सींचिये, वेगिहि दिनहितलागि॥२३६॥ (सोरठा) ॥ मुक्तिज
न्म महि जानि,ज्ञानखानि अघहानि कर ॥ जहँ बस शंभु भवानि,
सोकाशी सेइय कस न ॥ २३७ ॥ जरत सकल सुरवृंद, विषम गरल
जेहि पानकिय ॥ तेहि न भजसि मतिमंद, को कृपालु शंकर सरिस ॥
॥ २३८ ॥ (दोहा) ॥ वासर ढासनिकेढका,रजनीचहुँदिशि चोर ॥
शंकर निज पुर राखिये, चितै सुलोचन कोर ॥ २३९ ॥ अपनीबी-
सीआपुही, पुरिहि लगाये हाथ ॥ क्यहिविधि विनती विश्वकी,
करौंविश्वकेनाथ ॥ २४० ॥ और करे अपराध कोउ, और पाव फल
भोग ॥ अति विचित्र भगवंतगति, कोउ न जानिबे योग ॥ २४१ ॥
प्रेमसरी परपंच रुज,उपजीअधिक उपाधि ॥ तुलसी भलो सबै दई
बेगिबांधिये व्याधि ॥२४२॥हम हमार आचारबड़,भूरिभार धरशीश ॥
हठि शठ परवश परत जिमि, कीर कोश कृमि कीश ॥ २४३॥ क्य-
हि मग प्रविशत जातिकेहि, ज्यों दर्पणमें छांह ॥ तुलसीत्योंजगजीव-
गति, करी जीहकेनांह ॥ २४४ ॥ सुखसागर सुखनीदवश, सपने स-
ब करतार ॥ माया मायानाथकी, को जग जाननहार ॥ २४५ ॥ जी-
व शीव सम सुख शयन, सपने कछु करतूति ॥ जागत दीन मलीन
सोइ, विकल विषाद विभूति॥ २४६॥सपनेहोय भिखारि नृप, रंक ना-
कपति होय ॥ जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जियजोय ॥२४७॥
तुलसी देखत अनुभवत,सुनत न समुझत नीच ॥चपरि चपेटे देत नित,
केशग हेकरमीच॥२४८॥करमखरीकरमोहथल, अंक चराचर जाल ॥
हनत गुनत गनिगुणि हनत, जगतज्योतिषीकाल ॥ २४९ ॥ कहिबे
कहँ रसना रची, सुनिबे कहँ किय कान ॥ धरिके चित हित सहित

सुनि, परमारथहि सुजान ॥ २५० ॥ ज्ञान कहै अज्ञान बिन, तमबि-
नु कहै प्रकाश ॥ निरगुणकहै जो सगुण बिनु, सो गुरु तुलसीदास ॥
॥ २५१ ॥ अंकअगुण आखर सगुण, समुझिय उभय अपार ॥ खो-
ये राखे आप भल, तुलसी चारु विचार ॥ २५२ ॥ परमारथ पहिं-
चानि मति, लसति विषय लपटानि ॥ निकसि चिताते अधजराति,
मानहुँ सती परानि ॥ २५३॥ शीश उघारन किन कहेउ, बरजि रहे
प्रियलोग ॥ घरहीं सती कहावती, जरती नाह वियोग ॥ २५४ ॥
खरि आखरी कपूर सब, उचित न पियतिय त्याग ॥ कैखरिया मोहिं
मेलिकै, विमल विवेक विराग ॥ २५५ ॥ घरकीन्हे घरजातहै, घर-
छांड़े घरजाइ॥ तुलसी घर वन बीचही, राम प्रेमपुर छाइ ॥२५६॥
दियेपीठि पाछे लगै, सन्मुख होत पराय ॥ तुलसी संपति छांह ज्यों,
लखि दिन बैठि गँवाय ॥ २५७ ॥ तुलसी अद्भुत देवता, आशादे-
वी नाम ॥ सेये शोक समर्पई, विमुखभये अभिराम ॥ २५८ ॥ सोई
सेंवर तेइ सुवा, सेवत सदा बसंत ॥ तुलसी महिमा मोहकी, सुनत स-
राहत संत ॥ २५९ ॥ करत न समुझत झूंठ गुण, सुनत होत मति-
रंक ॥ पारद प्रकट प्रपंच मय, सिद्धिहि नाउ कलंक ॥ २६० ॥ ज्ञा-
नी तापस शूर कवि, कोविद गुण आगार ॥ केहिके लोभ विडंबना
कीन्ह न यहि संसार ॥ २६१ ॥ श्रीमद वक्र न कीन केहि, प्रभुता
बधिर न काहि ॥ मृगनयनीके नयन शर, को अस लागि न जाहि ॥
॥ २६२ ॥ व्यापि रहेउ संसार महँ, माया कटक प्रचंड ॥ सेनापति
कामादि भट, दंभ कपट पाषंड ॥ २६३ ॥ तात तीनि अति प्रबल
खल, काम क्रोध अरु लोभ ॥ मुनि विज्ञान सुधाम मन, करहिं नि-
मिषमहँ क्षोभ ॥ २६४ ॥ लोभके इच्छा दंभ बल, कामके के-
वल नारि ॥ क्रोधके परुष वचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि ॥
॥ २६५ ॥ काम क्रोध लोभादिमद, प्रबल मोहके धारि ॥ तिनमहँ
अति दारुण दुखद, मायारूपी नारि ॥ २६६ ॥ कानहिं पावक ज-
रिसकै, का न समुद्र समाइ ॥ का न करै अबला प्रबल, क्यहि जग
काल न खाइ ॥ २६७ ॥ जन्मपत्रिका वर्तिकै, देखहु मनहिं विचारि ॥

दारुण वैरी मीचुके, बीच विराजति नारि ॥ २६८॥ दीपशिखा सम युवतितन, मन जन होसि पतंग ॥ भजहि राम तजि काम मद, करहि सदा सतसंग ॥ २६९ ॥ काम क्रोध मद लोभरत, गृहाशक्त दुखरूप ॥ ते किमि जानहिं रघुपतिहि, मूढ़ परे भवकूप ॥ २७० ॥ गृह गृहीत पुनि वातवश, त्यहि पुनि बीछीमार ॥ ताहि पियाई वारुणी, कहहु कौन उपचार ॥ २७१ ॥ ताहि कि संपति शकुन शुभ, सपनेहु मन विश्राम ॥ भूतद्रोह रत मोहवश, राम विमुख रतिकाम ॥ ॥ २७२ ॥ कहत कठिन समुझत कठिन, साधत कठिन विवेक ॥ होइ घुनाक्षर न्यायजो, पुनि प्रत्यूह अनेक ॥ २७३ ॥ खल प्रवोध जगशोध मन, को निरोध कुल शोध ॥ करहिं ते फोकट पचिमरहिं, सपनेहु सुख न सुवोध ॥ २७४॥ (सोरठा) ॥ कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज संतोष बिनु ॥ चले कि जल बिनु नाव, कोटियतन पचिपचि मरिय ॥ २७५ ॥ सुर नर मुनि कोउनाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल ॥ अस विचारि मनमाहिं, भजिय महामायापतिहि ॥ २७६ ॥ ॥ (दोहा) ॥ एक भरोसो एक बल, एक आश विश्वास ॥ एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास ॥ २७७ ॥ जो घन वरषै समय शिर, जो भरि जन्म उदास ॥ तुलसी याचित चातकहि, तऊ तिहारी आस॥ २७८॥ चातक तुलसीके मते, स्वातिहु पियै न पानि ॥ प्रेमतृषा बाढ़ति भली, घटे घटैगी कानि ॥ २७९ ॥ रटत रटत रसना लटी, तृषा सूखि गये अंग॥ तुलसी चातक प्रेमको, नितनूतन रुचिरंग॥ ॥ २८० ॥ चढ़त न चातक चितकबहुँ, प्रिय पयोदके दोष॥ तुलसी प्रेम पयोधिकी, ताते नाप न जोष ॥ २८१ ॥ बरषि परुष पाहन पयद, पंख करौ टुक टूक ॥ तुलसी परी न चाहिये, चतुर चातकहि चूक ॥ २८२ ॥ उपल बरषि गरजत तरजि, डारत कुलिश कठोर ॥ चितौ कि चातक मेघतजि, कबहुँ दूसरी ओर॥ २८३ ॥ पवि पाहन दामिनि गरज, झरि झकोर खरि खीझि ॥ रोष न प्रीतम दोष लखि, तुलसी रागहिं रीझि ॥ २८४ ॥ मानराखिबो मांगिबो, पियसों नित नव नेहु॥ तुलसी तीनिउ तब फबै, जो चातक मत लेहु॥ २८५॥

तुलसी चातकही फबै, मान राखिबो प्रेम ॥ वक्र बूंद लखि स्वातिहू, निदरि निबाहत नेम ॥ २८६ ॥ तुलसी चातक माँगने, एक २ घनि दानि ॥ देत जो भूभाजन भरत, लेत जो घूंटक पानि ॥ २८७॥ तीनिलोक तिहुँकालमें, चातकहीके माथ ॥ तुलसी जासु न दीनता, सुनी दूसरे नाथ ॥ २८८ ॥ प्रीति पपीहा पैदकी, प्रकट नई पहिंचानि ॥ याचक जगति कनाउड़ो, कियो कनौड़ो दानि ॥ २८९ ॥ नहिं याचत नहिं संग्रही, शीशनाइ नहिंलेइ ॥ ऐसे मानिहि मांगनेहि, को वारिद बिनदेइ ॥ २९०॥ किन किन ज्यायो जगतमें, जीवत दायकदानि ॥ भयो कनौड़ो याचकहि, पयद प्रेम पहिचानि ॥ ॥ २९१ ॥ साधन सांसत सब सहत, सबहिं सुखद फल लाहु ॥ तुलसी चातक जलदकी, रीति बूझि बुधकाहु ॥ २९२ ॥ चातक जीवन दायकहि, जीवन समय सुरीति ॥ तुलसी अलख न लखिपरै, चातक प्रीति प्रतीति ॥ २९३ ॥ जीव चराचर जहँलगे, है सबको हित मेह ॥ तुलसी चातक मन बस्यो, घनसों सहज सनेह ॥ २९४ ॥ डोलत विपुल विहंग वन, पियत पोषरिन वारि ॥ सुयश धवल चातक नवल, तुही भुवन दशचारि ॥ २९५ ॥ मुख मीठे मानस मलिन, कोकिल मोर चकोर ॥ सुयश धवल चातक नवल, रह्यो भुवन भरितोर ॥ २९६ ॥ वास वेष बोलनि चलनि, मानस मंजु मराल ॥ तुलसी चातक प्रेमकी, कीरति विशद विशाल ॥ २९७ ॥ प्रेम न परखिय पुरुष पन, पयद सिखावन एह ॥ जग कहै चातक पातकी, ऊसर बरपै मेह ॥ २९८ ॥ होइ न चातक पातकी, जीवन दानि न मूढ़ ॥ तुलसी गति प्रहलादकी, समुझि प्रेमपयगूढ ॥ २९९ ॥ गरज आपनी सबनको, गरज करत उर आनि ॥ तुलसी चातक चतुरभो, याचक जानि सुदानि॥३००॥चरग चंगु गत चातकहि, नेम प्रेमकी पीर ॥ तुलसी परवश हाड़पर, परिहै पुहुमी नीर ॥ ३०१ ॥ बध्यो बधिक परचो पुण्यजल, उलटि उठाई चोंच ॥ तुलसी चातक प्रेम पट, मरतहु लगी न खोंच ॥३०२॥ अंडफोरि कियो चेटुवा, तुप परो नीर निहारि ॥ गहि चंगु-

ल चातक चतुर, डारयो बाहिर वारि ॥ ३०३ ॥ तुलसी चातक देख शिख, सुतहि बारही बार ॥ तात न तर्पण कीजिये, बिना वारि-धरधार ॥ ३०४ ॥ (सोरठा) ॥ जियत न नाई नारि, चातकवनतजि दूसरहि ॥ सुरसरिहूंकी वारि, मरत न माँगेउ अरध जल ॥ ३०५ ॥ सुनरे तुलसी दास, प्यास पपीहहि प्रेमकी ॥ परिहरि चारिउमास, जो अँचवै जल स्वातिको ॥ ३०६ ॥ याचै बारहमास, पियै पपीहा स्वातिजल ॥ जान्यो तुलसीदास, जोगवत नेही नेहमन ॥ ३०७ ॥ तुलसीके मत चातकहि, केवल प्रेमपियास॥ पियत स्वातिजल जा-नजग, याचक बारहमास ॥ ३०८ ॥ आलवाल मुक्ताहलनि, हिय सनेह तरु मूल ॥ होइ हेतु चित चातकहि, स्वाति सलिल अनुकूल ॥ ३०९ बिबिरसना तनु श्यामहैं, वंक चलनि विषखानि ॥ तुलसी यश श्रवणनि सुन्यो, शीश समरप्यो आनि ॥ ३१० ॥ उष्णकाल अरुदेहषित, मगपंथी तन ऊख ॥ चातक बतियाँ ना रुची अन जल सींचे रूख ॥ ३११ अन जल सींचे रूखकी, छायाते वरु घाम ॥ तुलसी चातक बहुतहै, यह प्रवीनको काम ॥ ३१२ ॥ एक अंग जो सनेहता, निशि दिन चातकनेह ॥ तुलसी जासों हितलगै, वहि अहार वो देह ॥ ३१३ ॥ आपु व्याधको रूपधरि, कुहौ कुरंगहि राग ॥ तुलसी जो मृगमन मुरै, परै प्रेम पट दाग ॥ ३१४ ॥ तुलसी मणिनि-ज द्युति फणिहि, व्याधहि देउ दिखाय ॥ बिछुरत होइ न आँधरो, ताते प्रेम न जाय ॥ ३१५ ॥ जरत तुहिन लखि वनजवन, रविदै पी-ठि पराउ ॥ उदय विकश अथवत सकुच, मिटै न सहज सुभाउ ॥ ॥ ३१६ ॥ देउ आपने हाथ जल, मीनहि माहुर घोरि ॥ तुलसी जिय जो वारिविनु, तौ तुदेहि कविखोरि ॥ ३१७ ॥ मकर उरग दादुर कमठ, जलजीवन जलगेह ॥ तुलसी एकै मीनको, है साँचिलो सनेह ॥ ॥ ३१८ ॥ तुलसी मिटै न मारिमिटेहु, साँचो सहज सनेह ॥ मोर शिखाविनु मूरिहू, गरजत पलुहत मेह ॥ ३१९ सुलभ प्रीति प्रीतम सबै, कहत करत सब कोइ ॥ तुलसी मीन पुनीतते, त्रिभुवन बड़ो न कोइ ॥ ३२० ॥ तुलसी जप तप नेम व्रत, सब

सबहीते होइ ॥ लहै बड़ाई देवता, इष्ट देव जब होइ ॥ ३२१ ॥ कुदिन हितूसों हित सुदिन, हित अनहित किन होइ ॥ शशि छवि हर रविसदन तउ, मित्र कहत सब कोइ ॥ ३२२ ॥ कै लघु कै बड़मीत भल, सम सनेह दुखसोइ ॥ तुलसी ज्यों घृत मधु सरिस, मिले महाविषहोइ ॥ ३२३ ॥ मान्यमीतसों सुख चहै, सो न छुये छलछाँह ॥ शशि त्रिशंकु कैकयी गति, लखि तुलसी मन माँह ॥ ३२४ ॥ कहीं कठिन कृत कोमलहुँ, हित हठि होइ सहाइ ॥ पलक पानि पर ओड़िअत, समुझि कुवाइ सुवाइ ॥ ३२५ ॥ तुलसी वैर सनेह दोउ, रहित विलोचन चारि ॥ सुरहिं सेवरा आदरहिं, निंदहिं सुरसरि वारि ॥ ३२६॥ रुचै मांगनेहि मांगिबो, तुलसी दानिहि दातु ॥ आलस अनख न आचरज, प्रेम पिहानी जातु ॥ ३२७॥ अमिय गारि गारेउ गरल, मारि करे करतार ॥ प्रेम वैर कीजननि युग, जानहि वधन गँवार ॥३२८॥ सदा न जे सुमिरत रहहिं,मिलिन कहैं प्रियवैन ॥ तेपै तिन्हके जायवर, जिनके हिये न नैन ॥ ३२९॥ हित पुनीत सब स्वारथहि, अरि अशुद्ध बिनु चांड ॥ निजमुख माणिक सम दशन, भूमि परेते हांड॥३३०॥ माखी काक उलूक वक, दादुरसे भयेलोग ॥ भले ते शुक पिक मोरसे, कोउ न प्रेमपथ योग ॥ ३३१॥ हृदय कपट वर वेपधरि, वचन कहैं गढ़ि छोलि॥ अबके लोग मयूरज्यों,क्यों मिलिये मन खोलि ॥ ३३२ ॥ चरण चोंच लोचन रँगो,चलो मराली चाल ॥ क्षीर नीर विवरन समै, बक उघरत तेहिकाल ॥ ३३३ ॥ मिलै जो सरलहि सरलह्वै, कुटिल न सहज विहाइ ॥शीत हेतु ज्यों वक्रगति, व्याल न विलै समाइ ॥३३४॥ कृपधन सखहि न देवदुख, मुयहु न मांगव नीच॥ तुलसी सज्जनकी रहनि, पावक पानी वीच ॥ ३३५ ॥ संग सरल कुटिलहि भये, हरि हर करहिं निवाहु ॥ ग्रहगनती गनि चतुरविधि, कियो उदर बिनु राहु ॥ ३३६ ॥ नीच निचाई नहिं तजै, सज्जनहूके संग ॥ तुलसी चंदन विटप वसि, बिनु विप भये न भुअंग॥३३७॥ भलो भलाई पै लहै, लहै निचाई नीच ॥ सुधासराही अमरता, गरल सराही मीच ॥ ३३८ ॥

मिथ्या माहुर सज्जनहि, खलहि गरल सम सांच ॥ तुलसी छुवत पराइ ज्यों, पारद पावक आंच ॥ ३३९ ॥ संत संग अपवर्ग कर, कामी भवकर पंथ ॥ कहहिं साधु कवि कोविद, श्रुति पुराण सदग्रंथ ॥ ३४०॥ सुकृत न सुकृती परिहरै, कपट न कपटी नीच ॥ मरत सिखावन सोदियो, गीधराज मारीच ॥ ३४१ ॥ सुतरु सुजन वन ऊष सम, खल टंकिकारुखान ॥ परहित अनहित लागि सब, सासति सहत समान ॥ ३४२ ॥ पिअहिं सुमन रस अलि विटप, काटि कोलि फल खात ॥ तुलसी तरु जीवै युगल, सुमति कुमति की बात ॥ ३४३ ॥ अवसर कौड़ी जो चुकै, बहुरिदियेका लाख ॥ दुइज न चंदा देखिये, उदय कहा भरिपाख ॥ ३४४ ॥ ज्ञान अनभलेको सबहि, भलो भलेहू काउ ॥ सींग शूंड़ रद लूम नख, करत जीव जड़ घाउ ॥ ३४५ ॥ तुलसी जगजीवन अहित, कतहूं कोउ हितजानि ॥ शोषक भानु कृशानु महि, पवन एक वनदानि ॥ ३४६ ॥ सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल ॥ जहँ तहँ काक उलूक बक, मानस सुकृत मराल ॥ ३४७॥ जलचर थलचर गगनचर, देव दनुज नर नाग ॥ उत्तम मध्यम अधम खल, दश गुण बढ़त विभाग ॥ ॥ ३४८ ॥ बलि मिस देखे देवता, करमिस मानव देव ॥ मुये मार अविचारहत, स्वारथ साधन एव ॥ ३४९ ॥ सुजन कहत भल पोच पथ, पाप न परखे भेद ॥ कर्मनाश सुरसरित मिस, विधि निषेध वद वेद ॥ ३५० ॥ माणि भाजन मधु पारई, पूरण अमी निहारि ॥ का छांडिय का संग्रही, कहहु विवेक विचारि ॥ ३५१ ॥ उत्तम मध्यम नीचगति, पाहन शिकता पानि ॥ प्रीति परीक्षा तिहुँनकी, वैर विति-क्रम जानि ॥ ३५२ ॥ पुण्य प्रीति पति प्रापतिउ, परमारथ पथ पांच ॥ लहहिं सुजन परिहरहिं खल, सुनहु सिखावन सांच ॥ ३५३ ॥ नीच निरादरहीसुखद, आदर सुखद विशाल ॥ कदली बदली विटप गति, पेखहु पनस रसाल ॥ ३५४ ॥ तुलसी अपनो आचरण, भलो न लागत कासु ॥ तेहि न बसात जो खात नित, लहसुनहूको बासु ॥ ३५५ ॥ बुधसों विवेकी विमलमति, जिनके रोष न राग ॥ सुहृद

सराहत साधु जेहि, तुलसी ताको भाग ॥ ३५६ ॥ आपु आपुकहँ सब भलो, आपनकहँ कोइ कोइ ॥ तुलसी सबकहँ जो भलो, सुजन सराहिय सोइ ॥ ३५७॥ तुलसी भलो सुसंगते, पोच कुसंगति होइ ॥ नाउ किन्नरी तीर असि, लोह बिलोकहु लोइ ॥ ३५८ ॥ गुरुसंगति गुरु होइ सो, लघु संगति लघु नाम ॥ चार पदारथमें गनै, नेकद्वारहूं काम ॥ ३५९ ॥ तुलसी गुरु लघुता लहत, लघु संगति परिनाम ॥ देवी देव पुकारियत, नीच नारि नर नाम ॥ ३६० ॥ तुलसी किये कुसंगथिति, होइ दाहिनो बाम ॥ कहि सुनि सकुचिय सूम खल, गत हरि शंकर नाम ॥ ३६१ ॥ बसि कुसंग चह सुजनता, ताकी आश निरास ॥ तीरथहूको नाम भो, गया मगहके पास ॥ ३६२ ॥ राम कृपा तुलसी सुलभ, गंग सुसंग समान ॥ जोजल परै जो जन मिलै, कीजै आपु समान ॥ ३६३ ॥ ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुयोग सुयोग॥ होइ कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्षण लोग ॥३६४॥ जन्म योगमैं जानियत, जग विचित्र गतिदेखि ॥ तुलसी आखर अंकरस,रंग विभेद विशेखि ॥ ३६५ ॥ आखर जोरि विचार करु, सुमति अंक लिखि लेखु ॥ योग कुयोग सुयोग मय, जगगति समुझि विशेखु ॥ ३६६ ॥ करु विचार चलु सुपथ भल, आदि मध्य परिनाम ॥ उलटे जपै जरामरा, सूधे राजा राम ॥ ३६७ ॥ होइ भलेके अभलो, होइ दानिके सूम ॥ होइ कुपूत सुपूतके, ज्यों पावकमें धूम ॥ ३६८ ॥ जड़ चेतन गुण दोष मय, विश्व कीन्ह करतार ॥ संतहं गुण गहहिंपै, परिहरि वारि विकार ॥ ३६९ ॥ ॥ (सोरठा) ॥ पाट कीटते होइ, ताते पाटंबर रुचिर ॥ कृमि पालै सबकोइ, परम अपाब प्राणसम ॥ ३७० ॥ (दोहा) ॥ जो जो जेहि जेहि रसमगन, तहँ सो दित मन मानि ॥ रसगुण दोष विचारिबो, रसिकरीति पहिंचानि ॥ ३७१ ॥ सम प्रकाश तम पाख दुहु, नाम भेद विधि कीन्ह ॥ शपोपक शोपक समुझि, जगयश अपयश दीन्ह ॥ ३७२ ॥ लोकहूं लोदगी, नाम भलेको पोच ॥ धर्मराज यमराज पवि, कहत सम न शोच ॥ ३७३ ॥ विरुचि परखियहि सुजनजन,

राखिपराखि यह मंद ॥ बड़वानल शोपत उदधि, हर्ष बढ़ावत चंद ॥ ३७४ ॥ प्रभु सम्मुख भय नीच नर, निपट तोत विकराल ॥ रवि रुख लखि दर्पण फटिक, उगिलत ज्वालाजाल॥३७५॥ प्रभु समीप गत सुजन जन, होत सुखद सु विचारि ॥ लवण जलधि जीवन जलद, वर्षत सुधा सुवारि ॥ ३७६ ॥ नीच निरावहिं निरसतरु, तुलसी सींचहिं ऊख ॥ पोषत पयद समान सब, विष पियूषके रूख ॥ ३७७ ॥ बर्षि विश्व हर्षित करत, हरत ताप अघ प्यास ॥ तुलसी दोष न जलदको, जो जल जरै जवास ॥ ३७८ ॥ अमरदानि याचक मरहिं, मरि मरि फिरि फिरि लेहिं ॥ तुलसी याचक पातकी, दातहि दूषण देहिं ॥ ३७९ ॥ लखि गयंद लै चलहिं भाजि, श्वान सुखानो हाड़ ॥ गज गुण मोल अहार बल, महिमा जानकि राड़ ॥ ३८० ॥ के निदरहु कै आदरहु, सिंहहिं श्वान सियार ॥ हर्ष विषाद न केशरिहि. कुंजर गंजनिहार ॥ ३८१ ॥ ठाढ़ो द्वार न देसकै, तुलसी जे नरनीच ॥ निंदहिं बलि हरिचंदको, काकियो करण दधीच ॥ ३८२ ॥ ईश शीश विलसत विमल, तुलसी तरल तरंग ॥ श्वान सरावगके कहे, लघुता लहे न गंग ॥ ३८३ ॥ तुलसी देवल देवकी, लागे लाख करोरि ॥ काक अभागे हगि भरचो, महिमा भई कि थोरि ॥३८४॥ निजगुण घटत न नागनग, परखि परिहरत कोल ॥ तुलसी प्रभु भूषणकिये, गुंजा बढ़ै न मोल ॥ ३८५ ॥ राकापति पोड़श उवहिं, तारागण समुदाइ ॥ सकल गिरिन दव लाइये विनु रवि राति न जाइ ॥ ३८६ ॥ भलो कहै विन जानेहिं, विनु जाने अपवाद ॥ तेनर गादुर जानि जिय, करिय न हर्ष विषाद॥३८७॥ परसुख संपति देखि सुख, जरहिं जेजड़ विनु आगि ॥ तुलसी तिनके भागते, चलै भलाई भागि ॥ ३८८ ॥ तुलसी जे कीरति चहहिं, परकी कीरति खोइ ॥ तिनके मुँहमसि लागिहै, मिटिहि न मरिहैं धोय ॥ ३८९ ॥ तनु गुण धन महिमा धरम, जेहि विनु जो अभिमान ॥ तुलसी जियत विडंवना, परिणामहि गतजान ॥ ३९० ॥ सासु श्वशुर गुरु मातु पितु, प्रभु भयो चहै सबकोइ ॥ होनो दूजी ओरको,

सुजन सराहिय सोइ ॥३९१॥ शठ सहि सांसति पति लहत, सुजन कलेश न काय॥ गढ़ि गुढ़ि पाहन पूजिये,गंडकि शिलासुभाय ३९२ बड़े विबुध दरबारते, भूमि भूप दरबार॥ जापक पूजक पेखियत; सहत निरादर भार ॥ ३९३ ॥ बिनु प्रपंच छल भीख भलि, लहिय न किये कलेश ॥ बावन बलिसों छल कियो, दियो उचित उपदेश ॥ ॥ ३९४ ॥ भलो भलेसों छलकिये, जन्म कनोड़ो होइ ॥ श्रीपति शिर तुलसी लसति, बलि बावनगति सोइ ॥ ३९५ ॥ विबुध काज बावन बलिहिं,छलो भलो जिय जानि॥ प्रभुता तजि वश भे तदपि, मन की गई न ग्लानि ॥ ३९६ ॥ सरल वक्रगति पंचग्रह, चपरि न चितवत काहु ॥ तुलसी सूधे शूर शशि, समय विडंबित राहु ॥३९७॥ खल उपकार विकार फल, तुलसी जान जहान ॥ मेंढुक मर्कट वनिक बक, कथा सत्य उपखान ॥ ३९८ ॥ तुलसी खल वाणी मधुर सुनि समुझिय हिय हेरि॥ रामराज बाधक भई, मूढ़ मंथरा चेरि ॥ ॥ ३९९ ॥ जोंक सूधि मन कुटिलगति, खल विपरीति विचारु ॥ अनहित सो नित सोषसो, सोहित शोषनहारु ॥ ४०० ॥ नीच गुणी ज्यों जानिबो, सुनि लखि तुलसीदास ॥ ढीलि दिये गिरिपरतमहि, खैंचत चढ़त अकास ॥ ४०१ ॥ भर दर वर्षत कोशशत, बचै जे बूंद बराइ ॥ तु[illegible]ता त्यों खल वचन शर, हिये गये न पराइ ॥ ॥ ४०२ ॥ पेरत कोल्हू मेलितिल, तिली सनेहीजानि ॥ देखि प्रीतिकी रीति यह,अब देखिवीरिसानि॥४०३॥ सहवासी काचोगिलहि,पुरजन पाक प्रवीन ॥ कालक्षेप केहि मिल करहिं, तुलसी खग मृग मीन ॥ ४०४ ॥ जासु भरोसे सोइये, राखि गोदपर शीश ॥ तुलसी तासु कुचालते, रखवारो जगदीश ॥ ४०५ ॥ मारि खोजलहि सोहकरि, करि मत लाज न त्रास ॥ मुये नीचते मीचविनु, जे इनके विश्वास ॥ ॥ ४०६ ॥ परद्रोही परदार रत, परधन पर अपवाद ॥ तेनर पांवर पापमय, देह धरे मनुजाद ॥ ४०७ ॥ वचन वेष क्यों जानिये, मन मलीन नरनारि ॥ शूर्पणखा मृग पूतना, दशमुख प्रमुख विचारि ॥ ४०८ ॥ हँसनि मिलनि बोलनि मधुर, कटु करतब मन

माँह ॥ छुवत जो सकुचै सुमति सो, तुलसी तिन्हकी छाँह ॥४०९॥ कपटसार सूची सहस, बाधि वचन परवास, कियो दुराउ चहैं चातुरी सो शठ तुलसीदास॥४१०॥वचन विचार अचार तन, मन करतव छल छूति ॥ तुलसी क्यों सुख पाइये, अंतर्य्यामिहि धूति ॥ ४११ ॥ शारदूलको स्वांगकर, कूकरकी करतूति ॥ तुलसी तापर चाहिये, कीरति विजय विभूति ॥ ४१२ ॥ बडेपाप बाढ़े किये, छोटे किये लजात ॥ तुलसी तापर सुख चहत,विधिसों बहुत रिसात ॥४१३॥देश काल करता करम, वचन विचार विहीन ॥ ते सुरतरु तर दारिदी, सुरसरि तीर मलीन ॥ ४१४ ॥ साहसहीके कोपवश, किये कठिन परिपाक ॥शठ संकट भाजन भये, हठि कुजाति कपि काक ॥ ॥ ४१५ ॥ राजकरत बिनु काजही, करै कुलालि कुसाज ॥ तुलसी ते दशकंध ज्यों, जैहैं सहित समाज ॥ ४१६ ॥ राज करत बिनु काजही, ठटहिंजे कूरकुठाट ॥ तुलसी ते कुकुराज ज्यों, जैहैं बारहबाट ॥ ४१७ ॥ सभा सुयोधनकी शकुनि, सुमति सराहन योग ॥ द्रोण विदुर भीषम हरिहि, कहैं प्रपंची लोग ॥ ४१८ ॥ पांडुसुवनकी सदसिते, नीको रिपु हित जानि ॥ हरि हर सम सब मानियत, मोह ज्ञानकी बानि ॥ ४१९ ॥ हितपर बढ़ै विरोध जब, अनहित पर अनुराग ॥ राम विमुख विधि वामगति,सगुण अघाय अभाग॥४२०॥ सहज सुहृद गुरु स्वामि शिख, जो न करै शिरमानि ॥ सो पछताय अघाय उर, अवशि होइ हितहानि ॥ ४२१ ॥ भरुहाये नट भाटके, चपरि चढ़े संग्राम ॥ कै वै भाजे आयहैं, कै बांधे परिणाम ॥ ॥४२२॥लोकरीति फूटी सहै,आंजीसहै न कोइ ॥ तुलसी जो आंजी सहै,सो आँधरो न होइ॥४२३॥भागेभल आड़ेहु भलो, भलो न घाले घाउ ॥ तुलसी सबके शीशपर, रखवारो रघुराउ ॥ ४२४ ॥ सुमति विचारहिं परिहरहिं, दल सुमनहुँ संग्राम ॥ सकुलगये तनु बिनुभये, साखी यादौ काम ॥ ४२५ ॥ कलह न जानब छोट करि, कलह कठिन परिणाम ॥ लगति अगिन लघु नीच गृह, जरत धनिक धन धाम ॥ ४२६ ॥ रोष क्षमाके दोष गुण, सुनि मनु मानहिं शीख ॥

अविचल श्रीपति हरिभये, भूसुर लहे न भीख ॥ ४२७ ॥ कौरव पांडव जानिये, क्रोध क्षमाके सीम ॥ पांचहि मारि न सौ सके सवो सँहारे भीम॥४२८॥वोल न मोटे मारिये,मोटी रोटी मारु॥ जीति सहस समहारिवो,जीते हारि निहारु ॥४२९॥जो परिपायँ मनाइये तासों रूठि विचारि ॥ तुलसी तहाँ न जीतिये, जहँ जीतेहू हारि ॥ ॥ ४३० ॥जूझेते भल बूझिवो, भली जीतिते हारि ॥ डहकेते डहकाइवो, भलो जो करिय विचारि ॥ ४३१ ॥ जा रिपुसों हारेहु हँसी जिते पाय परितापु ॥ तासों रारि विचारिये, समय सम्हारे आपु ॥ ॥ ४३२ ॥ जो मधु मरै न मारिये, माहुर देइ जु काउ ॥ जगजित हारे परशुधर, हारि जिते रघुराउ४३३ वैर मूल हरहित वचन,प्रेममूल उपकार ॥ दोहा शुभ संदोहसो, तुलसी किये विचार ॥ ४३४ ॥ रोष न रसना खोलिये, वरु खोलिय तरवारि॥ सुनत मधुर परिणाम हित, वोलिय वचन विचारि ॥ ४३५ ॥ मधुर वचन कटु वोलिवो, विनु श्रम भाग अभाग ॥ कुहू कुहू कलकंठरव, काका कररत राग ॥ ४३६ ॥ पेट न फूलत विनु कहे, कहत न लागे ढेरु ॥ सुमति विचारे वोलिये, समुझि कुफेर सुफेरु ॥ ४३७॥ छिद्यो न तरुणि कटाक्ष शर, करेउ न कठिन सनेहु ॥ तुलसी तिनकी देहकी, जगत कवच करिलेहु ॥ ४३८ ॥ शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावहिं आपु ॥ विद्यमान रण पाय रिपु, कायर करहिं प्रलापु ॥ ४३९॥ वचन कहे अभिमानके, पारथ पेपत सेतु ॥ प्रभु तिय लूटत नीच नर, जय न मीचु तेहि हेतु ॥४४०॥ राम लषण विजयी भये, वनहु गरीव निवाज॥मुखर वालि रावण गये, वरही सहित समाज॥४४१॥ खग मृग मीत पुनीत किय, वनहु राम नयपाल॥ कुमति वालि दशकंठ घर, सुह्रद वंधुकिये काल ॥४४२॥ लखय अवाने भूख ज्यों, लखै जीतिमें हारि ॥ तुलसी सुमति सराहिये, मग पग धरै विचारि ॥ ॥ ४४३ ॥ लाभ समयको,पालिवो, हानि समयकी चूक ॥ सदा विचारहिं चारुमति, सुदिन कुदिन दिनदूक ॥ ४४४ ॥ सिंधुतरण कपि गिरिहरण, काज साईं हित दोउ॥ तुलसी सम यहि सव वड़ो,वू-

ज्ञत कहुँ कोउ कोउ ॥ ४४५ ॥ तुलसी मीठी अमीते, मांगी मिलै जो मीच ॥ सुधा सुधाकर समय विनु, कालकूटते नीच ॥ ४४६॥तुलसी असमयके सखा, धीरज धर्म विवेक ॥ साहित साहस सत्यव्रत, राम भरोसो एक ॥ ४४७ ॥ समरथ कोउ न रामसों, सीय हरण अपराधु ॥ समयहि साधे काज सब, समय सराहहिं साधु ॥ ४४८ ॥ तुलसी तीरहुके चले, समय पाइवीथाइ ॥ धाइ न जाइ थहाइबी, सर सरिता अवगाह ॥ ४४९ ॥ तुलसी जसि भवितव्यता, तैसी मिलै सहाय ॥ आपु न आवै ताहिपै, कि ताहि तहाँ लै जाय ॥ ४५० ॥ कैजुझिबो, कैबूझिबो, दान कि काय कलेश ॥ चारि चारु परलोक पथ, यथायोग उपदेश ॥ ४५१ ॥ पात पातको सींचिबो, नकरु सरग तरु हेत ॥ कुटिल कटुक फर फरैगो, तुलसी करत अचेत ॥ ४५२ ॥ गाठिबँधते परतीति बड़ि, जेहि सबको सबकाज ॥ कहब थोर समुझब बहुत, गाड़े बढ़त अनाज ॥ ४५३ ॥ अपनो ऐपन निजहथा, तिय पूजहिं लिखभीत ॥ फलै सकल मनकामना, तुलसी प्रीति प्रतीत ॥ ४५४ ॥ वर्षत कर्षत आपुजल, हर्षत अर्वनि भानु॥ तुलसी चाहत साधु सुर, तब सनेह सनमानु॥४५५॥ श्रुति गुणकर गुण पुजुगमृग, है रेवती सखाउ ॥ देहि लेहि धन धरणिधरु, गयेहु न जाइहि काउ ॥ ४५६ ॥ ऊगुन पूगुन विरज क्रम, आभ अमूगुण साथ॥हरो धरो गाड़ो, दियो, धन फिर चढ़ै न हाथ॥ ॥ ४५७ ॥ रवि हर दिशि गुणरस नयन, मुनि प्रथमादिक वार ॥ तिथि सब काज नशावनी, होइ कुयोग विचार ॥ ४५८ ॥ शशि सर नव दुइ छद शकुन, मुनिफल वसु हर भानु ॥ मेषादिक क्रमते गनहि, घात चंद्र जिय जानु ॥ ४५९ ॥ नकुल सुदरशन दरशनी, क्षेमकरी चखचाख ॥ दश दिशि देख न शकुनशुभ, पूजहि मन अभिलाप ॥ ४६० ॥ सुधा साधु सुरतरु सुमन, सफल सुहावनि बात॥ तुलसी सीतापति भगति,शकुन सुमंगल सात॥४६१॥ भरत शत्रुसूदन लषण, सहित सुमिरि रघुनाथ ॥ करहु काज शुभ साजसब, मिलहि सुमंगल साथ ॥ ४६२ ॥ राम लषण कौशिक स-

हित, सुमिरहु करहु पयान ॥ लक्षलाभ लै जगत यश, मंगल शकुन प्रमान ॥ ४६३ ॥ अतुलित महिमा वेदकी, तुलसी किये विचार ॥ जो निन्दित निन्दित भयो, विदित बुद्ध अवतार ॥४६४ ॥ बुध किसान सरवेद निज, मतेखेत सब सींच ॥ तुलसी कृषि लखि जानिबो, उत्तम मध्यम नीच ॥४६५॥ सहि कुबोल सांसति सकल, अँगइ अनट अपमान ॥ तुलसी धर्म न परिहरिय कहिकरि गये सुजान ॥ ४६६ ॥ अनहित भय परहित किये, पर अनहित हितहानि ॥ तुलसी चारु विचारभल, करिय काज सुनिजानि ॥ ४६७ ॥ पुरुषारथ पूरब करम परमेश्वर परधाम ॥ तुलसी पैरत सरित ज्यों, सबहि काज अनुमान ॥ ४६८ ॥ चलब नीति मग राम पग, नेह निबाहब नीक ॥ तुलसि पहिरिय सो बसन, जो न पखारे फीक ॥ ४६९ ॥ दोहा चारु विचारु चलु, परिहरि वाद विवाद ॥ सुकृतसींव स्वारथ अवधि, परमारथ मर्य्याद ॥ ४७० ॥ तुलसीसो समरथ सुमति सुकृती साधु सयान ॥ जो विचारि व्यवहरइजग, खरच लाभ अनुमान ॥ ॥ ४७१ ॥ जाइ योग जग क्षेमविनु, तुलसीके हित राखि ॥ विनु ऽपराध भृगुपति नहुष, वेनु बकासुर साखि ॥ ४७२ ॥ बढ़ि प्रतीत गठि बंधते, बड़ो योग ते क्षेम ॥ बड़ो सुसेवक सांइते, बड़ो नेमते प्रेम ॥ ४७३ ॥ शिष्य सखा सेवक सचिव, सुतिय सिखावन साँच॥ सुनि समुझहु पुनि परिहरिय, परम निरंजन पाँच ॥ ४७४ ॥ नारि नगर भोजन सचिव, सेवक सखा अगार ॥ सरस परिहरे रंगरस; निरस विषाद विकार ॥ ४७५ ॥ टूटहिं निजरुचि काजकरि, रूठहिं काज विगारि ॥ तीय तनय सेवक सखा, मनके कंटक चारि ॥४७६॥ दीरघ रोगी दारिदी, कटुवच लोलुप लोग ॥ तुलसी प्राण समानते, होइँ निरादर योग ॥ ४७७ ॥ पाही खेती लगन वढ़, ऋणकुब्याज मग खेत ॥ वैर बढ़े सो आपने, किये पाँच दुख हेत ॥ ४७८ ॥ धाय लगै लोहा ललकि, खीचि लेइ नइ नीचु ॥ समरथ पापीसों वयर, जानि बिसाही मीचु ॥ ४७९ ॥ शोचिय गृही जो मोहवश, करै कर्मपद त्याग ॥ सोचिय यती प्रपंच रत, विगत विवेक विराग ॥ ४८० ॥

तुलसी स्वारथ सामुहो, परमारथ तनु पीठि ॥ अंध कहे दुख पाइहैं, डिठियारो केहि डीठि ॥ ४८१ ॥ बिनु आँखिनकी पानहीं, पहिचान त लखिपाइ ॥ चारिनयनके नारि नर, सूझत मीच न माइ ॥ ४८२ ॥ जोपै मूढ़ उपदेशको, होतो योग जहान ॥ क्यों न सुयोधन बोधकै, आये श्यामसुजान ॥ ४८३ ॥ (सोरठा) ॥ फूलै फरै न बेत, यदपि सुधा वर्षहिं जलद ॥ मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलैं विरंचि शिव ॥ ४८४ ॥ (दोहा) ॥ रीझि आपनी बूझपर, खीझ विचार विहीन ॥ ते उपदेश न मानहीं, मोह महदोधि मीन ॥ ४८५ ॥ अनुसमुझे अनशोचनो, अवशि समुझि अहि आपु ॥ तुलसी आपु न समुझिये, पलपलपर परितापु ॥ ४८६ ॥ कूप खनत मंदिर जरत, आये धारि बबूर ॥ बबहिं नवहिं निज काज शिर, कुमति शिरोमणि कूर ॥ ४८७ ॥ निडर ईशते बीसके, बीसबाहु सो होइ ॥ गयो गयो कहै सुमतिसब, भयो कुमति कह कोइ ॥ ४८८ ॥ जो सुनि समुझि अनीतिरत, जागतरहै जुसोइ ॥ उपदेशिबो जगाइबो, तुलसी उचित न होइ ॥ ४८९ ॥ बहुसुख बहुरुचि बहु वचन, बहु अचार व्यवहार ॥ इनको भलो मनाइबो, यह अज्ञान अपार ॥ ॥ ४९० ॥ लोगनि लोभ मनाइबो, भलो होनकी आश ॥ करत गगनको गेंडुआ, सो शठ तुलसीदास ॥ ४९१ ॥ अपयशयोग कि जानकी, मणिचोरी कब कान्ह ॥ तुलसी लोग रिझाइबो, कर्षि कातिबो नान्ह ॥ ४९२ ॥ तुलसी जुपै गुमानको, होतो कछू उपाउ ॥ तौ कि जानिकिहि जानिजिय, परिहरते रघुराउ ॥ ४९३ ॥ माँगि मधुकरी खातते, सोवत गोड़ पसारि ॥ पाय प्रतिष्ठा बढ़िपरी, ताते बाढ़ी रारि ॥ ४९४ ॥ तुलसी भेड़ीकी धसनि, जड़ जनता सनमान ॥ उपजतही अभिमानभा, खोवत मूढ़ अयान ॥ ४९५ ॥ लही आँखि कब आँधरे, बाँझ पूत कब ल्याय ॥ कब कोढ़ी काया लही, जग बहराइच जाइ ॥ ४९६ ॥ तुलसी निर्भय होत नर, सुनियत सुरपुर जाइ ॥ सो गति देखियत अछत तनु, सुख संपति गतिपाइ ॥ ४९७ ॥ तुलसी तोरत तीरतरु, बकहित हंस विडारि ॥ बिगत नलिन अलि मलिन जल, सुरसरिहूं बढ़ियारि ॥ ४९८ ॥ अधिकारी सब औसरा, भ-

लेउ जानिबे मंद ॥ सुधासदन बसुबारहो, चउथिव चउथो चंद ॥
॥ ४९९ ॥ त्रिविध एक विधि प्रभु अनुग, अवसर कराहिं कुठाट ॥
सूधे टेढ़े सम विषम, सब महँ बारहबाट ॥ ५०० ॥ प्रभुते प्रभु गुण
दुखद लखि, प्रजहिं सँभारे राउ ॥ करतेहोत कृपाणकी, कठिन घोर
घन घाउ ॥ ५०१ ॥ ब्यालहुते विकराल बड़, ब्यालफेन जिय जा-
नु ॥ ओहके खाये मरतहै, उहखाये बिनु प्रान ॥ ५०२ ॥ कारण
से कारज कठिन, होइ दोष नाहिं मोर ॥ कुलिश अस्थिते उपलते,
लोह कराल कठोर ॥५०३॥काल बिलोकत ईश रुख,भानुकाल अनु-
हारि ॥रविहि राउ राजहि प्रजा, बुध व्यवहरहिं विचारि ॥ ५०४ ॥ यथा
कमल पावन पवन, पाइ कुसंग सुसंग ॥ कहिअ कुवास सुवास तिमि,
काल महीश प्रसंग ॥५०५॥ भलेहु चलत पथपोचभय, नृपति योग
नय नेम ॥ सुतिय सुभूपति भाषियत, लोह पवारितहेम ॥ ५०६ ॥
माली भानु किसानसम, नीति निपुण नरपाल ॥ प्रजा भागवश रो-
हिंगे, कवहुँ कवहुँ कलिकाल ॥ ५०७ ॥ वर्षत हर्षत लोग सब, कर्षत
लखै न कोइ ॥ तुलसी प्रजा सुभागते, भूप भानु सो होइ ॥ ५०८ ॥
सुधासुनाज कुनाज फल, आम अशन सम जानि ॥ सुप्रभु प्रजाहि-
त लेहिकर, सामादिक अनुमानि ॥ ५०९ ॥ पाके पकये विटपदल
उत्तम मध्यम नीच ॥ फल नरलहैं नरेशत्यों, करि विचार मनवीच
॥ ५१० ॥ रीझि खीझि गुरुदेत शिख, सखा सुसाहब साध ॥ तोरि
खाय फलहोइ भल, तरुकाटे अपराध ॥ ५११ ॥ धरणि धेनु चारित
चरित, प्रजासु बच्छ पन्हाइ॥ हाथ कछू नहिं लागि है, किये गोडकी
गाइ ॥ ५१२ चढ़े वधूरे चंग ज्यों, ज्ञान ज्यों शोक समाज ॥ कर्म
धर्म सुख संपदा, त्यों जानिबे कुराज ॥ ५१३ ॥ कंटक करि करि
परत गिरि, शाखा सहस खजूरि ॥ मरहिं कुनृप करि करि कुनप
सो कुचाल भव भूरि ॥ ५१४ ॥ काल तोपची तुपक महि, दारू
अनय कराल ॥ पाप पलीता कठिन गुरु, गोला पुहुमीपाल ॥
॥ ५१५ ॥ भूमि रुचिर रावण सभा, अंगद पदमहिपाल ॥ धर्म रा-
वणहि सीयबल, अचल होत शुभकाल ॥ ५१६ ॥ प्रीति रामपद

नीतिरत, धर्म प्रतीति सुभाइ ॥ प्रभुहि न प्रभुता परिहरे, कवहुँ वचन मन काइ ॥ ५१७ ॥ करके कर मनुके मनाहिं, वचन वचन गुणजानि ॥ भूपहि भूलि न परिहरे, विजय विभूति सयानि ॥ ॥ ५१८ ॥ गोली वाण सुमंत्र शर, समुझि उलटि मन देखु ॥ उत्तम मध्यम नीच प्रभु, वचन विचारि विशेखु ॥ ५१९ ॥ शत्रु सयानो सलिल ज्यों, राखि शीश रिपुनाउ ॥ बूडत लखि पगडगत लखि, चपरि चहूँदिशि धाउ ॥ ५२० ॥ रैयतराज, समाज घर, तन धन धर्म सुभाहु ॥ शांत सुसचिवन सौंपि सुख, विलसहिं नित नरनाहु ॥ ५२१॥ मुखिया मुखसों चाहिये, खान पानको एक॥पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ॥ ५२२ ॥ सेवक कर पद नयनसे, मुखसों साहव होइ ॥ तुलसी प्रीति कि रीति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ ॥ ५२३ ॥ मंत्री गुरु अरु वैद्यजो, प्रिय बोलहिं भय आश ॥ राज धर्म तन तीनिकर, होइ वेगहीनाश ॥ ५२४ ॥ रसना मंत्री दशन जन, तोष पोष निज काज॥प्रभु करसेन पदादिका, वालक राज समाज ॥ ५२५ ॥ लकड़ी डौआ करछुली, सरस काज अनुहारि॥ सु प्रभु संगृहहि परिहरहि, सेवक सखा विचारि ॥५२६ ॥ प्रभु समीप छोटे बड़े,निबल होत बलवान ॥ तुलसी प्रकट विलोकिये, कर अँगुली अनुमान ॥५२७॥ साहिवते सेवक बड़ो, जो निज धर्म सुजान ॥ राम बाँधि उतरे उदधि, लाँघि गये हनुमान ॥ ५२८ ॥ तुलसी भल बरतरु बढ़त, निज मूलहि अनुकूल ॥ सबहिभाँति सबकहँ सुखद, दलनि फलनि विनुफूल ॥ ५२९ ॥ सवन सगुण सधरम सगन, सबल समाइ महीप॥ तुलसी जे अभिमानबिनु, ते त्रिभुवनके दीप ॥ ५३० ॥ तुलसी निजकरतूति बिनु, मुक्त जात जब कोइ ॥ गयो अजामिल लोकहरि, नाम सक्यो नाहिं धोइ ॥ ५३१ ॥ बड़ो गहेते होत बड़, ज्यों वावनकर दंड ॥ श्रीप्रभुके संगसो बढ़ी, गयो अखिलब्रह्मंड ॥ ५३२ ॥ तुलसी दान जो देतहैं, जलमें हाथ उठाय ॥ प्रतिगृही जीवै नहीं, दाता नरकै जाय ॥ ५३३ ॥ आनन छोड़ो साथ जब, तादिन हितू न कोइ ॥ तुलसी अंबुज अंबुबिन,-

तरणि तासु रिपुहोइ ॥ ५३४ ॥ उरबी परि कुलहीनहै, ऊपर कला प्रधान ॥ तुलसी देखु कलापगति, साधन धर्म पहिंचान ॥ ५३५ ॥ तुलसी संगति पोचकी, सुजन होति भयदानि ॥ योहरि रूप सुताहिते, कीनोगो हरिआनि ॥ ५३६ ॥ कलि कुचालि शुभगति हरणि, सरलै दंडै चक्र ॥ तुलसी यह निश्चय भई,बाढ़ीलेत न वक्र ॥५३७॥ गोखग खेखग वारिखग, तीनों माह विशेक ॥ तुलसीपीवैफिरिचलै, रहै फिरै सँग एक ॥ ५३८ ॥ साधन समय सु सिद्धिलहि, उभै मूल अनुकूल ॥ तुलसी तीनिउ समयसम, ते महिमंगल मूल ॥ ५३९ ॥ मातु पिता गुरु स्वामि शिख, शिरधरि करहिं सुभाय ॥ लहेउ लाभ तिन जन्मकर, न तरु जन्म जग जाय ॥ ५४० ॥ अनुचित उचित विचारतजि, जेपालहिं पितुवैन ॥ तेभाजन सुख सुयशके, वसहिं अमरपति ऐन ॥ ५४१ ॥ (सोरठा)॥ सहज अपावनिनारि, पति सेवत शुभगति लहै ॥ यश गावत श्रुति चारि, अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥ ५४२ ॥ (दोहा)॥ शरणागत कहँ जे तजहिं, निज अनहित अनुमानि ॥ तेनर पाँवर पापमय, तिन्हैं विलोकत हानि ॥ ॥ ५४३ ॥ तुलसी तृण जल कूलको, निर्धन निपट निकाज ॥ कै राखै कै सँग चलै, बाँह गहेकी लाज ॥ ५४४ ॥ रामायण अनुहरत शिख, जगभयो भारत रीति ॥ तुलसी शठकी को सुनै, कलिकुचालि परप्रीति ॥ ५४५ ॥ पातपातके सींचवे, वरी वरीके लोन ॥ तुलसी खोटे चतुरपन, कलिडहके कहु कौन ॥ ५४६ ॥ प्रीति सगाई सकल गुण, वणिज उपाय अनेक ॥ कलवल छल कलिमल मलिन, डहकत एकहि एक ॥ ५४७ ॥ दंभ सहित कलिधर्म सब, छल समेत व्यवहार ॥ स्वारथ सहित सनेह सब, रुचि अनुहरत अचार ॥ ५४८ ॥ चोर चतुर वटपार नट, प्रभु प्रिय भरुआ भंड ॥ सब भक्षक परमार्थी, कलि सुपंथ पापंड ॥ ५४९ ॥ अशुभ वेष भूषण धरैं, भक्ष अभक्ष जे खाहिं ॥ ते योगी ते सिद्धनर, पूजित कलियुग माहिं ॥ ५५० ॥ (सोरठा)॥ जे अपकारी चार, तिनकर गौरव

मान्य तेइ ॥ मन वच कर्म लवार, ते वक्ता कलिकाल महँ ॥५५१॥ (दोहा)॥ ब्रह्मज्ञान विनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात ॥ कौड़ी लागिते मोहवश, करहिं विप्र गुरु घात ॥ ५५२ ॥ बादहिं शूद्र द्विजनसन, हम तुमते कछु घाटि? ॥ जानहिं ब्रह्मसो विप्रवर, आँखि दिखावहिं डाटि ॥ ५५३ ॥ साखी शबदी दोहरा, कहि कहनी उपखान ॥ भगति निरूपहिं भगतकलि, निंदहिं वेद पुरान ॥ ५५४ ॥ श्रुति संमत हरि भक्तिपथ, संयुत विरति विवेक ॥ तेहि परिहरहिं विमोहवश, कल्पहिं पंथ अनेक ॥ ५५५ ॥ सकल धर्म विपरीत कलि, कल्पित कोटि कुपंथ ॥ पुण्य पराय पहारवन, दुरेपुराण शुभग्रंथ ॥ ५५६ ॥ धातुवाद निरुपाधि सब, सदगुरु लाभ सुमीत ॥ देव दरश कलिकालमें, पोथिन दुरे सभीत ॥ ५५७ ॥ सुरसदननि तीरथ पुरनि, निपट कुचालि कुसाज ॥ मनहुँ मवासे मारिकलि, राजत सहित समाज ॥ ५५८ ॥ गौड़ गँवार नृपाल महि, यमन महा महिपाल ॥ साम न दाम न भेदकलि, केवल दंडकराल॥५५९॥फोरहिं शिर लोढ़ासदन, लागे अढुक पहार॥कायर कूर कुपूत कलि, घर घर सहस डहार ॥ ५६० ॥ प्रगट चारि पद धर्म के, कलिमहँ एक प्रधान ॥ येनकेन विधि दीन्हहूं, दान करै कल्यान ॥ ५६१ ॥ कलियुग सम युग आननहिं, जो नर कर विश्वास ॥ गाइरामगुण गुण विमल, भवतर विनहिं प्रयास॥ ५६२॥ श्रवण घटहु पुनि दृगघटहु, घटौ सकल बलदेह ॥ इतेघटे घटिहै कहा, जो न घटै हरिनेह ॥ ५६३ ॥ तुलसी पावसके समय, धरी कोकिलन मौन ॥ अबतौ दादुर बोलिहैं, हमैं पूछिहै कौन ॥ ५६४ ॥ कुपथ कुतर्क कुचालि कलि, कपट दंभ पापंड ॥ दहन रामगुण ग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड ॥ ५६५ ॥ (सोरठा)॥ कलि पापंड प्रचार,प्रबल पाप पाँवर पतित ॥ तुलसी उभै अधार, रामनामसुरसरि सलिल ॥ ५६६ ॥(दोहा)॥ रामचंद्र मुख चंद्रमा, चित चकोर जब होइ॥ राम राज सब काजशुभ, समय

सुहावन सोइ ॥ ५६७ ॥ बीजराम गुणगण नयन, जल अंकुर पुलकालि ॥ सुकृती सुतन सुखेत वर, बिलसत तुलसी शालि ॥५६८॥ तुलसी सहित सनेहनित, सुमिरहु सीताराम ॥ शकुन सुमङ्गल शुभसदा, आदि मध्य परिनाम ॥ ५६९ ॥ पुरुषारथ स्वारथ सकल परमारथ परिनाम॥सुलभ सिद्धि सबसाहिबी, सुमिरत सीताराम५७० मणिमय दोहा दीप जहँ, उरघर प्रगटप्रकाश ॥ तहँ न मोह मय तम तमी, कलिकज्जलीविलाश ॥ ५७१ ॥ का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिये साँच ॥ काम जु आवै कामरी, का लै करै कुमाच ॥ ५७२ ॥ मणि माणिक महँगी कियो, सहगोतृण जल नाज ॥ तुलसी एहे जनिये, रामगरीब नेवाज ॥ ५७३ ॥

इति श्रीगोसाईं तुलसी दासकृत
दोहावलीसंपूर्णम्.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना
खेमराज श्रीकृष्णदास
श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना बंबई.

इति

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

दोहावली समाप्त ॥

श्रीगणेशायनमः ।

कवित्तावली रामायण ।

जिसको

प्राचीन प्रख्यात कवि श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजीने
परम मनोहर लोकहितार्थ सुललित कवित्तोंमें
रामायणका ज्ञान, भक्ति, करुणा, वीररसादि
वर्णन किया ।

वही

खेमराज-श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५२ शके १८१७

श्रीरामदरशन ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत-
कवित्तरामायण ।

बालकाण्ड ।

अवधेशके द्वारे सकारेगई सुतगोदकै भूपतिलै निकसे ॥ अवलोकिहौं सोचविमोचनको ठगिसीरहि जे नठगे धिकसे ॥ तुलसी मनरंजन रंजितअंजन नयन सुखंजन जातकसे ॥ सजनी शशिमें समशील उभै नवनील सरोरुहसे विकसे ॥ १ ॥ पगनूपुर औ पहुँची करकंजनि मंजुवनी मणिमालहिये ॥ नवनीलकलेवर पीत झँगा झलकें पुलकें नृप गोदलिये ॥ अरविंदसों आनन रूपमरंद अनंदित लोचन भृंगपिये ॥ मनमें न वस्यौ असवालक जो तुलसी जगमें फल कौन जिये ॥ २ ॥ तनकी द्युति श्यामसरोरुह लोचन कंजकि मंजुलताई हरैं ॥ अतिसुंदर सोहत धूरिभरे छविभूरि अनंगकी दूरि धरैं ॥ दमकैंदँतियाँ द्युति दामिनि जौं किलकैं कलवाल विनोदकरैं ॥ अवधेशके वालक चारि सदा तुलसीमनमंदिरमें विहरैं ॥ ३ ॥ कवहूं शशि मागत आरिकरैं कवहूं प्रतिविंव निहारिडरैं ॥ कवहूं करताल वजाइकै नाचत मातुसबै मनमोद भरैं ॥ कवहूँ रिसिआइ कहैं हठिके पुनिलेत सोई जेहि लागि अरैं ॥ अवधेशकेवालक चारि सदा तुलसी मनमंदिरमें विहरैं ॥ ४ ॥ वरदंतकि पंगति कुंदकली अधराधर पल्लव खोलनकी ॥ चपला चमकै घनबीच जगै छवि मोतिन माल अमोलनकी ॥ घुंघुरारिलटैं लटकैं मुखऊपर कुंडललोल कपोलनकी ॥ निवछावरि प्राणकरै तुलसी वलिजाउँ लला इन वोलनकी ॥ ५ ॥ पदकंजनि मंजुवनी पनहीं धनुहीं शर पंकजपाणि लिये ॥ लरिका सँग खेलत डोलतहैं सरयूतट चौहट हाटहिये ॥ तुलसी अस

बालकसोंनहिंनेह कहा जप योग समाधिकिये ॥ नरते खर शूकर श्वानसमान कहौ जगमें फल कौन जिये ॥ ६ ॥ सरयूवर तीरहितीर फिरैं रघुवीर सखा अरु वीरसवै ॥ धनुहीं करतीर निषंगकसे कटि पीतदुकूल नवीन फवै ॥ तुलसी त्यहिऔसर लावणता दशचारि तौ तीनि इकीस सवै ॥ मति भारति पंगुभई जो निहारि विचारि फिरी उपमान फवै॥७॥(कवित्त) ॥छोनीमेकेछोनीपति छाजै तिन्हें छत्रछाया छोनीछोनी छाएछिति आए निमिराजके॥ प्रवलप्रचंड वरवंड वरवेषवपु वरवेको बोले वैदेही वरकाजके ॥ बोले वंदीविरद वजाइ वर वाजनेऊ वाजे वाजे वीरबाहु धुनतसमाजके ॥ तुलसीमुदितमन पुरनर नारि जेते वारवारहेरैं मुख अवधमृगराजके ॥ ८॥ सीयके स्वयंवर समाज जहाँ राजनके राजनके राजा महाराजा जान नामको ॥ पवन पुरंदर कृशानु भानु धनदसे गुणकेनिधान रूपधाम सोमकामको ॥ वाण बलवान यातुधानपति सारिखेसे जिन्हके गुमान सदा सालिमसंग्रामको ॥ तहाँ दशरत्थके समर्थनाथ तुलसीके चपरि चढायो चापचंद्रमा ललामको ॥९॥ मयनमहन पुरदहन गहनजानि आनिकैसवै को सार धनुषचढ़ायोहै॥ जनकसदसि जेते भलेभले भूमिपाल किये वलहीन वल आपनो वढ़ायोहै ॥ कुलिशकठोर कूर्म पीठते कठिन अति हठिन पिनाक काहू चपरि चढ़ायोहै॥ तुलसी सो रामके सरोजपाणि परसेते टूट्यौ मानों वारते पुरारिहीं पढ़ायोहै ॥१०॥ (छप्पय) डिगति उर्वि अतिगुर्वि सर्वपर्वै समुद्रसर ॥ व्यालवधिर त्यहि काल विकल दिगपाल चराचर ॥ दिगगयंद लरखरत परत दशकंध मुक्खभर ॥ सुरविमान हिमवान भानुसंघटित परस्पर ॥ चौंके विरंचि शंकर सहित कोल कमठ अहि कलमल्यौ ॥ ब्रह्मांड खंडकियो चंडधुनि जवहिं राम शिवधनु दल्यौ ॥ ११ ॥ (घनाक्षरी) ॥ लोचनाभिराम घनश्याम रामरूप शिशु सखीकहैं सखीसोंतु प्रेमपय पालिरी॥वालक नृपालजूके ख्यालही पिनाक तोर्यौ मंडलीकमंडली प्रतापदाप दालिरी ॥ जनकको सियाको हमारो तेरो तुलसीको सवको भावतो ह्वैहै मैंजो कह्यो कालिरी॥कौशिला की

कोखि परतोषि तन वारियेरी रायदशरत्थकी बलाय लीजे आलिरी ॥ १२ ॥ दूब दधि रोचना कनकथार भरिभरि आरती सँवारि वर नारि चलीं गावतीं ॥ लीन्हे जयमाल करकंज सोहै जानकीके पहिरावो राघोजीको सखियां सिखावतीं ॥ तुलसी मुदितमन जनक नगरजन झांकतीं झरोखेलागीं शोभा रानी पावतीं ॥ मनहुँ चकोरी चारु बैठीं निजनिज नीड चंदकी किरण पीवें पलकैं न लावतीं ॥ ॥ १३ ॥ नगर निसान वर बाजें व्योम दुंदुभी विमान चढ़गान कैकै सुरनारि नाचहीं ॥ जयजयतिहूं पुर जयमाल रामउर बरषै सुमन सुर रूरेरूप राचहीं ॥ जनकको पण जयौ सभको भावतो भयो तुलसी मुदित रोम रोम मोदमाचहीं ॥ साँवरो किशोर गोरी शोभापर तृणतोरि जोरी जियौ युगयुग युवतिजन यांचहीं ॥ १४ ॥ भले भूप कहत भले भदेस भूपनिसों लोकलखि बोलिये पुनीत रीतिमारषी ॥ जगदंबा जानकी जगतपितु रामभद्र जानिजिय जोहो जो न लागे मुँह कारषी ॥ देखेहैं अनेक व्याह सुनेहैं पुराणवेद बूझेहैं सुजान साधु नर नारि पारषी ॥ ऐसे समसमधी समाज ना विराजमान रामसे न वर दुलही न सीय सारषी ॥ १५ ॥ वाणी विधि गौरी हर शेषहूं गणेश कही सहीभरी लोमश भुशुंडि बहुवारिपो ॥ चारिदश भुवन निहारि नर नारि सब नारदको परदा न नारदसो पारिपो ॥ तिनकही जगमें जगमगति जोरी एक दूजीको कहैया औ सुनैया चपचारिषो ॥ रामरमारमण सुजान हनुमान कही सीयसी न तीय न पुरुप रामसारिपो ॥ १६ ॥ (सवैया) ॥ दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सियसुंदर मंदिरमाहीं ॥ गावतिगीत सभैमिलि सुंदरि वेद युवायुव विप्र पढ़ाहीं ॥ रामकोरूप निहारति जानकी कंकणके नगकी परछाहीं ॥ याते सबै सुधिभूलिगई करटेकिरही पलटारति नाहीं ॥ १७ ॥ (कवित्त) ॥ भूपमंडलीप्रचंड चंडीशको दंडखंड्यौ चंडबाहुदंडजाको ताहीसों कहतहौं ॥ कठिन कुठार धार धरिवेकी धीरताहि वीरता विदित ताकी देखिए चहतुहौं ॥ तुलसी समाज राज तजिसो विराजै आजु गाज्यौ मृगराज गजराज

ज्यों गहतुहौं॥छोनीमैं न छाँड्यो छप्यो छोनिपको छोना छोटो छोनि-प छपन बांको बिरुद बहतुहौं ॥ १८ ॥ निपट निदरि बोले वचन कुठारपानि मानी त्रास औनिपन मानो मौनता गही ॥ रोषमाखे लषण अकनि अनखाहि बातैं तुलसी विनीत वाणी बिहँसि ऐसी कही ॥ सुयश तिहारे भरे भुवनानि भृगु तिलक प्रगट प्रताप आपु कहो सो सबै सही ॥ टूट्यो सो न जुरैगो शरासन महेशजी-को रावरी पिनाकमैं सरीकता कहांरही ॥१९॥ (सवैया) ॥ गर्भके अर्भक काटनको पटु धार कुठार कराल है जाको ॥ सोई हौं बूझत राजसभा धनुके दलिहैं दलिहौं बल ताको ॥ लघु आनन उत्तर देत बड़े लरिहैं मरिहैं करिहैं कछु साको ॥ गोरो गरूर गुमान भ-र्यौ कहो कौशिक छोटोसो ढोटोहै काको ॥ ॥ २० ॥ (घनाक्षरी) ॥ मख राखिवेके काज राजा मेरे संग दये दले यातुधान जे जितैया विबुधेशके ॥ गौतमकी तीय तारी मेटे अघ भूरि भारी लोचन अ-तिथि भए जनक जनेशके॥चंड बाहुदंड बल चंडीशको दंड खंड्यौ ब्याही जानकीजी ते नरेश देश देशके ॥ साँवरे गोरे शरीर धीर महा वीर दोऊ नाम राम लषण कुमार कोशलेशके ॥ २१ ॥ (सवैया)॥ काल कराल नृपालनके धनु भंग सुने फरसा लिये धाये ॥ लक्ष्मण राम विलोकि सप्रेम महा रिसहा फिरि आँखिदिखाये॥धीर शिरोम-णि वीर बड़े विनयी विजयी रघुनाथ सुहाये ॥ लायक हो भृगुनायक सोधनुशायक सौंपि सुभाय सिधाये ॥ २२ ॥ इति श्रीकवित्तावली रामायणे बालकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ अयोध्याकाण्ड ॥

सवैया ॥ कीरके कागर ज्यौं नृपचीर विभूषन उपमा अंगनिपाई॥ औध तजी मग वासके रूख ज्यौं पंथके साथ ज्यौं लोगलुगाई ॥ संग सुबंधु पुनीत प्रिया मनो धर्मक्रिया धरिदेह सोहाई ॥ राजिव लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊ कि नाई ॥ २३ ॥ का-गर कीर ज्यौं भूषण चीर शरीर लस्यो तजि नीर ज्यौं काई ॥ मातु

पिता प्रिय लोग सबै सनमानि सुभाई सनेह सगाई ॥ संग सुभामिनि भाइ भलो दिनद्वै जनु औधहुँते पहुँनाई ॥ राजिव लोचन रामचले तजि बापको राज बटाऊ किनाई ॥ २४ ॥ (घनाक्षरी)॥ सिथिलसनेह कहै कौशिला सुमित्रा जीसों मैं न लखी सौतिसखी भगिनि ज्यों सेईहै ॥ कहैं मोहिं मैया कहो मैं न मैया भरतकी बलैया लेहौं भैया तेरी मैया कैकेयीहै ॥ तुलसी सरल भाय रघुराय मायमानी काय मन बानी हूं न जानिके मतेईहै ॥ बाम बिधि मेरो सुख सिरिससुमन सम ताको छल छुरी कोह कुलिश ले टेईहै ॥ २५ ॥ कीजे कहा जीजीजू सुमित्रा परि पाँयकहै तुलसी सहावै विधि सोई सहियतुहै ॥ रावरो सुभाव राम जन्मतहीते जानियत भरतकी मातुको कीबो सो चहियतुहै ॥ जाई राजघर ब्याहिआई राजघर महाराज पूतपायेहूं न सुख लहियतु है ॥ देहसुधा गेह ताहि मृगने मलीन कियो ताहुपर चाहबिनु राहु गहियतुहै ॥ २६ ॥ (सवैया) ॥ नाम अजामिलसे खलकोटि अपार नदी भव बूड़त काढ़े ॥ जो सुमिरे गिरि मेरु शिला कणहोत अजा खुर वारिधि बाढ़े॥ तुलसी ज्यहिके पदपंकजते प्रकटी तटनी जो हरे अघ गाढ़े ॥ ते प्रभु या सरिता तरवेकहँ माँगत नाव करारे ह्वै ठाढ़े ॥ २७ ॥ एहि घाटते थोरिक दूरि अहै कटिलौं जल थाह देखाइहौं जू ॥ परसे पगधूरि तरै तरणी घरणी घर क्यौं समुझाइहौं जू ॥ तुलसी अवलंब न और कछू लरिका क्यहि भाँति जिआइहौं जू ॥ बरु मारिए मोहिं बिना पगधोये हों नाथ न नाव चढाइहौं जू ॥ २८ ॥ रावरे दोष न पायनको पगधूरिको भूरि प्रभाउ महाहै ॥ पाहनते बरु बाह न काठको कोमलहै जलखाइ रहाहै ॥ तुलसी सुनि केवट के बरबैन हँसे प्रभु जानकी ओर हहाहै ॥ पावन पाय पखारिके नाव चढ़ाइहौं आयसु होत कहाहै ॥ २९ ॥ (घनाक्षरी) ॥ पातभरी सहरी सकलसुतबारे बारे केवटकी जाति कछु वेद न पढ़ाइहौं ॥ सब परिवार मेरो याही लागि राजाजी हों दीन वित्तहीन कैसे दूसरी गढ़ाइहौं ॥ तुलसीके ईश राम रावरेसों साँची कहौं बिना पग-

धोए नाथ नाव न चढ़ाइहौं ॥गौतमकी घरणी ज्यौं तरणी तरेगी मेरी प्रभुसों निषाद ह्वैके वाद ना बढ़ाइहौं ॥३०॥ जिनको पुनीतवारि शिर शिवहै पुरारि त्रिपथगामिनी अस वेदकहैं गाइकै ॥ जिनको योगींद्र मुनिवृन्ददेवदेहधरि करतविविधयोगजप मनलाइकै ॥ तुलसी जिन की धूरि परसि अहल्या तरी गौतम सिधारे गृह गौनोसो लिवाइकै॥ तेई पाँय पाइकै चढ़ाय नाव धोएबिनु ख्वैहौं न पठावनी कैहौं न हँसाइ कै॥ ३१ ॥ प्रभुरुखपाइकै बोलाइ बाल घरनिहिं वंदि कै चरण चहूंदिशि बैठे घेरि घेरि ॥ छोटो सो कठौता भरि आनि पानी गंगाजूको धोइ पाँय पियत पुनीत वारि फेरि फेरि ॥ तुलसी सराहै ताको भाग सानुराग सुर बरषैं सुमन जय जय कहैं टेरि टेरि ॥ विविध सनेह सानी बानी अस यानी सुनि हँसे राघो जानकी लषण तन हेरि हेरि ॥ ३२ ॥(सवैया)॥ पुरते निकसी रघुवीर वधू धरि धीर दये मगमें डगद्वै ॥ झलकी भरिभाल कनी जलकी पटु सूखिगए मधुराधरवै ॥ फिर बूझत हैं चलनोव कितो पिय पर्ण कुटी करिहैं कितह्वै ॥ तियकी लखि आतुरता पियकी अखियां अतिचारु चलीं जलच्वै ॥ ३३ ॥ जलको गये लक्ष्मणहैं लरिका परिखौं पिय छांह घरीक ह्वै ठाढ़े ॥ पोंछि पसेउ बयारि करौं अरु पाय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े ॥ तुलसी रघुवीर प्रिया श्रमजानिकै बैठि बिलंबसो कंटक काढ़े ॥ जानकी नाहको नेह लख्यौ पुलकी तनु वारि विलोचन बाढ़े ॥ ३४ ॥ ठाढ़े हैं नवद्रुम डार गहे धनु कांधे धरे कर सायक लै ॥ विकटी भृकुटी बड़री अखियाँ अनमोल कपोलन की छविहै ॥ तुलसी ऐसी मूरति आनु हिये जड डारु धौं प्राण निछावरि कै ॥ श्रम सीकर साँवरि देह लसैं मनो राशि महातम तारकमै ॥ ३५ ॥ (घनाक्षरी)॥ जलजनयन जलजानन जटाहैं शिर यौवन उमंग अंग उदित उदारहैं ॥ साँवरे गोरेके बीच भामिनी सुदामिनिसी मुनिपटधरे उर फूलनिके हारहैं ॥ करनि शरासन सिलीमुख निषंग कटि अतिही अनूप काहू भूपके कुमारहैं ॥ तुलसी विलोकि कै तिलोकके तिलक तीनि रहे नर नारि ज्यों चितेरे चित्रसार

हैं ॥३६॥ आगे सोहैं साँवरा कुवँर गोरो पाछे आछे आछे मुनि वेष धरे लाजत अनंगहैं ॥वाण विशिखासन वसन वनहीके कटि कसीहैं बनाइ नीके राजत निषंगहैं ॥ साथ निशिनाथ मुखी पाथ नाथ नंदिनी सी तुलसी विलोके चित लाइलेत संगहैं ॥ आनँद उमंग मन योवन उमंग तनरूपकी उमंग उमगत अंग अंगहैं॥३७॥(कवित्त)॥ सुंदर वदन सरसीरुह सोहाएनैन मंजुल प्रसून माथेमुकुट जटिनके ॥ अंशनि शरासन लसत शुचि शरकर तूणकटि मुनिपट लूट कपटिनके ॥ नारि सुकुमारि संग जाके अंग उवटिके विधि विरचे वरूथ विद्युच्छटनिके ॥ गोरेको वरण देखे सोनो न सलोनो लगे साँवरो विलोके गर्व घटत घटनिके॥३८॥वलकल वसन धनुवाणपाणि तूणकटि रूपके निधान वन दामिनीवरनहैं ॥ तुलसी सुतीय संग सहज सोहाए अंग नवल कमलहूते कोमल चरनहैं॥ और सो बसंत औरे रति औरे रतिपति मूरति विलोके तन मनके हरनहैं ॥ तापस वेषै बनायेपथिक पंथै सोहाये चले लोक लोचनानि सुफल करनहै ॥ ३९ ॥ (सवैया) ॥ वनिता वनी श्यामल गोरेके वीच विलोकहु री सखी मोहिसी ह्वै ॥ मग जोग न कोमल क्यों चलिहैं सकुचात मही पदपंकज छ्वै ॥ तुलसी सुनि ग्रामवधू विथकी पुलकी तन औ चलै लोचन च्वै ॥ सवभाँति मनोहर मोहन रूप अनूपहैं भूपके वालकद्वै ॥ ४० ॥ साँवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता जित मैन लियोहै ॥ वान कमान निषंग कसे शिर सोहैं जटा मुनिवेष कियोहै ॥ संग लिए विधुवैनी वधू रतिको जेहि रंचक रूप दियोहै ॥ पाँयनता पनहीं न पयादेहि क्यों चलिहैं सकुचात हियोहै ॥ ४१ ॥ रानी में जानी सयान महा पवि पाहनहूं ते कठोर हियोहै ॥ राजहु काज अकाज न जान्यो कह्यो तियको ज्यहि कान कियोहै ॥ ऐसी मनोहर मूरति ए विछुरे कैसे प्रीतम लोग जियोहै ॥ ४२ ॥ आँखिनमें सखि राखिवे योग इन्हें किमि कै वनवास दियोहै ॥शीश जटा उर वाहु विशाल विलोचन लाल तिरीछी सि भौंहैं ॥ तूण शराशन वाण धरे तुलसी वन मारगमें सुठि सोहैं ॥ सादर वारहि वार सुभाय चितै तुम त्यों हम-

रो मनमोहैं ॥ पूंछति ग्रामवधू सियसों कहो साँवरोसो सखि रावरो कोहैं ॥ ४३ ॥ सुनि सुंदर बैन सुधारस साने सयानी है जानकी जान भली ॥ तिरछे करि नैन दै सैन तिन्हैं समुझाइ कछू मुसुकाइ चली ॥ तुलसी त्यहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली ॥ अनुरागतडागमें भानु उदै विकसी मनों मंजुल कंजकली ॥ ॥ ४४ ॥ धरि धीर कहैं चलु देखिय जाइ जहाँ सजनी रजनी रहिहैं॥ कहिहैं जग पोच न शोचकछू फल लोचन आपन तौ लहिहैं ॥ सुख पाइहैं कान सुने बतियां कल आपुसमें कछुपै कहिहैं ॥ तुलसी अति प्रेम लगी पलकैं पुलकी लखि रामहिये महिहैं ॥ ४५ ॥ पद कोमल श्यामल गौर कलेवर राजत कोटि मनोज लजाए ॥ कर बाण शरासन शीश जटा सरसीरुह लोचन सो न सोहाए ॥ जिन देखे सखी सतभावहुते तुलसी तिनतो मन फेरि न पाए ॥ यहि मारग आजु किशोर बधू विधुवैनी समेत सुभाव सिधाए ॥ ४६ ॥ मुखपंकज कञ्ज विलोचन मंजु मनोज शरासनसी बनी भौंहैं ॥ कमनीय कलेवर कोमल श्यामल गौर किशोर जटा शिर सोहैं ॥ तुलसी कटि तूण धरे धनु बाण अचानक दृष्टि परी तिरछोहैं ॥ केहि भाँति कहौं सजनी तोहि सों मृदु मूरति द्वै निवसी मनमोहैं ॥ ४७ ॥ प्रेमसों पीछे तिरीछे प्रियाहि चितै चितुदै चले लैं चितचोरे ॥ श्याम शरीर पसेऊ लसै हुलसै तुलसी लखि सो मन मोरे ॥ लोचन लोल चलैं भ्रुकुटी कल काम कमानहुसो तृण तोरे॥ राजत राम कुरंगके संग निषंग कसे धनुलों शर जोरे ॥ ४८ ॥ शर चारिक चारु बनाइ कसे कटि पाणि शरासन शायकलै ॥ वन खेलत राम फिरैं मृगया तुलसी छविसो वरणै किमिकै ॥ अवलोकि अलौकिक रूप मृगी मृग चौंकि चकै चितवै चितदै ॥ न डगै न भगै जियजानि शिलीसुखपंच धरे रतिनायकहै ॥ ४९ ॥ विंध्यके वासी उदासी तपोव्रतधारी महाबिननानि दुखारे ॥गौतमतीय तरी तुलसी सो कथा सुनिभे मुनिवृन्द सुखारे ॥ ह्वैहैं शिला सब चन्द्रमुखी परशे पद मंजुल कंज तिहारे ॥

कीन्ही भली रघुनायकजी करुणाकरि काननको पगुधारे ॥ ५० ॥
इति श्रीकवित्तावलीरामायणे अयोध्याकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

अथारण्यकाण्डः ॥

पंचवटी वर पर्णकुटी तर बैठेहैं राम सुभाय सुहाये ॥ सोहप्रिया प्रियवंधु लसै तुलसी सब अंग घने छविछाये ॥ देखि मृगा मृगनैनी कहै प्रियवैन ते प्रीतमके मनभाये ॥ हेमकुरंगके संग शरासन शायकलै रघुनायक धाये ॥ ॥ ५१ ॥ इति श्रीकवित्तावली रामायणे आरण्यकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ किष्किन्धाकाण्डः ॥

जब अंगदादिनकी मनोगति मंदभई पवनके पूतको न कूदिबे को पलुगो॥साहसीह्वै शैलपर सहससकेलिआइ चितवत चहूंघा ओर औरनको कलुगो ॥ तुलसी रसातलको निकासि सलिल आयो कोल कलमल्यो अहि कमठको बलुगो ॥ चारिहू चरणके चपेट चापे चिपिटिगो उचकि उचकि चारि अंगुल अचलुगो ॥ ५२ ॥
इति श्रीकवित्तावलीरामायणे किष्किधाकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ सुंदरकाण्डः ॥

वासव वरुण विधिवनते सोहावनो दशाननको कानन वसंतको शृँगारसो ॥ समय पुराने पात मरत डरत वात पालत लालत रति मारको विहारसो ॥ देखे वर वापिका तड़ाग वागको वनाव रागवश भो विराग पवनकुमारसो ॥ सीयकी दशा विलोकि विटप अशोक तर तुलसी विलोक्यो सो तिलोक शोकसारसो ॥ ५३ ॥ माली मेघ माल वनपाल विकराल भट नीके सब कालसींचैं सुधासार नीरको॥ मेघनादते दुलारो प्राणते पियारो बाग अति अनुराग जिय यातुधान धीरको ॥ तुलसी सो जानि सुनि सीयको दरशपाइ पैठोवाटिका

बजाइ बल रघुवीरको॥विद्यमान देखत दशाननको काननसो तहस नहस कियो सहसी समीरको॥५४॥वसनबटोरि बोरिबोरि तेलतमीचर खोरि खोरि धाइ आइ बाँधत लँगूरहैं ॥ तैसो कपिकौतुकी डरात ढीलो गात कैकै लातके अघातसहै जीमें कहै कूरहैं ॥ बालकिलकारी कैकै तारीदैदै गारी देत पाछे लागे बाजत निशान ढोल तूरहैं ॥ बालधी बढ़नलागी ठौर ठौर दीन्ही आगि विन्धकी दवारि कैधों कोटिशत सूरहैं ॥ ५५ ॥ लाइ लाइ आगि भागे बालजात जहाँ तहाँ लघुह्वै निबुकि गिरिमेरुते विशालभो ॥ कौतुकी कपीश कूदि कनककँगूरा चढ़्यो रावण भवनचढ़ि ठाढ़ो त्यहि कालभो ॥ तुलसी विराज्यो व्योम बालधी पसारि भारि देखे हहरात भट कालसों करालभो॥तेजको निधान मानो कोटिक कृशानुभानु नख विकराल मुख तैसो रिसलालभो ॥ ५६ ॥ बालधी विशाल विकराल ज्वाल जाल मानौं लंक लीलिबेको काल रसना पसारी है ॥ कैधों व्योमवीथिका भरेहैं भूरि धूमकेतु वीररस वीर तरवारिसी उघारीहै ॥ तुलसी सुरेश चाप कैधों दामिनी कलाप कैधौं चली मेरुते कृशानु सरि भारीहै ॥ देखैं यातुधान यातुधानी अकुलानी कहैं कानन उजारेउ अब नगरप्रजारी है॥५७॥ जहाँ तहाँ बुबुक विलोकी बुबुकारी देत जरतनिकेतधावो धावो लागी आगिरे ॥ कहाँ तात मात भ्रात भगिनी भामिनी भाभी ढोटा छोटे छोहरा अभागे मोरे भागिरे ॥ हाथी छोरो घोरा छोरो महिष वृषभ छोरो छेरी छोरो सोवै सो जगावो जागि जागिरे ॥ तुलसी विलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं बार बार कह्यो पिय कपिसों न लागिरे ॥ ५८ ॥ देखि ज्वालाजाल हाहाकार दशकन्ध सुनि कह्यो धरो धरो धाये वीर बलवानहैं । लिये शूल शैल पाश परिघ प्रचंड दंड भाजनसनीर धीरधरे धनुवानहैं ॥ तुलसी समिध सौंज लंकयज्ञ कुण्ड लखि यातुधान पुङ्गीफल यव तिल धानहैं॥श्रुवासो लँगूलबलमूल प्रतिकूल हवि स्वाहा महा हाँकि हाँकि हुनै हनुमान हैं ॥ ५९ ॥ गाजो कपिगाज ज्यों विराज्यो ज्वाला जालयुत भाज्यो वीर धीर अकुलाइ उठ्यो रावनो ॥ धावो धावो धरो सुनि धाये

यातुधानधारी वारिधारा उलदैं जलद ज्यों नशावनो ॥ लपट झपट झहराने हहराने वात भहराने भट परेउ प्रबल परावनो ॥ ढकनिढ-केलिपेलि सचिव चलेलै ठेलि नाथ न चलैगो वल अनल भयावनो ॥ ॥ ६० ॥ बड़ो विकराल देखि सुनि सिंहनाद उठ्यो मेघनाद सहित विषादकहै रावनो ॥ वेग जीतो मारुत प्रताप मारतण्डकोटि कालऊ करालता बड़ाई जितो बावनो ॥ तुलसी सयाने यातुधाने पछिताने कहैं जाको ऐसो दूत सोतो साहेब अबै आवनो ॥ काहेकीकुशलरोषे राम वाम देवहूंकी विषम बलीसों वादि वैरको बढ़ावनो ॥ ६१ ॥ पानी पानी पानी सबरानी अकुलानी कहैं जातिहैं परानी गतिजानी ग-जचालिहै ॥ वसन विसारैं मणि भूषण सँभारत न आनन सुखाने कहैं क्योंहू कोऊ पालिहै ॥ तुलसी मँदोवै मींजिहाथ धुनिमाथ कहै काहू कान कियो न मैं कह्यों केतौ कालिहै ॥ वापुरो विभीषण पुकारि बारबार कह्यो वानर बड़ीबलाइ घने घरघालिहै ॥ ६२ ॥ कानन उजा-रेउ तौ उजारेउ न बिगारेउ कछु वानर विचारो वाधि आन्यो हठि हारसों ॥ निपट निडर देखि काहूना लख्यो विशेषि दीन्होना छोड़ाइ कहि कुलके कुठारसों ॥ छोटे औ बड़ेरे मेरे पूतऊ अनेरे सब साँप-निसों खेलैं मेलैं गरे छुराधारसों ॥ तुलसीमँदोवै रोइरोइके विगोवै आपु वार वार कह्यों मैं पुकारि दाढ़ीजारसों ॥ ६३ ॥ रानी अकुलानी सब डा-ढ़त परानी जाहिं सकैं ना विलोकि वेष केशरीकुमारको ॥ मींजि मींजि हाथ धुनिमाथ दशमाथ तिय तुलसी तिलो न भयो बाहिर अगार को ॥ सब असबाव डाढ़ो मैं न काढ़ा तैं न काढ़ो जियकी परी सँभारै सहन भँडारको ॥ खीझत मँदोवै सविषाद देखि मेघनाद बयो लुनियत सब याही दाढीजारको ॥ ६४ ॥ रावणकी रानी विलखानी कहै यातुधानी हाहा कोऊ कहै बीसबाहु दशमाथसों ॥ काहे मेघनाद काहे काहेरे महोदरतू धीरज न देत लाइलेत क्यों न हाथसों ॥ काहे अतिकाय काहे काहेरे अकंपन अभागे तिय त्यागे भोंडे भागेजात साथसों ॥ तुलसी बढ़ाय वादशालते विशालवहै याहीवल वालिसा विरोध रघु-नाथसों ॥ ६५ ॥ हाट बाट कोट ओट अट्टनि अगार पौरि खोरि

खोरि दौरि दौरि दीन्ही अति आगिहै ॥ आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काहू व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागिहै ॥ बालधी फिरावै बार बार झहरावै झरै बूंदियासी लंक पघिलाइ पाग पागिहै॥ तुलसी विलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं चित्रहूके कपिसों निशा-चर न लागिहै ॥ ६६ ॥ लागि लागि आगि भागि भागि चले जहाँ तहाँ धीयको नमाय बाप पूत न सँभारही ॥ छूटे बार बसन उघारे धूम धुंद अंध कहैं बारे बूढ़े बारि बारि बार बारहीं ॥ हय हिहिनात भागेजात घहरात गज भारी भीर ठेलि पेलि रौंदि खौंदि डारहीं ॥ नामलै चिलात बिललात अकुलात अति तात तात तौंसियत झौंसियत झारही॥६७॥लपट कराल ज्वालजालमाल दहूँदिशि धूम अकुलाने पहिंचानै कौन काहिरे ॥ पानीको ललात बिललात जरे गात जात परे पाइ माल जात भ्रात तू निवाहिरे ॥ प्रियातू पराहि नाथ नाथ तू पराहि बाप बाप तू पराहि पूत पूत तू पराहिरे॥तुलसी विलोकिलोक व्याकुल विहाल कहैं लेहि दशशीश अब बीस चख चाहिरे॥६८॥बीथिका बजार प्रति अटनि अगारप्रति पवँरि पगार प्रति वानर विलोकिये॥अर्द्ध उर्द्ध बानर विदिशि दिशि वानरहै मानो रह्यो भरि वानर तिलोकिये॥मूँदे आंखि हीयमें उघारे आंखि आगे ठाढ़ो धाइ जाइ जहाँ तहाँ और कोऊ कोकिये॥लेहु अब लेहु तब कोऊ न सिखावो मानों सोई सतराइ जाइ जाहि जाहिरो किये ॥६९ ॥ एक करै धौंज एक कहै काढो सौंज एक औंजि पानी पीकै कहै बनत न आवनो ॥ एक परे गाढ़े एक डाढ़तहीं काढ़े एक देखतहैं ठाढ़े कहैं पावक भयावनो ॥ तुलसी कहत एक नीके हाथ लाये कपि अजहूं न छांड़ै बाल गालको बजावनो ॥ धावरे बुझावरे कि बावरे जिआवरेहो औरै आगिलागी न बुझावै सिंधुसावनो ॥ ७० ॥ कोपि दशकन्ध तब प्रलयपयोदबोले रावण रजाइधाइ आये यूथ जोरिकै ॥ कह्यो लंकपति लंक बरत बुतावो वेगि वानर वहाइ मारौ महा बारि बोरिकै ॥भले नाथनाइमाथ चले पाथ प्रदनाथ वरपैं मुशलधार बार बार घोरिकै ॥ जीवनते जागी आगि चपरि चौगुनी लागी तुलसी भभरि मेघ

भागे मुख मोरिकै ॥ ७१ ॥ इहाँ ज्वाल जरेजात उहाँ ग्लानि गरे गात सूखे सकुचात सब कहत पुकारहै ॥ युग षटभानु देखे प्रलय कृशानु देखे शेष मुख अनल विलोके बार बार है ॥ तुलसी सुना न कान सलिल सर्पी समान अतिअचरज कियो केशरीकुमारहै ॥ वारिद वचन सुनि धुनै शीश सचिवन्ह कहै दश शीश ईश वामता विकारहै ॥ ७२ ॥ पावक पवन पानी भानु हिम वान यम काल लोकपाल मेरे डर डांवाडोलहै ॥ साहब महेश सदा शंकित रमेश मोहिं महातप साहस विरंचि लीन्हे मोलहै ॥ तुलसी त्रिलोक आजु दूजो न विराजै राजा वाजे बाजे राजनिके बेटा बेटी वोलहै ॥ कोहै ईशनामको जो वाम होत मोहूसेको मालवान रावरे के वावरेसे बोलहै॥७३॥भूमि भूमिपाल व्यालपालक पताल नाकपाल लोकपाल जेते सुभट समाजहै ॥ कहै मालवान यातुधानपति रावरेको मनहुँ अकाज आने ऐसो कौन आजहै ॥ रामकोह पावक समीर सीय श्वास कीश ईश वामता विलोकि वानरको व्याजहै ॥ जारत प्रचारि फेरि फेरि सो निशंक लंक जहाँ बाँकोवीर तोसों शूर शिरताजहै ॥ ७४ ॥ पान पकवान विधि नानाके सँधानो सीधो विविधविधान धान वरत बखारही ॥ कनक किरीट कोटि पलँग पेटारे पीठ काढ़त कहार सब जरेभरे भारही ॥ प्रबल पावक बाढ़े जहाँ काढ़े तहाँ डाढ़े झपटलपटभरे भवन भँडारही ॥ तुलसी अगार न पगार न बजारबच्यो हाथी हथिसार जरे घोरे घोरसारही ॥ ॥ ७५ ॥ हाट वाट हाटक पिघिलि चलो घीसो घनो कनक कराही लंक तलफत जायसों ॥ नाना पकवान यातुधान बलवान सब पागि पागि ढेरी कीन्ही भलीभाँति भायसों ॥ पाहुने कृशानु पवमानसो परोसो हनुमान सनमानिकै जेंवाये चितचायसों ॥ तुलसी निहारि अरिनारि दैदै गारिकहैं बावरे सुरारि वैर कीन्हो रामरायसों ॥ ७६ ॥ रावणसों राज रोग बाढ़त विराट उर दिनदिन विकल सकल सुख राँकसो ॥ नाना उपचार करि हारे सुर सिद्ध मुनि होत न विशोक औ तपावै नमनाकसो ॥ रामकी रजायते रसायनी समीर-

सूनु उतरि पयोधिपार शोधि सरवांकसो ॥ यातुधान बुटपुट पाक लंकजात रूप रतन यतन जारि कियोहै मृगांकसो ॥ ७७ ॥ जारि वारिकै विधूम वारिधि बुताइ लूम नाइमाथो पगनि भो ठाढ़ो कर जोरिकै ॥ मातुकृपाकीजै सहिदान दीजै सुनिसीय दीन्हींहै अशीष चारु चूड़ामणि छोरिकै ॥ कहा कहौं तात देखे जात जो विहान दिन बड़ी अवलंबही सो चले तुम तोरिकै ॥ तुलसी सनीर नैन नेहसों शिथिल वैन विलकि विलोकि कपि कहत निहोरिकै ॥७८॥ दिवस छसात जात जानवे न मातुधरु धीर अरि अंतकी अवधिरही थोरिकै ॥ वारिधि बँधाय सेतु ऐहैं भानुकुलकेतु सानुज कुशल कपि कटक बटोरिकै ॥ वचन विनीत कहि सीताको प्रवोध करि तुलसी त्रिकूट चाढ़ि कहत डफोरिकै ॥ जैजै जानकीश दशशीश करि केशरी कपीश कूद्यो बात घात उदधि हलोरिकै ॥ ७९ ॥ साहसीसमीरसूनु नीरनिधि लंघि लखि लंक सिद्धि पीठ निशि जागो है मशानसो ॥ तुलसी विलोकि महा साहस प्रसन्न भई देवी सियसारिषी दियेहै वरदानसो ॥ वाटिका उजारि अच्छ धारि मारि जारि गढ़ भानुकुल भानुको प्रताप भानु भानुसो ॥ करत विशोक लोक कोकनदकोक कपि कहै जामवंत आयो आयो हनुमानसो ॥८०॥ गगन निहारि किलकारी भारी सुनि हनुमान पहिचानि भए सानँद सचेतहैं ॥ बूड़त जहाज बच्यो पथिक समाज मोना आजु जाये जानि सर्व अंकमाल देतहैं ॥ जयजय जानकीश जयजय लषण कपीश कहि कूदे कपि कौतुकी नटत रेतरेतहैं ॥ अंगद मयन्द नल नील वलशील महा वालधी फिरावैं मुख नानागति लेतहैं ॥ ८१ ॥ आयो हनुमान प्राणहेतु अंकमालदेत लेत पगधूरि यक चूमत लँगूरहैं ॥ एक बूझै वार वार सीय समाचार कहे पवनकुमारभो विगत श्रम शूलहैं ॥ एकभूखे जानि आगे आनि कंद मूल फल एक पूजे वाहुवल मूलतोरि फूलहैं ॥ एक कहै तुलसी सकल सिधि ताके जाके कृपापाथ नाथ सीतानाथ सानुकूलहैं ॥ ८२ ॥ सीयको सनेहशील कथा तथा लंककी चले कहत चायसों सिरानो पथ छनमें ॥

कह्यो युवराज बोलि वानर समाज आजु खाहु फल सुनि पेलि पैठे मधुवनमें ॥ मारे बागवान ते पुकारत देवानगे उजारे बाग अंगदादि खाए घाय तनमें ॥ कहैं कपिराज करिकाज आए कीश तुलसीश की शपथ महामोद मेरे मनमें ॥८३॥ नगर कुवेरको सुमेरुकी बराबरी विरंचि बुद्धिको विलास लंक निरमाणभो ॥ ईशहि चढ़ाय शीश बीसबाहु वीरतहाँ रावणसो राजा रज तेजको निधानभो॥तुलसी त्रिलोककीसमृद्धिसौज संपदा सकेलि चाकि राखी राशिजांगर जहानभो॥ तीसरे उपास वनवास सिंधु पास सो समाज महाराज जीको एकदिन दानभो॥८४॥इतिश्री कवित्तरामायणे सुन्दरकाण्डःसमाप्तः ॥५॥

अथ लङ्काकाण्डः ॥

बड़े विकराल भालु बानर विशाल बड़े तुलसी खड़े पहार लै पयोधि तोपिहैं ॥ प्रवल प्रचण्ड बरिबण्ड बहु दण्डखण्डि मण्डि मेदिनीको मण्डलीक लीक लोपिहैं ॥ लंकदाहुदेखे न उछाहु रह्यो काहुनको कहत सब सचिव पुकारि पाँव रोपिहैं ॥ बाचि है न पाछे त्रिपुरारिहू मुरारिहूके कोहै रण रारिको जो कोशलेश कोपिहैं ॥ ८५ ॥ त्रिजटा कहत वार वार तुलसीश्वरीसों राघव बाणएकही समुद्र सातों सोपिहैं ॥ सकुल सँहारि यातुधान धारि जंबुकादि योगिनीजमाति कालिका कलाप तोपिहैं ॥ राज दै निवाजिबो वजाइकै विभीषणै वजैंगे व्योमबाजने विबुध प्रेम पोषिहैं ॥ कौन दशकंध कौन मेघनादवापुरोको कुम्भकर्ण कीट जब राम रण रोखिहैं ॥ ८६ ॥ विनय सनेहसों कहति सिया त्रिजटासों पाये कछु समाचार आरजसुवनके॥ पायेजू वँधाये सेतु उतरे भानुकुलकेतु आये देखि देखि दूत दारुण दुवनके ॥ वदनमलीन बलहीन दीन देखि माने मिटे घटे तमीचर तिमिर भुवनके ॥ लोकपति शोक कोक मूंदे कपि कोकनद दण्ड द्वै रहेहैं रघु अदित उवनके ॥८७॥ (झूलना) ॥ सुभुज मारीच खर त्रिशिर दूषण वालि दलत जेहि दूसरो शर न सांध्यो॥ आनि परबाम विधिवाम तेहि रामसो सकत संग्राम दशकन्ध कांध्यो ॥ समुझि तुलसीश कपि कर्म घर घर घैरु विकल सुनि सकल पाथोधिबांध्यो॥

बसत गढ़ लंक वंकेश नायक अछत लंक नहिं खात कोउ भात रांध्यो ॥ ८८ ॥ (सवैया) ॥ विश्वजयी भृगुनायक से बिन हाथ भये हनिहाथ हजारी ॥ बातुल मातुल की न सुनी सिख का तुलसी कपि लंक न जारी॥ अजहूँ तौ भलो रघुनाथ मिले फिरि बूझिहैको गज कौन गजारी ॥ कीर्त्ति बड़ो करतूति बड़ो जन बात बड़ोसो बड़ोई बजारी ॥ ८९ ॥ जब पाहन भे बन वाहनसे उतरे बनरा जय राम रढ़े॥ तुलसी लिय शैल शिला सब सोहत सागर ज्यों बल वारिबढ़े ॥ करि कोपकरैं रघुबीरको आयसु कौतुकही गढ़ कूदिचढ़े ॥ चतुरङ्ग चमू पलमें दलिकै रणरावण रांड़के हाड़गढ़े ॥९०॥ (घनाक्षरी) ॥ विपुल विशाल विकराल कपि भालुमाने काल बहु वेष धरे धाये किये करषा ॥ लिये शिला शैल शाल ताल औ तमाल तोरि तोपै तोयनिधि सुरको समाज हरषा ॥ डगे दिग कुंजर कमठ कोल कलमले डोलै धराधर धारिं धराधर धरषा ॥ तुलसी तमकि चलै राघव की शपथकरै को करै अटक कपि कटक अमरषा ॥ ९१ ॥ आये शुकसारन बोलायेते कहन लागे पुलकि शरीर सेनाकरत फहामही॥ महाबली बानर विशाल भालुकालसे करालहैं रहे कहां समाहिंगे कहामही ॥ हँस्यो दशकन्ध रघुनाथको प्रताप सुनि तुलसी दुरावै मुख सूखत सहमही ॥ रामके बिरोधे बुरो बिधि हरिहरहूको सबको भलोहै राजा रामके रहमही ॥ ९२ ॥ आयो आयो आयो सोई बानर बहोरिभयो शोर चहुँओर लंका आये युवराजके॥ एक काढ़ै सौंज एक धौंज करै कहा ह्वैहै पोच भई महा शोच सुभट समाजके ॥ गाज्यो कपिराज रघुराजकी शपथ करि मूंदैकान यातुधान मानों गाजे गाजके ॥ सहमि सुखात बात जातकी सुरति करि लवा ज्यों लुकात तुलसी झपेटे बाजके ॥ ९३ ॥ तुलसी सबल रघुबीरजीको बालिसुत वाहि न गनत बात कहत करेरीसी ॥ बखशीश ईशजीकी खीस होत देखियत रिस काहे लागत कहतहौं मैं तेरीसी ॥ चढ़ि गढ़मढ़दढ़कोटके कँगूरे कोपि नेकु धका दैहैं ढैहैं ढेलनकी ढेरीसी ॥ सुनु दशमाथ नाथ साथके हमारे कपि हाथलंका लाइहै तोरहै

गी हथेरीसी ॥ ९४ ॥ दूषण विराध खर त्रिशिरा कवन्ध वधे तालऊ विशाल वेधे कौतुकहै कालिको ॥ एकही विशिष वश भये वीरबाँकुरे सो तोहूहै विदित बल महाबली बालिको ॥ तुलसी कहत हित मान तन नेकु शंक मेरो कहाजैहै फलपैहै तू कुचालिको ॥ वीर करि केशरी कुठार पानि मानि हारि तेरी कहा चली बूड़े तोसे गने घालिको ॥ ९५ ॥ (सवैया) ॥ तोसों कहौं दशकंधररे रघुनाथ विरोध न कीजिय बौरे ॥ वालि बली खर दूषण और अनेक गिरे जे जे भीतिमें दौरे ॥ ऐसिय हाल भई तोहिंको नतौ लै मिलु सीय चहै सुख जौरे ॥ रामके रोष न राखिसकै तुलसी विधि श्रीपति शंकर सौरे ॥ ९६ ॥ तूरजनीचरनाथ महारघुनाथके सेवकको जनहौं ॥ बलवानहै श्वान गली अपनी तोहिं लाज न गाल बजावत सौहौं ॥ बीस भुजा दशशीश हरौं न डरौं प्रभु आयसु भंगते जौहौं ॥ खेतमें केहरि ज्यों गजराज दलौं दल बालिको बालक तौहौं ॥ ९७ ॥ कोशलराजके काजहौं आजु त्रिकूट उपारिलै वारिधि बोरौं ॥ महाभुज दंड द्वै अंड कटाह चपेटक चोट चटाकदै फोरौं ॥ आयसु भंगते जो न डरौं सब मींजि सभासद शोणित बोरौं ॥ वालिको बालक जो तुलसी दशहूमुखके रणमें रद तोरौं ॥ ९८ ॥ अति कोपसों रोप्योहै पाँवसभा सबलंक सशंकित शोरमचा ॥ तमके घननादसे वीर प्रचारिकै हारि निशाचर सैन पचा ॥ न टरै पग मेरुहु ते गरुभो सोमनों महिसंग विरंचिरचा ॥ तुलसी सब शूर सराहतहैं जगमें बलशालि है बालिबचा ॥ ९९ ॥ (घनाक्षरी) ॥ रोंप्यो पाँव पैजकै विचारि रघुवीर बल लागे भट सिमिट न नेकु टसकतुहै ॥ तज्यो धीर धरणि धरणिधर धसकत धराधर धीर भार सहि न सकतु है ॥ महाबली बालिको दबत दलकतु भूमि तुलसी उछलि सिंधु मेरु मसकतु है ॥ कमठ कठिन पीठि घेठा परो मंदरको आयो सोई काम पै करेजा कसकतु है ॥ १०० ॥ (झूलना) ॥ कनकगिरि शृंग चढ़ि देखि मर्कट कटक वदत मंदोदरी परम भीता ॥ सहसभुज मत्त गजराज रणकेशरी परशुधर गर्वजेहि देखि बीता ॥ दास तुलसी समर सबल कोशलधनी ख्यालही

वालि बलशालि जीता ॥ ऐकंत तृण दंतगहि शरण श्रीराम कहि अजहुँ यहिभाँति लै सौंपु सीता ॥ १ ॥ ऐनीच मारीच विचलाइ हति ताडका भंजि शिवचाप सुख सबहिदीन्ह्यौ॥सहस दशचारि खल सहित खर दूषणहि पठै यमधाम तै तउ न चीन्ह्यौ ॥मैंजुकहुँकंत सुनुमंत भगवंत सौं विमुख ह्वैवालि फल कौन लीन्ह्यौ ॥ वीस भुज शीश दश खीशगये तबहिं जब ईशके ईशसों वैर कीन्ह्यौ ॥ २ ॥ बालि दलि कालिह जलयान पापान किय कंत भगवंत तैं तव न चीन्हे॥ विपुल विकराल भट भालु कपिकालसे संग तरु तुंग गिरिशृंग लीन्हे ॥ आइगे कोशलाधीश तुलसीश जेहि छत्रमिस मौलि दशदूरिकीन्हे ॥ ईश बकशीश जनि खीश करु ईश सुनु अजहुँ कुल कुशल वैदेहि दीन्हे ॥ ३ ॥ जाके सैन समूह कपि कोगनै अर्बुदै महाबल वीर हनुमान जानी ॥ भूलि है दशादिशा शीश पुनि डोलि है कोपि रघुनाथ जब बाणतानी ॥ वालिहू गर्व जियमाहिं ऐसो कियो मारि दहपट कियो यमकिघानी ॥ कहतमंदोदरी सुनहि रावण मतो वेगि लै देहि वैदेहि रानी ॥ ४ ॥ गहन उजारि पुरजारि सुत मारि तव कुशलगो कीशवर वैरिजाको॥दूसरो दूत प्रणरोपि कोपेउ सभा खर्व कियो सर्वको गर्वथाको ॥ दास तुलसी सभय वदत मयनंदिनी मंदमति कंत सुनु मंतम्हाको ॥ तौलौं मिलुवेगि नहिं जौलौं रण रोष भयो दाशरथि वीर विरदैत बांको ॥ ५ ॥ (घनाक्षरी) ॥ कानन उजारि अक्ष मारि धारि धूरिकीन्ही नगर प्रजारयो सोविलोक्यो वल कीशको ॥ तुम्हैं विद्यमान यातुधान मंडलीमें कपि कोपि रोप्यो पाँउसो प्रभाव तुलसीशको ॥ कंत सुनु मंतकुल अंत किय अंतहानि हातो कीजे हीयते भरो सो भुज वीशको ॥ तौलौं मिलुवेगि जोलौं चाप न चढ़ायो राम रोषि वाण काढ़योना दलैया दशशीशको ॥ ६ ॥ पवनको पूत देखौ दूत वीर बाँकुरो जो वंकगढ़ लंक सो ढकाढकेलि ढाहिगो ॥ वालि वल शालिको सो कालिह दाप दलि कोपि रोप्यो पाँउ चपरि चमूको चाउ चाहिगो ॥ सोई रघुनाथ कपि साथ पाथनाथ बांधि आये नाथ भागेते खिरीर खेह खाहिगो ॥

तुलसी गरबतजि मिलिबेको साज सजि देहि सीय नतो पिय पाइ-
माल जाहिगो ॥ ७ ॥ उदधि अपार उतरत नहिं लागी वार केशरी-
कुमारसो अदंडकैसो डांड़िगो ॥ वाटिका उजारि अक्ष रक्षकनि
मारि भट भारी भारी रावरेके चाउर सों कांड़िगो ॥ तुलसी तिहारे
विद्यमान युवराज आजु कोपि पाँव रोंप्यौ बसकै छुवाइ छांड़िगो ॥
कहेकी न लाज पिय अजहूं न आये बाज सहित समाज गढ़रांड़ कै-
सो मांड़िगो ॥ ८ ॥ जाके रोष दुसह त्रिदोष दाह दूरिकीन्हे पैयत
न क्षत्री खोज खोजत खलकमें ॥ महिषमतीको नाथ साहसी सहस-
बाहु समर समर्थ नाथ हेरिये हलकमें ॥ सहित समाज महाराज सोज
हाजराज बूड़ि गयो जाके बल वारिधि छलकमें ॥ टूटत पिनाक
के मनाक वाम राम सेते नाक विनुभये भृगुनायक पलकमें ॥ ९ ॥
कीन्हीछोनी क्षत्री विनु छोनिप छपनहार कठिन कुठार पानि वीर
वान जानिकै ॥ परमकृपालु जो नृपाल लोकपालनपै जब धनुहाई
ह्वैहै मन अनुमानिकै ॥ नाकमैं पिनाक मिसि वामता विलोकि राम
रोक्यो परलोक लोक भरी भ्रम भानिकै ॥ नाइ दशमाथ महि जोरि
वीस हाथ पिय मिलियेपै नाथ रघुनाथ पहिचानिकै ॥ ११० ॥
कह्यो मत मातुल विभीषणहु वार वार आंचल पसारि पिय पांइ
लैलै हौं परी ॥ विदित विदेह पुरनाथ भृगुनाथ गति समय सया-
नीकीन्ही जैसी आइ गौंपरी ॥ बायस विराध खर दूषण कवंध
वालि वैर रघुवीरके न पूरी काहुको परी ॥ कन्त वीस लोचन वि-
लोकिए कुमन्त फल ख्याल लंका लाई कपि रांड़कीसी झोपड़ी
॥ ११ ॥ (सवैया) रामसो साम किए नितहै हित कोमल काजनकी-
जियटांठे ॥ आपनि सूझि कहौं पिय बूझिये जूझिवे योग न ठाहरु
नाठे ॥ नाथ सुनी भृगुनाथ कथा वलि वालि गये चलि वातके साठे ॥
भाइ विभीषण जाइ मिल्यो प्रभु आइ परे सुनि सायर काठे ॥ १२ ॥
पालिवेको कपि भालु चमू यमकाल करालहु कोप हरी है ॥ लंक-
से वंक महागढ़ दुर्गम ढाइवे दाहिवेकोकहरी है ॥ तीतर तोम तमीचर
सैन समीरको सूनु वड़ोवहरी है ॥ नाथ भलो रघुनाथ मिले रजनी-

चर सैन हिये हहरी है ॥ १३ ॥ (घनाक्षरी) ॥ रोषे रण रावण बोलाये वीर बानइत जानत जे रीति सब संयुग समाजकी ॥ चली चतुरंग चमू चपरि हने निशान सेना सराहन योग राति-चर राजकी ॥ तुलसी विलोकि कपि भालु किलकत ललकत लखि ज्यों कँगाल पातरी सुनाजकी ॥ राम रुख निर-खि हरषि हिय हनुमान मानों खेलवार खोली शीश ताज वाजकी ॥ १४ ॥ साजिकै सनाह गज गाह स उछाह दल महाबली धाये वीर यातुधान धीरके ॥ इहाँ भालु बन्दर विशालमेरु मंदरसे लिये शैल साल तोरि नीरनिधि तीरके ॥ तुलसी तमकि ताकि भिरे मारी युद्ध क्रुद्ध सेनप सराहैं निज निज भटभीरके ॥ रुंडनके झुंड झूमि झूमि झूकरे से नाचैं समर शुमार शूर मारे रघुवीरके॥१५॥ (सवैया) ॥ तीखे तुरंग कुरंग सुरंगनि साजिचढ़े छटि छैल छवीले ॥ भारी गुमान जिन्हैं मनमें कबहूं न भये रणमें तनु ढीले ॥ तुलसी गजले लखिके हरिलौं झपटे पटके सब शूरसलीले ॥ भूमिपरे भट घूमि कराहत हां-कि हने हनुमान हठीले ॥ १६ ॥ शूर सजोयल साजि सुवाजि सु-शैल धरे बगमेल चलेहैं ॥ भारी भुजा भरि भारी शरीर बली विज-यी सब भाँति भले हैं ॥ तुलसी जिन्हैं धाय धुकै धरणीधर धौरि ध-कानिसों मेरु हलेहैं ॥ ते रण तीक्षण लक्ष्मण लाखन दानि ज्यों दारिद दाबिदलेहैं ॥ १७ ॥ गहिमंदर बंदर भालु चले सो मनो उनये वन सावनके ॥ तुलसी उत झुण्ड प्रचण्ड झुके झपटैं भट जे सुरदावन के ॥ विरुझे बिरदैत जे खेत अरे न टरे हठि वैर बढ़ावनके॥रण मार मची उपरी उपरा भले वीर रघूपति रावनके ॥ १८ ॥ शर तोमर शेल समूह पँवारत मारत वीर निशाचरके ॥ इतते तरु ताल तमाल चले खर खण्ड प्रचंड महीधरके ॥ तुलसी करि केहरि नाद भिरे भ-ट खड्ग खगे खपुवा खरके ॥ नख दंतनसों भुज दंड विहंडत मुण्ड सों मुण्ड परे झरके ॥ १९ ॥ रजनीचर मत्त गयंद घटा विघटै मृगराजके साथलरै ॥ झपटैं भट कोटि मही पटकैं गरजैं रघु-वीरकी सौंहकरै ॥ तुलसी उतहांक दशानन देत अचेतभे वीरको

धीर धरै ॥ बिरुझो रण मारुतको बिरुदैत जो कालहु कालसो बू-
झिपरै ॥ १२० ॥ जे रजनीचर वीर विशाल कराल विलोकत काल
नखाये ॥ तेरण रौर कपीश किशोर बड़े बरजोर परे फलपाये ॥ लू-
म लपेटि अकाश निहारिकै हांक हठी हनुमान चलाये ॥ सूखिगे
गात चले नभ जात परे भ्रम बातन भूतल आये ॥ १२० ॥ जो द-
शशीश महीधर ईशको बीस भुजा खुलिखेलनहारो ॥ लोकप दि-
ग्गज दानवदेव सबै सहमैं सुनि साहस भारो ॥ बीर बड़ो बिरदैत
बली अजहूं जग जागत जासु पँवारो ॥ सोहनुमान हन्यो मुठिका गि-
रिगो गिरिराज ज्यों गाजको मारो ॥ २१ ॥ दुर्गम दुर्ग पहारते भा-
रे प्रचंड महाभुज दंड बनेहैं ॥ लक्खमें पक्खर तिक्खन तेज जे शूर
समाजमें गाज गनेहैं ॥ ते बिरुदैत बली रण बांकुरे हाँकि हठी ह-
नुमान हनेहैं ॥ नामलै राम देखावत बंधुको घूमत घायल घाय घ-
नेहैं ॥ २२ ॥ (घनाक्षरी) ॥ हाथिन सों हाथी मारे घोड़े घोड़े सों सँ-
हारे रथनिसों रथ विदरनि बलवानकी ॥ चंचल चपेट चोट चरण च-
कोट चाहैं हहरानी फ़ौजें महरानी यातुधानकी ॥ बारबार सेवक
सराहना करत राम तुलसी सराहैं रीति साहेब सुजानकी ॥ लांबी
लूम लसत लपेटी पटकत भट देखौ देखो लषण लरनि हनुमानकी ॥
॥ २३ ॥ दबकि दबोरे एक वारिधिमें बोरे एक मगन महीमें ए-
क गगन उड़ातहैं ॥ पकरि पछारे कर चरण उखारे एक चीरि फारि
डारे एक मींजि मारे लातहैं ॥ तुलसी लषण राम रावण विविध वि-
धि चक्रपाणि चंडीपति चंडिका सिहातहैं ॥ बड़े बड़े बानइत बीर ब-
लवान बड़े यातुधान यूथप निपाते बातजातहैं ॥ २४ ॥ प्रबल प्र-
चंड बरिबंड बाहुदंड वीर धाये यातुधान हनुमान लियो घेरिकै ॥
महाबल पुंज कुंजरारि ज्यों गरजि भट जहाँ तहाँ पटके लंगूर फेरि
फेरिकै ॥ मारे लात तोरे गात भागे जात हाहाखात कहै तुलसी
सराहि रामकी सों टेरिकै ॥ ठहर ठहर परै कहरि कहरि उठै हहर
हहर हरसिद्ध हँसै हेरिकै ॥ ॥ २५ ॥ जाकी बाँकी बीरता सुनत स-
हमत शूर जाकी आंच अबहूं लसत लंक लाहसी ॥ सोई हनुमान ब-

लवान बाँको बानइत जोहै यातुधान सेना चले लेतथाहसी ॥ कंपत अकंपन सुखाय अतिकाय काय कुंभऊकरण आइ रह्यो पाइ आहसी॥ देखे गजराज मृगराज ज्यों गरजि धायो वीर रघुवीरको समीरसूनु साहसी ॥ २६ ॥ (झूलना) ॥ मत्तभट मुकुट दशकंध साहस शैल शृंग विद्दरनि जनु वज्रटांकी ॥ दशन धरि धरणि चिक्करत दिग्गज कमठ शेष संकुचित शंकित पिनाकी ॥ चलित महि मेरु उच्छलत सागर सकल विकल विधि वधिर दिशिविदिशि झांकी ॥ रजनिचर घरनिघर गर्भ अर्भक श्रवत सुनत हनुमानकी हांक बाँकी ॥ २७ ॥ कौनकी हांकपर चौंकि चंडीश विधि चंडकर थकित फिरि तुरँग हांके ॥ कौन के तेजबल सीम भट भीमसे भीमता निरखि करि नयन ढांके ॥ दास तुलसीशके विरदवरणत विदुष वीर विरुदैत वर वैरि धांके ॥ नाक नरलोक पाताल कोउ कहत किन कहां हनुमानसे वीरबांके ॥ २८ ॥ यातुधानावली मत्त कुंजर घटा निरखि मृगराज जनु गिरि ते टूटचो ॥ विकट चटकन चोट चरण गहि पटकि महि निघटि गये सुभट सत सटन छूटचो ॥ दास तुलसी परत धरणि धरकत झुकत हाटसी उठत जंबुकनि लूटचो ॥ धीर रघुवीरके वीर रण वांकुरे हांकि हनुमान कुलि कटक कूटचो ॥ ॥ २९ ॥ (छप्पय) ॥ कतहुँ विटप भूधर उपारि अरिसैन वरक्खत ॥ कतहुँ वाजि सों वाजि मर्दि गजराज करक्खत ॥ चरण चोट चटकन चकोट अरि उर शिर बज्जत ॥ विकट कटक विद्दरत वीर वारिद जिमि गज्जत ॥ लंगूर लपेटत पटकि भट जयति राम जय उच्चरत ॥ तुलसीश पवननंदन अटल युद्ध क्रुद्ध कौतुक करत ॥ ३० ॥ (घनाक्षरी) ॥ अंग अंग दलित ललित फूले किंशुकसे हने भट लाखन लषण यातुधानके ॥ मारिकै पछारिकै उपारि भुज दंड चंड खंडि खंडिडारेते विदारे हनुमानके ॥ कूदत कवन्ध के कदंब बंबसीकरत धावत देखावतहैं लाघौ राघौबानके ॥ तुलसी महेश विधि लोकपाल देवगण देखत विमान चढ़े कौतुक मशानके ॥ ३१ ॥ लोथिनसों लोहूके प्रवाह चले जहां तहां मानहुँ

गिरिन गेरु झरना झरतहैं ॥ शोणित सरित घोर कुंजर करारे भारे कूलते समूल वाजि विटपपरतहैं ॥ सुभट शरीर नीरचारी भारी भारी तहाँ शूरनि उछाह कूर कादर डरतहैं ॥ फेकरि फेकरि फेरु फारि फारि पेट खात काक कंकबालक कोलाहल करतहैं ॥ ३२ ॥ ओझरी अझोरी कांधे आँत निकी सेल्ही बांधे मूँडके कमण्डलु खपर किये फोरिकै ॥ योगिनी जमाति जोरि झुंड बनी तापसीसी तीर तीर बैठीसो समर सरिखोरिकै ॥ शोणितसों सानि सानि गूदा खात सतुआसे प्रेतएक पियत बहोरि घोरि घोरिकै ॥ तुलसीबैतालभूत साथलिये भूतनाथ हेरि हेरि हँसतहैं हाथ हाथ जोरिकै ॥ ॥ ३३ ॥ (सवैया) ॥ राम शरासनते चलेतीर रहे न शरीर हड़ावरि फूटी ॥ रावन धीर न पीरगनी लखि लैकर खप्पर योगिनि जूटी ॥ शोणित छीटि छटानि छुटी तुलसी प्रभुसोहै महाछवि छूटी। मानौ मरक्कत शैल विशालमें फैलि चली वर बीरबहूटी ॥ ३४ ॥ (घ०) ॥ मारि मेघनादसो प्रचारि भिरेभारी भट आपने आपने पुरषारथ न ढीलकी ॥ घायल लषणलाल सुनि बिलखाने राम भई आशशिथिल जगनिवासदीलकी ॥ भाई को न मोह छोह सीयको न तुलसीश कहैं मैं विभीषणकी कछु न सबीलकी ॥ लाजबांह बोलकी नेवाजेकी सँभारसार साहेब न रामसे वलाइ लेउँ शीलकी ॥३५॥ (स०) ॥ काननवास दशाननसों रिपु आनन श्रीशशि जीति लियोहै। बालि महावल शालि दल्यो कपि पालि बिभीपण भूपकियोहै ॥ तीय हरी रण बंधुपरयौ पै भयो शरणागत शोच हियोहै॥ बांह पगार उदार कृपालु कहां रघुवीर सो वीर बियोहै ॥ ३६ ॥ लीन्ह उखारि पहार विशाल चल्यो तेहिकाल विलंब न लायो ॥ मारुतनंदन मारुत कोमन को खगराजको वेग लजायो ॥ तीखी तुरा तुलसी कहतो पै हिये उपमाको समाउ न आयो ॥ मानो प्रतक्षण पर्वतकी न भली कलसी कपिज्यों धुकिधायो॥३७॥ (घना०) ॥ चल्यो हनुमान सुनियातुधान कालनेमि पठयो सो मुनिभयो पायो फल छलिकै ॥ सहसाउखारोहै पहार बहु योजनको रखवारे मारे भारे भूरि भट दलिकै ॥

बेगबल साहस सराहत कृपालु राम भरत की कुशल अचलल्यायो चलिकै । हाथ हरिनाथके बिकाने रघुनाथ जनु शीलसिंधु तुलसीश भलो मान्यो भलिकै ॥ ३८ ॥ बापु दियो काननभो आनन शुभाननसों वैरी भो दशानन सो तीयको हरनभो ॥ घोर रारि हेरि त्रिपुरारि विधि हारेहिये घायल लषण वीर बानर मरनभो ॥ बालिबलशालि दलि पालि कपिराजको विभीषण नेवाजि सेतुसागर तरनभो ॥ ऐसे शोकमें तिलोकके विशोक पलहीमें सबहीके तुलसीके साहिब शरनभो ॥३९॥ (स०) ॥ कुम्भकरण्ण हन्यो रणराम दल्यो दशकंधर कंधर तोरे ॥ पूषण वंश विभूषण पूषण तेज प्रताप गरे अरि ओरे ॥ देव निशान बजावत गावत धावतगे मन भावत भोरे ॥ नाचत बानर भालुसबै तुलसी कहिहारे हहा भयहोरे ॥ ४० ॥ (घना०) मारे रण रातिचर रावण सकुल दल अनुकूल देव मुनि फूलबरसतु हैं ॥ नाग नर किन्नर विरंचि हरि हर हेरि पुलक शरीर हिये हेतु हरषतुहैं ॥ वाम ओर जानकी कृपानिधानके विराजैं देखत विषाद मिटे मोद सरसतुहैं ॥ आयसु भो लोकनि सिधारे लोकपाल सब तुलसी निहारिकै दियो सो सरखतुहैं ॥ ४१ ॥ इति श्री कवित्तरामायणे लंकाकाण्डःसमाप्तः ॥ ६ ॥

अथ उत्तरकाण्डः ।

सवैया ॥ बालिसे वीर विदारि सुकंठ थप्यो हरषे सुर बाजने बाजे ॥ पलमें दल्यो दाशरथी दशकंधर लंक विभीषण राज विराजे ॥ राम स्वभाव सुने तुलसी हुलसे अलसी हमसे गलगाजे ॥ कायर क्रूर कपूतनकी हदतेऊ गरीव नेवाज नेवाजे ॥ १ ॥ वेदपढैं विधि शंभुसभीत पुजावन रावण सों नित आवैं ॥ दानव देव दयावने दीन दुखी दिन दूरिहिते शिरनावैं ॥ ऐसेउ भाग भगे दशभालले जो प्रभुता कवि कोविद गावैं ॥ रामसे वाम भये तेहि वामहि वामसबै सुख संपति लावैं ॥ २ ॥ वेद विरुद्ध मही मुनि साधु सशोक किये सुरलोक उजारचौ ॥ और कहा कहौं तीय हरी तबहूं करुणा-

कर कोप न धारयो ॥ सेवक छोहते छांड़ी क्षमा तुलसी लख्यो राम स्वभावहि हारयो ॥ तौलौं न दाप दल्यो दशकन्धर जौलौं विभीषण लात न मारयो ॥ ३ ॥ शोक समुद्र निमज्जत काढ़ि कपीश कियो जग जानत जैसो ॥ नीच निशाचर वैरीको बंधु विभीषणकीन्ह पुरन्दर ऐसो ॥ नाम लिये अपनाइ लियो तुलसी सो कहो जग कौन अनैसो ॥ आरत आरति भञ्जन राम गरीबनेवाज न दूसर ऐसो ॥ ४ ॥ मीत पुनीत कियो कपि भालुको पाल्यो ज्यो काहु न बाल तनूजो ॥ सज्जन सींव विभीषणभा अजहूं विलसै वर बंधु वधू जो ॥ कोशलपाल विना तुलसी शरणागतपाल कृपालु न दूजो ॥ क्रूर कुजाति कपूत अघी सबकी सुधरै जो करै नर पूजो ॥ ॥ ५ ॥ तीय शिरोमणि सीयतजी जेहिं पावककी कलुखाई दहीहै । धर्म धुरन्धर बंधुतज्यो पुरलोगनिकी विधि बोलि कहीहै ॥ कीश निशाचरकी करनी न सुनी न विलोकि न चित्त रहीहै ॥ राम सदा शरणागतकी अनखोही अनैसी स्वभाय सहीहै ॥ ६ ॥ अपराध अगाध भये जनते अपने उर आनत नाहिंनजू ॥ गणिका गज गीध अजामिलके गणि पातक पुञ्ज सराहिनजू ॥ लिये वारक नाम सुधाम दिये जिहि धाम महामुनि जाहिं न जू ॥ तुलसी भजु दीनदयालुहिरे रघुनाथ अनाथहि दाहिनजू ॥ ७ ॥ प्रभु सत्य करी प्रहलाद गिरा प्रकटे नरकेहरिखम्भ महा ॥ झखराज ग्रस्यो गजराज कृपा ततकाल विलम्ब किये न तहां ॥ सुरसाखी दैराखीहै पाण्डुवधू पट लूटत कोटिक भूपजहां ॥ तुलसी भजु शोच विमोचनको जनको पण राख्यो न राम कहां ॥ ८ ॥ नरनारि उघारि सभामहँ होत दिये पट शोच हरयो मनको ॥ प्रहलाद विषाद निवारण वारण तारण मीत अकारनको ॥ जो कहावत दीनदयालु सही जेहि भीर सदा अपने पनको ॥ तुलसी तजि आन भरोस भजै भगवान भलो करिहैं जनको ॥ ९ ॥ ऋषिनारि उधारि कियो शठकेवट मीत पुनीत सुकीर्त्तिलही । निज लोक दियो शबरी खगको कपिथाप्यो सो मालुम है सबही ॥ दशशीश विरोध सभीत विभीषण भूप कियो

जगलीक रही ॥ करुणानिधि को भजरे तुलसी रघुनाथ अनाथके नाथसही ॥ १० ॥ कौशिक विप्रवधू मिथिलाधिपके सव शोच दल्यो पलमाहैं ॥ बालि दशानन बंधु कथा सुनि शत्रुसुसाहिव शील सराहैं ॥ ऐसी अनूपकहै तुलसी रघुनायक की अगुणी गुणगाहैं ॥ आरत दीन अनाथनको रघुनाथ करैं निज हाथ कि छाहैं॥११॥ तेरे बेसाहे बेसाहत औरनि और बेसाहिके बेचन हारे ॥ व्योम रसातल भूमि भरे नृप कूरकुसाहिबसे तिहुँखारे ॥ तुलसी तेहि सेवत कौन मरे रजते लघुको करे मेरुते भारे ॥ स्वामी सुशील समर्त्थ सुजान सो तोसों तुहीं दशरत्थ दुलारे ॥१२॥(व०)॥यातुधान भालु कपि केवट विहंग जो जो पालो नाथ सद्य सो सो भयो काम काजको ॥ आरत अनाथ दीन मलिन शरण आये राखे अपनायसो स्वभाव महाराजको ॥ नाम तुलसी पै भोंडे भागसों कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बड़े दग़ाबाज को ॥ साहेब समर्थ दशरथके दयालु देव दूसरो न तोसों तुही आपने के लाजको ॥ १३ ॥ महाबली बालि दलि कायर सुकंठ कपि सखाकिये महाराज हौं नकाहूकामको ॥ भ्रात घात पातकी निशाचर शरण आये किये अंगीकार नाथ एते बड़े बामको ॥ राय दशरत्थके समर्त्थ तेरे नाम लिये तुलसीसे क्रूर को कहत जग रामको ॥ आपने निवाजे की तौ लाज महाराजको स्वभाव समुझत मन मुदित गुलामको ॥ १४ ॥ रूपशीलसिंधु गुणसिंधु बंधु दीनको दयानिधान जान माणि वीर बाहु बोलको॥ श्राद्ध कियो गीधको सराहे फल शबरीके शिलाशाप शमन निबाह्योनेह कोलको॥तुलसी उराउहोत रामको स्वभाव सुनि को न बलि जाइ न बिकाइ बिनमोलको ॥ ऐसेहु सु साहेब सों जाको अनुराग नसो बड़ोई अभागी भाग भागो लोभ लोलको ॥ १५ ॥ शूर शिरताज महाराजनिके महाराज जाको नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो॥ साहब कहाँ जहाँ न जानकीश सों सुजान सुमिरे कृपालुके मराल होत खूसरो ॥ केवट पषाण यातुधान कपि भालु तारे अपनायो तुलसी सों धींग धमधूसरो ॥

बोलको अटल बाहको पगार दीनबंधु दूबरेको दानीको दया निधान दूसरो ॥ १६ ॥ कीबेको विशोक लोक लोक पालहूते सब-कहूं कोऊ भो न चरवाहो कपि भालुको ॥ पविको पहार कियो ख्यालही कृपालु राम वापुरो विभीषण घरौंधी हुतो बाल-को ॥ नाम वोटलेतहीं निखोट होत खोटेखल चोविन मोट पाइ भयोन निहालको ॥ तुलसीकी बारबडी ढील होति शीलसिंधु बिगरि सुधारिबे को दूसरो दयालुको॥१७॥नाम लिये पूतको पुनीत कियो पातकीश आरति निवारे प्रभु पाहि कहे पीलकी॥छलिनकी छौडी सो-निगोडी छोटी जाति पाँति कीन्हीं लीन आपुमें भामिनी भोंडे भील-की ॥ तुलसी ओ तारिबो विसारिबो न अन्त मोहूं नीकेहै प्रतीति रावेर स्वभाव शीलकी ॥ देवतो दयानिकेत देत दादि दीनन की मेरी बार मेरेही अभाग नाथ ढीलकी ॥ १८ ॥ आगेपरे पाहन कृपा किरात कोलनी कपीश निशिचर अपनाये नाये माथजू॥सांची सेव-काई हनुमानकी सुजान राइ ऋणियां कहायेहौ विकाने ताके हाथजू ॥ तुलसीसे खोटे खरे होत ओट नामहीकी महँगी माटी मगहूकी मृगमद साथजू ॥ बात चले बातको न मनिबो वि-लग बलि काकी सेवा रीझिको निवाजो रघुनाथजू ॥ १९ ॥ कौशिककी चलत पपाणकी परसपाइ टूटत धनुप बनिगई है जनककी ॥ कोल पशु शवरी विहंग भालु रातिचर रतिनके लालचिन प्रापति मननकी ॥ कोटि कला कुशल कृपा लुनत-पाल बलि बातहु कितक तृण तुलसी तनककी ॥ राइ दशरत्थके समत्थराम राजमणि तेरे हेरे लोपै लिपि विधिहू गनक-की॥२०॥(घनाक्षरी) ॥शिला शाप पाप गुह गीधको मिलाप शवरी के पास आप चलिगयेहौ सो सुनी मैं ॥ सेवक सराह कपिनायक विभीपणको भरत सभा सादर सनेह शिरधुनी मैं ॥ आलसी अभागी अघी आरत अनाथपाल साहिब समर्थ एक नीके मन गुनीमें ॥ दोपं दुख दारिद दलैया दीनबंधु राम तुलसी न दूसरो दयानिधान दुनीमें ॥ २१ ॥ मीत बालि बंधु पूत दूत दशकंध बंधु सचिव सरा-

धकियो शबरी जटाइको ॥ लंकजरी जोहै जिये शोचसो विभीषणको कहो ऐसे साहेबकी सेवा न खटाइको ॥ बड़े एकएकते अनेक लोक लोकपाल अपने अपनेकोतौ कहै गो घटाइको ॥ सांकरेको सेइवो सराहिवे सुमिरबेको रामसों न साहिब न कुमति कटाइको ॥ २२ ॥ भूमिपाल व्यालपाल नाकपाल लोकपाल कारण कृपालु मैं सबैके जीकी थाहली ॥ कागज़को आदर काहूके नाहिं देखियत सबनि सोहातहै सेवासुजानि टाहली ॥ तुलसी स्वभावकहै नहीं कछू पक्षपात कौने ईश किये कीश भालु खास माहली ॥ रामहीके द्वारेपै बोलाइ सनमानियत मोसेदान दूबरे कुपुत कूरकाहली ॥ २३ ॥ सेवा अनुरूप फलदेत भूप कूप ज्यों विहीनगुण पथिक पियासे जात पथके । लेखे जोखे चोखे चित तुलसी स्वारथहित नीके देखे देवता देवैया घने गथके । गीधमानो गुरु कपि भालु मानो मीतकै पुनीत गीत साके सब साहेब समर्त्थके । और भूप परखि सुलाखि तौलि ताइलेत लसमके खसम तुहीपै दशरत्थके ॥ २४ ॥ रीति महाराजकी नेवाजिये जो माँगनोसो दोष दुख दारिद दरिद्रकैकै छोड़िये ॥ नाम जाको कामतरु देत फल चारि ताहि तुलसी विहाइकै बबूर रेंड गोडिये ॥ याचैको नरेश देशदेशके कलेशकरै देहै तौ प्रसन्नह्वै बड़ाई बड़ी बोड़िये ॥ कृपापाथनाथ लोकनाथनाथ सीतानाथ तजि रघुनाथ हाथ और काहि ओडिये ॥ २५ ॥ (सवैया) ॥ जाके विलोकत लोकपहोत विशोक लहैं सुरलोक सुठौरहि ॥ सो कमलातजि चंचलता अरु कोटि कला रिझवै शिरमौरहि ॥ ताको कहाय कहै तुलसी तुल जाहिनामांगत कूकर कौरहि ॥ जानकीजीवनको जनह्वै जरिजाउ सो जीह जो यांचत औरहि ॥ २६ ॥ जड़ पंच मिलै जेहि देहकरी करनी लघुधा धरणीधरकी ॥ जनकी कहु क्यों करिहै न सँभार जो सारकरै सचराचरकी ॥ तुलसी कहु रामसमानको आनहै सेवकि जासु रमा घरकी ॥ जगमें गति जाहि जगत्पतिकी परवाहहै ताहि कहा नरकी ॥ २७ ॥ जगयाचिये कोऊ न याचिये याचिये जोजिय जानकीजानहिरे॥जेहियांचत याचक-

ता जरिजाइ जो जारति जोर जहानहिरे॥गतिदेखु विचारि विभीषणकी अरु आनु हिये हनुमानहिरे॥तुलसी भजु दारिद दोष दवानल संकट कोटि कृपानुहिरे ॥ २८ ॥ सुनु कान दिये नित नेम लिये रघुनाथहिके गुणगाथहिरे॥सुखमन्दिर सुंदररूप सदा उरआनि धरे धनुभाथहिरे ॥ रसना निशि वासर सादरसो तुलसी जपु जानकीनाथहिरे ॥ करुसंग सुसन्तनसों तजिकूर कुपंथ कुचालि कुसाथहिरे ॥ २९ ॥ सुत दार अगार सखा परिवार विलोकु महाकुसमाजहिरे ॥ सबकी ममता तजिकै समता सजिसंतसभा न विराजहिरे ॥ नरदेह कहाकरि देखु विचारि विगारु गँवार न काजहिरे ॥ जनि डोलहि लोलुप कूकर ज्यों तुलसी भजु कोशलराजहिरे ॥ ३० ॥ विषया परनारि निशा तरुणाई सुपाइ परचौ अनुरागहिरे॥यमके पहरू दुखरोग वियोग विलोकतहू न विरागहिरे ॥ ममतावशते सबभूलिगयो भयो भोर महा भय भागहिरे जरठाइ दिशा रविकाल उग्यो अजहूं जड़ जीवन जागहिरे ॥ ३१ ॥ जनम्यो जेहि योनि अनेक क्रिया सुखलागिकरी न परै बरनी ॥जगमें जनकादि हितूभये भूरि बहोरि भई उरकी जरनी ॥ तुलसी अब रामको दासकहाइ हियेधरु चातककी धरनी ॥ करि हंसको वेष बड़ो सबसों तजिदे बकवायसकी करनी ॥ ३२ ॥ भलि भारतभूमिं भलेकुलजन्म समाज शरीर भलो लहिकै ॥ ममता करखा तजिकै वरखा हिम मारुत घाम सदासहिकै ॥ जो भजै भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै॥ नत और सबै विष बीज बये हरहाटक कामदुकानहिकै ॥३३॥ सो सुकृती शुचिमन्त सुसंत सुजान सुशील शिरोमणिस्वै ॥ सुर तीरथ तासु मनावन आवन पावनहोतहै तातनछ्वै ॥ गुणगेह सनेहको भाजनसो सबहीसों उठाइ कहौं भुजद्वै ॥ सतिभाय सदा छलछाँड़ि सबै तुलसी जो रहै रघुवीरको ह्वै ॥ ३४ ॥ सो जननी सो पिता सोइ भ्रात सो भामिनि सो सुत सोहित मेरो ॥ सोई सगो सो सखा सोइ सेवक सो गुरु सोसुर साहिबचेरो ॥ सो तुलसी प्रिय प्राणसमान कहाँलौं बनाइकहौं बहुतेरो ॥ जो तजिदेहको गेह सनेहसो रामको सेवक होइ सवेरो ॥३५॥ रामहैं मातु पिता गुरु बं-

धु औ संगी सखा सुत स्वामि सनेही ॥ रामकी सौंह भरोसोहै राम को रामरँग्यो रुचि राच्यो न केही ॥ जीवतराम मुये पुनि राम सदा-रघुनाथहिकी गति जेही ॥ सोई जियै जगमें तुलसी नतु डोलत और मुये धरिदेही ॥ ३६ ॥ सियरामस्वरूप अगाधअनूप विलोचन मीननको जलुहै ॥ श्रुतिरामकथा मुख रामको नाम हिये पुनिराम-हिको थलुहै ॥ मतिरामहिसों गति रामहिसों रति रामसों रामहिको-बलुहै ॥ सबकीनकहै तुलसीके मते यतनो जगजीवनको फलु है॥३७॥दशरत्थके दानि शिरोमणि राम पुराणप्रसिद्ध सुन्यो जसमैं॥ नर नाग सुरासुर याचक जो तुमसो मनभावत पायो नकैं॥ तुलसी करजोरि करै विनती जो कृपा करि दीनदयालु सुनै ॥ जेहि देह सनेह न रावरे सों ऐसी देह धराइकै जाय जियै ॥ ३८ ॥ झूठो है झूठो है झूठो सदा जग सन्त कहन्त जे अन्त लहाहै ॥ ताको कहै शठ शंकट कोटिक काढ़त दन्त करन्त हहाहै ॥ जानपनीको गुमान बड़ो तुलसीके विचार गँवार महाहै ॥ जानकीजीवन जान न जान्यो तो जान कहावत जान कहाहै ॥ ३९ ॥ तिन्हते खर शूकर श्वान भले जड़ता वशतें न कहैं कछु वै ॥ तुलसी जेहि राम-सों नेह नहीं सो सही पशु पूछ बिखाननहै ॥ जननी कत भार मुई दश मास भई कि न बाँझ गई कि न च्वै ॥ जरि जाउ सो जीवन जानकी नाथ जिये जगमें तुम्हरो विनहै ॥ ४० ॥ गज वाजि घटा भले भूरि भटा वनिता सुत भौंह तकैं सबकै ॥ धरणी धन धाम शरीर भलो सुरलोकहु चाहि इहै सुख स्वै॥सब फोकट साटक है तुलसी अपनो न कछू सपनो दिनद्वै ॥ जरि जाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमें तुम्हरो विनुहै॥४१॥ सुरराजसों राज समाज समृद्धि विरंचि धनाधिपसो धनभो ॥ पवमानसों पावक सों यम सोम-सो पूषनसों भवभूषन भो ॥ करि योग समीरन साधि समाधिकै धीर बड़ो वशहू मन भो ॥ सब जाइ स्वभाइ कहै तुलसी जो न जानकीजीवनको जनभो ॥ ४२ ॥ कामसे रूप प्रताप दिनेशसे सो-मसे शील गणेशसे माने ॥ हरिचन्द्रसे साँचे बडे विधिसे मघवासे म-

द्वीप विषै सुखसाने ॥ शुकसे मुनि शारदसे वकता चिरजीवन लोमश ते अधिकाने ॥ ऐसे भये तौ कहा तुलसी जुपै राजिवलोचन राम न जाने ॥ ४३ ॥ झूमत द्वार अनेक मतंग जँजीर जरे मदअंबु चुचाते ॥ तीखे तुरंग मनोगति चंचल पौनके गौनहुँते बढ़ि जाते ॥ भीतर चन्द्रमुखी अवलोकत बाहर भूप खड़े न समाते ॥ ऐसे भये तौ कहा तुलसी जुपै जानकीनाथके रंग न राते ॥ ४४ ॥ राज सुरेश पचाशक को विधिके करको जो पटो लिखि पाये ॥ पूत सुपूत पुनीत प्रिया निज सुंदरता रतिको मदनाये ॥ संपति सिद्धि सबै तुलसी मनकी मनसा चितवैं चितलाये ॥ जानकी जीवन जाने विना नर ऐसेऊ जीवन जीव कहाये ॥ ४५ ॥ कृशगात ललात जो रोटिनको घर बात घरे खुरपाखरिया ॥ तिन सोनेके मेरुसे ढेर लहे मनतौ न भरो घरपै भरिया ॥ तुलसी दुख दूनो दशा दुहुँ देखि कियो मुख दारिदको करिया ॥ तजि आशभो दास रघूपतिको दशरत्थको दानि दया करिया॥४६॥को भरिहै हरिके रितये रितवै पुनिको हरिजौं भरिहै॥उथपैतेहिको जेहिरामथपै थपिहैतेहिको हरिजाटरिहै ॥ तुलसी यह जानि हिये अपने सपने नहिं कालहुते डरिहै ॥ कुमया कछु हानि न औरनकी जोपै जानकीनाथ कृपा करिहै ॥ ॥ ४७ ॥ व्याल कराल महाविष पावक मत्तगयंदहुके रद तोरे ॥ शासति शंकिचली डरपेहुते किंकरते करनी मुख मोरे ॥ नेकु विषाद नहीं प्रहलादहि कारण केहरि केवल होरे ॥ कौन की त्रास करै तुलसी जोपै राखिहै रामतौ मारिहै कोरे ॥ ४८ ॥ कृपा जेहिकी कछु काज नहीं न अकाज कछू जेहिके मुखमोरे ॥ करै तिनकी परवाहिको जाहि विपानन पूछ फिरै दिन दोरे ॥ तुलसी जेहिके रघुवीरसे नाथ समर्थ सुसेवत रीझत थोरे ॥ कहा भव भीर परी तेहि धौं विचरै धरणी तिनसों तृण तोरे ॥ ४९ ॥ कानन भूधर वारि बयारि महाविष व्याधि दवा अरि घेरे ॥ संकट कोटि जहाँ तुलसी सुत मात पिता हित बंधु न नेरे ॥ राखिहै राम कृपालु तहाँ हनुमानसे सेवकहैं जेहि केरे ॥ नाक रसातल भूतलमें रघुनायक ए-

क सहायक मेरे ॥ ५० ॥ जबै यमराज रजायसुते मोहिं लै चलिहैं
भट बाँधि नटैया ॥ तात न मात न स्वामि सखा सुत बंधु विशाल
विपत्ति बटैया ॥ शासति घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुँ वोर
डटैया ॥ ॥ एक कृपालु तहाँ तुलसी दशरत्थको नंदन बंदिकटैया
॥ ५१ ॥ जहाँ यमयातन घोर नदी भट कोटि जलच्चर दंतटेवैया ॥
जहँ धार भयंकर वार न पार न बोहित नाव न नीक खेवैया ॥ तुल-
सी जहँ मातु पिता न सखा नाहिं कोऊ कहूं अवलंब देवैया ॥ तहाँ
बिनु कारण राम कृपालु विशाल भुजागहि काढ़िलेवैया ॥ ५२ ॥
जहाँ हित स्वामि न संग सखा वनिता सुत बंधु न बापु न मैया ॥ का-
य गिरा मनके जनके अपराध सबै छल छाँड़िक्षमैया ॥ तुलसी ते-
हि काल कृपालु बिना दूजो कौनहै दारुण दुःखदमैया ॥ जहाँ सब
संकट दुर्घट शोच तहाँ मेरो साहबराखैरमैया ॥ ५३ ॥ तापसको
वरदायक देव सबै पुनि वैर बढ़ावत बाढे॥थोरहिकोपकृपा पुनि थोरे-
हि बैठिकै जोरत तोरत ठाढ़े ॥ ठोंकि बजाय लखे गजराज कहाँ
लौं कहौं केहि सों रद काढ़े ॥ आरत कोहित नाथ अनाथको राम स-
हाय सही दिन गाढ़े॥५४॥जप योग विराग महा मख साधन दान द
या दम कोटि करै ॥ मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेशसे सेवत जन्म
अनेक मरै ॥ निगमागम ज्ञान पुराण पढ़ै तपसानलसे युग पुंज ज-
रै ॥ मनसों प्रण रोपि कहै तुलसी रघुनाथ बिना दुख कौन हरै ॥
॥ ५५ ॥ पातक पीन कुदारिद दीन मलीन धरे कथरी करवाहै ॥
लोक कहै विधिहू न लिख्यो स्वपनेहूं नहीं अपने वरवाहै ॥ रामको
किंकरसो तुलसी समुझेही भलो कहिवोनरवाहै॥ऐसे को ऐसो भयो क-
वहूं न भजे बिन बानर कोचरवाहै५६मातु पिता जगजाय तज्यो विधिहू
न लिखी कछुभाल भलाई॥नीच निरादर भाजनकादर कूकुरटूकमिला
गिललाई ॥ राम स्वभाव सुन्यो तुलसी प्रभु सों कह्यो वारक पेट
खलाई ॥ स्वारथको परमारथ को रघुनाथ सों साहब खोरि न लाई
॥ ५७॥ पाप हरै परिताप हरै तन पूजि भो हीतल शीतल ताई॥
हंस कियो बकते बलि जाऊँ कहाँ लौं कहौं करुणा अधिकाई॥ का-

ल विलोकि कहै तुलसी मनमें प्रभुकी परतीति अघाई ॥ जन्म ज-हाँ तहँ रावरे सों निबहै भरि देह सनेह सगाई ॥ ५८ ॥ लोग कहैं अरु हौंहूं कहौं जन खोटो खरो रघुनायक हीको ॥ रावरी राम बड़ी लघुता यश मेरोभयो सुखदायक हीको ॥ कै यह हानि सहौं बलि-जाउँ कि मोहूं करौं निज लायकहीको ॥ आनि हिये हित जानि क-रो ज्यों हौं ध्यान धरौं धनुशायक हीको ॥ ५९ ॥ आपुहौं आपुको नीके कै जानत रावरो राम भरायो गढायो॥कीर ज्यों नामरटै तुल-सी सो कहै जग जानकीनाथ पढ़ायो ॥ सोईहै खेद जो वेद कहै न-घटै जन जो रघुवीर बढ़ायो ॥ हौं तौं सदा खरको असवार तिहा-रोई नाम गयंद चढ़ायो ॥ ६० ॥ (घनाक्षरी) ॥ छारते सँवारिकै पहाड हूते भारी कियो गारो भयो पाँचमें पुनीत पक्ष पाइकै ॥ हौं-तौ जैसो तब तैसो अब अधमाईकैकै पेट भरों राम रावरोई गुण गाइकै ॥ आपने निवाजे कीपै कीजै लाज महाराज मेरी ओर हेरि-कै न बैठिये रिसाइकै ॥ पालिकै कृपालु व्याल बाल को न मारिये औ काटिये न नाथ विषहूको रूखलाइकै ॥ ६१ ॥ वेद न पुराण गान जानों न विज्ञान ज्ञान ध्यान धारणा समाधि साधन प्रवीणता ॥ नाहिंनविराग योग याग भाग तुलसीके दया दान दूबरो हौं पापही-की पीनता ॥ लोभ मोह काम कोह दोषको पमोसों कौन कलिहू-जो सिखिलईमेरियै मलीनता ॥ एकही भरोसो राम रावरो कहाव-तहौं रावरे दयालु दीनबन्धुमेरी दीनता ॥ ६२ ॥ रावरो कहावों गुणगावों राम रावरोई रोटी द्वैहौं पावों राम रावरोहिकानिहौं ॥ जा-नत जहान मन मेरेहू गुमान बड़ो मान्यो मैं न दूसरो न मानत न मानिहौं ॥ पाँचकी प्रतीति न भरोसो मोहिं आपनोई तुम अप-नाइहौ तबैही परिजानिहौं ॥ गढि गुढि छोलि छालि कुंद कीसी भा-ई बातें जैसी मुख कहौ तैसी जीय जबै आनिहौं ॥ ६३ ॥ वचन वि-कार करतबउखुआर मन विगत विचार कलि मलको निधानुहै ॥ रामको कहाइ नाम बेचि बेचि खाइ सेवा संगति न जाइ पाछिले को उपखानुहै ॥ तेहू तुलसीको लोग भलो भलो कहै ताको दूसरो

न हेतु एक नीकेकै निदानुहै ॥ लोकरीति विदित विलोकियत जहाँ तहाँ स्वामीके सनेह श्वानहूको सनमानुहै ॥ ६४ ॥ स्वारथको साजन समाज परमारथको मोसों दगाबाज दूसरो न जगजालहै ॥ कैन आयों करौं न करौं गो करतूति भलि लिखी न विरंचिहू भलाई भूलि भालहै ॥ रावरी शपथ राम नामहींकी गतिमेरे इहाँ झूठो झूठो सो तिलोक तिहूं कालहै ॥ तुलसी को भलोपै तुम्हारेही किये कृपालुकीजै न विलंब वलि पानीभरी खालहै ॥ ६५ ॥ रागको न साजन विराग योग याग जिय काया नहिं छाँडि देत ठाटिवो कुठाटको ॥ मनो राजकरत अकाजभयो आजु लगि चाहै चारु चीरपै लहैन टूक टाटको ॥ भयो करतार वडे कूरको कृपालु पायों नाम प्रेम पारसहौं लालची बराटको ॥ तुलसी वनीहै रामरावरे वनाये नातौं धोबी कैसो कूकर न घरको न घाटको ॥ ६६ ॥ ऊंचोमन ऊंचीरुचि भागनीचो निपटही लोकरीति लायक न लँगर लवारुहै ॥ स्वारथ अगम परमारथकी कहाँचली पेटको कठिन जग जीवको जवारुहै ॥ चाकरी न आकरी न खेती न बणिज भीख जानत न कूर कछु किसम कवारुहै ॥ तुलसीकी बाजी राखी रामहीके नाम नत भेद पितरनसों न मूडहू में वारुहै ॥ ६७ ॥ अपत उतार अपकारको अगार जग जाको छाँहछुये सहमत व्याध बाधको ॥ पातक पुहुमि पालिबेको सहसाननसों कानन कपटको पयोधि अपराधको ॥ तुलसी से वामको भो दाहिनो दयानिधान सुनत सिहात सव सिद्ध साध साधको ॥ रामनाम ललित ललाम कियो लाखनिको वडो कूर कायर कपूत कौड़ी आधको ॥ ६८ ॥ सव अंगहीन सव साधन विहीन मन वचन मलीन हीन कुल करतूतिहौं ॥ बुधि बलहीन भाव भगति विहीन दीन गुण ज्ञानहीन हीन भागहू विभूतिहौं ॥ तुलसी गरीबकी गई वहार रामनाम जाहि जपजीह रामहूको बैठो धूतिहौं ॥ प्रीति रामनामसों प्रतीति रामनामके प्रसाद रामनामके पसारि पाइँसूतिहौं ॥ ६९ ॥ मेरेजान जवतेहौं जीवह्वै जनम्यो जगत वते वेसाह्यो दाम लोभ कोह कामको ॥ मन तिनहींकी सेवा तिनहीं

सों भाव नीको वचन बनाइ कहौं हौं गुलाम रामको॥नाथहू न अपनायो लोकझूठीहै परीपै प्रभुहूते प्रबल प्रताप प्रभुनामको ॥ अपनी भलाई भलो कीजै तौ भलोई भलो तुलसी को खुलैगो खजानो खोटे दामको॥७०॥योग न विराग जप याग तप त्याग व्रत तीरथ न धर्मजानों वेदविधि किमिहै॥तुलसीसों पोच न भयो न ह्वैहै नहीं कहूं सोचै सब याके अघ कैसे प्रभु क्षमिहै ॥ मेरेतौ न डरु रघुबीर सुनो सांची कहौं खल अनखैहैं तुम्हैं सज्जन निगमिहै॥भले सुकृतीके संग मोहू तुला तौलिये तौ नामके प्रसाद भार मेरी ओर नमिहै ॥ ७१ ॥ जाति के सुजातिके कुजातिके पेटागिवश खाये टूक सबके विदित बात दुनीसो ॥मानस वचन काय किये पाप सतिभाय रामको कहाय दास दगाबाज पुनीसो॥रामनामको प्रभाउ पाउ महिमा प्रताप तुलसीको जगमनियत महामुनीसो ॥अतिही अभागे अनुराग तन रामपद मूढ येतो वड़ो अचरज देखी सुनीसो ॥ ७२ ॥ जायो कुल मंगन वधावनो वजायो सुनि भयो परिताप पाप जननी जनकको ॥ बारेते ललात बिललात द्वार द्वार दीन जानतहौं चारिफल चारिहि चनकको ॥ तुलसी सो साहिब समर्थको सुसेवकहि सुनत सिहात शोच विधिहू गनकको ॥ नाम राम रावरो सयानो किधौं बावरो जो करत गिरीते गरु तृणते तनकको ॥ ७३ ॥ वेदहू पुराण कही लोकहू बिलोकियत राम नामही सों रीझे सकल भलाईहै ॥ काशिहू मरत उपदेशत महेश सोइ साधन अनेक चितइन चितलाई है॥छाछीको ललात जेते राम नामके प्रसाद खात खुनसात सोंधे दूधकी मलाईहै ॥ रामराज सुनियत राजनीतिकी अवधि नाम राम रावरे तौ चामकी चलाई है ॥७४॥शोच संकटनि शोच संकट परत जर जरत प्रभाव नाम ललित ललामको ॥ बूडियो तरत विगरियो सुधरति बात होत देखि दाहिनो स्वभाव विधि वामको ॥ भागत अभाग अनुरागत विरागभाग जागत आलसि तुलसीहू से निकामको ॥ धाइ धारि फिरिकै गोहारि हितकारी होत आई मीचु मिटत जपत राम नामको॥७५॥ आंधरो अधम जड़ जाजरोजराजवन शूकरके शावक ढका ढकेलो

मगमै ॥ गिरो हिये हहरि हराम हो हराम हन्यो हाइ हाइ करत प-
रीगो कालफगमै ॥ तुलसी विशोकह्वै त्रिलोकपाति लोक गयो ना-
मके प्रताप बात विदितहै जगमै ॥ सोई राम नाम जो सनेहसों
जपत जन ताकी महिमा क्यों कहीहै जात अगमै ॥ ७६ ॥
जापकी न तप खप कियो न तमाइ योग याग न विराग त्याग
तीरथ न तनको ॥ भाईको भरोसो न खरोसो वैर वैरीहूसों बल
अपनों नहीं तू जननी न जनको ॥ लोकको न डर परलोकको न
शोच देव सेवा न सहाय गर्व धामको न धनको ॥ रामहीके
नामते जोहोइ सोई नीको लागै ऐसोई स्वभाव कछु तुलसीके मन
को ॥ ७७ ॥ ईश न गणेश न दिनेश न धनेश न सुरेश सुर गौरि
गिरापति नहिं जपने ॥ तुम्हरेई नामको भरोसो भव तरिवेको बैठे
उठे जागत बागत सोये सपने ॥ तुलसी है बावरो सो रावरोई रावरी
सो रावरेउ जानि जियकीजियेजु अपने ॥ जानकी जीवन मेरे रा-
वरे बदन फेरे ठाऊँ न समाऊँ कहूं सकल निरपने ॥ ७८ ॥ जा-
हिर जहानमें जमानो एक भाँति भयो वेंचिये विबुध धेनु रासभी
वेसाहिये ॥ ऐसेउ कराल कलिकालमें कृपालु तेरे नामके प्रताप
न त्रिताप तनदाहिये ॥ तुलसी तिहारो मन वचन करम जेहि नातो
नेमनेहू निज ओर ते निवाहिये ॥ रंकके निवाज रघुराज राजा
राजनिके उमरि दराज महाराज तेरी चाहिये ॥ ७९ ॥ स्वारथ
सयानप प्रपंच परमारथ कहायो रामरावरोहौं जानत जहानहै ॥ ना-
मके प्रताप वाप आजु लौं निवाही नीके आगेको गोसाईं स्वामी
सबल सुजानहै ॥ कलिको कुचालि पेखि दिन दिन दूनी देव पाह
रोई चोर हेरि हिय हहरातुहै ॥ तुलसीकी वलि बार बारही सँभार
कीवी यदपि कृपानिधान सदा सावधानहै ॥ ८० ॥ दिन दिन
दूनी देखि दारिद दुकाल दुख दुरित दुराज सुख सुकृत सकोचुहै ॥
मांगेपै न पावत प्रचारि पातकी प्रचंड कालकी करालता भलेको
होत पोचुहै ॥ आपने तो एक अवलंव अंव डिंभ ज्यों समर्थ सीता
नाथ सब संकट विमोचुहै ॥ तुलसीकी साहसी सराहिये कृपालु

राम नामके भरोसे परिणामको निशोचुहै ॥ ८१ ॥ मोह मद मा-
त्यो रात्यो कुमति कुनारिसों बिसारि वेद लोक लाज आकरो अ-
चेतुहै ॥ भावै सो करत मुँह आवै सो कहत कछु काहूकी सहत
नाहिं सरकस हेतुहै ॥ तुलसी अधिक अधमाईहू अजामिलते
ताहूमें सहाय कलि कपट निकेतु है ॥ जैबेको अनेक टेक एकटेक
ह्वैबेकी सो पेट प्रिय पूत हित राम नाम लेतुहै ॥ ८२ ॥ जागिये न
सोइये बिगोइये जनमजाय दुख रोग रोइये कलेश कोह कामको ॥
राजा रंक रागी न विरागी भूरि भागी ये अभागी जीव जरत प्रभाव
कलि बामको ॥ तुलसी कवंध कैसो धाइवो विचारु अंध धंध देखियत
जग शोच परिणामको ॥ सोइबो जो रामके सनेहकी समाधि सुख जा-
गिबो जो जीह जपै नीके राम नामको॥८३॥वरण धरम गयो आश्रम
निवास तजो त्रास न चकृतसों परावनो परोसोहै ॥ करम उपासना
कुवासना विनासो ज्ञान वचन विराग वेष जगत हरोसोहै ॥ गोरख
जगायो योग भगति भगाये लोग निगम नियोग तैसो कलिहि क्षरो
सो है ॥ काय मन वचन स्वभाय तुलसीहै जाहि राम नामको भरो
सो ताहिको भरोसोहै ॥ ८४ ॥ (सवैया) ॥ वेद पुराण विहाइ सुपंथ
कुमारग कोटि कुचाल चलीहै ॥ काल कराल नृपाल कृपालन राज
समाज बड़ोई छली है ॥ वर्ण विभाग न आश्रम धर्म दुनी दुख दोष
दरिद्र दलीहै ॥ स्वारथको परमारथको कलि रामको नाम प्रतापबली
है॥८५॥ न मिटै भव संकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो॥
कलिमें न विराग न ज्ञान कहूं सब लागत फोकट झूठ जटो॥ नट ज्यों
जनि पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो॥ तुलसी जो सदा
सुख चाहिय तौ रसना निशि वासर राम रटो ॥ ८६ ॥ दम दुर्गम दान
दया मख कर्म सुधर्म अधीन सबै धनको ॥ तप तीरथ साधन योग वि-
राग सो होइ नहीं दृढ़ता तनको॥ कलिकाल करालमें राम कृपालु यहै
अवलंब बड़ो मनको॥तुलसी सब संयमहीन सबै यक नाम अधार सदा
जनको ॥८७॥ पाइ सुदेह विमोह नदी तरणी न लही करणी न कछू
की ॥ राम कथा वरणी न बनाइ सुनी न कथा प्रह्लाद न ध्रुकी ॥

अब जोर जरा जरि गात गयो मन मानि गलानि कुबानि न मूकी ॥ नीकेकै ठीकदई तुलसी अवलंब बड़ी उर आखर दूकी ॥ ८८ ॥ राम विहाय मरा जपते विगरी सुधरी कवि कोकिलहूकी ॥ नामहिते गज की गणिकाहु अजामिलकी चलिगै चलचूकी ॥ नाम प्रताप बड़े कुसमाज बजाइ रही पति पांडु वधूकी ॥ ताकोभलो अजहूं तुलसी जेहि प्रीति प्रतीतिहै आखर दूकी॥८९॥नाम अजामिलसे खल तारण तारण वारण वार बधूको ॥ नाम हरे प्रहलाद विषाद पिता भय शासति सागर सूको॥नामसों प्रीति प्रतीति विहीन गिल्यो कलिकाल कराल सो चूको ॥ राखिहैं राम सो जासुहिये तुलसी हुलसै बल आखरदूको ॥ ९० ॥ (घनाक्षरी)॥ खेती न किसानको भिखारिको न भीख बलि बणिकको वणिज न चाकरको चाकरी ॥ जीविका विहीन लोग सिद्ध मान शौचवश कहे एक एकनसों कहाँ जाइका करी ॥ वेदहू पुराण कही लोकहू विलोकियत साँकरे सबैको राम रावरी कृपाकरी ॥ दारिद दशानन दबाई दुनी दीनबंधु दुरित दहत देखि तुलसी हहाकरी ॥ ९१॥ कुल करतूति भूति कीरति स्वरूप गुण यौवन ज्वरजरत परै न कल कही ॥ राज काज कुपथ कुसाज भोग रोगहीके वेद बुध विद्या पाई विवश बलकही ॥ गति तुलसीशकी लखत नहीं जो तुरत पविते करत छार पवै सोपलकही ॥ कासों कीजे रोष दोष दीजै काहि पाहि राम कियो कलि काल कुलि खलल खलकही ॥ ९२ ॥ बबुर बहेरेको बनाय बाग लाइयत रूंधवेको सोऊ सुरतरु काटियतहै॥गारी देत नीच हरिचंदहू दधीचिहूको आपने चना चबाइ हाथ चाटियत है ॥ आपमहापातकी हँसत हरि हरहूको आपुहै अभागी भूरिभागी डाटियतहै॥ कलिको कलुष मन मलिन किये महंत मशककी पांसुरी पयोधि पाटियतहै ॥ ९३ ॥ सुनिये कराल कलिकाल भूमिपाल तुम जाहि घालो चाहिये कहौ धौं राखै ताहिको ॥ हौंतौ दीन दूबरो बिगारो ढारो रावरो न ताको हहु तुमहुँ सकल जग जाहि को ॥ कामको हलाइ कै देखाइयत आंखि मोहिं येते मान अकस कीबेको आखु

आहिको ॥ साहिब सुजान जिन श्वानहू को पक्ष कियो राम बोला नाम- हौं गुलाम राम साहिको ॥ ९४ ॥ (सवैया) साँची कहौं कलिकाल करालमें ढारो बिगारो तिहारो कहा है ॥ कामको कोहको लोभको मोहको मोहि सों आनि प्रपंच रहाहै ॥ हौजगनायक लायक आजुपै मेरी यो टेंव कुटेव महाहै ॥ जानकीनाथ बिना तुलसी जगदूसरे सों करिहोंनह हाहै ॥ ९५ ॥ भागीरथी जल पान करौं अरु नाम द्वै रामके लेत नितैं- हौं ॥ मोसों न लेनो न देनो कछू कलि भूलि न रावरी ओर चितैहौं ॥ जानिकै जोर करो परिणाम तुम्हैं पछितैहो पै मैंन भितैहौं ॥ ब्राह्म- ण ज्यों उगिल्यो उरगारिहौं त्योंहीं तिहारे हिये न हितैहौं ॥ ९६ ॥ राज मरालके बालक पेलिकै पालत लालत खूसरको ॥ शुचि सुं- दर सालि सकेलि सुवारिकै बीज बटोरत ऊसरको ॥ गुण ज्ञान गुमा- न भभेरि बड़ो कल्पद्रुम काटत मूसरको ॥ कलिकाल विचार अ- चार हरी नहिं सूझै कछू धमधूसरको ॥ ९७ ॥ कीबे कहा पढ़िबेको कहा फल बूझि न वेदको भेद विचाऱ्यो ॥ स्वारथको परमारथ को कलि कामद रामके नाम विसाऱ्यो ॥ वाद विवाद विषाद बढ़ाइकै छाती पराई औ आपनि जाऱ्यो ॥ चारिहुको छहु को नवको दश आठको पाठ कुकाठ ज्यों भाऱ्यो ॥ ९८ ॥ आगम वेद पुराण ब- खानत मारग कोटिक जाहिं न जाने ॥ जे मुनिते पुनि आपुहि आ- पुको ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥ धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जप योग विराग लै जीव पराने ॥ को करि शोच मरै तुलसी हम जान- किनाथके हाथ बिकाने ॥ ९९ ॥ धूत कहौ अवधूत कहौ रजपूत कहौ जोलहा कहौ कोऊ ॥ काहू की बेटिसों बेटा न व्याहब काहूकी जाति बिगारन सोऊ ॥ तुलसी सरनाम गुलाम है रामको जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ॥ मांगिकैखैबो मसीदको सोइबो लैबे को एक न देबे- को दोऊ ॥ १०० ॥ मेरे जाति पाँति न चहौं काहूकी जाति पाँति मेरे कोऊ कामको न हौं काहूके कामको ॥ लोक परलोक रघुना- थहीके हाथ सब भारीहै भरोसो तुलसीके एक नामको ॥ अतिही अयाने उपखानो नहिं बूझैं लोग साहेबको गोत गोत होतहै गुलाम

को ॥ साधुकै असाधुकै भलौकै पोच शोचकहा काकाहूके द्वार परों
जोहौं सोहौं रामको ॥ १०१ ॥ कोऊ कहै करत कुसाज दगाबाज
बडो कोऊ कहै रामको गुलाम खरो खूबहै ॥ साधु जानैं महासाधु
खल जानैं महाखल बानी झूठी सांची कोटि उठत हबूबहै ॥ चहत
न काहूसों कहत न काहूकी कछू सबकी सहत उर अंतर न ऊबहै॥
तुलसीको भलो पोच हाथ रघुनाथहीके रामकी भगति भूमि मे-
री मति दूबहै ॥ १०२ ॥ जागैं योगी जंगम यती समाज ध्यान
धरैं डरैं उर भारी लोभ मोह कोह कामके ॥ जागैं राजा राज काज
सेवक समाज साज शोचैं सुनि समाचार बड़े वैरी वामके ॥ जागैं बुध
विद्याहित पंडित चकित चित जागैं लोभी लालची धरणि धन
धामके॥जागैं भोगी भोगही वियोगी रोगी रोगवश सोवै सुख तुलसी
भरोसे एक रामके॥१०३॥(छप्पय)॥ राम मातु पितु बंधु सुजन गुरु
पूज्य परमहित ॥ साहिब सखा सहाय नेह नाते पुनीत चित ॥ देश
कोश कुल कर्म धर्म धन धाम धरणिगति ॥ जाति पाँति सबभाँति
लागि रामहिं हमारिपति ॥ परमारथ स्वारथ सुयश सुलभ रामते
सकलफल ॥ कहतुलसिदास अब जब कबहुँ एक रामते मोरभल ॥
॥ १०४ ॥ महाराज बलिजाउँ रामसेवक सुखदायक ॥ महाराज
बलिजाउँ राम सुन्दर सब लायक ॥ महाराज बलिजाउँ राम सब सं-
कट मोचन ॥ महाराज बलिजाउँ राम राजीव विलोचन ॥ बलिजाउँ
राम करुणायतन प्रणतपाल पातकहरण ॥ बलिजाउँ राम कलि
भय विकल तुलसि दास राखिय शरण ॥ १०५ ॥ जय
ताडका सुबाहु मथन मारीचमानहर ॥ मुनिमख रक्षण दक्ष शिला-
तारण करुणाकर ॥ नृपगण बलमदसहित शंभुकोदंड विहंडन ॥
जयकुठाधर दर्पदलन दिनकरकुलमंडन ॥ जयजनकनगर आनंद-
प्रद सुखसागर सुखमाभवन॥ कह तुलसिदास सुरमुकुटमणि जयज-
यजय जानकिरमण ॥ १०६ ॥ जयजयंत जयकर अनंत सज्जनज-
नरंजन ॥ जय विराध वध विदुष विबुध मुनिगण भयभंजन ॥ जय
निशिचरी विरूप करन रघुवंशविभूषण ॥ सुभट चतुर्दशसहस दलन

त्रिशिरा खर दूषण ॥ जयदण्डकवन पावनकरन तुलसिदास संशय शमन ॥ जगविदित जगतमणि जयति जय जय जय जय जानकिरमन ॥ १०७ ॥ जय मायामृगमथन गीध शवरी उद्धारण ॥ जय कवन्धसूदन विशाल तरुताल विदारण ॥ दवन वालिवलशालि थपनसुग्रीव सन्तहित ॥ कपिकरालभट भालुकटक पावन कृपालुचित ॥ जय सियवियोग दुखहेतुकृत सेतुबन्ध वारिधिदमन ॥ दशशीश विभीषण अभयप्रद जय जय जय जानकिरमन ॥ १०८ ॥ कनक कुधरकेदार बीज सुंदर सुरमणिवर ॥ सींचि काम धुकधेनु सुधामय पयविशुद्धतर ॥ तीरथपति अंकुर स्वरूप यक्षेश रक्षतेहि ॥ मरकत मय शाखा सुपत्र मंजरि अलक्षजेहि ॥ कैवल्य सकल फलकल्पतरु शुभस्वभाव सवसुख वरिस॥कहतुलसिदास रघुवंशमणि तौकिहोहि तवकर सरिस ॥ १०९ ॥ जाइ सो सुभट समर्थ पाइ रण रारि न मंडै ॥ जाइ सो यती कहाय विषय वासना न छंडै ॥ जाइ धनिक विनदान जाइ निर्धन विनु धर्महिं ॥ जाइ सो पंडित पढिपुराण जो रत न सुकर्महिं ॥ सुतजाइ मातु पितु भक्तिविनु तिय सो जाइ जेहि पति न हित ॥ सब जाइ दास तुलसी कहै जौ न रामपद नेहनित ॥ ११० ॥ को न क्रोध निरदह्यो काम वश केहि नहिं कीन्हों ॥ को न लोभ दृढ़फंद बाँधि त्रासनकरि दीन्हों ॥ कवन हृदय नहिं लाग कठिन अति नारिनयनशर ॥ लोचनयुत नहिं अंध भयो श्रीपाइ कवन नर ॥ सुर नाग लोक महिमंडलहु कोजु मोह कीन्हों जयन॥ कह तुलसिदास सो ऊवरै जेहिराख राम राजिवनयन ॥ १११ ॥ (सवैया) भौंह कमान सँधान सुठान जेनारि विलोकनि वाणते वाचे ॥ कोप कृशानु गुमान अवाँवट ज्यों जिनके मन आँचन आँचे ॥ लोभ सवै नटके वशह्वै कपि ज्यों जगमें वहु नाचन नाचे ॥ नीके हैं साधु सवै तुलसी पै तेई रघुवीरके सेवकसाँचे॥११२॥(कवित्त)भेप सुवनाय भले वचनकहै चुवाइ जाइ तौ न जरनि धरणि धन धामकी ॥कोटिक उपाय करि लालि पालियतदेह मुख कहियत गति रामहीके नामकी ॥ प्रगटै उपासना दु-

रावै दुर्वासनाहिं मानस निवास भूरि लोभ मोह कामकी ॥ राग रोष ईर्षा कपट कुटिलाई भरे तुलसीसे भगत भगति चहै राम की ॥ ११३ ॥ कालिहही तरुण तन कालिहही धरणि धन कालिहही जितौंगो रण कहत कुचालिहै ॥ कालिहही साधौंगो काज कालिहही राजा समाज मसकहै कहै भार मेरे मेरुहालिहै ॥ तुलसी यही कुभाँति घने घर घालि आये घने घर घालत है घने घर घालिहै ॥ देखत सुनत समुझतहू न सूझै सोई कबहूं कह्यो न काहूको काल कालिह है ॥ ११४ ॥ भयो न तिकाल तिहूं लोक तुलसीसों मन्द निंदै सब साधु सुनि मानौ न सकोचुहौं ॥ जानत न योग हिय हानि मानै जानकीश काहेको परेखोहौ पापी प्रपंची पोचुहौं ॥ पेटभरिवेके काज महाराजको कहायों महाराजहू कह्यो है प्रणत विमोचुहौं ॥ निज अघ जाल कलिकालकी करालता विलोकि होत व्याकुल करत सोई शोचुहौं ॥ ११५ ॥ धरमको सेतु जगमंगलको हेतु भूमि भारहरिवेको अवतार लियो नरको ॥ नीति औ प्रतीति प्रीति पालचालि प्रभु मान लोक वेद राखिवेको प्रण रघुवरको ॥ वानर विभीषणकी ओरको कनावडो है सो प्रसंग सुने अंगजरे अनुचरको ॥ राखेरीति आपनी जो होइ सोई कीजे बलि तुलसी तिहारो घर जाय वाही घरको ॥ ११६ ॥ नाम महाराजके निवाही नीकी कीजे उर सबही सोहात मैं न लोगनि सोहात हौं ॥ कीजे राम वार यहि मेरी ओर चखकोर ताहि लगि रंक ज्यों सनेहको ललातहौं ॥ तुलसी विलोकि कलिकालकी करालता कृपालुको स्वभाव समुझत सकुचातहौं ॥ लोक एक भांतिको त्रिलोक नाथलोक वश आपनो न शोच स्वामी शोचही सुखातहौं ॥ ११७ ॥ तौ लों लोभ लोलुप ललात लालची लवार वार वार लालच धरणि धन धामको ॥ तवलों वियोग रोग शोग भोग यातनाके युग सम लागत जीवन याम यामको ॥ तौलों दुख दारिद दहत अति नित तनु तुलसी है किंकर विमोहकोह कामको ॥ सब दुख आपने निरापने सकल सुखजौलों जनभयो न वजाइ राजारामको ॥ ११८ ॥ तवलौं मलीन

हीनदीन सुख सपने न जहाँ तहाँ दुखीजन भाजन कलेशको ॥ तब लों उवैने पायँ फिरत पेटौखलाय बायेमुख सहत पराभव देश देशको ॥ तबलों दयावनो दुसह दुखदारिदको साथरीको सोइबो ओढ़िबो झूनेखेशको ॥ तुलसी जौलौं न यांच्यो जानकी जीवन-राम राजनकोराजा सोतौ साहब महेशको ॥ ११९ ॥ ईशनकेईश महाराजनके महाराज देवनकेदेव देव प्राणहूके प्राणहौ ॥ कालहू-के काल महाभूतनके महाभूत कर्महूकेकर्म निदानहूके निदानहौ ॥ निगमको अगम सुगम तुलसीहूसेको येते मान शीलसिंधु करुणा निधानहौ ॥ महिमा अपार काहू बोलको न वारापार बडीसाहिबी में नाथ बड़े सावधानहौ ॥ १२० ॥ (सवैया) ॥ आरतपाल कृपा-लु जोराम जेही सुमिरे तेहिको तहँ ठाढ़े ॥ नामप्रताप महामहिमा अँकरेकिये खोटेउ छोटेउ बाढ़े ॥ सेवक एकते एक अनेक भये तुलसी तिहुँ तापन डाढ़े ॥ प्रेम बड़ो प्रहलादहिको जिन पाहनते प-रमेश्वरकाढ़े ॥ १२१ ॥ काढ़िकृपान कृपानकहूं पितु कालकराल विलोकि न भागे ॥ रामकहाँ सबठाँउहै खंभमें हा सुनिहांक नृकेहरि जागे ॥ वैरि विदारि भये विकराल कहे प्रहलादहिके अनुरागे ॥ प्रीति प्रतीति बढ़ी तुलसी तबते सब पाहन पूजनलागे ॥ १२२ ॥ अंतर्य्यामिहुते बड़बाहर जानिहैं राम जे नाम लिये ते॥धावत धेनु प-न्हाइ लवाइ ज्यों बालक बोलनि कानकियेते ॥ आपनि बूझि कहै तुलसी कहिवेकी न बावरि बातवियेते ॥ पैजपरे प्रहलादहुको प्रगटे प्रभुपाहनते न हियेते ॥१२३ ॥ बालक बोलिदिये बलिकालकोका-यर कोटि कुचाल चलाई ॥ पापिहै बाप बडेपरितापते आपनी ओ-रते खोरि न लाई ॥ भूरिदई विषमूरिभई प्रहलाद सुधाई सुधाकी भलाई ॥ रामकृपा तुलसी जनको जगहोत भलेको भलाई भलाई ॥ १२४ ॥ कंसकरी व्रजबासिनपै करतूति कुभाँति चली न चलाई ॥ पाण्डुकेपूत सपूत कुपूत सुयोधन भो कलि छोटो छलाई ॥ कान्हकृपालु बड़े नतपाल गये खलखेचर खीस खलाई ॥ ठीक प्रतीति कहै तुलसी जगहोइ भलेको भलाई

भलाई ॥ १२५ ॥ अवनीश अनेक भये अवनी जिनके डरते सुरशोच सुखाहीं ॥ मानव दानव देवसतावन रावण घाटिरच्यो जगमाहीं ॥ तेमिलये धरिधूरि सुयोधन जे चलते बहुछत्र कि छाहीं ॥ वेद पुराण कहैं जगजान गुमान गोविंदहि भावत नाहीं ॥ ॥ १२६ ॥ जब नयनन प्रीतिठई ठगश्यामसों स्यानी सखी हठिहौं बरजी ॥ नहिं जानो वियोग सुरोगहै आगे झुकीतबहौं तेहिसों तरजी ॥ अब देहभई पटनेहके घालेसों ब्योतकरे बिरहा दरजी ॥ ब्रजराज कुमार विना सुनु भृङ्ग अनंगभयो जियको गरजी॥१२७॥ योगकथा पठई ब्रजको सबसो शठ चेरीकी चालचलाकी ॥ ऊधौजू कौनकहै कुबरी जो बरी नटनागर हेरिहलाकी॥जाहिलगै परि जानै सोई तुलसी सो सुहागिनि नंदललाकी ॥ जानीहै जानपनी हरिकी अबबांधियैगी कछुमोटि कलाकी॥१२८॥(क०)॥पठयोहै छपद छबीले कान्ह केहू-कहूं खोजिकै खवासखासो कूबरीसी बालको ॥ ज्ञानको कढ़ैया बिनु-गिराको पढ़ैया बार खालको कढ़ैया सो बढ़ैया उरशालको ॥ प्रीति-कोवधिक रसरीतिको अधिक नीतिनिपुण विवेकहै निदेश देशकाल-को॥तुलसी कहे न बनै सहेही बनैगी सब योग भयो योगको वियोग नंदलालको ॥१२९॥ हनूमान ह्वै कृपालु लाड़िले लषणलाल भावते भरतकोजै सेवक सहायजू ॥ विनती करत दीन दूबरो दयावनोसो विगरेते आपही सुधारिलीजै भायजू ॥ मेरी साहिबिनी सदा शीशपर बिलसत देवि क्यों न दासको देखाइयत पायजू ॥ खीझहूमें रीझबे को बानि रामरीझतहै रीझेह्वैहैं रामको दुहाई रघुरायजू ॥ १३० ॥ (सवैया) वेप विरागको रागभरो मनमायकहौ सतिभावहौ तोसों ॥ तेरेही नाथको नामलै बेचिहौं पातकी पामर प्राणनि पोसों ॥यते बड़े अपराधी अघीकहु तें कहो अबकी मेरा तुमेसों॥ स्वारथको परमा-रथको परिपूरण भो फिरि घाटि न होसों ॥ १३१ ॥ (घनाक्षरी)जहाँ वाल्मीकि भये व्याधते मुनींद्र साधु मरा मरा जपे सुनि शिप ऋषि सातकी ॥तीर्थको निवास लव कुशको जनम थल तुलसी छुवत छाँह [illegible] ॥ त्रिटप महीप [illegible] सीता बट

त पुनीत होत पातकी ॥ वारि पुर दिग पुर बीच विलसति भूमि
कित जो जानकी चरण जलजातकी ॥ १३२ ॥ मरकत बरन प-
फल मानिकसे लसै जटाजूट जनु रूख वेष हरुहै ॥ सुखमाको
कैधौं सुकृत सुमेरु कैधौं संपदा सकल मुद मंगलको घरुहै ॥
अभिमत जो समेत प्रीति सेइये प्रतीति मानि तुलसी विचारि
को घरुहै ॥ सुरसरि निकट सोहावनी अवनि सोहै रामरमणीको
कलि कामतरुहै ॥ १३३ ॥ देवधुनी पास मुनिवास श्रीनिवास
हाँ प्राकृतहूँ वट बुट बसत पुरारिहैं ॥ योग जप यागको विरागको
ीतपीठि रागिनपै सीठि डीठि बाहरी निहारिहैं ॥ आयसु आदेश
बू भलो भलो भावसिद्धि तुलसी विचारि योगी कहत पुकारिहैं ॥
भगतनको तौ कामतरुते अधिक सियवट सेये करतल फल चा-
हैं ॥ १३४ ॥ जहाँ वन पावनो सुहावनो विहंग मृग देखि अति
गत अनंद खेट खूंटसो ॥ सीताराम लषण निवास वास मुनिन
सिद्ध साधु साधक सबै विवेक बूटसो ॥ झरना झर-
झरि शीतल पुनीत वारि मंदाकिनि मंजुल महेश जटाजूटसो ॥
लसी जो रामसों सनेह साँचो चाहिये तौ सेइयै सनेहसों विचित्र
त्रकूट सो ॥ १३५ ॥ मोह वन कलिमल पल पीन जानि जिय
धु गाइ विप्रनके भयको नेवारिहै ॥ दीन्ही है रजाइ राम पाइसो
हाय लाल लषण समर्थ वीर हेरि हेरि मारिहै ॥ मंदाकिनी मंजुल
मान असि वान जहां वारि धार धीर धरि सुकर सुधारिहै ॥ चित्र-
ट अचल अहेरी बैठ्यो घात मानो पातकके व्रात घोर सावज सँ-
रिहै॥१३६॥(सवैया)॥लागिदवारि पहार ढही लहकी कपिलंक यथा
र खोकी ॥ चारुचुवा चहुँओर चली लपटैं झपटैं सो तमीचर तो-
ी ॥ क्यों कहि जात महा सुखमा उपमा तकि ताकतहै कवि को-
ी ॥ मानोंलसी तुलसी हनुमान हिये जगजीति जरायकी चौकी ॥
१३७॥देवकहैं अपनी अपना अवलोकन तीरथराज चलोरे॥देखि
टै अपराध अगाध निमज्जत साधु समाज भलोरे ॥ सोह सिना-
तको मिलिबो तुलसी हुलसे हिय हेरि हलोरे ॥ मानो हरे तृण चा-

रु चरैं वगेरे सुरधेनुके धौल कलोरे ॥ १३८ ॥ देवनदी कहँ जो जन
जान किये मनसा कुल कोटि उधारे ॥ देखि चलैं झगरैं सुर नारि
सुरेश बनाइ विमान सँवारे ॥ पूजाको साज विरंचिरचै तुल-
सी जे महातम जानन हारे ॥ ओककी नीव परी हरि लोक विलोक-
त गंग तरंग तिहारे ॥ १३९ ॥ब्रह्म जो व्यापक वेद कहैं गमनाहिं गि-
रा गुणज्ञान गुनीको ॥ जो करता भरता हरता सुर साहिव साहिव
दीन दुनीको ॥ सोई भयो द्रव रूप सहीजुहै नाथ विरंचि महेश मु-
नीको ॥ मानि प्रतीति सदा तुलसी जल काहे न सेवत देव धुनीको
॥१४०॥ बारि तिहारो निहारि मुरारि भये परसे पद पापलहौंगो ॥
ईशह्वै शीश धरों पै डरों प्रभुकी समता बड़ दोष कहौंगो ॥ वरु वा-
रहि बार शरीर धरों रघुवीरको ह्वै तव तीर रहौंगो ॥ भागीरथी वि-
नवौं करजोरि बहोरि न खोरि लगै सो कहौंगो॥१४१॥(कवित्त)॥लाल
ची ललात विललात द्वार द्वार दीन वदन मलीन मन मिटै न विसूर-
ना ॥ ताकत सराधकै विवाहकै उछाव कछू डोलै लोल बूझत शव-
द ढोल तूरना ॥ प्यासे न पावहिं बारि भूखे न चनक चारि चाहत
अहारतपहार दारि कूरना ॥ शोकको अगार दुख भार भरो तौलों
जंन जौलौं देवी द्रवै न भवानी अन्नपूरना॥१४२॥(छप्पय)॥ भस्म
अंग मर्दन अनंग संतत असंगहर ॥ शीश गंग गिरिजा अधंग
भूषण भुजंगवर ॥ मुण्डमाल विधु बाल भाल डमरू कपाल-
कर ॥ विबुध वृंद नवकुमुद चन्द सुखकन्द शूलधर ॥ त्रिपुरारि त्रि-
लोचन दिग्वसन विष भोजन भव भय हरण ॥ कह तुल-
सिदास सेवत सुलभ शिव शिव शिव शंकर शरण ॥ १४३ ॥ गर-
ल अशन दिग्वसन व्यसन भंजन जनरंजन ॥ कुंद इंदु कर्पूर गौर
सच्चिदानंदघन ॥ विकटवेष उरशेष शीशसुर सरित सहजशुचि ॥
शिव अकाम अभिराम धाम नितराम नामरुचि॥ कंदर्पदर्प दुर्गमद-
वन उमा रमण गुणभवनहर॥तुलसीश त्रिलोचन त्रिगुण पर त्रिपुरम-
थन जय त्रिदशवर ॥ १४४ ॥ अर्ध अंग अंगना नाम योगीश योग-
पति॥ विषम अशन दिगवसन नाम विश्वेश विश्वगति ॥ कर कपाल

शिर माल व्याल विष भूति विभूषण ॥ नाम शुद्ध अविरुद्ध अमर अनवद्य अदूषण ॥ विकराल भूत वैतालप्रिय भीम नाम भवभय द-मन ॥ सब विधि समर्थ महिमा अकथ तुलसिदास संशयशमन ॥ ॥१४५॥ भूतनाथ भवहरण भीम भय भवन भूमिधर ॥ भानुमंत भगवंत भूति भूषण भुजंगवर ॥ भव्य भाव वल्लभ भवेश भवभार विभंजन ॥ भूरि भोग भैरव कुयोग गंजन जनरंजन ॥ भारती वदन विष अशन शिव शशि पतंग पावकनयन ॥ कह तुलसिदास किन भजसि मन भद्रसदन मर्दनमथन ॥१४६॥ (सवैया) ॥ नांगो फिरै कहै मांगनो देखि न खांगो कछू जनि मांगिये थोरो॥ राँक निनाकप रीझि करै तुलसी जग जो जुरे याचक जोरो ॥ नाक सवाँरत आयो-हौं नाकहि नाहिं पिनाकिहि नेकु निहोरो ॥ विरंचि कहै गिरिजा सि-खवो पतिरावरौ दानिहै बावरो भोरो॥१४७॥विष पावक व्याल कराल गरे शरणागत तौ तिहुँतापन डाढ़े ॥ भूत वैताल सखा भव नाम दलै पलमें भवके भय गाढ़े ॥तुलसीश दरिद्र शिरोमणिसों सुमिरे दुखदा-रिद होहिं न ठाढ़े ॥ भौनमें भांग धतूरोई आंगन नांगेके जागे हैं मा-गने बाढ़े ॥ १४८ ॥ शीश जटा वरदा वरदानि चढ़ेउ वरदा वरन्यों वरदाहै ॥ धाम धूतरो विभूतिको कूरो निवास तहाँ सबलै मरदाहै ॥ व्याली कपालीहै ख्याली चहूँदिशि भांगके टाटिनको परदाहै॥रंक शिरोमणि काकिणिभाव विलोकत लोकप को करदाहै ॥ १४९ ॥ दानि जो चारि पदारथको त्रिपुरारि तिहूँपुरमें शिरटीको ॥ भोरो भलो भले भायको भूखो भलोई कियो सुमिरे तुलसीको ॥ ता विन आशको दास भयो कबहूं न मिटयो लघु लालच जीको ॥ साधो कहा करि साधनते जोपै राधो नहीं पति पारवतीको ॥१५०॥ जात जरे सब लोक विलोकि त्रिलोचनसों विष लोकि लियोहै ॥ पान कियो विष भूषण भो करुणा वरुणालय सांइ हियोहै ॥ मेरेई फोरिवे योग कपार किधौं कछु काहू लखाइ दियोहै ॥ काहे न कान-करो विनती तुलसी कलिकाल विहाल कियोहै ॥ १५१ ॥ (कवित्त) खायो कालकूट भयो अजर अमर तनु भवन मशान गथ गां-

ठरी गरदकी ॥ डमरू कपाल कर भूषण कराल व्याल बावरे बड़े की रीझ बाहन बरदकी ॥ तुलसी विशाल गोरे गात विलसाति भूति मानों हिमगिरि चारु चांदनी शरदकी ॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष वसत विलोकनिमें काशी करामाति योगी जागत मरदकी॥१५२॥ पिंगल जटा कलाप माथेपै पुनीत आप पावक नयना प्रताप भ्रूपर वरत हैं॥लोचन विशाल लाल सोहै लाल चन्द्र भाल कंठ कालकूट व्याल भूषण धरतहैं ॥ देत न अघात रीझि जात पात आकहीके भोलानाथ योगी जब औढर ढरतहैं ॥ सुंदर दिगम्बर विभूति गात भांग खात रूरे शृंगी पूरे काल कंटक हरतहैं ॥ १५३ ॥ देत संपदा समेत श्रीनिकेत याचकनि भवन विभूति भांग वृषभवहनु है ॥ नाम वामदेव दाहिनो सदा असंगरंग अर्द्धंग अंगना अनंगको महनु है ॥ तुलसी महेशको प्रभाव भावही सुगम गिरा अगमनिहूंको जानिबो गहनु है ॥ वेषतौ भिखारिको भयंकर रूप शंकर दयालु दीनबंधु दानि दारिद दहनुहै ॥ १५४ ॥ चाहै न अनंग अरि एकौ अंग मांगनेको देवोई पै जानिये स्वभाव सिद्ध बानिसों ॥ बारिबुंदचारि त्रिपुरारि पर डारियेतौ देत फल चारि लेत सेवा सांची मानिसों ॥ तुलसी भरोसो न भवेश भोलानाथको तौ कोटिक कलेश करो मरो छार छानिसों ॥ दारिद दमन दुख दोष दाह दावानल दुनी न दयालु दूजो दानि शूलपाणिसों ॥ १५५ ॥ काहेको अनेक देव सेवत जागै मशान खोवत अपान शठ होतहाठि प्रेतरे ॥ काहेको कोटी उपाइ करत मरत धाय याचत नरेश देश देशके अचेतरे॥ तुलसी प्रतीति बिनु त्यागै तौ प्रयाग तनु धनहीके हेतु दान देत कुरुखेतरे॥पात द्वै धतूरके द्वै भोरैकै भवेश सो सुरेशहीकी संपदा सुभाय सो न लेतरे॥१५६॥स्यन्दन गयंद बाजिराजि भले भले भट धन धाम निकर करनिहू न पूजै कै ॥ वनिता विनीत पूत पावन सोहावन औ विनय विवेक विद्या सुभग शरीर वै ॥ यहां ऐसो सुख परलोक शिवलोक ओक ताको फल तुलसी सो सुनौ सावधान है ॥ जाने बिनु जानेकै रिसाने केलि कबहुंक शिवहि चढ़ा-

ये है हैं बेलके पतौवाद्दै ॥ १५७ ॥ रतिसी रवनि सिंधु मेखला अवनिपति औनिप अनेक ठाढ़े हाथ जोरि हारिकै ॥ संपदा समाज देखि लाज सुरराजहूके सुख सबविधि विधि दीन्हे हैं सँवारिकै॥ यहां ऐसो सुख सुरलोक सुरनाथ पद ताको फल तुलसी सो कहै गो विचारिकै ॥ आकके पतौवा चारि फूलके धतूरेकेद्वै दीन्हें ह्वैहैं वारक पुरारिपर डारिकै ॥ १५८ ॥ देवसरि सेवौ वामदेव गाउँ रावरेही नाम रामहीके माँगि उदर भरतहौं ॥ दीबे योग तुलसी न लेत काहूको कछुक लिखी न भलाई भाल पोचन करत हौं ॥ येतेहू पर कोऊ जो रावरोहूं जोर करै ताको जोर देवदीन द्वारे गुदरतहौं ॥ पाइके उराहनो उराहनो न दीजे मोहिं कालि काला काशीनाथ कहे निवरतहौं ॥ १५९ ॥ चेरो राम रायको सुयश सुनि तेरोहर पाइ तर आइरह्यों सुरसरि तीर हौं ॥ वामदेव रामको स्वभाव शील जानियत नाता नेह जानिजिय रघुवीर भीरहौं ॥ अवि भूत वेदन विषम होत भूतनाथ तुलसी विकल पाहि पचत कुपीर हौं ॥ मारियेतो अनायास काशीवास खासफल ज्याइये तौ कृपा करि निरुज शरीरहौं ॥ १६० ॥ जीवेकी न ललसा दयालु महादेव मोहिं मालुमहै तोहिं मरिवेईको रहतुहौं ॥ कामरिपु रामके गुलामनिको कामतरु अवलंब जगदम्ब सहित चहतुहौं ॥ रोग भये भूत सो कुसूत भयो तुलसीको भूतनाथ पाहि पदपंकज गहतु हौं ॥ ज्याइये तौ जानकी जीवन जन जानि जिय मारियेतो मांगी मीचु सुधिये कहतुहौं ॥ १६१ ॥ भूत भव भवति पिशाच दूत प्रेत प्रिय आपनो समाज शिव आपुनीके जानिये ॥ नाना वेष वाहन विभूषण वसन वास खान पान बलि पूजा विधिको बखानिये ॥ रामके गुलामनिकी रीति प्रीति सूधी सब सबसों सनेह सबहीको सनमानिये ॥ तुलसीकी सुधरे सुधारे भूतनाथहीके मेरे माय बाप गुरु शंकर भवानिये॥ १६२॥ गौरीनाथ भोलानाथ भवत भवानीनाथ विश्वनाथ पुर फिरि आन कलिकालकी ॥ शंकरसे नर गिरिजासी नारि काशीवासी वद कही सही शशिशेखर

कृपालकी ॥ छमुख गणेशते महेशते पियारे लोग विकल विलोकि-
यत नगरी विहालकी ॥ परी सुरबेलि केलि काटत किरात कलि
निठुर निहारिये उघारि डीठि भालकी ॥१६३॥ ठाकुर महेश ठकु-
राइनि उमासी जहाँ लोक वेदहू विदित महिमा ठहरकी ॥ भट रुद्र
गण भूत गणपति सेनापति कलिकाल की कुचाल काहूतौ नहरकी॥
वसी विश्वनाथकी विपाद बड़ो वाराणसी बुझिये न ऐसी गति शंकर
शहरकी ॥ कैसे कहे तुलसी वृषासुरके वरदानि बानि जानि सुधा
तजि पिय निज हरकी ॥ १६४ ॥ लोक वेदहू विदित वाराणसीकी
बड़ाई बासी नर नारि ईश अंबिका स्वरूप हैं ॥ कालनाथ कोतवाल
दंडकारि दंडपाणि सभा सदगणपसे अमित अनूपहैं ॥ तहाँऊ कु-
चालि कलि कालकी कुरीति कैधौं जानत न मूढ़ इहाँ भूतनाथ भू-
पहैं ॥ फलै फूलै फैलै खलसीदैं साधु पलपल बाती दीपमालिका
ठठाइयत सूपहैं ॥ १६५ ॥ पंचकोश पुण्यकोष स्वारथ परारथको
जानि आप आपने सुपास वास दियोहै ॥ नीच नर नारि न सँभारि
सकै आदर लहत फल कादर विचारि जो न कियोहै ॥ बारी
वाराणसी बिनु कहे चक्र चक्रपानि मानि हित मानि सो मुरारि
मनभियो है ॥ शेषमें भरोसो एक आशुतोष कहि जात विकल
विलोकि लोक कालकूट पियोहै ॥ १६६॥ रचत विरंचि हरिपालत
हरत हर तेरेही प्रसाद जग अगजग पालिके ॥ तोहिं में विकास
विश्व तोहिंमें विलास सब तोहिं में समात मातु भूमिधर बालिके ॥
दीजै अवलंब जगदम्ब न विलंबकीजे करुणा तरंगिनी कृपातरंग
मालिके ॥ रोष महामारी परितोष महतारी दुनि देखिये दुखारी
मुनि मानस मरालिके ॥ १६७ ॥ निपट बसेरे अघ अवगुण घनेरे
नर नारिऊ अनेरे जगदंब चेरी चेरेहैं ॥ दारिद दुखारी देखि भूसुर
भिखारी भीरु लोभ मोह काम कोह कलिमल घेरेहैं ॥ लोक रीति
राखिराम साखि वामदेव जानि जनकी विनति मानि मातु क-
हि मेरेहैं॥महामारी महेशानि महा महिमा कि खानि मोद मंगल की
राशि काशी वासी तेरेहैं ॥ १६८ ॥ लोगनको पाप कैधौं सिद्ध

सुर शाप कैधों कालके प्रताप काशी तिहूं ताप तईहै ॥ ऊंचेनीचे बीचके धनिक रंक राजा राय हठनि बजायकरि डीठि पीठि दईहै ॥ देवता निहोरे महामारिन्ह सों करजोरे भोलानाथ जानिभोरे आपनीसी ठईहै ॥ करुणानिधान हनुमान वीर बलवान यशराशि जहाँ तहाँ तैहीं लूटि लईहै ॥१६९॥ शंकर शहर सर नर नारि वारिचर विकल सकल महामारीमाया भई है ॥ उछरत उतरात हहरात मरिजात भभरि भगत जलथल मीचु मई है ॥ देवन दयालु महिपालन कृपालु चित वाराणसी बाढ़त अनीति नितनई है ॥ पाहि रघुराज पाहि कपिराज रामदूत रामहूकी बिगरी तुहीं सुधारिलई है ॥ १७० ॥ एकतौ कराल कलिकाल शूल मूलतामें कोढ़मेंकी खाजुसी शनीचरीहै मीनकी ॥ वेद धर्म दूरगये भूप चोर भूपभये साधु सिद्धमान जन वीते पापपीनकी ॥ दूबरेको दूसरो न द्वार रामदयाधाम रावरोई गतिबल विभव विहीनकी ॥ लागैगी पै लाजवा विराजमान विरदहि महाराज आजु जो न देत दादि दीनकी१७१॥ रामनाम मातु पितु स्वामि समरथ हितु आशरामनामको भरोसो रामनामको ॥ प्रेम रामनामहीं सों नेम रामनामहीको जानो न मरमपद दाहिनो न वामको ॥ स्वारथ सकल परमारथको रामनाम रामनामहीन तुलसी न काहूकामको ॥ रामकी शपथ सर्वसमेरे रामनाम कामधेनु कामतरु मोसे क्षीणछामको॥१७२॥ (सवैया) ॥ मारग मारि महीसुर मारि कुमारग कोटिककै धनलीयो ॥ शंकर कोपसो पापको दाम परीक्षित जाहिगो जारिकै हीयो ॥ काशीमें कंटक जेतेभये ते गोपाइ अघाइकै आपनोकीयो॥आजुकि कालिह परौं किन रौं जड़जाहिंगे चाटि देवारिको दीयो ॥ १७३ ॥ कुंकुम रंग सुअंग जितो मुखचंद्रसों चंदन होडपरीहै ॥ बोलत बोल समृद्धि चुवै अवलोकत शोच विषाद हरीहै ॥गौरीकी गंग विहंगिनि वेष कि मंजुल मूरति मोद भरीहै ॥ पेंखि सप्रेम पयान समय सब शोच विमोचन क्षेम करीहै ॥ १७४ ॥ मंगलको राशि परमारथकी खानि जानि विरंचि बनाई विधि केशव बसाईहै ॥ प्रलयहू काल राखी शूलपा-

णि शूलपर मीचुवशनीच सोऊ चहत खसाईहै॥ छाँडि क्षितिपाल तो परीक्षित भये कृपालु भलोकियो खलको निकाई सो नसाईहै॥ पाहि हनुमान करुणानिधान राम पाहि काशि कामधेनु कलिकुहत कसाई है॥१७५॥ विरची विरंचिकी बसति विश्वनाथकीजो प्राणहूते प्यारी पुरी केशव कृपालकी॥ ज्योतिरूप लिंगमई अगनित अंगमई मोक्ष वितरनि विदरनिजगजालकी॥ देवी देव देवसरि सिद्धि मुनि वरवास लोपति विलोकत कुलिपि भोंड़े भालकी॥ हाहा करै तुलसी दयानिधान राम ऐसी काशीकी कदर्थना कराल कलिकालकी॥ ॥१७६॥ आश्रम वरण कलि विवश विकलभये निज निज मरयाद मोटरीसि डारदी॥शंकर सरोष महामारिहीते जानियत साहिव सरोष दुनीदीनदीन दारदी॥ नारि नर आरत पुकारत सुनै न कोउ काहू देवननि मिलि मोटी मूठी मारदी॥तुलसी सभीत पाल सुमिरे कृपालु राम समय सुकरुणा सराहि सनकारदी॥ १७७॥

इति श्रीतुलसीदासकृत कवित्तावली रामायणे
उत्तरकाण्डःसमाप्तः॥ श्रीरस्तु॥

इति कवित्तरामायण समाप्तम्॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना

बम्बई.

इति

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

कवित्तरामायण समाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत-

विनयपत्रिका ।

राग बिलावल ।

गाइये गणपति जगवन्दन । शङ्करसुवन भवानीनन्दन ॥ सिद्धि-सदन गजवदन विनायक । कृपासिंधु सुन्दर सबलायक ॥ मोद-कप्रिय मुदमङ्गलदाता । विद्यावारिधि बुद्धिविधाता ॥ माँगत तुल-सिदास करजोरे । बसहिं राम सिय मानस मोरे ॥ १ ॥ दीनदयालु दिवाकर देवा । कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥ हिमतमकरिकेहरि करमाली । दहनदोप दुख दुरितरुजाली ॥ कोक कोकनद लोक प्रकाशी । तेज प्रताप रूप रसराशी ॥ सारथि पंगु दिव्यरथगामी । हरि शङ्कर विधि मूरति स्वामी ॥ वेद पुराण प्रगट यश जागै । तुलसी रामभक्ति वर माँगै ॥ २ ॥ को याचिये शंभु तजि आन । दीनदयालु भक्त आरतहर सब प्रकार समरथ भगवान ॥ कालकूटज्वर जरत सुरासुर निजपन लागि कियो विषपान । दारुण दनुज जगत दुखदायक मार्‍यो त्रिपुर एकही बान ॥ जो गति अगम महामुनि दुर्लभ कहत सन्त श्रुति सकल पुरान । सो गति मरण काल अपने पुर देत सदाशिव सबहिं समान ॥ सेवत सुलभ उदार कल्पतरु पारवतीपति परमसुजान । देहुकामारिपुरामचरणरति तुलसिदास कहँ कृपानिधान ॥ ३ ॥

राग धनाश्री ।

दानी कहुँ शंकर सम नाहीं । दीनदयालु दिबोई भावै याचक सदा सिहाहीं ॥ मारिकै मार थप्यो जगमें जाकी प्रथम रेख भट

माहीं । ता ठाकुरको रीझि निवाजिबो कह्यो क्यों परत मोपाहीं ॥ योग कोटि करि जो गति हरिसों मुनि माँगत सकुचाहीं । वेदविदित तेहि पद पुरारि पुर कीट पतङ्ग समाहीं । ईश उदार उमापति परिहरि अनत जे याचन जाहीं ॥ तुलसिदास ते मूढ़ माँगने कबहुँ न पेट अघाहीं ॥ ४ ॥

बावरो रावरो नाह भवानी । दानि बड़ो दिन देत दये विन वेद बड़ाई भानी ॥ निज घरकी वर वात विलोकहु हौ तुम परमसयानी । शिवकी दई सम्पदा देखत श्रीशारदा सिहानी ॥ जिनके भाल लिखी लिपि मेरी सुख की नहीं निसानी । तिन्ह रंकनको नाक सँवारत हौं आयो नकवानी ॥ देखि दीनता दुखियनके दुख याचकता अकुलानी । यह अधिकार सौंपिये औरहि भीख भली मैं जानी ॥ प्रेम प्रशंसा विनय व्यंग्ययुत सुनि विधि की वर वानी । तुलसी मुदित महेश मनहिं मन जगतमातु मुसुकानी ॥ ५ ॥

राग रामकली ।

याचिये गिरिजापति कासी । जासु भवन अणिमादिक दासी ॥ औढर दानि द्रवत पुनि थोरे । सकत न देखि दीन करजोरे ॥ सुख सम्पति मति सुगति सुहाई । सकल सुलभ शंकर सेवकाई ॥ गये शरण आरतके लीन्हें । निरखिनिहाल निमिष महँ कीन्हें ॥ तुलसिदास याचक यश गावै । विमल भक्ति रघुपतिकी पावै ॥ ६ ॥

कस न दीन पर द्रवहु उमावर । दारुणविपति हरण करुणाकर ॥ वेद पुराण कहत उदार हर हमारि बेर कस भयहु कृपणतर ॥ कवन भक्ति कीन्हि गुणनिधि द्विज । है प्रसन्न दीन्हेहु शिव पद निज ॥ जो गति अगम महामुनि गावहिं । तवपुर कीट पतंगहु पावहिं ॥ देहु कामरिपु रामचरण रति । तुलसिदास प्रभु हरहु भेद मति ॥ ७ ॥ देव बड़े दाता बड़े शंकर बड़े भोरे । किये दूरदुख सबनिके जिन २ करजोरे ॥ सेवा सुमिरण पूजिबो पात अक्षत थोरे । दियो जगत जहँ लागि सबै सुख गज रथ घोरे ॥ गाँउबसत

वामदेव मैं कबहूं न निहोरे । अधिभौतिक बाधा भई ते किंकरतोरे ॥ बेगि बोलि बलि बरजिये करतूति कठोरे । तुलसी दल रूंध्यो चहै शठ साखि सिहोरे ॥ ८ ॥ शिव शिव होइ प्रसन्न करुदाया । करुणामय उदार कीरति बलिजाउँ हरहु निज माया ॥ जलजनयन गुणअयन मयनरिपु महिमा जान न कोई । विनतव कृपा रामपदपंकज स्वप्नेहु भक्ति न होई ॥ ऋषी सिद्ध मुनि मनुज दनुज सुर अपर जीव जगमाहीं ॥ तवपद विमुख पार नहिं पावत कल्पकोटि चलि जाहीं ॥ अहिभूषण दूषणारिपु सेवक देव देव त्रिपुरारी । मोह निहार दिवाकर शंकर शरण शोक भयहारी ॥ गिरिजामनमानसमराल काशीश मशान निवासी । तुलसिदास हरिचरण कमल वर देहु भक्ति अविनासी ॥ ९ ॥

राग धनाश्री ।

देव ! मोहतमतरणि हर रुद्र शंकर शरण हरण ममशोक लोकाभिरामं । बालशशिभाल सुविशाललोचन कमल कामशतकोटि लावण्य धामं ॥ कंबुकुन्देन्दु कर्पूर विग्रह रुचिर तरुण रविकोटि तनु तेज भ्राजै । भस्म सर्वांङ्ग अर्द्धांङ्ग शैलात्मजा व्यालनृकपाल माला विराजै ॥ मौलिसंकुल जटा मुकुट विद्युच्छटा तटिनिवरवारि हरिचरणपूतं । श्रवण कुंडल गरल कंठ करुणाकन्द सच्चिदानन्द वन्देवधूतं ॥ शूलसायक पिनाकासिकर शत्रुवन दहन इव धूमध्वज वृषभयानं । व्याघ्र गजचर्म्म परिधान विज्ञान घन सिद्ध सुर मुनि मनुजसेव्यमानं ॥ तांडवित नृत्य पर डमरू डिंडिम प्रवर अशुभ इव भाँति कल्याणराशी । महाकल्पान्त ब्रह्माण्डमंडलदवन भवन कैलास आसीन काशी ॥ तज्ञ सर्वज्ञ यज्ञेश अच्युत विभव विश्व भवदंश संभव पुरारी । ब्रह्मेन्द्र चन्द्रार्क वरुणाग्नि वसु मरुत यम अर्च्य भवदंघ्रि सर्व्वाधिकारी ॥ अकल निरुपाधि निर्गुण निरञ्जन ब्रह्म कर्म्म पथमेकमजनिर्विकारं । अखिल विग्रह उग्ररूप शिव भूपसुर सर्वगत सर्व सर्वोपकारं ॥ ज्ञानवैरा-

ग्य धन धर्म कैवल्य सुख सुभग सौभाग्य शिवसानुकूलं । तदपि नर मूढ़ आरूढ़ संसारपथ भ्रमत भवविमुख तवपादमूलं ॥ नष्टमति दुष्ट अतिकष्टरत खेदगत दास तुलसी शम्भु शरण आया । देहि कामारि श्रीरामपदपंकजे भक्तिमनवरतगत भेदमाया ॥ १० ॥ देव ! भीषणाकार भैरव भयङ्कर भूत प्रेत प्रमथाधिपति विपतिहर्त्ता । मोहमूषकमार्जार संसारभयहरण तारणतरण अभयकर्त्ता ॥ अतुल बल विपुल विस्तार विग्रह गौर अमल अतिधवलधरणीधराभं । शिरसि संकुलित कलकूट पिङ्गलजटा पटलशतकोटि विद्युच्छटाभं ॥ भ्राज विबुधापगा आप पावन परम मौलिमालेव शोभाविचित्रं । ललित लल्लाट पर राज रजनी सकल कलाधर नौमिहर धनदमित्रं ॥ इन्दु पावक भानुनयन मर्दनमयन ज्ञानगुणअयन विज्ञानरूपं । रवनागिरिजा भवन भूधराधिप सदा श्रवणकुण्डलवदन छविअनूपं ॥ चर्म असि शूलधर डमरु शर चापकर जान वृषभेश करुणानिधानं । जरत सुर असुर नरलोक शोकाकुलं मृदुलचित अजित कृतगरलपानं ॥ भस्मतनुभूषणं व्याघ्रचर्म्माम्बरं उरग नरमौलि उरमाल धारी । डाकिनी शाकिनी खेचरं भूचरं यंत्र मंत्र भंजन प्रबल कल्मषारी ॥ काल अतिकाल कालिकाल व्यालादि खग त्रिपुरमर्दन भीम कर्म भारी । सकल लोकान्त कल्पान्त शूलाग्र कृतदिग्गजा व्यक्त गुणनृत्यकारी ॥ पाप सन्ताप घनघोर संसृति दीन भ्रमत जग योनि नहिं कोपि त्राता । पाहि भैरवरूपरामरूपी रुद्र बंधु गुरु जनक जननी विधाता ॥ यस्य गुणगण गणति विमलमति शारदा निगम नारद प्रमुख ब्रह्मचारी । शेष सर्वेश आसीन आनन्दवन दासतुलसीप्रणत त्रासहारी ॥ ११ ॥ सदा शंकरं शंप्रदं सज्जनानंददं शैल कन्यावरं परमरम्यं । काममदमोचनं तामरस लोचनं वामदेवं भजे भावगम्यं ॥ कम्बुकुन्देन्दु कर्पूरगौरंशिवं सुन्दरं सच्चिदानन्दकंदं । सिद्धसनकादियोगीन्द्रवृन्दारका विष्णुविधिवन्द्य चरणारविंदं ॥ ब्रह्मकुलवल्लभं सुलभमतिदुर्लभं विकटवेषं

विभुं वेदपारं । नौमि करुणाकरं गरलगंगाधरं निर्मलं निर्गुणं निर्विकारं॥लोकनाथं शोकशूलनिर्मूलिनं शूलिनं मोहतमभूरिभानुं। कालकालं कलातीतमजरं हरं कठिनकलिकालकाननकृशानुं ॥ तज्ञमज्ञानपाथोधिघटसम्भवं सर्वगं सर्व सौभाग्य मूलं । प्रचुर भवभंजनं प्रणतजनरंजनं दासतुलसीशरणसानुकूलं ॥ १२ ॥

राग वसन्त ।

सेवहु शिवचरणसरोजरेनु । कल्याण अखिलप्रद कामधेनु॥ कर्पूरगौर करुणाउदार । संसारसार भुजगेन्द्रहार ॥ सुख जन्म भूमि महिमा अपार । निर्गुण गुणनायक निराकार ॥ त्रयनयन मयन मर्दन महेश । अहङ्कारनिहार उदित दिनेश ॥ वरवाल निशाकर मौलिभ्राज । त्रैलोकशोकहर प्रमथराज ॥ जिन्ह कहँ विधि सुगति न लिखी भाल । तिन्हकी गति काशीपति कृपाल ॥ उपकारी कोऽपर हर समान । सुर असुर जरत कृत गरलपान ॥ बहु कल्प उपायन करि अनेक । विनु शंभु कृपा नहिं भव विवेक ॥ विज्ञानभवन गिरिसुतारवन । कह तुलसिदास मम त्रासशमन ॥ १३ ॥ देखो देखो वन बन्यो आज उमाकंत ॥ मानहुँ देखन तुमहिं आई ऋतु वसन्त ॥ मानो तनुद्युति चम्पक कुसुम माल । वर वसन नील नूतन तमाल ॥ कलकदलि जंघ पदकमल लाल । सूचक कटि केसरि गति मराल ॥ भूषण प्रसून बहुविविध रंग । नूपुर किंकिणि कलरव विहंग ॥ कर नवल बकुल पल्लव रसाल । श्रीफल कुच कंचुकि लताजाल ॥ आनन सरोज कच मधुप गुंज । लोचन विशाल नवनील कंज ॥ पिक वचन चरित वर बरहि कीर । सित सुमन हास लीलासमीर ॥ कह तुलसिदास सुनु शिवसुजा- न । उर बसि प्रपंच रचै पंचवान ॥ करि कृपाहरिय भ्रमफंद काम । जेहि हृदय बसहिं सुखराशिराम ॥ १४ ॥

राग मारू ।

दुसहदोषदुखदलनि करु देवि दाया । विश्व मूलासि जनसानुकू-

लासि शर शूलधारिणि महामूल माया ॥ तडितगर्भाङ्ग सर्वाङ्ग सुन्दर लसत दिव्यपट भव्य भूषण विराजै । बाल मृग मंजु खंजनविलोचनि चन्द्रवदनि लखि कोटि रतिमार लाजै ॥ रूप सुख शीलसीमासि भीमासि रामासि वामासि वर बुद्धि वानी । छमुखहेरम्ब अम्बासि जगदम्बिके शम्भुजायासि जय जय भवानी ॥ चण्डभुजदण्डखण्डन विहण्डनि मुण्ड महिषमद भंगकर अङ्ग तोरे । शुम्भ निःशुम्भकुम्भीश रणकेशरिणि क्रोधवारिधि अरि वृन्दबोरे ॥ निगम आगम अगम गुर्वि तवगुण कथन उर्विधर कहत जेहि सहसजीहा । देहि मा मोहिं प्रण प्रेम यह नेम निज राम घनश्याम तुलसी पपीहा ॥ १५ ॥

राग रामकली ।

जय जय जगजननि देवि सुरनरमुनि असुरसेवि भुक्ति मुक्ति दायनि भयहरणि कालिका । मङ्गलमुद सिद्धिसदनि पर्वशर्वरीश वदनि तापतिमिरतरुणतरणि किरणमालिका ॥ वर्मचर्मकरकृपाण शूलशैलधनुपबाण धरणि दलनि दानवदल रणकरालिका । पूतना पिशाच प्रेत डाकिनि शाकिनि समेत भूत ग्रह वैताल खग मृगालि जालिका ॥ जय महेशभामिनी अनेकरूपनामिनी समस्त लोकस्वामिनी हिमशैलबालिका । रघुपतिपद परम प्रेम तुलसी चह अचलनेम देहु है प्रसन्न पाहि प्रणतपालिका ॥ १६ ॥ जय जय भगीरथनन्दिनी मुनिचयचकोरचंदिनी नर नाग विबुधवन्दिनी जय जह्नुबालिका । विष्णुपदसरोजजासि ईशशीश पर विभासि-त्रिपथगासि पुण्यराशि पापछालिका ॥ विमल विपुल बहसिवारि शीतलत्रय तापहारि भवँरवरविभङ्गतर तरङ्गमालिका । पुरजन पूजोपहार शोभित शशि धवलधार भंजनि भवभार भक्तिकल्प थालिका । निजतटबासी विहङ्ग जल थल चर पशु पतङ्ग कीट जटिल तापस सब सरिसपालिका ॥ तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मति देहि मोहिं महिपकालिका ॥ १७ ॥

जयति जय सुरसरी जगदखिल पाविनी । विष्णुपदकंज मकरन्द इव अम्बुवर वहसि दुखदहसि अघवृन्दविद्राविनी । मिलित जलपात्र अजयुक्त हरिचरणरज विरजवरवारि त्रिपुरारिशिरधामिनी ॥ जह्नु कन्या धन्यपुण्यकृतसगरसुत भूधरद्रोणि विदरणिबहुनामिनी । यक्ष गंधर्व मुनि किन्नरी दनुजगण मनुज मज्जहिं सुकृतपुण्ययुतकामिनी । स्वर्गसोपान विज्ञानज्ञानप्रदे मोहमद मदन पाथोज हिमयामिनी । हरितगंभीरवानीर दुहुँ तीर वर मध्यधाराविशद विश्वअभिरामिनी । नलिपर्यंकक्तशयनसर्पेश जनु सहसशीशावलीस्रोत सुरस्वामिनी ॥ अमितमहिमा अमित रूप भूपावली मुकुटमणिवंदि त्रैलोकपथगामिनी । देहि रघुवीरपद प्रीति निर्भर मातु दास तुलसी त्रासहरणि भवभामिनी ॥ १८ ॥ हरणि पाप त्रिविधताप सुमिरतसुर सरित । बिलसतिमहि कल्पवेलि मुदमनोरथ फरित ॥ सोहत शशि धवलधार सुधा सलिलभरित । विमलतर तरङ्ग लसत रघुवरकेसे चरित ॥ तो विनुजगदंब गंग कलियुग का करित । घोर भव अपार सिंधु तुलसी किमितरित ॥ १९ ॥ ईशशीश वससि त्रिपथ लससि नभपातालधरनि । मुनि सुर नर नाग सिद्ध सुजन मंगल करनि ॥ देखत दुख दोषदुरित दाह दारिद दरनि। सगरसुवनशासातिशमनिजल निधिजलभरनि ॥ महिमा को अवधिकरसि बहुविधि हरि हरनि । तुलसी करु वाणि विमल विमल वारिवरनि ॥ २० ॥

राग बिलावल।

यमुना ज्यों ज्यों लागी बाढ़न । त्यों त्यों सुकृत सुभट कलि भूपहिं निदरि लगे वहु काढ़न ॥ज्यों ज्यों जल मलीन त्यों त्यों यमगण मुख मलीन है आढ़न । तुलसिदास जगदघजवास ज्यों अनघमेघ लागे डाढ़न ॥ २१ ॥

राग भैरव ।

सेइय सहित सनेह देहभर कामधेनु कलिकाशी ॥ शमनि शोक सन्ताप पाप रुज सकलसुमंगलराशी । मर्यादा चहुँओर चरणवर सेवत सुरपुरवासी ॥ तीरथ सब शुभअंग रोम शिवलिङ्ग अमित अविनासी । अन्तरअयन अयन भलपन फल बच्छ वेद विश्वासी ॥ गलकंबल वरुणा विभाति जनु लूम लसति सरितासी । दंडपाणि भैरव विषाण मल रुचि खलगण भयदासी ॥ लोलादिनेश त्रिलोचन लोचन करणघंट घंटासी । मणिकर्णिका वदन शशिसुन्दर सुरसरिसुखसुखमासी ॥ स्वारथ परमारथ परिपूरण पञ्चकोश महिमासी । विश्वनाथ पालक कृपालुचित लालति नित गिरिजासी ॥ सिद्ध शची शारद पूजहिंमन जुगवत रहति रमासी । पञ्चाक्षरी प्राणमुदमाधव गव्य सुपञ्चनदासी ॥ ब्रह्म जीव सम राम नाम जुग आखर विश्वविकासी । चारितुचरति कर्म कुकर्म करि मरत जीवगण घासी ॥ लहत परमपद पय पावन जेहि चहत प्रपञ्चउदासी । कहत पुराण रची केशव निजकर करतूतिकलासी । तुलसी वासि हरपुरी रामजपु जो भयो चहै सुपासी ॥ २२ ॥

राग वसन्त ।

सब शोचविमोचन चित्रकूट । कलिहरण करणकल्याण बूट ॥ शुचि अवनि सुहावनि आलबाल । कानन विचित्र बारीविशाल ॥ मन्दाकिनिमालिनि सदासींच । वरवारि विषम नर नारि नीच ॥ शाखा सुशृंग भूरुहु सुपात । निरझर मधुवर मृदु मलयवात ॥ शुक पिक मधुकर मुनिवर विहारु । साधन प्रसून फल चारि चारु ॥ भवघोर घामहर सुखदछाँह । थप्यो थिर प्रभाउ जानकीनाह ॥ साधकसुपथिक बडे भाग पाइ । पावत अनेक अभिमत अघाइ ॥ रस एक रहितगुणकर्मकाल । सिय राम लषण पालक कृपाल ॥ तुलसी जो रामपद चहियप्रेम । सेइय गिरिकरु निरुपाधिनेम ॥ २३ ॥

राग कान्हरा ।

अब चित चेति चित्रकूटहि चल । कोपितकलि लोपितमङ्गल मगविलसत बढ़त मोहमायामल ॥ भूमि विलोक रामपद अंकित वन विलोक रघुवरविहारथल । शैलशृंग भवभंगहेतु लख दलन कपटपाखण्डदंभदल ॥ जहँ जनमें जग जनक जगतपति विधि हरि हर परिहरि प्रपंचछल । सुकृत प्रवेश करत जेहि आश्रम विगत विषाद भये पारथनल ॥ न करु विलम्ब विचारु चारुमति वर्ष पाछिले सम अगिलेपल ॥ मंत्र सो जाइ जपहि जो जपत भे अजर अमर हर अँचइ हलाहल ॥ राम नाम जप याग करत नित मज्जन पयपावन पीवत जल । करिहैं राम भावतौ मनको सुख साधन अनयास महाफल ॥ कामदमणि कामता कलपतरु सो युग युग जागति जगतीतल । तुलसीतोहिं विशेष बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकै बल ॥ २४ ॥

राग धनाश्री ।

जयतिअंजनीगर्भअम्भोधिसंभूतविधुविबुधकुलकैरवानन्दकारी ॥ केसरी चारु लोचन चकोरक सुखद लोकगणशोकसन्तापहारी ॥ जयति जयबाल कपि केलि कौतुक उदित चंडकरमंडल ग्रासकर्त्ता । राहु रवि शक्रपविगर्वखर्वीकरण शरणभयहरण जय भुवन भर्त्ता ॥ जयति रणधीर रघुवीर हितदेवमणि रुद्रअवतार संसारपाता । विप्रसुरसिद्ध मुनि आशिषाकारवपुष विमल गुण बुद्धि वारिधि विधाता ॥ जयति सुग्रीव शिक्षादि रक्षण निपुण वालिबलशालिवधमुख्यहेतू । जलधिलंघन सिंहसिंहि कामदमथन रजनिचरनगरउत्पातकेतू ॥ जयति भूनंदिनी शोचमोचन विपिनदलन घननादवश विगतशंका ॥ लूमलीला-अनलज्वालमालाकुलित होलिकाकरन लंकेशलंका ॥ जयति सौमित्ररघुनन्दनानन्दकर ऋच्छकपिकटकसंघटविधाई ॥ बृद्धारिपमनु अमरमंगलहेतु भानुकुलकेतुरणविजयदाई ॥ जयतिजय

वज्रतनु दशन नख मुख विकट चण्ड भुजदण्ड तरु शैल पानी ॥ समर तैलिकयंत्र तिलतमीचरनिकर पेरि डारे सुभट घालि घानी । जयति दशकंठघटकरणवारिदनाद कदनकारन कालिनेमिहन्ता ॥ अघटघटनासुघटसुघटविघटन विकटभूमिपातालजलगगनगन्ता ॥ जयतिविश्वविख्यातवानैताविरुदावली विदुपवर्णत वेद विमलवानी । दासतुलसी त्रासशमन सीतारमणसंगशोभितरामराजधानी ॥ २९ ॥ जयति मर्कटाधीश मृगराज विक्रम महादेव मुदमङ्गलालय कपाली ॥ मोहमदकोहकामादिखलसंकुलाघोरसंसार निशिकिरनमाली ॥ जयति लसदञ्जनादितिजकापिकेसरी कश्यपप्रभवजगदार्ति हर्त्ता । लोकलोकपकोककोकनदशोकहर हंस हनुमान कल्याणकर्ता ॥ जयति सुविशालविकरालविग्रह वज्रसार-सर्वांगभुजदण्डभारी । कुलिशनखदशनवरलसतबालाधिबृहदवैरि शस्त्रास्त्रधरकुधरधारी । जयति जानकीशोचसन्तापमोचन राम लक्ष्मणानन्दवारिजविकाशी । कीशकौतुककेलिलूमलंकादहन दलन कानन तरुनतेजराशी ॥ जयतिपाथोधिपाषाणजलयानकर यातुधानप्रचुरहर्षहाता ॥ दुष्टरावणकुम्भकर्णपाकारिजित् मर्मभित्कर्मपरिपाकदाता ॥ जयतिभुवनैकभूषण विभीषणवरद विहितकृत रामसंग्रामशाका ॥ पुष्पकारूढसौमित्रसीतासहित भानुकुलभानुकीरतिपताका ॥ जयति परयन्त्रमन्त्राभिचारग्रसनकार्मण कूटकृत्यादिहन्ता । शाकिनीडाकिनीपूतनाप्रेत बैताल भूत प्रमथ यूथजन्ता । जयति वेदान्तविधविविधविद्याविशद वेदवेदांगविद ब्रह्मवादी । ज्ञान वैराग्यविज्ञानभाजनविभवविमलगुणगणतशुक नारदादी ॥ जयति कालगुणकर्म्ममायामथननिश्चल ज्ञानव्रत सत्यरतधर्म्मचारी । सिद्धसुरवृन्दयोगीन्द्रसेवितसदा दासतुलसी प्रणतभयतमारी ॥ २६ ॥ जयति मंगलागार संसारभारापहार वानराकारविग्रह पुरारी । रामरोषानल ज्वालमालामिषध्वान्तचरशलभसंहारकारी ॥ जयति मरुदञ्जनामोदमन्दिर नतग्रीवसुग्रीव दुःखैकबन्धो । यातुधानोद्धतक्रुद्धकालाग्निहर सिद्धसुरसज्जनान-

न्दसिन्धो ॥ जयति रुद्राग्रणी विश्वविद्याग्रणी विश्वविख्यातभट चक्रवर्त्ती । सामगाताग्रणीकामजेताग्रणी रामहितरामभक्तानुवर्त्ती ॥ जयति संग्रामजयरामसन्देशहरकौशलाकुशलकल्याणभाषी । राम विरहार्कसन्तप्तभरतादिनरनारिशीतलकरणकल्पशापी ॥ जयति सिंहासनासीनसीतारमण निरखि निर्भरहरषनृत्यकारी । रामसंभ्राजशोभासहित सर्वदा तुलसीमानसरामपुरविहारी ॥ २७ ॥

जयति वातसञ्जात विख्यात विक्रम बृहद्बाहु बलविपुलबालधिविशाला । जातरूपा चलाकारविग्रहलसतलोमविद्युल्लताज्वाल माला ॥ जयति बालार्कवरवदनपिंगलनयन कपिश कर्कशजटा जूटधारी । विकटभ्रुकुटीवज्रदशननखवैरिमदमत्तकुंजरपुंजकुंजरारी ॥ जयति भीमार्जुनव्यालसूदनगर्वहर धनञ्जयरथत्राणकेतू । भीषमद्रोणकरणादिपालितकालदृकसुयोधनचमूनिधनहेतू ॥ जयति गतराजदातार हरतार संसारसंकट दनुजदर्पहारी । ईति अति भीति ग्रहप्रेतचौरानव्याधिबाधाशमन घोरभारी ॥ जयति निगमागम व्याकरणकर्णलिपि काव्य कौतुककलाकोटिसिन्धो । सामगायक भक्तकामदायक वामदेव श्रीरामप्रिय प्रेमबन्धो । जयति धर्मांशु सन्दग्धसम्पाति नवपक्षलोचनदिव्यदेहदाता । काल कलिपापसन्ताप संकुलसदा प्रणततुलसीदासतातमाता ॥ २८ ॥

जयति निर्भरानन्दसन्दोहकपिकेशरी केशरीसुअन भुवनैकभर्ता । दिव्य भूम्यञ्जनामंजुलाकरमणे भक्तसन्तापचिन्तापहर्ता ॥ जयतिधर्मार्थकामापवर्गदविभो ब्रह्मलोकादिवैभवविरागी । वचन मानसकर्मसत्यधर्मव्रती जानकीनाथचरणानुरागी ॥ जयति विहगेशबलबुद्धि वेगातिमदमथनमन्मथमथनऊर्ध्वरेता । महानाटकनिपुणकोटिकविकुलतिलक गानगुणगर्वगन्धर्वजेता ॥ जयति मन्दोदरीकेशकर्षणविद्यमान दशकण्ठभटमुकुटमानी । भूमिजादुःखसंजातरोषांतकृज्जातनाजन्तुकृतयातुधानी । जयति रामायणश्रवणसंजातरोमाञ्चलोचनसजलशिथिलवाणी । रामपद्मपद्ममकरन्दमधुकरपाहिदासतुलसीशरणशूलपाणी ॥ २९ ॥

रागसारंग ।

जाके गति है हनुमान की । ताको पैज पूजि आई यह रेखा कुलिश पषानकी ॥ अघटितघटन ऐसी बिरुदावली नहीं आन की । सुमिरत संकटशोचविमोचन मूरतिमोदनिधानकी ॥ तापर सानुकूल गिरिजा हर लषणराम अरु जानकी ॥ तुलसी कपिकी कृपाविलोकनि खानि सकल कल्यान की ॥ ३० ॥

रागगौरी ।

ताकिहै तमकिताकी ओर को । जाको है सब भाँति भरोसो कपि केशरी किशोर को ॥ जनरञ्जन अरिगणगञ्जन मुखभञ्जन खलब-लजोरको । वेदपुराणप्रगटपुरुषारथ सकलसुभटशिरमोरको ॥ उथपेथपनथप्योउथपनपनाविबुधवृन्दवन्दि छोरको । जलधिलंघि दहिलंकप्रबलबल दलन निशाचर घोर को ॥ जाको बालविनोद समुझि जिय डरत दिवाकर भोर को । जाकी चिबुकचोट चूरण किय रदमद कुलिशकठोरको ॥ लोकपाल अनुकूल विलोकिबो चहत विलोचन कोरको । सदा अभयजय मुदमंगलमय जो सेव-क रणरोर को ॥ भक्तकामतरु नाम राम परिपूरण चन्द चको-रको ॥ तुलसी फल चारों करतल यश गावतगईबहोर को ॥ २१ ॥

रागबिलावल ।

ऐसी तोहिं न बूझिये हनुमान हठीले । साहब कहूं न रामसे तोसे न वसीले ॥ तेरे देखत सिंहके शिशु मेढक लीले ॥ जानत हों कलितेरेऊ मन गुणगण कीले । हांक सुनत दशकन्धके भये बन्धन ढीले ॥ सो बल गयो किधौं भये अब गर्वगहीले । सेवककोपरदा फटै तुमसमरथसीले ॥ अधिक आपुते आपुनो सुनि मान सहीले । शासति तुलसीदास की सुनि सुयश तुहीले । तिहूँकाल तिनको भलो जे रामरँगीले ॥ ३२ ॥ समरथ सुवन स मीरके रघुवीरपियारे । मोपर कीबे तोहिजो करिलेहि भियारे । तेरी महिमा ते चलैं चिञ्चिनीचियारे ॥ ऑधियारोमेरी बारक्यों

त्रिभुवनउजियारे ॥ केहि करणी जन जानिकै सन्मान कियारे ॥ केहि अघ अवगुण आपने करि डारि दियारे । खाये खोंची माँग मैं तेरो नाम लियारे ॥ तेरे बल बलि आज लौं जगजागि जियारे ॥ जो तोसों हो तौ फिरौं मेरो हेतु हियारे । तौ क्यों वदन देखावतो कहि वचन इयारे ॥ तोसों ज्ञाननिधानको सर्वज्ञवियारे । हौंसमुझत साँई द्रोहकी गति छार छियारे ॥ तेरे स्वामी राम से स्वामिनी सियारे । तहँ तुलसीके कौनको काको तकियारे ॥ २३ ॥ अति आरत अतिस्वारथी अतिदीन दुखारी । इनको विलग न मानिये बोलहिं न विचारी ॥ लोकरीति देखी सुनी व्याकुल नर नारी । अति वरषै अनवरषेहूं देहिं दैवहिं गारी ॥ नाकहि आये नाथ सों शासति भये भारी। कहि आयो कीबी क्षमा निज और निहारी॥ समय साँकरे सुमिरिये समरथ हितकारी । सो सब विधि ऊपरकरै अपराध बिसारी ॥ बिगरी सेवककी सदा साहबहिं सुधारी । तुलसी पर तेरी कृपा निरुपाधिनिरारी ॥ २४ ॥ कटु कहिये गाढे परे सुन समुझि सुसाई । करहिं अनभले को भलो आपनी भलाई ॥ समरथ शुभ जो पाइये वीर पीर पराई । ताहितके सब ज्यों नदी वारिधि न बुलाई ॥ अपने २ को भलो चहै लोग लुगाई । भावे जो जेहि तेहि भज शुभ अशुभ सगाई ॥ बाँहबोल दै थापिये जो निज बरिआई ।बिन सेवासों पालिये सेवककी नाई॥चूक चपलता मेरियै तू बड़ो बड़ाई। होत आदरे ढीठ हौं अति नीच निचाई ॥ वन्दि छोर बिरुदावली निगमागम गाई।नीको तुलसीदासको तेरिही निकाई२५

राग गौरी।

मङ्गलमूरति मारुतनन्दन । सकल अमङ्गल मूलनिकन्दन ॥ पवनतनय सन्तनहितकारी । हृदय विराजत अवधविहारी । मातु पिता गुरु गणपति शारद । शिवासमेत शम्भु शुक नारद ॥ चरण वन्दि विनवौं सब काहू । देहु रामपद नेह निवाहू ॥ बन्दौं राम लषण वैदेही । जे तुलसीके परमसनेही ॥ २६ ॥

दण्डक ।

लाल लाडिके लषण हित हो जनके । सुमिरे संकटहारी सकलसुमङ्गलकारी पालक कृपालु अपने पनके ॥ धरणीधरनहार भञ्जन भुवनभार अवतार साहसी सहसफनके । सत्यसन्धसत्यव्रत परमधर्मरत निर्मलकरम वचन मनके ॥ रूपके निधान धनुबान पानि तूणकटि महावीर विदित जितैया बड़े रनके ॥ सेवकसुख दायक सबल सबलायक गायक जानकीनाथगुणगन के ॥ भावते भरतके सुमित्रा सीताके दुलारे चातक चतुर राम श्यामघनके । वल्लभ उर्मिलाकेसुलभसनेहवशधनीधनतुलसीसेनिरधनके ॥ ३७ ॥

राग धनाश्री ।

जयति लक्ष्मणानन्त भगवन्त भूधर भुजगराज भुवनेशभूभारहारी । प्रबलपावक महाज्वालमालावमन शमनसन्ताप लीलावतारी ॥ जयति दाशरथिसमरसमरथसुमित्रासुवन शत्रुसूदनरामभरत बन्धो । चारु चम्पकवरन वसनभूषन धरन दिव्यतर भव्य लावण्यसिन्धो ॥ जयति गाधेयगौतमजनकसुखजनक विश्व कण्टककुटिलकोटिहन्ता । वचन चयचातुरीपरशुधरगर्व हर सर्वदा रामभद्रानुगन्ता ॥ जयति सीतेशसेवासरस विषयरसनिरस निरुपाधिधुरधर्मधारी । विपुलबलमूल शार्दूल विक्रम जलदनाद मर्दन महावीरभारी ॥ जयति संग्रामसागरभयङ्करतरण रामहितकरणवर बाहु सेतू । उर्मिलारमन कल्यान मङ्गलभवन दासतुलसी दोष दवन हेतू ॥ ३८ ॥ जयति भूमिजारमनपदकंजमकरन्दरसरासिक मधुकर भरत भूरिभागी । भुवनभूषण भानुवंशभूषण भूमिपालमणि रामचन्द्रानुरागी ॥ जयति विबुधेशधनदादिदुर्लभमहाराजसंभ्राज सुखप्रद विरागी । खड्गधाराव्रतीप्रथमरेखाप्रगट शुद्धमतियुवतिपतिप्रेम पागी । जयति निरुपाधिभक्तिभावयन्त्रितहृदय बंधु हितचित्रकूटादिचारी । पादुकानृपसचिवपुहुमि पालक परमधर्म धुरधीरवर वीरभारी । जयति संजीविनीसमय संकटहनूमान धनुबाण म-

हिमाबखानी । बाहुबलविपुलपरमितपराक्रम अतुल गूढ़गति जानकी जानजानी ॥ जयति रणअजितगन्धर्वगण गर्वहर फिरकिये राम गुणगाथगाता । माण्डवी चित्तचातकनवांबुदवरण शरण तुलसिदास अभयदाता ॥ ३९ ॥ जयति जय शत्रु करिकेशरी शत्रुहन शत्रुतम तुहिनहर किरणकेतू । देवमहिदेव महिधेनु सेवक सुजन सिद्ध मुनि सकलकल्याणहेतू ॥ जयति सर्वांग सुन्दर सुमित्रासुवन भुवन विख्यात भरतानुगामी । वर्मचर्मासिधनुबाणतूणीरधर शत्रु संकटशमन यत्प्रणामी ॥ जयति लवणांबुनिधिकुम्भसम्भवमहा दनुज दुर्जनदवनदुरितहारी । लक्ष्मणानुज भरत राम सीताचरणरेणुभूपितभालतिलकधारी ॥ जयति श्रुतिकीर्तिवल्लभ सुदुर्लभ सुलभ नमतनर्मद भक्तभक्ति दाता । दास तुलसी चरणशरणसीदत विभो पाहि दीनार्त्तसन्ताप हाता ॥ ४० ॥ जयति श्रीजानकी भानु कुलभानुकी प्राणप्रिय-वल्लभातरणिभूपे । राम आनन्दचैतन्यघन विग्रहाशक्तिआह्लाद-नी साररूपे ॥ जयति चितचरणचिन्तानि जेहि धरत हृदि काम भय कोह मद मोह माया । रुद्रविधिविष्णुसुर सिद्धवन्दितपदे जयति सर्वेश्वरी रामजाया ॥ कर्म जप योग विज्ञान वैराग्य लहि मोक्षहित योगि जे प्रभुमनावैं । जयति वैदेहि सब शक्ति शिरभूषणी तेन तवदृष्टि बिनकबहुँ पावैं ॥ जयति कोटि ब्रह्माण्ड जगदीशको ईश जिह निगम मन बुद्धिते अगम गावैं । विदित यह गाथ अहदान कुलनाथ सो नाथ तव दान ते हाथ आवैं ॥ दिव्य शतवर्ष जप ध्यान जब शिव धरयो राम गुरुरूप मिल पथ बतायो । चितै हित लीन लखि कृपा कीन्ही तबै देव दुर्लभ देव दरश पायो ॥ जयति श्रीस्वामिनी सेय शुभनामिनीदामि-नी कोटि निज देह दरशै । इन्दिराआदि दै मत्त गजगामिनी देव भामिनि सबै पॉव परशै ॥ दुखित लखि भक्तिबिन दरश निज रूप तव यजन जप तन्नते तुलस नाहीं । कृपा परिपूर्ण नवकंज-दललोचना प्रगट भइ जनकनृप अजिरमाहीं ॥ रचित नव विपिन मिथिलेनन्दनकनक लंकपतिन्यान कछु खेल ठान्यो । गोपिका

कृष्ण नवतुल्य बहु यत्न करि तोहिं मिलि ईश आनन्द मान्यो ॥ हीन तव सुमुखि कै सङ्ग रहि रंग सो विमुख सो देव नाहिं नाह नेरो । अधमउद्धरण यह जान गहि शरण तव दासतुलसी भयो आय चेरो ॥ ४१ ॥

राग केदारा ।

कबहुँक अंब अवसर पाइ । मेरीओ सुधि द्यायवी कछु करुण कथा चलाइ ॥ दीन सब अँगहीन छीन मलीन अघी अघाइ । नामलै भरै उदर एक प्रभु दासी दास कहाइ ॥ बूझि हैं सो है कौन कहिवो नामदशा जनाइ । सुनत रामकृपालुके मेरी बिगरिओ बनिजाइ ॥ जानकी जगजननि जनकी किये वचन सहाइ । तरे तुलसीदास भव तव नाथ गुणगण गाइ ॥ ४२ ॥ कबहुँ समय सुधि द्याइबो मेरी मातु जानकी । जन कहाइ नाम लेत हौं कियेपन चातक ज्यों प्यास प्रेम पानकी ॥ सरलप्रकृति आपु जानिकै करुणानिधान की । निजगुण अरिकृत अनहितो दास दोष सुरति चित रहत न दिये दान की ॥ वानि विसारनशील हैं मानद अमान की । तुलसीदास न विसारिये मन क्रम वचन जाके सपनेहुँ गति न आनकी ॥ ४३ ॥ जयति सच्चित्व्यापकानन्द यत्ब्रह्म विग्रह व्यक्तलीलावतारी । विकलब्रह्मादिसुरसिद्धसंकोचवश विमलगुण गेहनरदेहधारी ॥ जयति कौशलाधीशकल्याणकोशलसुताकुशलकैवल्य फलचारु चारी । वेदबोधितकर्मधर्मधरणी धेनुविप्रसेवक साधुमोदकारी ॥ जयति ऋषिमखपाल शमनसज्जनशाल शापवशमुनिवधूपापहारी । भंजिभवचाप दलिदापभूपावली सहितभृगुनाथनतमाथभारी ॥ जयतिधार्म्मिकधुरधीररघुवीर गुरु मातु पितु बंधुवचनानुसारी । चित्रकूटाद्रि विन्ध्याद्रि दण्डकविपिनधन्यकृत पुण्यकाननविहारी ॥ जयति पाकारिसुतकाक करतूतिफलदानिखनिगर्त्तगोपितविराधा । दिव्यदेवीवेष देखि लखिनि शिचरी जनुविडंवितकरी विश्वबाधा ॥ जयति खरत्रिशिरदूषणचतुर्दश सहससुभटमारीचसंहारकर्त्ता । गृध्रशवरीभक्तिविवश करुणासिंधु चरित

निरुपाधित्रिविधार्तिहर्त्ता ॥ जयति मदअन्धकुकबन्धवधिवालिबलशालिवधकरण सुग्रीव राजा । सुभटमर्कटभालुकटकसंघटसजत नमतपदरावणानुज निवाजा ॥ जयति पाथोधिकृत सेतु कौतुकहेतु कालमन अगम लई ललकिलंका । सकुल सानुज सदल दलितदशकण्ठरण लोकलोकप किये रहितशंका ॥ जयति सौमित्रि सीतासचिवसहित चले पुष्पकारूढ निज राजधानी । दासतुलसी मुदित अवधवासी सकल रामभे भूप वैदेहि रानी ॥ ४४ ॥ जयति राजराजेंद्रराजीवलोचन रामनाम कलिकामतरु श्यामशाली । अनयअंभोधिकुम्भजनिशाचरनिकर तिमिरघनघोरखरकिरणमाली ॥ जयति मुनिदेवनरदेवदशरत्थके देवमुनिवंद्यकिये अवध वासी । लोकनायककोकशोकसंकटशमन भानुकुलकमलकानन विकासी ॥ जयति शृङ्गाररसतामरसदामद्युतिदेहगुणगेह विश्वोपकारी । सकलसौभाग्यसौन्दर्य सुखमारूप मनोभवकोटिगर्वापहारी । जयति सुभग शारंग सुनिखङ्गसायक शक्तिचारुचर्मासि वरवर्मधारी । धर्मधुरधीर रघुवीरभुजबल अतुल हेलयादलितभूभार भारी ॥ जयति कलधौतमणिमुकुटकुण्डलतिलकझलकभलिभाल विधुवदनशोभा । दिव्यभूषणवसन पीत उपवीत किय ध्यान कल्याणभाजननकोभा ॥ जयति भरत सौमित्रि शत्रुघ्नसेवितसुमुख सचिव सेवकसुखद सर्वदाता । अधमआरतदीनपतितपातकपीन सकृतनतमात्र कहे पाहिपाता ॥ जयतिजय भुवनदशचारियश जगमगत पुण्यमय धन्य जय राम राजा । चरित सुरसरित कवि मुख्य गिरि निःसरित पिवत मज्जत मुदित सतसमाजा ॥ जयति वर्णाश्रमाचारि वरनारिनर सत्यशमदमदयादानशीला । विगतदुःखदोष संतोष सुखसर्वदा सुनत गावत रामराजलीला । जयति वैराग्यविज्ञानवारांनिधे नमतनर्मद पापतापहर्त्ता । दासतुलसीचरण शरण संशयहरण देहि अवलम्ब वैदेहिभर्त्ता ॥ ४५ ॥

राग गौरी ।

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरणभवभयदारुणं । नवकंजलो-

चन कंजमुख करकंज पदकंजारुणं॥कन्दर्प अगणित अमितछवि नवनीलनीरजसुन्दरं। पटपीतमानहुँ तड़ितरुचि शुचि नौमि जनकसुतावरं॥ भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकंदनं। रघुनन्द आनँदकन्द कोशलचन्द दशरथनन्दनं ॥ शिरमुकुटकुण्डल तिलकचार उदार अंगविभूषणं । आजानुभुज शरचापधर संग्राम जितखरदूषणं॥इति वदत तुलसीदास शंकरशेषमुनिमनरञ्जनं ॥ मम हृदयकंज निवासकरु कामादिखलदल गञ्जनं॥ ४६ ॥

राग रामकली।

देव ! सदा रामजपु रामजपु रामजपु रामजपु रामजपु मूढ़ मन बारबारं। सकलसौभाग्य सुखखानि जियजानि शठ मानि विश्वासवद्वेद सारं॥ कौशलेन्द्रनवनीलकंजाभतनमदनरिपुकंज हृदचञ्चरीकं । जानकीरमन सुखभवनभुवनैक प्रभु समर भंजन परमकारुणीकं ॥ दनुजवनधूमध्वजपीन आजानु भुजदण्डकोदण्डवरचण्डवानं । अरुण कर चरण मुख नयन राजीवगुण अयन बहुमयन शोभानिधानं॥ वासनावृन्दकैरवदिवाकर-कामक्रोधमदकंजकाननतुषारं । लोभ अतिमत्तनागेन्द्रपञ्चाननं भक्तहितहरणसंसारभारं ॥ केशवं क्लेशहं केशवन्दितपदद्वन्द्व-मन्दाकिनीमूलभूतं ॥ सर्वदानन्दसन्दोहमोहापहं घोरसंसार-पाथोधिपोतं॥ शोकसन्देहपाथोदपटलानिलं पापपर्वतकठिन कुलिशरूपं॥ सन्तजनकामधुकधेनुविश्रामपद नामकलि कलुष भञ्जन अनूपं॥ धर्मकल्पद्रुमारामहरि धामपथिसम्बलंमूलमिदमेवएकं। भक्तिवैराग्यविज्ञानसमदानदमनाम आधीनसाधन अनेकं॥ तेन तप्तं हुतंदत्तमेवाखिलं तेन सर्वं कृतं कर्मजालं । येन श्रीराम-नामाऽमृतंपानकृतमनिशमनवद्यमवलोक्यकालं ॥ श्वपचखल-भिल्लयमनादिहरिलोकगतनामबल विपुल मतिमालिनपरसी । त्यागि सब आश संत्रासभव पासअसिनिशित हरिनाम जपु दासतुलसी ॥ ४७॥ ऐसीआरती राम रघुवीरकी करहि मन हरणदुखद्वन्द गोविन्द आनन्दघन ॥ अचरचररूपहरि सर्वगत सर्वदा वसत इति वासनाधूप दीजै॥ दीप निजबोधगतक्रोधम

दमोहतम प्रौढ़ अभिमान चितवृत्ति छीजै ॥ भाव आतिशयविशद प्रवरनैवेद्यशुभ श्रीरमणपरमसन्तोषकारी । प्रेम ताम्बूल गतशूलसंशयसकल विपुलभवबासनाबीजहारी ॥ अशुभशुभकर्मघृतपूर्णदशवर्तिका त्यागपावकसतोगुणप्रकाशं । भक्तिवैराग्यविज्ञान दीपावली अर्पि नीराजनं जगनिवासं ॥ विमलहृदिभवन कृतशान्तिपर्यंकशुभ शयन विश्राम श्रीरामराया । क्षमाकरुणाप्रमुखतत्रपरिचारिका यत्र हरि तत्र नहिं भेदमाया । एहिआरती निरत सनकादि श्रुति शेष शिव देव ऋषि अखिलमुनितत्त्वदरसी । करै सोइ तरै परिहरै कामादिमल वदतिइति अमलमति दास तुलसी ॥ ४८॥ हरति सब आरती आरती रामकी । दहति दुख दोष निर्मूलिनी कामकी॥सुभगसौरभधूपदीपवरमालिका। उडत अघ विहग सुनि तालकरतालिका ॥ भक्तहृदिभवनअज्ञान तमहारिणीविमलविज्ञानमयतेविस्तारणी ॥ मोहमदकोहकलिकंजहिमयामिनी । मुक्तिकी दूतिका देहद्युतिदामिनी ॥ प्रणतजनकुमुदवन इन्दुकरजालिका । तुलसिअभिमानमहिषेशबहुकालिका ॥ ४९ ॥ दनुजवनदहन गुणगहन गोविन्द नन्दादिआनन्ददाताऽविनाशी ॥ शंभु शिव रुद्र शंकर भयंकर भीम घोर ते जायतन क्रोधरासी ॥ अनन्त भगवन्त जगदन्तअन्तक त्रास शमन श्रीरमण भुवनाभिरामं भूधराधीश जगदीश ईशानविज्ञान वन ज्ञानकल्याणधामं ॥ वामनाव्यक्त पावन परावरविभो प्रगट परमात्माप्रकृतिस्वामी । चन्द्रशेखर शूलपाणि हर अनघ अज अमित अविच्छिन्न वृषभेशगामी ॥ नीलजलदाभतनु श्याम बहु कामछवि राम राजीवलोचन कृपाला।कंबुकर्पूरवपुधवल निर्मल मौलि जटा सुरतटिनि सित सुमनमाला ॥ वसनकिंजल्कधर चक्रशारंगदरकंजकौमोदकी अतिविशाला।माकरि मत्तमृगराज त्रयनयन हर नौमि अपहरणसंसारज्वाला ॥ कृष्णकरुणाभवन दवनकालीयखल विपुलकंसादि निर्वंशकारी । त्रिपुरमदभंगकरमत्तगजचर्मधर अन्धकोरग ग्रसनपन्नगारी ॥ ब्रह्म व्यापक अकल

सकलपर परमहित ज्ञानगोतीतगुणवृत्तिहर्ता । सिंधुसुतगर्वगिरि वज्र गौरीश भवदक्षमखअखिलविध्वंसकर्त्ता॥भक्तिप्रिय भक्तजन कामधुकधेनु हरि हरणदुर्घटविकट विपति भारी । सुखद नर्मद वरद विरज अनवद्यखिलविपिन आनन्दवीथिनविहारी ॥ रुचिर हरिशंकरी नाममन्त्रावलीद्वन्द्वदुखहरनि आनन्दखानी । विष्णु शिवलोकसोपानसम सर्वदा वदति तुलसीदासविशदवानी ॥ ५० ॥ भानुकुलकमलरवि कोटिकन्दर्पछवि कालकलिव्यालमिव वैनतेयं । प्रबल भुजदण्ड प्रचण्ड कोदण्डधर तूणवर विशिष बलमप्रमेयं॥अरुणराजीवदलनयन सुखमाअयनश्यामतनुकान्ति वरवारिदाभं । तप्तकाञ्चन वस्त्र शस्त्रविद्यानिपुण सिद्धसुरसेव्य पाथोजनाभं ॥ अखिललावण्यगृह विश्वविग्रह परम प्रौढ़ गुणगूढ़ महिमाउदारं ॥ दुर्द्धर्षदुस्तर दुर्ग स्वर्ग अपवर्गपति भग्नसंसार पादपकुठारं ॥ शापवश मुनिवधूमुक्तकृत विप्रहितयज्ञरक्षणदक्ष पक्षकर्त्ता ॥ जनकनृपसदसि शिवचापभञ्जन उग्र भार्गवागर्वगरिमापहर्त्ता ॥ गुरुगिरागौरवअमरवसुदुस्त्यजराज्य त्यक्त सहित सौमित्रिभ्राता । संग जनकात्मजामनुजमनुसृत्य अज दुष्टवधनिरतत्रैलोक्यत्राता ॥ दण्डकारण्य कृतपुण्य पावनचरण हरणमारीचमायाकुरंगं । वालिबलमत्तगजराज इवकेशरी सुहृदसुग्रीवदुखराशिभंगं ॥ ऋच्छमर्कटविकट सुभट उद्भटसमरशैलसंकासरिपुत्रासकारी । बद्धपाथोधिसुरनिकरमोचन सकुलदलन दशशीशभुजबीसभारी । दुष्टविबुधारिसंघात अपहरण महि भारअवतार कारणअनूपं ॥ अमलअनवद्यअद्वैतानिर्गुणसगुण ब्रह्म सुमिरामिनर भूपरूपं । शेष श्रुति शारदा शम्भु नारद सनक गणतगुणअन्त नहीं तवचरित्रं । सोइराम कामारि प्रिय अवधपति सर्वदा दासतुलसीत्रास निधिवहित्रं ॥ ५१ ॥ जानकीनाथ रघुनाथ रागादितम तरणितारुण्यतनुतेजधामं । सच्चिदानन्दआनन्दकन्दाकरं विश्वविश्रामरामाभिरामं ॥ नीलनववारिधरसुभगशुभकान्तिकर पीतकौशेय बरवसनधारी । रत्नहाटकजटितमुकुटमण्डितमौलिभानुशतसदृश

उद्योतकारी ॥ श्रवण कुण्डल भाल तिलकभ्रू रुचिरअति अरुण अम्भोजलोचनविशालं । वक्रअवलोकत्रैलोक्यशोकापहं माररिपुहृदयमानसमरालं ॥ नासिकाचारु सुकपोल द्विजवज्र-द्युतिअधरविम्बोपमा मधुरहासं । कण्ठदरचिबुकवरवचनगम्भी-रतर सत्यसंकल्प सुरत्रासनाशं ॥ सुमनसुविचित्रनवतुलसि-कादलयुतं मृदुलवनमाल उरभ्राजमानं । भ्रमतआमोदवशम-त्तमधुकरनिकर मधुरतरमुखर कुर्वन्ति गानं ॥ सुभगश्रीवत्स केयूर-कंकणहारकिंकिणीरटनिकटि तटरसालं । वाम दिशिजनकजासी-नसिंहासनं कनकमृदुवल्लिवततरु तमालं ॥ आजानुभुजदण्डको-दण्डमण्डितवाम बाहु दक्षिणपाणिबाणमेकं । अखिलमुनिनिकरसुर सिद्धगन्धर्ववरनमतनरनागअवनिप अनेकं ॥ अनघ अनछिन्न सर्वज्ञ सर्वेशखलु सर्वतोभद्रदाताऽसमाकं । प्रणतजनखेद विच्छेदविद्यानि-पुण नौमि श्रीरामसौमित्रि साकं ॥ युगलपदपद्मसुखसद्म पद्मालयं चिह्नकुलिशादिशोभाति भारी । हनुमन्तहृदिविमल कृतपरममन्दिर-सदादासतुलसीशरण शोकहारी ॥ ५२ ॥ कौशलाधीश जगदीश जगदेक हित अमितगुणविपुलविस्तारलीला । गायन्ति तव चरित सुपवित्र श्रुति शेष शुक शम्भु सनकादि मुनि मननशीला ॥ वारिचरवपु-षधर भक्तनिस्तारपर धरणिकृत नाव महिमातिगुर्वी । सकल-यज्ञांशमयउग्रविग्रहक्रोडमर्दिदनुजेश उद्धरन उर्वी ॥ कमठ अतिविकटतनु कठिन पृष्ठोपरी भ्रमतमंदरकंडु सुखमुरारी । प्रगटकृतअमृत गो इन्दिरा इन्दु वृन्दारकावृन्दआनन्दकारी ॥ मनुज, मुनि, सिद्ध, सुर, नाग त्रासकदुष्ट, दनुज द्विजधर्मम-र्य्यादहर्त्ता ॥ अतुल मृगराजवपुधरित विदरितअरि भक्तप्रह्लाद-अह्लादकर्त्ता ॥ छलनबलि कपटबटुरूप वामनब्रह्म भुवनप-र्यंत पदतीनिकरणं । चरणनखनीरत्रैलोक्यपावनपरम विबुध-जननीदुसहशोकहरणं ॥ क्षत्रियाधीशकरि निकरनव केशरी परशुधरविप्रशशिजलदरूपं । बीसभुजदंडदशशीशखंडन चंडवे-गसायक नौमि रामभूपं ॥ भूमिभरभारहर प्रगटपरमात्मा ब्रह्म-नररूपधर भक्तहेतू । वृष्णिकुलकुमुद राकेशराधारमण कंसवं-

शाटवी धूमकेतू ॥ प्रबलपाखंडमहिमंडलाकुल देखि निंद्यकृत अखिलमखकर्म जालं । शुद्धबोधैकघनज्ञानगुणधाम अज बुद्धअवतारवंदे कृपालं ॥ काल कलिजनितमलमलिनमनसर्व-नर मोह निशि निबिडयमनान्धकारं । विष्णुयशपुत्रकल्की दिवाकरउदित दासतुलसीहरणविपतिभारं ॥ ५३ ॥ सकल सौभाग्यप्रद सर्वतोभद्रनिधि सर्व सर्वेशसर्वाभिरामं । शर्वहृदिकंजमकरंदमधुकररुचिर रूपभूपालमणि नौमि रामं ॥ सर्वसुखधाम गुणग्राम विश्रामपद नामसर्वास्पद मतिपुनीतं । निर्मलं शांतसुविशुद्धबोधायतन क्रोधमदहरणकरुणा निकेतं ॥ अजित निरुपाधि गोतीतमव्यक्तविभुमेकमनवद्यमजमद्वितीयं । प्राकृतं प्रगटपरमात्मापरमहित प्रेरकानंत वंदे तुरीयं ॥ भूधरं सुंदरं श्रीवरं मदनमदमथन सौंदर्यः सीमातिरम्यं । दुःप्राप्यदुःप्रेक्ष्य-दुस्तर्क्य दुःपार संसारहरसुलभमृदुभावगम्यं ॥ सत्यकृत सत्यरत सत्यव्रत सर्वदा पुष्टसन्तुष्टसंकष्टहारी । धर्मवर्मणिब्रह्म कर्म बोधैकद्विजपूज्यब्रह्मण्यजनप्रिय मुरारी ॥ नित्यनिर्मम नित्यमुक्त निर्माणहरिज्ञानघनसच्चिदानन्दमूलं । सर्व रक्षक सर्व भक्षकाध्यक्ष कूटस्थगूढार्चिभक्तानुकूलं ॥ सिद्धसाधकसाध्य वाच्यवाचकरूप मंत्रजापकजाप्य सृष्टिस्रष्टा । परमकारण कंज-नाभजलदाभतनु सगुणनिर्गुणसकलदृश्यद्रष्टा ॥ व्योमव्यापक विरजब्रह्मवरदेशवैकुंठवामनविमलब्रह्मचारी । सिद्धवृन्दारका वृन्द वन्दितसदा खंडपाखंडनिर्मूलकारी ॥ पूर्णानन्दसन्दोहअपहरण संमोहअज्ञानगुणसन्निपातं । वचनमनकर्मगतशरणतुलसीदास भासपाथोधिइव कुंभजातं ॥ ५४ ॥ विश्वविख्यात विश्वेश विश्वायतन विश्वमर्य्याद व्यालारिगामी । ब्रह्मवरदेशवागीशव्यापकविमल विपुलबलवाननिर्वाणस्वामी ॥ प्रकृतिमहतत्त्वशब्दादि गुणदेवताव्योममरुदग्नि अमलांबुउर्वी । बुद्धिमनइंद्रिया प्राणचित्तातमा कालपरमाणुचिच्छक्तिगुर्वी ॥ सर्वमेवात्र त्वद्रूप भूपालमणि व्यक्तमव्यक्तगतभेदविष्णोभुवनभवदंगकामारिवंदितपदद्वन्द्वमंदाकिनीजनक जिष्णो ॥ आदिमध्यान्त भगवंत त्वं सर्वगतमी-

शपश्यंति ये ब्रह्मवादी । यथापटतंतुघटमृत्तिका सर्पस्त्रग् दारुकरि कनक कटकांगदादी ॥ गूढ़गम्भीरगर्वघ्नगूढ़ार्थवित् गुप्तगोतीत गुरुज्ञानज्ञाता॥ज्ञेयज्ञानप्रियप्रचुरगरिमागार घोरसंसारकरपार दाता॥ सत्यसंकल्प अतिकल्प कल्पान्तकृत कल्पनातीतअहितलपवासी । वनजलोचनवनजनाभ वनदाभवपु वनचरध्वजकोटि लावण्यरासी ॥ सुकरदुष्करदुराराध्यदुर्व्यसनहर दुर्गदुर्द्धर्षदुर्गार्तिहर्त्ता॥ वेदगर्भार्भका-दर्भगुणगर्व अर्वागपरगर्वनिर्वापकर्त्ता ॥ भक्तअनुकूल भवशूलनि मूलकर तूलअघनामपावकसमानं।तरल तृष्णातमीतरणि धरणीधरण शरणभयहरण करुणानिधानं ॥ बहुलवृन्दारुवृन्दारकावृन्दपद द्वन्द मंदारमालोरधारी । पाहिमामीश संतापसंकुलसदा दासतुलसीप्रणत रावणारी॥५५॥ सन्तसन्तापहर विश्वविश्राणकर राम कामारिअभि-रामकारी । शुद्धबोधायतन सच्चिदानंदघन सज्जनानंदवर्द्धनखरारी ॥ शीलसमताभवन विषमता मतिशमन रामरमारमण रावणारी खड्गकरचर्मवर वर्मधररुचिर कटितूण शरशक्तिशारंगधारी ॥ सत्यसंधान निर्वाणप्रद सर्वहित सर्वगुणज्ञानविज्ञानशाली । सघनतमघोरसंसार भारशर्वरी नाम दिवसेशखरकिरण माली ॥ तपनतीक्षणतरुण तीव्रतापघ्नतप रूप तनुभूपतमपर तपस्वी । मानमदमदनमत्सरमनोरथमथनमोह अम्भोधिमन्दर मनस्वी ॥ वेदविख्यात वरदेशवामनविरज विमल वागीशवैकुंठस्वामी । कामक्रोधादिमर्द्दन विवर्धनक्षमा शांतविग्रह विहगराजगामी ॥ परमपावन पापपुंजमुंजाटवी अनल इव निमिष निर्मूलकर्त्ता । भुवनभूषण दूषणारिभुवनेश भूनाथश्रुतिमाथ जयभुवनभर्त्ता । अमलअविचल अकलसकल संततकलिविकलता भंजनानन्द-रासी । उरगनायकशयन तरुणपंकजनयनक्षीरसागर अयनसर्व-वासी । सिद्धकविकोविदानन्ददायक पदद्वन्द मन्दात्ममनुजैर्दुरापं । यत्र संभूतअतिपूतजलसुरसरी दर्शनादेव अपहरति पापं ॥ नित्यनिर्मुक्तसंयुक्तगुणनिर्गुणानंतभगवन्तानियामक नियन्ता । विश्वपोषणभरण विश्वकारणकरण शरणतुलसीदासत्रासहंता ॥ ५६ ॥

दनुजसूदन दयासिंधु दंभापहन दहन दुर्दोषदुःपापहर्त्ता । दुष्टता दमन दमभवन दुःखौघहर दुर्गदुर्वासनानाशकर्त्ता ॥ भूरिभूषण भानुमंत भगवंत तव भंजनाभयदभुवनेशभारी ॥ भावनातीत भववंद्य भवभक्तहित भूमि उद्धरण भूधरण धारी ॥ वरवदनवनदाभवागीश विश्वात्मा विरज वैकुंठमंदिरविहारी । व्यापकव्योम वंदारुवामन विभो ब्रह्मविद्ब्रह्मचिन्तापहारी ॥ सहजसुंदरसुमुखसुमनशुभ सर्वदा शुद्ध सर्वज्ञ स्वच्छंदचारी । सर्वकृत सर्वभृत सर्वजित सर्व हित सत्यसंकल्प कल्पांतकारी ॥ नित्यनिर्मोह निर्गुण निरंजन निजानंद निर्वाणनिर्वाणदाता । निर्भरानंदनिःकंप निःसीमनिर्मुक्त निरुपाधि निर्ममविधाता ॥ महामंगलमूल मोदमहिमायतन मुग्धमधुमथन मानद अमानी । मदनमर्दन मदातीत मायारहित मंजुमानाथपाथोजपानी ॥ कमललोचन कलाकोशकोदंडधर कोशलाधीश कल्याणरासी । यातुधान प्रचुरमत्तकरी केसरी भक्त मनपुण्यआरण्यवासी । अनघ अद्वैत अनवद्य अव्यक्त अज अमित अविकारआनन्दसिंधो । अचलअनिकेत अविरलअनामयअनारंभ अंभोदनादघ्नबंधो ॥ दासतुलसी खेदखिन्न आपन्नइह शोकसंपन्न अतिशयसभीतं । प्रणतपालक राम परमकरुणाधाम पाहि मामुर्विपति दुर्विनीतं ॥ ९७ ॥ देहि सतसंग निजअंग श्रीरंग भवभंगकारण शरणशोकहारी । येतु भवदंघ्रिपल्लवसमाश्रितसदा भक्तिरत विगतसंशय मुरारी ॥ असुरसुरनागनरयक्षगंधर्वखग रजनिचर सिद्ध येचापि अन्ने । संत संसर्ग त्रयवर्गपर परमपद प्रापनिःप्राप्यगतित्वयि प्रसन्ने । वृत्रबलि प्राणप्रह्लादमयव्याधगजगृध्र द्विजबंधुनिजधर्मत्यागी । साधुपदसलिल निर्धूतकलमषसकल श्वपचयवनादिकैवल्यभागी ।शांत निर्पेक्ष निर्मम निरामय अगुण शब्द ब्रह्मैकपरब्रह्मज्ञानी ।दक्षसमदृक स्वदृक विगत अति स्वपरमति परमरति विरति तव चक्रपानी ॥ विश्व उपकारहित व्यग्र चित सर्वदा व्यक्तमदमन्युकृत पुण्यरासी । यत्र तिष्ठंति तत्रैव अज शर्वहरि सहित गच्छन्ति क्षीराब्धिवासी । वेदपयसिं-

धुसुविचारमंदरमहा अखिलमुनिवृंदनिर्मथनकर्त्ता । सार सत्संग मुद्धृत्य इति निश्चितं वदत श्रीकृष्ण वैदर्भिभर्त्ता ॥ शोकसंदेहभयहर्षतमतर्षगण साधुसद्युक्तिविच्छेदकारी । यथा रघुनाथसायकनिशाचरचमूनिचयनिर्दलन पटु वेगभारी ॥ यत्र कुत्रापि ममजन्म निजकर्मवश भ्रमत जगयोनि संकटअनेकम् । तत्रत्वद्भक्तिसज्जनसमागमसदा भवतुमेरामविश्राममेकम् । प्रबलभवजनितत्रैव्याधिभेषजभक्तिभक्त भैषज्यमद्वैतदरसी। संतभगवन्तअंतरानिरंतर नहीं किमपिमतिमलिन कहदासतुलसी ॥ ५८ ॥ देहि अवलम्ब करकमलकमलारमन दमनदुखशमनसन्तापभारी । अज्ञानराकेशग्रासनविधुंतुदगर्व कामकरिमत्तहरि दूषणारी ॥ वपुषब्रह्मण्डसुप्रवृत्तिलङ्कादुर्ग रचितमनादनुजमयरूपधारि । विविधकोशौघ अतिरुचिरमन्दिरनिकर सत्त्वगुण प्रमुख त्रयकटककारी । कुनपअभिमान सागरभयङ्कर घोर विपुल अवगाह दुस्तरअपारम् । नक्ररागादिसंकुलमनोरथसकल संगसङ्कलपवीचीविकारम्॥ मोहदशमौलि तद भ्रातअहङ्कार पाकारिजित् कामविश्रामहारी । लोभ अतिकाय मत्सरमहोदरदुष्ट क्रोधपापिष्टविबुधान्तकारी । द्वेषदुर्मुख दम्भ खर अकंपनकपट दर्पमनुजाद मदशूलपानी ।अमितबल परमदुर्जननिशाचरनिकर सहितषड्वर्ग गो यातुधानी । जीवभवदंघ्रि सेवक विभीषणवसत मध्यदुष्टाटवीग्रसितचिन्ता । नियमयमसकल सुरलोकलोकेश लंकेशवशनाथ अत्यन्तभीता ज्ञानअवधेश गृहगेहिनी भक्तिशुभ । तत्र अवतार भूभारहर्ता । भक्तसङ्कष्टअवलोकपितुवाक्यकृतगमन किय गहन वैदेहिभर्ता॥कैवल्यसाधन अखिल भालु मर्कट विपुल ज्ञानसुग्रीव कृतजलधिसेतु । प्रबलवैराग्यदारुणप्रभंजनतनय विषयवनभवनमिव धूमकेतु॥दुष्टदनुजेश निर्वंशकृतदासहित विश्वदुखहरणबोधैकराशी । अनुजनिज जानकीसहितहरि सर्वदा दासतुलसीहृदयकमलवासी॥५९॥दीनउद्धरण रघुवर्यकरुणाभवन शमनसन्ताप पापौघहारी । विमलविज्ञान विग्रह अनुग्रहरूपभूपवर विबुधनर्मदचरणचारी ॥ संसारकान्तारअतिघोरगम्भीरघन गहनतरुकर्मसंकुल मुरारी । वासनावल्लि खरकण्टकाकुलविपुल निबिडविटपाटवीकठिनभारी ॥ विविधचितवृ-

त्तिखग निकरसेनोलूक काकबकगृध्र आमिषअहारी । अखिलखल-
निपुण छलाछिद्रानिरखत सदा जीवजनपथिकमनखेदकारी ॥ क्रोधक-
रिमत्तमृगराज कन्दर्पमद दर्पवृकभालु अतिउग्रकर्म्मा । महिष
मत्सर क्रूर लोभशूकररूप फेरुछल दम्भ मार्जार धर्म्मा ॥
कपटमर्कटविकटव्याघ्र पाखण्डमुखदुखदमृगव्रातउत्पातकर्त्ता ।
हृदयअवलोकि यह शोकशरणागतं पाहि मापाहि भो विश्वभर्ता ॥
प्रबलअहङ्कारदुरघट महीधर महामोहगिरिगुहा निबिडान्धकारम् ॥
चित्तवेताल मनुजाद मन प्रेत गण रोग भोगौघवृश्चिक विकारम् ॥
विषयसुखलालसादंशमशकादिखल झिल्लिरूपादि सबसर्पस्वामी ॥
तत्र आक्षिप्त तवविषममायानाथ अन्ध मैं मन्दव्यालादगामी ॥
घोरअवगाह भवआपगा पापजल पूरदुष्प्रेक्ष्य दुस्तर अपारा ।
मकरषड्वर्ग गोनक्रचक्राकुला कूल शुभ अशुभ दुखतीव्रधारा ॥
सकलसंघट्टपोच शोचवशसर्वदा दासतुलसीविषम गहनग्रस्तम् ।
त्राहि रघुवंशभूषण कृपाकर कठिनकालविकरालकलित्रासत्र-
स्तम् ॥ ६० ॥ नौमि नारायणं नरं करुणायणं ध्यानपारायणं
ज्ञानमूलम् । अखिलसंसारउपकारकारनसदय हृदय तपनिरत
प्रणतानुकूलम् ॥ श्यामनवतामरसदामद्युतिवपुषछवि कोटिमदनार्क-
अगणितप्रकाशम् । तरुणरमणीय राजीवलोचन ललित वदनराके-
शकरनिकरहासम् ॥ सकलसौन्दर्य्य निधि विपुलगुणधामविधि
वेदबुधशंसुसेवितअमानम् । अरुणपदकंज मकरन्दमन्दाकिनी मधुप-
मुनिवृन्द कुर्वन्ति पानम् ॥ शक्रप्रेरित घोरमारमद भंगकृत क्रोधगत
बोधरत ब्रह्मचारी । मार्कण्डेयमुनिवर्यहितकौतुकी विनाहिं कल्पान्त
प्रभु प्रलयकारी ॥ पुण्यवन शैलसरिबदरिकाश्रमसदासीनपद्मासनं
एकरूपं । सिद्धयोगीन्द्रवृन्दारकानन्दप्रद भद्रदायक दरश
अतिअनूपं ॥ मानमनभंगचितभंगमद क्रोधलोभादिपर्वतदुर्ग-
भुवनभर्त्ता । द्वेषमत्सर राग प्रबलप्रत्यूहप्रति भूरिनिर्दयक्रूर-
कर्मकर्त्ता । विकटतरवक्रक्षुरधारप्रमदातीव्रदर्पकन्दर्पगरखड्ग-
धारा । धीरगंभीरमनपीरकारक तत्र केवराकावयं विगतसारा ।

परमदुर्घट पन्थखलअसंगतसाथ नाथनहिंहाथवरबिरतियष्टी । दरशनारतदास त्रसितमायापास त्राहि हरि त्राहि हरि दास कष्टी ॥ दासतुलसी दीन धर्मबलहीन श्रमित अतिखेदमतिमोहनाशी । देहि अवलंब न विलंब अंभोजकर चक्रधर तेजबलसर्मरासी ॥ ६१ ॥

सकलसुखकन्द आनन्दवन पुण्यकृत बिन्दुमाधव द्वन्द्वविपतिहारी । यस्यांघ्रिपाथोज अज शम्भु सनकादिशुक शेषमुनिवृन्द आलि निलयकारी ॥ अमलमर्कतश्याम कामशतकोटिछबि पीतपट तडित इव जलदनीलम् । अरुणशतपत्रलोचन विलोकनिचारुप्रणतजनसुखद करुणार्द्रशीलम् ॥ कालगजराजमृगराज दनुजेशवनदहनपावक मोहनिशिदिनेशम् । चारिभुजचक्रकौमोदकीजलजदर सरसिजोपरियथाराजहंसम् ॥ मुकुटकुंडलतिलक अलकअलिव्रात इव भ्रुकुटिद्विजअधरवरचारुनासा । रुचिरसुकपोल दरग्रीव सुख सीव हरि इंदुकरकुंदमिवमधुरहासा ॥ उरसि वनमाल सुविशाल वनमंजरी भ्राजश्रीवत्सलांछनउदारम् । परमब्रह्मण्य अतिधन्य गत मन्यु अज अमितबलविपुल महिमाअपारम् ॥ हारकेयूरकरकनक कंकणरतन जटित मणिमेखला कटिप्रदेशम् । युगलपदनूपुरामुखर कल हंसवत सुभगसर्वांगसौंदर्यवेषम् । सकलसौभाग्यसंयुक्तत्रैलोक्यश्री दक्षदिशि रुचिरवारीशकन्या । वसत विबुधापगानिकटतट सदनवर नयननिरखंति नरतेतिधन्या ॥ अखिलमंगलभवन निबिड़संशयशमनदमनवृजनाटवीकष्टहर्त्ता। विश्वधृत विश्वहित अजितगोतीत शिव विश्वपालनहरणविश्वकर्त्ता॥ ज्ञानविज्ञान वैराग्यऐश्वर्यनिधि सिद्धि अणिमादि दे भूरिदानम्। त्रसतभवव्याल अति त्रासतुलसीदास त्राहि श्रीराम उरगारियानम् ६२

राग आसावरी ।

इहै परमफल परमबड़ाई । नखशिखरुचिरबिन्दुमाधवछबि निरखहिं नयन अघाई ॥ विशद किशोर पीन सुंदर वपु श्यामसुरुचि अधिकाई । नीलकंज वारिद तमालमणि इन्ह तनुते द्युति पाई ॥ मृदुलचरण शुभ चिह्न पदज नख अति अद्भुत उपमाई ।

अरुण नील पाथोज प्रसव जनु मणियुत दलसमुदाई ॥ जातरूप मणिजटित मनोहर नूपुरजन सुखदाई । जनु हर उर हरि विविध रूप धरि रहे वरभवन बनाई ॥ कटितट रटति चारु किंकिणीरव अनुपम वरणि न जाई । हेमजलज कलकलिनमध्य जनु मधुकर मुखर सोहाई ॥ उर विशाल भृगुचरण चारु अति सूचत कोमल ताई । कंकण चारु विविधभूषण विधि रचि निज कर मन लाई ॥ गजमणिमाल बीचभ्राजत कहिजाति न पदिक निकाई । जनु उडुगण मंडल वारिद पर नवग्रह रची अथाई ॥ भुजगभोग भुजदण्ड कंज दर चक्र गदा बनि आई । शोभासींव ग्रीव चिबुकाधर वदन अमित छवि छाई ॥ कुलिश कुंद कुड्मल दामिनिद्युति दशनना देख लजाई । नासा नयन कपोल ललित श्रुति कुंडल भ्रूमोहिं भाई ॥ कुंचित कच शिर मुकुट भालपर तिलक कहौं समुझाई । अलप तड़ित युगरेख इंदुमहँ रहितजि चंचलताई ॥ निर्मल पीत दुकूल अनूपम उपमा हिय न समाई । बहुमणि युत गिरि नील शिखर पर कनक वसन रुचिराई ॥ दक्ष भाग अनुराग सहित इन्दिरा अधिक ललिताई । हेमलता जनु तरुतमाल ढिग नील निचोल ओढ़ाई ॥ शतशारदा शेष श्रुति मिलि करि शोभा कहि न सिराई । तुलसिदास मतिमन्द द्वंद्वरत कहै कौन विधि गाई ॥ ६३ ॥

राग जयतिश्री ।

मन इतनोई या तनुको परमफल । सब अँग सुभग बिंदुमाधव छबि तजि स्वभाउ अवलोकु एक पल ॥ तरुण अरुण अंभोज चरण मृदु नख द्युति हृदयतिमिरहारी । कुलिशकेतु जव जलज रेखवर अंकुश मन गज वशकारी ॥ कनक जटित मणिनूपुरमे खल कटितट रटति मधुरवानी । त्रिवली उदर गँभीर नाभिसर जहँ उपजे विरंचिज्ञानी ॥ उर वनमाल पदिक अति शोभित विप्रचरण चित कहँ करपै । श्याम तामरसदामवर्णवपु पीतवसन शोभा वर पै ॥ कर कंकण केयूर मनोहर देति मोद मुद्रिक न्यारी । गद

कंज दर चारु चक्रधर नागशुंडसम भुजचारी ॥ कंबुग्रीव छबि-सींव चिबुक द्विज अधर अरुण उन्नत नासा । नवराजीवनयन शशि आनन सेवकसुखद विशदहासा ॥ रुचिर कपोल श्रवण कुण्डल शिर मुकुट सुतिलक भाल भ्राजै । ललित भ्रुकुटि सुंदर चितवनि कच निरखि मधुपअवलीलाजै ॥ रूपशीलगु-णखानि दक्ष दिशि सिंधुसुतारत पदसेवा । जाकी कृपाकटाक्ष चहत शिव विधि मुनि मनुजदनुज देवा ॥ तुलसिदास भव त्रास मिटै तब जब मति यहि स्वरूप अटकै ॥ नाहिंतः दीन मलीन हीनसुख कोटि जन्म भ्रमि भ्रमि भटकै ॥ ६४ ॥

रागवसन्त ।

वन्दौं रघुपति करुणानिधान । जाते छूटै भवभेदज्ञान ॥ रघुवंश-कुमुदसुखप्रददिनेश । सेवित पदपंकज अजमहेश ॥ निजभक्त-हृदयपाथोजभृंग । लावण्यवपुषअगणितअनंग ॥ अतिप्रबल मोहतममारतंड ॥ अज्ञानगहन पावकप्रचंड । अभिमानसिंधुकुं-भजउदार । सुररंजन भंजन भूमिभार ॥ रागादिसर्पगणपन्नगारि । कंदर्पनागमृगपति मुरारि ॥ भवजलधिपोतचरणारविन्द । जानकीरमण आनन्दकन्द ॥ हनुमंतप्रेमवापीमराल । निष्का-मकामधुक गोदयाल ॥ त्रैलोक्यतिलक गुणगहनराम । कहतुल-सिदास विश्रामधाम ॥ ६५ ॥

राग भैरव ।

राम राम रटु राम राम रटु राम राम जपु जीहा । रामनाम नवनेह मेहको मन हठि होहि पपीहा ॥ सबसाधनफलकूप सरि-तसर सागरसलिलनिरासा । रामनामरति स्वातिसुधाशुभसी-कर प्रेमपियासा ॥ गरजि तरजि पाषाण बरषि पवि प्रीति परखि जिय जानै । अधिकअधिक अनुराग उमँग उर पर परमिति पहि-चानै ॥ राम नामगति रामनाममति रामनामअनुरागी । ह्वैगयेहैं जे होहिंग आगे तेइ त्रिभुवन गनियत बड़भागी ॥ एकअंगमग अगम गवन करि बिलंबन छिन छिन छाहैं ॥ तुलसी हित अपनो अपनी दिसि

निरुपधि नेम निवाहैं ॥ ६६ ॥ रामजपु रामजपु रामजपु बावरे। घोरभवनीरानिधि नाम निज नावरे ॥ एकही साधनसब ऋद्धि सिद्धि साधिरे। ग्रसे कलिरोग योग संयम समाधिरे ॥ भलो जोहै पोच जोहै दाहिनो जो वामरे। रामनामही सों अन्त सबही को कामरे ॥ जगनभवाटिका रहीहै फलिफूलिरे। धुवां केसे धौर हर देखि तू न भूलिरे ॥ रामनाम छाँड़ि जो भरोसो करै औररे। तुलसी परोसो त्यागि माँगै कूर कौररे ॥ ६७ ॥ रामनाम जपु जिय सदा सानुरागरे। कलि न विराग योग याग तप त्यागरे ॥ रामसुमिरण सब विधिही को राजरे। रामको बिसारिबो निषेध शिरताजरे ॥ रामनाम महामणि फणि जगजालरे। माणि लिये फणि जिये व्याकुल विहालरे ॥ रामनाम कामतरु देत फल चारिरे॥ कहत पुराण वेद पंडित पुरारिरे ॥ रामनाम प्रेम परमारथको साररे। रामनाम तुलसीको जीवन आधाररे ॥६८॥ राम राम राम जीह जौलों तू न जपिहै। तौलों तू कहूं ही जाय तिहूं ताप तपिहै ॥ सुरसरि तीर विनुनीर दुख पाइहै। सुरतरुतर तोहिं दुःख दारिद्र सताइहै ॥ जागत वागत स्वप्ने न सुख सोइहै। जनम जनम युग युग जग रोइहै॥ छूटिवेके यतन विशेष बाँध्यो जायगो। ह्वैहै विष भोजन जो सुधा सानि खायगो ॥ तुलसी तिलोक तिहूं काल तोसे दीनको। रामनामही की गति जैसे जल मीनि को ॥ ६९ ॥ सुमिर सनेह सों तु नाम रामराय को। संवर निसंवरको सखा असहाय को ॥ भागहै अभागहूको गुण गुणहीनको। गाहक गरीबको दयालु दानि दीन को ॥ कुल अकुलिन को सुन्यो है वेद साखिहै। पाँगुरको हाथ पाँय आँधरेको आँखिहै ॥ माय बाप भूखे को अधार निराधार को ॥ सेतु भवसागरको हेतु सुखसार को ॥ पतितपावन रामनाम सों न दूसरो। सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो ॥७०॥ भलो भलीभाँति है जो मेरे कहे लागिहै। मन रामनाम सों स्वभाव अनुरागि है ॥ रामनामको प्रभाव जानि जूड़ी आगि है। सहित सहाय कलिकाल भीरु भागि है॥

राम नाम सों विराग योग जप जागि है । वाम विधि भालहू नकर्म दाग दागि है ॥ राम नाम मोदक सनेह सुधा पागि है । पाई परितोष तू न द्वार द्वार बागि है ॥ कामतरु रामनाम जोइ जोइ माँगिहै । तुलसीदास स्वारथ परमारथ खागिहै ॥ ७१ ॥ ऐसेऊ-रे मन साहब की सेवा सों होत चोररे । अपनी न बूझि न कहै को राँडरोररे॥ मुनि मन अगम सुगम माइ बापसो । कृपासिन्धु सहजसखा सनेही आपसों ॥ लोक वेद विदित बडो न रघुनाथ सो । सबदिन सब देश सबहीके साथ सो ॥ स्वामी सर्वज्ञ सों चलै न चोरी चार की । प्रीति पहिंचानि यह रीति दरबार-की ॥ काय न कलेश लेश लेत मान मन की । सुमिरे सकुचि रुचि जोगवत जनकी ॥ रीझे वश होत खीझे देत निज धामरे । फलत सकल फल कामतरु नामरे ॥ बेंचे खोटो दाम न मिलै न राखे कामरे । सोऊ तुलसी निवाज्यो ऐसो राजा राम रे- ॥ ७२ ॥ मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई । हौंतो सांइ द्रोही पै सेवकहित सांई ॥ राम सों वड़ो है कौन मोसों कोन छोटो । रामसों खरो है कौन मोसों कौन खोटो ॥ लोक कहै राम को गुलाम हौं कहावों । एतो वड़ो अपराध भवन मनवावों । पाथ माथे चढ़ै तृण तुलसी जो नीचो । बोरत न वारि ताहि जानि आपु सींचो ॥ ॥ ७३ ॥ जागु जागु जीव जड़ जोहै जग-यामिनी । देह गेह नेह जानि जैसे घनदामिनी ॥ सोवत स्वपने सहै संसृति सन्तापरे । बूड़ो मृग वारि खायो जेवरीको साँपरे ॥ कहै वेद बुध तू तो बूझि मन माँहिरे । दोष दुख स्वप्नके जागेहीपै जाहिं रे ॥ तुलसी जागे ते जाइ ताप तिहूँ तायरे । रामनाम शुचि रुचि सहज स्वभाय रे ॥ ७४ ॥

रागविभास ।

जानकीश की कृपा जगावती सुजान जीव जागि त्यागि मूढ़ता अनुरागु श्रीहरे । करि विचार तजि विकार भजि उदार रामचन्द्र भद्रसिंधु दीनबंधु वेद बदतरे ॥ मोहमय कुहू निशा

निरुपधि नेम निवाहैं ॥ ६६ ॥ रामजपु रामजपु रामजपु बावरे । घोरभवनीरनिधि नाम निज नावरे ॥ एकही साधनसब ऋद्धि सिद्धि साधिरे । ग्रसे कलिरोग योग संयम समाधिरे ॥ भलो जोहै पोच जोहै दाहिनो जो वामरे । रामनामही सों अन्त सबही को कामरे ॥ जगनभवाटिका रहीहै फलिफूलिरे । धुवां केसे धौर हर देखि तू न भूलिरे ॥ रामनाम छाँड़ि जो भरोसो करै औररे । तुलसी परोसो त्यागि माँगै कूर कौररे ॥ ६७ ॥ रामनाम जपु जिय सदा सानुरागरे । कलि न विराग योग याग तप त्यागरे ॥ रामसुमिरण सब विधिही को राजरे । रामको बिसारिबो निषेध शिरताजरे ॥ रामनाम महामणि फणि जगजालरे । मणि लिये फणि जिये व्याकुल विहालरे ॥ रामनाम कामतरु देत फल चारिरे॥ कहत पुराण वेद पंडित पुरारिरे ॥ रामनाम प्रेम परमारथको साररे । रामनाम तुलसीको जीवन आधाररे ॥६८॥ राम राम राम जीह जौलों तू न जपिहै । तौलों तू कहूं ही जाय तिहूं ताप तपिहै ॥ सुरसरि तीर विनुनीर दुख पाइहै । सुरतरुतर तोहिं दुःख दारिद्र सताइहै ॥ जागत वागत स्वप्ने न सुख सोइहै । जनम जनम युग युग जग रोइहै॥ छूटिवेके यतन विशेष बाँध्यो जायगो । ह्वैहै विष भोजन जो सुधा सानि खायगो ॥ तुलसी तिलोक तिहूं काल तोसे दीनको । रामनामही की गति जैसे जल मीन को ॥ ६९ ॥ सुमिर सनेह सों तु नाम रामराय को । संबर निसंबरको सखा असहाय को ॥ भागहै अभागहूको गुण गुणहीनको । गाहक गरीबको दयालु दानि दीन को ॥ कुल अकुलिन को सुन्यो है वेद साखिहै । पाँगुरको हाथ पाँय आंधरेको आँखिहै ॥ माय बाप भूखे को अधार निराधार को ॥ सेतु भवसागरको हेतु सुखसार को ॥ पतितपावन रामनाम सों न दूसरो । सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो ॥७०॥ भलो भलीभाँति है जो मेरे कहे लागिहै । मन रामनाम सों स्वभाव अनुरागि है ॥ रामनामको प्रभाव जानि जूड़ी आगि है।सहित सहाय कलिकाल भीरु भागि है॥

राम नाम सों विराग योग जप जागि है। वाम विधि भालहू नकर्म दाग दागि है ॥ राम नाम मोदक सनेह सुधा पागि है। पाई परितोष तू न द्वार द्वार बागि है ॥ कामतरु रामनाम जोइ जोइ माँगिहै। तुलसीदास स्वारथ परमारथ खागिहै ॥ ७१ ॥ ऐसेऊ-रे मन साहब की सेवा सों होत चोररे। अपनी न बूझि न कहै को राँडरोररे॥ मुनि मन अगम सुगम माइ बापसो। कृपासिन्धु सहजसखा सनेही आपसों ॥ लोक वेद विदित बडो न रघुनाथ सो। सबदिन सब देश सबहीके साथ सो ॥ स्वामी सर्वज्ञ सों चलै न चोरी चार की। प्रीति पहिंचानि यह रीति दरबार-की ॥ काय न कलेश लेश लेत मान मन की। सुमिरे सकुचि रुचि जोगवत जनकी ॥ रीझे वश होत खीझे देत निज धामरे। फलत सकल फल कामतरु नामरे ॥ बेंचे खोटो दाम न मिलै न राखे कामेर। सोऊ तुलसी निवाज्यो ऐसो राजा राम रे-॥ ७२ ॥ मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई। हौंतो सांइ द्रोही पै सेवकहित सांई ॥ राम सों बड़ो है कौन मोसों कौन छोटो। रामसों खरो है कौन मोसों कौन खोटो ॥ लोक कहै राम को गुलाम हौं कहावों। एतो बड़ो अपराध भवन मनवावों। पाथ माथे चढ़ै तृण तुलसी जो नीचो। बोरत न वारि ताहि जानि आपु सींचो ॥ ॥ ७३ ॥ जागु जागु जीव जड़ जोहै जग-यामिनी। देह गेह खेह जानि जैसे घनदामिनी ॥ सोवत स्वपने सहै संसृति सन्तापरे। बूड़ो मृग वारि खायो जेवरीको साँपरे ॥ कहै वेद बुध तू तो बूझि मन माँहिरे। दोष दुख स्वप्नेके जागेहीपै जाहिं रे ॥ तुलसी जागे ते जाइ ताप तिहुँ तायरे। रामनाम शुचि रुचि सहज स्वभाय रे ॥ ७४ ॥

रागविभास।

जानकीश की कृपा जगावती सुजान जीव जागि त्यागि मूढता ऽनुरागु श्रीहरे। करि विचार तजि विकार भजि उदार रामचन्द्र भद्रसिंधु दीनबंधु वेद वदतरे ॥ मोहमय कुहू निशा

विशाल काल विपुल व्याल सोयोखोयो सो अनूप स्वप्न जूपरे। अब प्रभात प्रगट ज्ञान भानुके प्रकाश पासना सरोग मोह द्वेष निबिड़ तम टरे ॥ भागे मद मान चोर भोर जानि यातुधान ॥ काम क्रोध लोभ क्षोभ निकर अपडरे । देखत रघुवरप्रताप बीते सन्ताप पाप ताप त्रिविध प्रेम आप दूरही करे ॥ श्रवण सुनि गिरा गँभीर जागे अति धीर वीर वरविराग तोष सकल सन्त आदरे। तुलसिदासप्रभुकृपालु निरखि जीवजन विहाल भंज्यो भवजाल परम मंगलाचरे ॥ ७५ ॥

रागललित ।

खोटो खरो रावरो हौं रावरे सों झूठ क्यों कहोंगो जानौ सब हीके मन की।करम वचन हिये कहौ न कपट किये ऐसी हठ जैसी गाँठि पानी परे सनकी॥दूसरो भरोसो नाहिं वासना उपासना की वासव विरंचि सुर नर मुनिगन की । स्वारथके साथी मेरे हाथी श्वानलेवा देई काहू तो न पीर रघुवीर दीन जनकी ॥ साँप सभा साबर लबार भये देव दिव्य दुसह शाशति कीजे आगेही या तनकी। साँचे परो पाऊं पान पंचनमें पन प्रमाण तुलसी चातक आश राम श्याम घनकी॥ ७६॥ रामके गुलाम नाम रामबोलाराख्यो राम काम यहै नाम द्वै हों कबहूं कहत हौं । रोटी लूंगा नीके राखै आगेहूकी वेद भाषै भलो ह्वै है तेरो ताते आनंद लहत हौं ॥ बांध्यो हौं करम जड गरव गूढ़ निगड सुनत दुसह हौंतो शासति सहत हौं। आरत अनाथ नाथ कौशल कृपाल पाल लीन्हों छीनि दीन देख्यो दुरित दहत हौं ॥ बूझ्यौ ज्योंहीं कह्यो मैं हूं चेरो ह्वैहौं रावरो जू मेरो कोऊ कहुं नाहिं चरण गहतहौं।मींजो गुरु पीठ अपनाइ गहि बाँह बोलि सेवक सुखद सदा विरद बहत हौं॥लोग कहै पोचु सो न सोच न संकोच मेरे व्याह न वरेखी जाति पाँति न चहत हौं। तुलसी अकाज काज रामहीके रीझे खीझे प्रीति की प्रतीति मन मुदित रहत हौं ॥ ७७ ॥ जानकीजीवन जगजीवन जगतहित जगदीश रघुनाथराजीवलोचनराम । शारदविधुव-

दनसुखशील श्रीसदन सहज सुंदरतनु शोभा अगणित काम ॥ जगसुपिता सुमातु सुगुरु सुहित सुमीत सबको दाहिनो दीनबंधु काहूको न बाम । आरतहरण शरणद अतुलितदानि प्रणतपाल कृपालु पतितपावन नाम ॥ सकलविश्ववन्दित सकल सुरसेवित आगम निगम कहैं रावरेई गुणग्राम । इहै जानिकै तुलसी तिहारो जन भयो न्यारो कै गनिवो जहाँ गने गरीब गुलाम ॥ ७८ ॥

राग टोडी।

दीनको दयालु दानि दूसरो न कोऊ । जाहि दीनता कहौं हौं दीन देखौं सोऊ ॥ मुनि सुर नर नाग असुर साहब तौ घनेरे ॥ पै तौलौं जौलौं रावरे न नेकु नयन फेरे ॥ त्रिभुवन तिहुँकाल विदित वदत वेद चारी ॥ आदि अन्त मध्य राम साहबी तिहारी ॥ तोहिं माँगि माँगनो न माँगिबो कहायो । सुनि स्वभाउ शील सुयश याचन जन आयो ॥ पाहन पशु विटप विहँग अपने कर लीन्हें । महाराज दशरथके रंक राय कीन्हें ॥ तू गरीब को निवाज हौं गरीब तेरो । बारक कहिये कृपालु तुलसीदास मेरो ॥ ७९ ॥ तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी । हौं प्रसिद्ध पातकी तू पापपुंजहारी ॥ नाथ तू अनाथको अनाथ कौन मोसों । मो समान आरत नाहिं आरतहर तोसों ॥ ब्रह्म तू ही जीव तू ही ठाकुर हौं चेरो । तात मात गुरु सखा तु सब विधि हित मेरो ॥ तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिये जो भावे । ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावे ॥ ८० ॥ और काहि माँगिये को माँगिबो निवारै।अभिमतदातार कौन दुखदरिद्र दारै ॥ धर्म धाम राम काम कोटिरूप रूरो । साहब सब विधि सुजान दान खड्ग शूरो । सुसमय दिन द्वै निशान सबके द्वार बाजै । कुसमय दशरथके दानि तैं गरीब निवाजै ॥ सेवा विनु गुण विहीन दीनता सुनाये । जेजे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये ॥ तुलसिदास याचकरुचि जानि दानि दीजै । रामचन्द्र चन्द्र तू चकोर मोहिं कीजै ॥ ८१ ॥

दीनबंधु सुखसिंधु कृपाकर कारुणीक रघुराई । सुनहु नाथ मन जरत त्रिविधज्वर करत फिरत बौराई ॥ कबहुँ योगरत भोगनिरत शठ हठ वियोग वश होई । कबहुँ मोहवश द्रोह करत बहु कबहुँ दया अति सोई ॥ कबहुँ दीन मतिहीन रंकतर कबहुँ भूप अभिमानी । कबहुँ मूढ़ पंडित बिडंबरत कबहुँ धर्मरत ज्ञानी । कबहुँ देख जग धनमय रिपुमय कबहुँ नारिमय भासै । संसृति सन्निपात दारुणदुख विनु हरिकृपा न नासै ॥ संयम जप तप नेम धर्म व्रत वहु भेषज समुदाई । तुलसिदास भवरोग रामपद प्रेमहीन नहिं जाई ॥ ८२ ॥ मोहजनित मल लाग विविधविध कोटिहु जतन न जाई । जनम जनम अभ्यासनिरत चित अधिक अधिक लपटाई ॥ नयन मलिन परनारि निरखि मन मलिन विषय सँग लागे । हृदय मलिन वासना मान मद जीव सहज सुख त्यागे ॥ परनिन्दा सुनि श्रवण मलिन भये वचन दोष पर गाये । सब प्रकार मलभार लाग निज नाथचरण बिसराये ॥ तुलसिदास व्रत दान ज्ञान तप शुद्धिहेतु श्रुति गावै । रामचरण अनुराग नीर बिनु मल अति नाश न पावै ॥ ८३ ॥

राग जयतश्री ।

कछु है न आय गयो जनम जाय । अति दुर्लभ तनु पाइ कपट तजि भजे न राम मन वचन काय ॥ लरिकाई बीती अचेत चित चंचलता चौगुने चाय । यौवन ज्वर युवती कुपथ्यकरि भयो त्रिदोष भरि मदन बाय ॥ मध्य वयस धनहेतु गँवाई कृषी बानिज नाना उपाय । राम विमुख सुख लह्यो न सपनेहुँ निशि वासर तपो तिहुँ ताय ॥ सेये नहिं सीतापति सेवक साधु सुमति भले भगति पाय । सुने न पुलकि तनु कहे न मुदित मन किये जे चरित रघुवंशराय ॥ अब शोचत मणि बिनु भुजंगज्यों विकल अंग दले जरा धाय । शिर धुनि धुनि पछितात मीजि कर कोउ न मीत हित दुसह दाय ॥ जिन्ह लगि निज परलोक बिगारचो

ते लजात होत ठाढ़े ठाँय । तुलसी अजहूं सुमिरि रघुनाथहि तरयो गयन्द जाके एक नायँ ॥ ८४ ॥ तौ तू पछितैहै मन मींजि हाथ । भयो है सुगम तोको अमर अगम तनु समुझ धों कत खोवत अकाथ ॥ सुखसाधन हरिविमुख वृथा जैसे श्रमफल-घृताहित मथै पाथ । यह विचारि तजि कुपथ कुसंगति चलि-सुपंथमिलि भले साथ ॥ देखु रामसेवक सुनि कीरति रटहिं नाम करिगान गाथ । हृदय आनु धनुबाण पाणि प्रभु लसे मुनि-पटकटि कसे भाथ ॥ तुलसीदास परिहरी प्रपंचसब नाउ राम-पदकमल माथ । जनि डरपहि तोसे अनेक खल अपनाये जानकीनाथ ॥ ८५ ॥

राग धनाश्री ।

मन माधवको नेकु निहारहि । सुनु शठ सदारंकके धन-ज्यों छनछन प्रभुहि सँभारहि । शोभाशील ज्ञानगुणमन्दिर सुन्दर परम उदारहि । रञ्जनसन्तअखिलअघगञ्जन भञ्जनविषयविकारहि । जो विनुयोग यज्ञ व्रत संयम गयो चहहि भवपारहि । तौ जनितुलसिदास निशि वासर हरिपदकमल बिसारहि ॥ ॥ ८६ ॥ इहैकह्यो सुत वेद नित चहूं । श्रीरघुवीरचरणचिन्तन-तजि नाहिन ठौर कहूं ॥ जाकेचरण विरंचि सेइ सिधि पाई शंकरहूं । शुकसनकादि मुक्त विचरत तेउ भजन करत अजहूं ॥ यद्यपि परमचपलश्री सन्तत थिर न रहति कतहूं । हरिपदपंकज-पाइ अचलभइ कर्म वचन मनहूं ॥ करुणासिंधु भक्तचिन्तामणि-शोभा सेवतहूं । और सकल सुर असुर ईश सब खाये उरग छहूँ ॥ सुरुचिकह्यो सोइ सत्य तात अति परुष वचन जबहूं । तुल-सिदास रघुनाथविमुख नहिं मिटै विपति कबहूं ॥ ८७ ॥ सुनु-मन मूढ़ शिखावन मेरो । हरिपदविमुख लह्यो न काहु सुख शठ यह समुझ सबेरो ॥ विछुरेशशि रवि मन नयनानि ते पावतदुख वहुतेरो । भ्रमत श्रमित निशि दिवस गगन महँ तहँ रिपुराहु वड़ेरो ॥

यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँपुर सुयश घनेरो । तजे चरण अजहूं न मिटत नित वहिबोताहूकेरो ॥ छूटैन विपाति भजे विनु रघुपति श्रुति सन्देह निवेरो । तुलसिदास सब आश छाँडि करि होहु रामकर चेरो ॥ ८८ ॥ कबहूं मन विश्राम न मान्यो । निशि दिन भ्रमत बिसारि सहज सुख जहँ तहँ इन्द्रिन तान्यो ॥ यदपि विषयसँग सहे दुसह दुख विपमजाल अरु झान्यो । तदपि न तजत मूढ़ ममतावश जानतहूं नाहिं जान्यो ॥ जन्म अनेक किये नाना विधि कर्म कीच जित सान्यो । होइ न विमल विवेक नीर विनु वेद पुराण बखान्यो ॥ निज हित नाथ पिता गुरु हरिसों हर्षि हृदय नाहिं आन्यो । तुलसिदास कब तृषा जाइ सर खनतहिं जन्म सिरान्यो ॥ ८९ ॥ मेरो मन हरि हठ न तजै । निशिदिन नाथ देउँ शिष बहुविधि करत स्वभाउ निजै ॥ ज्यों युवतीअनुभवति प्रसव अतिदारुण दुखउपजै ॥ ह्वै अनुकूलविसारि शूल शठ पुनि खल पतिहि भजै ॥ लोलुप भ्रमत गृहपशु ज्यों जहँ जहँ शिर पदत्रान बजै । तदपि अधम विचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै ॥ हौं हार्‍यौ करि यत्न विविध विध अतिशय प्रबल अजै । तुलसिदास वश होइ तबहिं जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥ ९० ॥ ऐसी मूढ़ता या मनकी । परिहरि रामभक्ति सुरसरिता आश करत ओसकनकी ॥ धूमसमूह निरखि चातक ज्यों तृषितजानि-मति घनकी । नाहिं तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचनकी ॥ ज्यों गच काँच विलोकि श्वान जड़ छाँह आपने तनकी ॥ टूटत अतिआतुर अहार वश क्षति बिसारि आनन की ॥ कहँलौं कहौं कुचाल कृपानिधि जानत हौ गति जनकी । तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख करहु लाज निज पनकी ॥ ९१ ॥ नाचतही निशि दिवस मर्‍यो । तबहीं ते न भयो हरि थिर जबते जिव नाम धर्‍यो ॥ बहु वासना विविध कंचुक भूषण लोभादि भर्‍यो । चरअरुअचरगगनजलथलमेंकौननस्वांगकर्‍यो ॥ देव दनुजमुनिनागमनुजनहींयाँचतकोउउबर्‍यो । मेरोदुसहदरिद्र दोपदुख

काहू तो न हरयो ॥ थके नयन पद पाणि सुमतिबल संग सकल बिछुरयो । अब रघुनाथ शरण आयो जन भवभयविकल डरयो ॥ जेहि गुणते वश होहु रीझि करि सो मोहिं सब बिसरयो । तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजै रहन परयो ॥ ॥ ९२ ॥ माधव जू मोसम मन्द न कोऊ । यद्यपि मीन पतंग हीनमति मोहिं नहिं पूजहि ओऊ ॥ रुचिर रूप आहार वश्य उन पावक लोह न जान्यो । देखत विपति विषय न तजत हौं ताते अधिक अयान्यो ॥ महामोहसरिता अपार महँ सन्तत फिरत बह्यो । श्रीहरिचरणकमल नौका तजि फिरि फिरि फेन गह्यो । अस्थिपुरातन क्षुधित श्वान अति ज्यों भरि मुख पकरयो । निज तालूगत रुधिर पान करि मन सन्तोष धरयो । परमकठिन भवव्यालग्रसित हों त्रसित भयो अति भारी । चाहत अभय भेक शरणागत खगपतिनाथ बिसारी ॥ जलचर वृन्द जाल अन्तर्गत होत सिमिटि इक पासा । एकहि एक खात लालचवश नहिं देखत निज नाशा । मेरे अघ शारद अनेक युग गनत पार नहिं पावै । तुलसीदास पतितपावन प्रभु यह भरोस जिय आवै ॥ ९३ ॥ कृपा सो धौं कहां बिसारी राम । जेहि करुणा सुनि श्रवण दीन दुख धावत हौ तजि धाम ॥ नागराज निज बल विचारि हिय हारि चरण चित दीन । आरत गिरा सुनत खगपति तजि चलत विलम्ब न कीन ॥ दितिसुतत्रास त्रसित निशि दिन प्रह्लाद प्रतिज्ञा राखी ॥ अतुलितबल मृगराजमनुजतनु दनुज हत्यो श्रुति साखी ॥ भूप सदसि सब नृप विलोकि प्रभु राखु कह्यो नर नारी । वसनपूरि अरिदर्प दूरि करि भूरि कृपा दनुजारी ॥ एक एकते रिपुत्रासित जन तुम राखे रघुवीर । अब मोहिं देत दुसह दुख बहुरिपु कस न हरहु भवपीर ॥ लोभग्राह दनुजेश क्रोध कुरुराज बन्धु खल मार। तुलसिदास प्रभु यह दारुण दुख भंजहु रामउदार ॥ ९४ ॥ काहे ते हरि मोहिं बिसारो जानतनिज महिमामेरे अघ तदपिननाथ सँभारो॥ पतितपुनीत दीनाहितअशरण शरण कहत श्रुतिचारो॥ हौं

नहीं अधम सभीत दीन किधौं वेदन मृषा पुकारो ॥ खग गणिका गज व्याध पाँति जहँ तहँ होहूँ बैठारो । अब केहि लाज कृपानिधान परसत पनवारो फारो ॥ जो कलिकाल प्रबल अति हो तो तुव निदेश ते न्यारो । तौ हरि रोष भरोस दोष गुण तेहि भजते तजि गारो ॥ मसक विरंचि विरंचि मसक सम करहु प्रभाउ तुम्हारो । यह सामर्थ्य अछत मोहिं त्यागहु नाथ तहाँ कछु चारो ॥ नाहिन नरक परत मोकहँ डर यद्यपि हों अति हारो । यह बड़ि त्रास दासतुलसी प्रभु नामहुँ पाप न जारो ॥ ॥ ९५ ॥ तऊ न मेरे अघ अवगुण गनिहैं । जो यमराज काज सब परिहरि यहौ ख्याल उर आनि हैं ॥ चलिहैं छूटि पुंज पापिनके असमंजस जिय जानिहैं । देखि खलल अधिकार प्रभू सो मेरी भूरि भलाई मानिहैं ॥ हँसि करिहैं परतीति भक्त की भक्त शिरोमणि मनिहैं । ज्यों त्यों तुलसिदास कौशलपति अपनायहि परिवनिहैं ॥ ९६ ॥ जो पै जिय धरिहो अवगुण जनके । तौ क्यों कटत सुकृत नख ते मो पै विपुल वृन्द अघ वनके ॥ कहिहै कौन कलुष मेरे कृत कर्म वचन अरु मनके । हारहिं अमित शेष शारद श्रुति गिनत एक यक छिनके । जो चित चढ़ै नाम महिमा निज गुण गण पावन पनके ॥ तौ तुलसिहि तारिहौ विप्र ज्यों दशन तोरि यमगनके ॥ ९७ ॥ जो पै हरि जनके अवगुण गहते । तौ सुरपति कुरुराज बालि सों कत हठि वैर बिसहते ॥ जो जप याग योग व्रत वर्जित केवल प्रेम न चहते । तौ कत सुर मुनिवर विहाय ब्रज गोपिगेह बसि रहते ॥ जो जहँ तहँ प्रण राखि भक्तको भजनप्रभाउ न कहते । तौ कलि कठिन कर्म मारग जड़ हम केहि भाँति निवहते ॥ जो सुतहित लिय नाम अजामिलके अघ अमित न दहते । तौ यमभट शासति हर हमसे वृषभ खोजिखोजि न हते ॥ जो जगविदित पतितपावन अति बांकुर विरद न वहते । तौ बहुकल्प कुटिलतुलसीसे स्वप्नहुँ सुगति न लहते ॥ ९८ ॥ ऐसी हरि करत दास परप्रीति।

निज प्रभुता बिसारि जनके वश होत सदा यह रीति ॥ जिन बाँधे सुर असुर नाग नर प्रबल कर्म की डोरी। सोइ अविच्छिन्न ब्रह्म यशुमति हठि बाँध्यो सकत न छोरी । जाकी मायावश विरंचि शिव नाचत पार न पायो । करतल ताल बजाइ ग्वाल युवतिन सोइ नाच नचायो ॥ विश्वम्भर श्रीपति त्रिभुवनपति वेद विदित यह लीख । बलि सों कछु न चली प्रभुता बरु ह्वै द्विज माँगी भीख ॥ जाको नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुखभार। अम्बरीष हित लागि कृपानिधि सोइ जनम्यो दश बार ॥ योग विराग ध्यान जप तप करि जे खोजत मुनि ज्ञानी । वानर भालु चपल पशु पांवर नाथ तहाँ रति मानी ॥ लोकपाल यमकाल पवन रवि शशि सब आज्ञाकारी । तुलसिदास प्रभु उग्रसेनके द्वार बेंतकरधारी ॥ ९९ ॥ विरद गरीबनिवाज राम को। गावत वेद पुराण शम्भु शुक प्रगट प्रभाव नाम को ॥ ध्रुव प्रह्लाद विभीषण कपिपति जड़ पतङ्ग पाण्डव सुदाम को । लोक सुयश परलोक सुगति इन्हमें को है राम काम को ॥ गणिका कोल किरात आदि कवि इन्हते अधिक बाम को ॥ वाजिमेध कब कियो अजामिल गज गाये कब श्याम को । छली मलीन हीन सबही अँग तुलसी सों छीन छाम को। नाम नरेश प्रताप प्रबल जग युग युग चालत चाम को ॥ १०० ॥ सुनि सीतापति शील स्वभाउ । मोद न मन तनु पुलक नयन जल सो नर खेहर खाउ ॥ शिशु पन ते पितु मातु बंधु गुरु सेवक सचिव सखाउ । कहत रामविधुवदन रिसौहैं स्वप्नेहुँ लख्यो न काउ ॥ खेलत संग अनुज बालक नित जुगवत अनट अपाउ । जीति हारि चुचुकारि दुलारत देत दिवावत दाउ ॥ शिला शापसन्ताप विगत भइ परशत पावन पाउ। दईसुगति सो न हेर हर्ष हिय चरण छुएको पछिताउ ॥ भवधनुभंजि निदरि भूपति भृगुनाथ खाइ गए ताउ। क्षमि अपराध क्षमाइ पाँयपरि इता न अनत समाउ ॥ कह्यो राज वन दियो नारिवश गरि गलानि गयो राउ । ता कुमातुको मनजुगवत ज्यों निजतनु मर्म कुघाउ ॥ कपि सेवा

वश भये कनौडे कह्यो पवनसुत आउ । देवे कोन कछू ऋणियां हौं धनिक तु पत्र लिखाउ । अपनाए सुग्रीव विभीषण तिन न तज्यो छलछाउ । भरतसभा सन्मानि सराहत होत न हृदय अघाउ ॥ निजकरुणा करतूति भक्तपर चपत चलत चरचाउ । सकृत प्रणाम प्रणत यश वर्णत सुनत कहत फिर गाउ ॥ समुझि समुझि गुणग्राम रामके उरअनुराग बढाउ । तुलसिदास अनयास रामपद पइहै प्रेमपसाउ ॥ १०१ ॥ जाउँ कहाँ तजि चरण तुम्हारे । काको नाम पतितपावन जग केहि अतिदीन पियारे ॥ कौने देव बराइ विरदाहित हठि हठि अधम उधारे । खग मृग व्याध पषाण विटप जड़ यवन कवन सुर-तारे ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवश विचारे । तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥ १०२ ॥ हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों । साधनधाम बिबुधदुर्लभ तनु मोहिं कृपा करि दीन्हों ॥ कोटिहुँ मुख कहि जाइं न प्रभुके एक एक उपकार । तदपि नाथ कछु और माँगिहों दीजै परमउदार ॥ विषय वारि मनमीन भिन्ननहिं होत कबहुँ पल एक ॥ ताते सहिय विपति अति दारुण जन्मत योनि अनेक ॥ कृपाडोरि-वंसीपद अंकुश परमप्रेम मृदुचारो । यहि विधि वेधि हरहु मेरोदुख कौतुक राम तिहारो ॥ है श्रुतिविदित उपाय सकल सुर केहि केहि दीन निहोरे । तुलसिदास यहि जीव मोहरजु जोइ बांध्यो सोइ छोरे ॥ १०३ ॥ यह विनती रघुवीर गुसाईं । और आश विश्वास भरोसो हरु जियकी जड़ताई ॥ चहौं न सुगति सुमति संपति कछु ऋधि सिधि विपुल बड़ाई । हेतु रहित अनुराग रामपद बढ़ो अनुदिन अधिकाई ॥ कुटिल कर्म लै जाय मोहिं जहँ तहँ अपनी बरिआई । तहँ तहँ जिनि छिन छोह छांडिये कमठअंडकी नाईं ॥ यह जग में जहँ लगि या तनु की प्रीति प्रतीति सगाई । ते सब तुलसिदास प्रभुही सों होहु सिमिटि एक ठाईं ॥ ॥१०४॥ जानकीजीवन की बलिजैहों । चित कहै रामसीयपद परिहरि अब न कहूं चलि जैहौं ॥ उपजी उर प्रतीति स्वप्नेहुँ सुख

प्रभुपद विमुख न पैहौं। मन समेत या तनुके वासिन इहै शि-
खावनदैहौं। श्रवणन और कथा नहिं सुनिहौं रसना और नगैहौं।
रोकिहौं नयन विलोकत औरहिं शीश ईशही नैहौं॥ ना-
तो नेहनाथ सों करि सब नातो नेह बहैहौं। यह छर भार ता-
हि तुलसीजग जाको दास कहै हौं॥ १०५॥ अबलौं नशा-
नी अब न नशैहौं। रामकृपा भवनिशा सिरानी जागे फिरि-
न डसैहौं॥ पायो नाम चारु चिन्तामणि उर करते न खसैहौं।
श्याम रूप शुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहि कसैहौं॥ पर-
वश जानि हँस्यो इन इन्द्रिन निजवश ह्वै न हँसैहौं। मन मधु-
कर पन करि तुलसी रघुपतिपदकमल बसैहौं॥ १०६॥

राग रामकली।

महाराज रामादर्‌यो धन्य सोई। गरुअ गुणराशि सर्वज्ञ
सुकृती शीलनिधि साधु तेहि सम न कोई॥ उपल केवट कीश
भालु निशिचर शबरि गीध शम दम दया दान हीने। नाम
लिये रामकिये परमपावन सकल नर तरत तिनके गुणगान
कीने॥ व्याध अपराधकी साध राखी कौन पिङ्गला कौन मति
भक्ति भेई। कौन धौं सो मजाजी अजामिल अधम कौन गज-
राज धौं बाजपेई॥ पांडुसुत गोपिका विदुर कुबरी सबहिं
शोध किये शुद्धता लेस कैसो। प्रेम लखिं कृष्ण किये आपने तिनहुँ
को सुयश संसार हरि हर को जैसो॥ कोल खल भिल्ल यवनादि
खस राम कहि नीच ह्वै ऊँच पद को न पायो। दीन दुखदमन
श्रीरमन करुणाभवन पतित पावन विरद वेद गायो॥ मन्दमति
कुटिल खल तिलक तुलसी सरिस भौ न तिहुँलोक तिहुँकाल कोऊ।
नाम की कानि पहिंचानि जन आपनो ग्रसत कलिव्याल रखु
शरण सोऊ॥ १०७॥

राग बिलावल।

हे नीको मेरो देवता कोशलपतिराम। सुभग सरोरुहलोचन
सुठि सुन्दर श्याम॥ सिय समेत शोभित सदा छवि अमित

अनङ्ग ॥ भुज विशाल शर धनु धरे कटि चारु निषङ्ग ।बलि पूजा चाहत नहीं चाहै एक प्रीति। सुमिरतही मानै भलो पावन सब रीति॥ देहि सकल सुख दुख दहै आरतजनबंधु। गुण गहि अघ अवगुणहरै अस करुणासिंधु॥ देश काल पूरण सदा वद वेद पुरान। सबको प्रभु सब मों वसै सवकी गति जान॥ को करि कोटिक कामना पूजै बहु देव। तुलसिदास तेहि सेइये शंकर जेहि सेव॥ १०८॥ वीर महा अवराधिये साधे सिधि होय। सकल काम पूरण करै जानै सब कोय॥ वेगि विलम्ब न कीजिये लीजै उपदेश। बीजमन्त्र जपिये सोई जो जपत महेश। प्रेमवारि तर्पण भलो घृत सहज सनेह। संशय समिध अगिन क्षमा ममता बलि देह॥ अव उचाट मनवश करै मारै मद मार। आकरषै सुखसम्पदा सन्तोष विचार॥ जे यहिभाँति भजन कियो मिल रघुपति ताहि। तुलसिदास प्रभुपथ चढ्यो जो लेहु निबाहि॥ १०९॥ कस न करहु करुणा हरे दुखहरण मुरारि। त्रिविधताप सन्देह शोक संशयभयहारि॥ यह कलिकालजनित मल मतिमन्द मलिन मन। तेहि पर प्रभु नहिं कर सँभार केहि भाँति जियै जन॥ सब प्रकार समरथ प्रभो मैं सब विधि दीन। यह जिय जानि द्रवहु नहीं मैं कर्मविहीन॥ भ्रमत अनेक योनि रघुपति पति आननमोरे। दुख सुख सहों रहों सदा शरणागत तोरे॥ तो सम देव न कोउ कृपालु समुझौं मनमाहीं। तुलसिदास हरि तोषिये सो साधन नाहीं॥११०॥ कहु केहि काहये कृपानिधे भवजनित विपति अति। इन्द्रिय सकल विकल सदा निज २ स्वभाउरति॥ जे सुख सम्पति स्वर्ग नरक सन्तत सँग लागी। हरि परिहरि सोइ यत्न करत मन मोर अभागी॥ मैं अति दीनदयालु देव सुनि मन अनुरागे। जो न द्रवहु रघुबीर धीर काहे न दुख लागे॥ यद्यपि मैं अपराधभवन दुखशमन मुरारे। तुलसिदास कहँ आश इहै बहु पतित उधारे॥ १११॥ केशव कहि न जाइ का कहिये। देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिये॥ शून्य

भीति पर चित्र रंग नाहिं तनु बिनु लिखा चितेरे। धोये मिटै न मरे भीति दुख पाइय यहि तनु हेरे ॥ रविकर नीर बसै अति दारुण मकर रूप तेहि माहीं। वदनहीन सो ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं ॥ कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ युगल प्रबल करि माने। तुलसिदास परिहरै तीनि भ्रम सो आपन पहिचाने ॥ ११२ ॥ केशव कारण कौन गुसाईं। जेहि अपराध असाधु जानि मोहिं तजेहु अज्ञ की नाईं ॥ परम-पुनीत सन्त कोमलचित तिनहिं तुमहिं बनिआई। तौ कत विप्र व्याध गणिकहि तारेहु कछु रही सगाई ॥ काल कर्म-गति अगति जीव की सब हरि हाथ तुम्हारे ॥ सोइ कछु करहु हरहु ममता मम फिरहुँ न तुमहिं बिसारे ॥ जो तुम तजहु भजौं न आन प्रभु यह प्रमाणप्रण मोरे। मन क्रम वचन नरक सुरपुर जहँ तहँ रघुवीर निहोरे ॥ यद्यपि नाथ उचित न होत अस प्रभु सों करौं ढिठाई। तुलसिदास सीदत निशि दिन देखत तुम्हरी निठुराई ॥ ११३ ॥ माधव अब न द्रवहु केहि लेखे। प्रणतपाल प्रण तोर मोर प्रण जिअउँ कमलपद देखे ॥ जब लगि मैं न दीन दयालु तैं मैं न दास तैंस्वामी। तब लगि जो दुख सहेउँ कहेउँ नहिं यद्यपि अन्तर्यामी ॥ तैं उदार मैं कृपण पतित मैं तैं पुनीत श्रुति गावै। बहुत नात रघुनाथ तोहिं मोहिं अब न तजे बनिआवै ॥ जनक जननि गुरु बंधु सुहृद पति सब प्रकार हितकारी। द्वैत रूप तम कूप परौं नहिं अस कछु यतन विचारी॥ सुन अदभ्रकरुणावारिजलोचन मोचनभयभारी।तुलसिदास प्रभु तव प्रकाश बिनु संशय टरै न टारी ॥ ११४ ॥ माधव मो समान जगमाहीं। सब विधि हीन मलीन दीन अति लीन विषय कोउ नाहीं ॥ तुम सम हेतु रहित कृपालु आरत हित ईश न त्यागी। मैं दुख शोक विकल कृपालु केहि कारण दया न लागी ॥ नाहिंन कछु अवगुण तुम्हार अपराध मोर मैं माना। ज्ञानभवन तनु दियहु नाथ सोउ पाय न मैं प्रभुजाना ॥ वेणु करील श्रीखण्ड वसन्तहि दूषण मृपा लगावै। सार रहित हतभाग्य सुरभि पल्लव सो कहु कहँ

पावै ॥ सब प्रकार मैं कठिन मृदुल हरि दृढ़विचार जिय मोरे । तुलसिदास प्रभु मोह शृंखला छुटिहि तुम्हारे छोरे ॥ ११५ ॥ माधव मोहफाँस क्यों टूटै । बाहर कोटि उपाय करिय अभ्यन्तर ग्रन्थि न छूटै ॥ घृतपूरण कराह अन्तर्गत शशिप्रतिबिम्ब दिखावै । ईंधन अग्नि लगाइ कल्पशत औटत नाश न पावै ॥ तरु कोटर महँ बस विहंग तरु काटे मरै न जैसे ॥ साधन करि अविचार हीन मन शुद्ध होइ नहिं तैसे ॥ अन्तर मलिन विषय मन अति तन पावन करिय पखारे । मरइ न उरग अनेक जतन वालमीकि विविध विधि मारे ॥ तुलसिदास हरिगुरुकरुणा बिनु विमल विवेक न होई ॥बिनु विवेक संसार घोर निधि पार न पावै कोई ॥ ॥ ११६ ॥ माधव असि तुम्हारि यह माया । करि उपाय पचि मरिय तरिय नहिं जब लगि करहु न दाया ॥ सुनिय गुनिय समुझिय समुझाइय दशा हृदय नहिं आवै । जेहि अनुभव विनु मोह जनित भव दारुण विपति सतावै ॥ ब्रह्म पियूषमधुर शीतल जो पै मन सो रस पावै ॥ तौ कत मृगजल रूपविषय कारण निशिवासर धावै ॥ जेहिके भवन विमल चिन्तामणि सो कत काँच बटोरै । स्वप्ने परवश परचो जागि देखत केहिजाइ निहोरै ॥ ज्ञान भक्ति साधन अनेक सब सत्य झूठ कछु नाहीं । तुलसिदास हरिकृपा मिटै भ्रम यह भरोस मनमाहीं ॥ ११७ ॥ हे हरिकवन दोष तोहिं दीजै । जेहि उपाय स्वप्नेहुँ दुर्लभ गति सोइ निशिवासर कीजै । जानत अर्थ अनर्थ रूप तम कूप परव यहि लागे । तदपि न तजत श्वान अज खर ज्यों फिरत विषय अनुरागे ॥ भूत द्रोहकृत मोहवश्यहित आपन मैं न विचारो । मद मत्सर अभिमान ज्ञान रिपु इनमहँ रहनि अपारो ॥ वेद पुराण सुनत समुझत रघुनाथ सकलजगव्यापी । भेद नाहिं श्रीखण्ड वेणु इव सारहीन मन पापी॥ मैं अपराधसिंधु करुणाकर जानत अन्तर्यामी तुलसिदास भवव्याल ग्रसित तव शरण उरगारिपुगामी ॥ ११८ ॥ हे हरि कवन यतन सुख मानहु । ज्यों गज दशन तथा मम करणी

सब प्रकार तुम जानहु ॥ जो कछु कहिय करिय भवसागर तरिय वत्सपद जैसे। रहनि आनि विधि कहिय आन हरिपद सुख पाइय कैसे॥ देखत चारु मयूर नयन शुभ बोल सुधा इव सानी। सविषउरग आहार निठुर अस यह करणी वह बानी ॥ अखिल जीव वत्सल निर्मत्सर चरणकमल अनुरागी। ते तव प्रिय रघुबीर धीरमति अतिशय निज पर त्यागी॥ यद्यपि मम अवगुण अपार संसार योग्य रघुराया। तुलसिदास निजगुण विचारि करुणानिधान करु दाया॥ ११९॥ हे हरि कवन यतन भ्रम भागै। देखत सुनत विचारत यह मन निज स्वभाव नहिं त्यागै॥ भक्ति ज्ञान वैराग्य सकल साधन याहि लागि उपाई। कोउ भल कहउ देउ कछु कोउ आसि वासना हृदय ते न जाई॥ जेहि निशि सकल जीव सूतहिं तव कृपापात्र जन जागै। निज करणी विपरीत देखि मोहिं समुझि महाभय लागै॥ यद्यपि भग्नमनोरथ विधि वश सुख इच्छित दुख पावै॥ चित्रकार करहीन यथा स्वारथ विनु चित्र बनावै॥ हृषीकेश सुनि नाउँ जाउँ बलि अति भरोस जिय मोरे। तुलसिदास इन्द्रियसम्भवदुख हरे बनिह प्रभु तोरे॥ १२०॥ हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी। यद्यपि मृषा सत्य भासै जब लगि नहिं कृपा तुम्हारी॥ अर्थ अविद्यमान जानिय संसृत नहिं जाइ गोसाईं। विनु बाँधे निज हठ शठ परवश परेउ कीर की नाईं॥ स्वप्न व्याधि विविध बाधा जनु मृत्यु उपस्थित आई। वैद्य अनेक उपाय करहिं जागे विनु पीर न जाई। श्रुति गुरु साधु स्मृति संमत यह दृश्य सदा दुखकारी। तेहि विनु तजे भजेविनु रघुपति विपति सकै को टारी॥ बहु उपाय संसारतरण कहँ विमलगिरा श्रुति गावै। तुलसिदास मैं मोर गये विनु जिय सुख कबहुँ न पावै॥ ॥ १२१॥ हे हरि यह भ्रम की अधिकाई। देखत सुनत कहत समुझत संशय सन्देह न जाई॥ जो जग मृषा तापत्रय अनुभव होहिं कहहु केहि लेखे। कहि न जाइ मृगवारि सत्य भ्रम ते दुख होइ विशेखे॥ सुभगसेज सोवत स्वप्ने वारिधि बूड़त भय लागै। को-

टिहुँ नाव न पार पाव सो जबलगि आपु न जागै ॥ अनविचार रमणीय सदा संसार भयङ्कर भारी । सम संतोष दया विवेक ते व्यवहारी सुखकारी ॥ तुलसिदास सब विधि प्रपंच जग यदपि झूठ श्रुति गावै । रघुपति भक्ति सन्तसंगति विनु को भवत्रास नशावै ॥ १२२ ॥ मैं हरि साधन करइ न जानी । जस आमय भेषज न कीन्ह तस दोष कहा वरबानी ॥ स्वप्ने नृप कहँ घटै विप्रवध विकल फिरै अघ लागे । वाजिमेधशत कोटि करै नहिं शुद्ध होइ विनु जागे ॥ स्रग महँ सर्प विपुल भयदायक प्रगट होइ अविचारे । बहु आयुध धरि बल अनेक करि हारहि मरइ न मारे ॥ निज भ्रमते रविकर-सम्भवसागर अतिभय उपजावै । अवगाहत वोहित नौका-चढ़ि कबहूं पार न पावै ॥ तुलसिदास जग आपु सहित जब लगि निर्मूल न जाई । तब लगि कोटि कल्प उपाय करि मरिय तरिय नहिं भाई ॥ १२३ ॥ अस कछु समुझि परत रघुराया ॥ विन तव कृपा दयालु दासहित मोह न छूटै माया।वाक्यज्ञानअत्यन्तनिपुण भवपार न पावै कोई । निशि गृहमध्य दीपकी बातन्ह तम निवृत्त नहिं होई ॥ जैसे कोउ इक दीन दुखी अति अशनहीन दुख पावै । चित्र कल्पतरुकामधेनु गृह लिखे न विपति नशावै॥ षटरस बहुप्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि बखानै।बिन बोले सन्तोष जनित सुख खाइसोइ पै जानै ॥ जब लगि नहीं निज हृदि प्रकाश अरु विषयत्रास मनमाहीं । तुलसिदास तब लगि जगयोनि भ्रमत स्वप्नेहुँ सुख नाहीं ॥ १२४ ॥ जो निज मन परिहरै विकारा । तौ कत द्वैतजनितसंसृति दुख संशय शोक अपारा ॥ शत्रु मित्र मध्यस्थ तीनि ये मन कीन्हे बरियाईं । त्यागब गहब उपेक्षनीय अहि हाटक तृणकी नाईं ॥ अश-न वसन पशु वस्तु विविध विधि सब महिमहँ रह जैसे । स्वर्ग न-रक चर अचर लोकबहु बसत मध्य मन तैसे ॥ विटप मध्य पुत्रि-का सूत्र महँ कंचुक विनाहिं बनाये । मनमहँ तथा लीन नाना तनु-प्रगटत अवसर पाये॥रघुपति भक्तिवारिछालित चित विनु प्रया-

सही सूझै । तुलसिदास कह चिद विलास जग बूझत बूझत बूझै ॥
॥ १२५ ॥ मैं केहि कहौं विपति अति भारी । श्रीरघुवीर
धीर हितकारी ॥ मम हृदय भवन प्रभु तोरा । तहँ बसे आइ
बहु चोरा ॥ अति कठिन करहिं बरजोरा । मानहिं नहिं विनय
निहोरा ॥ तम मोह लोभ अहङ्कारा । मद क्रोध बोध रिपु मारा ॥
अति करहिं उपद्रव नाथा । मर्दहिं मोहिं जान अनाथा ॥ मैं एक
अमित वटपारा ॥ कोउ सुनै न मोर पुकारा ॥ भागेहु नहिं नाथ
उबारा । रघुनायक करहु सँभारा ॥ कह तुलसिदास सुनु रामा ।
लूटहिं तस्कर तव धामा ॥ चिन्ता यह मोहिं अपार । अपयश
नहिं होइ तुम्हार ॥ १२६ ॥ मन मेरे मानहिं शिख मेरी ।
जो निज भक्ति चहै हरि केरी ॥ उर आनहि प्रभु कृत हित जेते ।
सेवहिं ते जे अपनपौ चेते ॥ दुख सुख अरु अपमान बडाई । सब-
सम लेखहिं विपति विहाई ॥ सुनुशठकालग्रासित यहदेही । जानितेहि-
लागि विदूषहिकेही ॥ तुलसिदासविनुअसिमति आये । मिलहिंनराम
कपट लयलाये ॥ १२७ ॥ मैं जानी हरिपदराति नाहीं । स्वप्नेहुँ
नहिं विराग मन माहीं जे ॥ रघुबीरचरण अनुरागे । तिन्ह सब
भोग रोग सम त्यागे ॥ कामभुजङ्ग डसत जब जाही । विषय
नींब कटु लगत न ताही ॥ असमंजस अस हृदय विचारी । बढ़त
शौच नित नूतन भारी ॥ जब कब रामकृपा दुख जाई । तुलसि
दास नहिं आन उपाई ॥ १२८ ॥ सुमिरु सनेह सहित सीता
पति । रामचरण तजि नहिंन आन गति ॥ जप तप तीरथ योग
समाधी । कलि मति विकल न कछु निरुपाधी ॥ करतहुँ सुकृत
न पाप सिराहीं । रक्तबीज जिमि बाढ़त जाहीं ॥ हरणि एक
अघ असुर जालिका । तुलसिदास प्रभु कृपाकालिका ॥ १२९ ॥
रुचिर रसना तू राम राम राम क्यों न रटत । सुमिरत सुख सुकृत
बढ़त अघ अमंगल घटत ॥ बिनु श्रम कलिकलुपजाल कटु कराल
कटत । दिनकरके उदय जैसे तिमिर तोम फटत ॥ योग याग जप विराग
तप सुतीर्थ अटत ॥ बाँधिवे को भवगयन्द रेणुकी रज्जु बटत ॥ परिहरि

सुरमणि सुनाम गुंजा लखि लटत। लालच लघु तेरो लखि तुल-
सि तोहिं हटत ॥ १२० ॥ राम राम राम राम राम राम जपत।
मंगलमुद उदित होत कलिमल छलछपत ॥ कहुके लहे फल
रसाल बबुर बीज बपत। हाराहि जानि जन्म जाय गालगूल गपत ॥
काल कर्म गुण स्वभाव सबके शीश तपत। रामनाम म-
हिमा की चरचा चले जपत॥ साधन विनु सिद्धि सकल विकल
लोग लपत। कलियुग वर बनिज विपुल नाम नगर खपत॥
नाम सों प्रतीत प्रीति हृदय सुथिर थपत। पावन किय रावन
रिपुतुलसिहुसे अपत ॥ १२१॥ पावन प्रेम रामचरणकमल जनम
लाहु परम। रामनाम लेत होत सुलभ सकल धरम ॥ योग मख
विवेक विरति वेद विदित करम। कारिबे कहँ कटु कठोर सुनत
मधुर नरम॥ तुलसी सुनि ज्ञान बूझि भूलहि जनि भरम। तेहि
प्रभु को तू होहि जेहि सबहिं की शरम॥ १२२॥ रामसे प्रीतम
की प्रीतिरहित जीव जाय जियत। जेहि सुख सुख मानि लेत
सुख सो समुझ कियत॥ जहँ तहँ जेहि योनि जनम महि
पताल वियत। तहँ तहँ तू विषय सुखहि चहतलहत नियत ॥ कत
विमोह लट्यो फट्यो गगन मगन सियत। तुलसी प्रभु सुयश
गाइ क्यों न सुधा पियत॥ १२३ ॥ तोसे हौं फिरि फिरि हित
प्रिय पुनीत सत्य वचन कहत। सुनि मन गुणि समुझि क्यों न
सुगम सुगमगहत ॥ छोटो बड़ो खोटो खरो जग जो जहँ रहत।
अपने अपनेको भलो कहहु जो न चहत ॥ विधिलगि लघु-
कीटअवधि सुख सुखीदुखदहत। पशुलौं पशुपालईश बांधत
छोरत नहत ॥ विषय मुद निहार भार शिरको कांधे ज्यों बहत।
योही जियजानि मानि शठ तू सासति सहत॥ पायो केहि घृत विचार
हरिणवारि महत। तुलसी तकु ताहि शरण जाते सब लहत॥१२४॥
तातेहों बार बार देवद्वार परिपुकार करत। आरति नति दीनता कहे
प्रभु संकट हरत ॥ लोकपाल शोक विकल रावण डर डरत। का
सुन सकुचे कृपालु नरशरीर धरत॥ कौशिक मुनि तीय जनक

शोच अनत जरत। साधन केहि शीतल भये सो न समुझि परत॥ केवट खग शबरि सहज चरण कमल नरत। सम्मुख तोहिं होन नाथ कुतरु सुफल फरत॥ बंधुवैर कपि विभीषण गुरुमलाति गरत। सेवा केहि रीझि राम किये सरिस भरत॥ सेवक भयो पवनपूत साहब अनुहरत। ताको लिये रामनाम सबको सुढर ढरत॥ जाने विनु राम रीति पचि पचि जग मरत। परिहरि छल शरण गये तुलसिहु से तरत॥ १२९॥

राग सूहो बिलावल।

राम सनेही सो तैं न सनेही कियो। अगम जो अमरनिहूं सो तनु तोहिं दियो॥

छंद।

दियो सुकलजन्म शरीर सुंदर हेतु जो फल चार को। जो पाइ पंडित परमपद पावत पुरारि मुरारि को॥ यह भरतखण्ड समीप सुरसरि थल भलो संगति भली। तेरी कुमति कायर कल्पवल्ली चहति है विष फल फली॥ १॥ अजहूं समुझि चित्तदै सुनो परमारथ। है हित सो जगहूं जाहिते स्वारथ॥ स्वारथहि प्रिय स्वारथ सो कातैं कौन वेद बखानई। देखु खल अहिखेल परिहरि सो प्रभुहि पहिचानई॥ पितु मातु गुरु स्वामी अपनपौ तिय तनय सेवक सखा। प्रिय लगत जाके प्रेम सों विनहेत हित नहीं तैंलखा॥ २॥ दूरि न सो हितू हेरहियेही है। छलहिछाँडि सुमिरे छोह किये ही है॥ किये छोह छाया कमल करकी भक्त पर भजतेहि भजै। जगदीशजीवन जीवको जो साज सब सबको सजै॥ हरिहि हरिता विधिहि विधिता शिवहिशिवता जो दई। सोइ जानकीपति मधुर मूरति मोदमयमंगलमई॥ ३॥ ठाकुर अति बडो शील सरल सुठि॥ ध्यान अगम शिवहूं भेंट्यो केवट उठि॥ भरि अंकभेट्यो सजलनयनसनेह सिथिल शरीरसों। सुर सिद्ध मुनि कवि कहत कोउ न प्रेमप्रियरघुवीर सों॥ खग शबरि निशिचर भालु कपि किए आपुते वन्दित बड़े। तापर। तिन्हकि सेवा

सुमिरि जिय जात जनु सकुचनि गड़े ॥ ४ ॥ स्वामीको स्वभाव कह्यो सो जब उर आनिहैं । शोच सकल मिटिहैं राम भलो मंनमानिहैं ॥ भलो मानिहैं रघुनाथ जोरि जो हाथ माथो नाइहैं । तत्काल तुलसीदास जीवन जन्म को फल पाइहैं ॥ जपिनाम करहि प्रणाम कहि गुणग्राम रामहिं धरि हिये । विचरहि अवनि अवनीश चरणसरोजमनमधुकर किये॥ १३६॥ जिय जबते हरिते बिलगान्यो॥ तबते देह गेह निज जान्यो ॥ मायावश स्वरूप बिसरायो । तेहि भ्रमते दारुणदुख पायो ॥ पायो जो दारुण दुसह दुख सुख लेश स्वप्नेहुँ नहीं मिल्यौ । भवशूल शोक अनेक जेहि तेहि पंथ तू हठि हारि चल्यौ ॥ बहुयोनि जन्म जरा विपति मतिमन्द हरि जान्यो नहीं । श्रीरामबिनु विश्राम मूढ़ विचार लखि पायो कहीं ॥ १ आनँदसिंधु मध्य तव वासा । बिनुजाने कस मरसि पियासा॥ मृगभ्रम वारि सत्य जियजानी । तहँ तू मगन भयो सुख मानी ॥ तहँ मगन मज्जसि पानकरि त्रयकाल जलनाहीं जहाँ। निज सहज अनुभवरूप तू खल भूलि अब आयो तहाँ ॥ निर्मल निरंजन निर्विकार उदार सुखतैं परिहरचो ॥ निःकाज राज विहाय नृप इव स्वप्नकारागृह परचो॥ २ ॥ तैं निज कर्मडोरि दृढ़ कीन्ही । अपने करनि गाँठि गहि दीन्ही ॥ ताते परवश परचो अभागे । ताफल गर्भवास दुख आगे । आगे अनेक समूह संसृति उदरगत जान्यो सोऊ । शिरहेठ ऊपर चरण सङ्कट बात नहिं पूछै कोऊ ॥ शोणित पुरिष जो मूत्र मल कृमि कर्दमावृत सेवही ॥ कोमलशरीर गँभीर वेदन शीशधुनि धुनि रोवही ॥ ३ ॥ तू निज कर्मजाल जहँ घेरो । श्रीहरि संग तजों नहिं तेरो ॥ बहुविधि प्रतिपालन प्रभुकीन्हों। परमकृपालु ज्ञान तोहिं दीन्हो ॥ तोहिं दियो ज्ञान विवेक जन्म अनेककी तब सुधि भई । ताहि ईशकी हौं शरण जाकी विषम माया गुण मई॥ जेहि किये जीव निकाय वश रसहीन दिन दिन अति नई ॥ सो करौ वेगि सँभार श्रीपति

विपति महँ जेहिमति दई ॥ ४ ॥ पुनि बहुविधि गलानि जिय मानी। अब जग जाइ भजों चक्रपानी॥ऐसहिकरि विचार चुपसाधी । प्रसव पवन प्रेरेउ अपराधी ॥ प्रेरयो जो परमप्रचण्ड मारुत कष्ट नाना तैं सह्यो । सो ज्ञान ध्यान विराग अनुभव यातना पावक दह्यो॥ अति खेदव्याकुल अलपबल छिन एक बोलि न आवई । तब तीव्र कष्ट न जान कोउसब लोग हर्षित गावई॥ ५ ॥बाल दशा जेते दुख पाये। अतिअनीश नहिं जाहिं गनाये ॥ क्षुधा व्याधि बाधा भइ भारी। वेदन नहिं जानै महतारी ॥ जननी न जानै पीर सो केहि हेतु शिशु रोदन करै । सोइ करै विविध उपाय जाते अधिक तुव छाती जरै ॥ कौमारशैशव अरु किशोर अपार अघ को कहि सकैव्यतिरेक तोहि निर्दय महाखल आन कहु को सहि सकै॥ ६ ॥ यौवन युवती संग रंग रात्यो। तब तू महा मोहमद मात्यो ॥ ताते तजी धर्म मर्यादा। बिसरे तब सब प्रथम विषादा ॥ बिसरे विषाद निका-य संकट समुझि नहिं फाटत हियो । फिरि गर्भगत आवर्त्त संसृ-ति चक्र जेहि होइ सोइ कियो ॥ कृमि भस्म विट परिणाम तनु तेहि लागि जगु वैरी भयो। परदार परधन द्रोहपर संसार बाढ़ै नितनयो ॥ ७ ॥ देखतही आई विरुधाई। जो तैं स्वप्नेहुँ नाहिं बुलाई ॥ ताके गुण कछु कहे न जाहीं । सो अब प्रगट देखु जग माहीं ॥ सो प्रगट तनु जर्ज्जर जरावश व्याधि शूल सतावई। शिरकम्प इन्द्रियशक्ति प्रतिहत वचन काहु न भावई ॥ गृहपालहू ते अति निरादर खान पान न पावई । ऐसिहु दशा न विराग तहँ तृष्णा तरंग बढ़ावई ॥ ८ ॥ कहि को सकै महाभव तेरे। जन्म एक के कछुक गनेरे ॥ खानि चारि सन्तत अवगाही । अजहुँ न करु विचार मनमाही ॥ अजहूं विचार विकार तजि भजुराम जनसुखदायकं । भवसिंधुदुस्तरज लरथं भजु चक्रधर सुरनायकं ॥ विनुहेतु करुणाकर उदार अपार मायातारनं कैवल्यपति ॥ जगपपि रमापति प्राण पति गतिकारणं ॥ ९ ॥ रघुपति भक्ति सुलभ सुखकारी।

सोत्रयताप शोकभयहारी ॥ बिनु सतसंग भक्ति नहिं होई। ते तब मिलैं द्रवै जब सोई ॥ जब द्रवै दीनदयालु राघव साधु संगति पाइये। जेहि दरश परश समागमादिक पापराशि नशाइये ॥ जिन्हके मिले सुख दुख समान अमानतादिक गुण भये। मद मोह लोभ विषाद क्रोध सुबोधते सहजहि गये ॥ १० ॥ सेवत साधु द्वैत भय भागै। श्रीरघुवीर चरणलय लागै ॥ देहजनित विकार सब त्यागै। तब फिरि निजस्वरूप अनुरागै ॥ अनुरागसों निजरूप जो जगते विलक्षण देखिये। संतोष सम शीतल सदा दम देहवंत न लेखिये ॥ निर्मल निरामय एकरस तेहि हर्ष शोक न व्यापई। त्रैलोक्यपावन सो सदा जाकी दशा ऐसी भई ॥ ११ ॥ जो तेहि पंथ चलै मन लाई। तौ हरि काहे न होइँ सहाई ॥ जो मारग श्रुति साधु दिखावै। तेहि पथ चलत सबै सुख पावै ॥ पावै सदासुख हरिकृपा संसार आशा तजि रहै। स्वप्नेहुँ नहीं दुख देत दरशन बात कोटिक को कहै ॥ द्विज देव गुरुहरिसंतबिनु संसार पार न पावई। यह जानि तुलसीदास त्रासहरं रमापति गावई ॥ १२ ॥ १३७ ॥

राग बिलावल।

जोपै कृपा रघुपति कृपालुकी वैर औरके कहा सरै। होइन बांको बार भक्त को जो कोउ कोटि उपाय करै ॥ तकै नीचजो मीच साधु की सोइ पामर तेहि मीच मरै। वेदविदित प्रह्लादकथा सुनि को न भक्तिपथ पाउँ धरै ॥ गज उधारि हरि थप्यो विभीषण ध्रुव अविचल कबहूं न टरै ॥ अंबरीषकी शाप सुरति करि अजहुँ महामुनि ग्लानि गरै। सो धौं कहा जु न कियो सुयोधन अबुध आपने मान जरै ॥ प्रभुप्रसाद सौभाग्य विजययश पांडव ने वरिआइ वरै। जो जो कूप खनैगो परकहँ सो शठ फिरि तेहि कूप परै। स्वप्नेहुँ सुख न सन्तद्रोही कहँ सुरतरु सोउ विष फरनिफरै ॥ हैं काके द्वै शीश ईशके जो हठिजनकी सीम चरै ॥ तुलसिदास रघुवीर बाहुबल सदा अभय काहू न डरै ॥ १३८ ॥

कबहुं सो करसरोज रघुनायक धरिहौ नाथ शीश मेरे । जेहि कर अभय किये जन आरत बारक विवश नाम टेरे ॥ जेहिकर कमल कठोर शंभुधनु भंजि जनक संशय मेट्यो । जेहि करकमल उठाय बंधु ज्यों परम प्रीति केवट भेट्यो ॥ जेहिकर कमल कृपालु गीधकहँ उदकदेइ निज लोक दियो । जेहि कर वालि विदारि दासहित कपिकुलपति सुग्रीव कियो ॥ आयो शरण सभीत विभीषण जेहि करकमल तिलक दीन्हों । जेहि कर गहि शर चाप असुरहति अभयदान देवन्ह दीन्हों ॥ शीतल सुखद छाँह जेहि करकी मेटति पाप ताप माया । निशि वासर तेहि करसरोजकी चाहत तुलसिदास छाया ॥ १३९ ॥ दीनदयालु दुरित दारिद दुख दुनी दुसह तिहुँताप तई है ॥ देव दुआर पुकारत आरत सबकी सब सुखहानि भई है ॥ प्रभुके वचन वेदबुधसम्मत ममम्रति महिदेवमई है ॥ तिन्हकी मति रिस राग मोह मद लोभ लालची लीलि लई है ॥ राज समाज कुसाज कोटि कटु कलपत कलुप कुचाल नई है । नीति प्रतीति प्रीति परमिति पति हेतु वाद हठि हेरि हई है । आश्रम वर्ण धर्म विरहित जग लोक वेद मर्याद गई है ॥ प्रजापातित पाखण्ड पापरत अपने अपने रंग रई है ॥ शांतिसत्य शुभरीति गई घटि बढ़ी कुरीति कपट कलई है । सीदत साधु साधुता शोचति खल विलसति हुलसति खलई है ॥ परमारथ स्वारथ साधनभये अफल सकल नहिं सिद्धि सईहै । कामधेनु धरणी कलि गोमर विवश विकल जामति न वईहै ॥ कलि करणी वरणिये कहाँलों करत फिरत विनु टहल टईहै । तापर दाँत पीसि कर मींजत को जाने चित कहा ठईहै ॥ त्यों त्यों बोझ चढ़त शिर ऊपर ज्यों ज्यों शीलवश ढीलदईहै । सरुप वराजि तराजिये तरजनी कुम्हिलैहै कुम्हड़ेकी जई है ॥ दीजै दादि देखि नातो वालि मही मोद मंगल रितईहै । मेरे भाग अनुराग लोग कहैं राम अवधि चितवनि चितईहै ॥ विनती सुनिसानन्दहेरि हँसिकरुणावारि-

भूमिभिजई है ॥ रामराज भयो काज शकुन शुभ राजा राम जगत विजईहै ॥ समरथ बड़ो सुजान सुसाहब सुकृत सैन हारत जितई है॥ सुजन स्वभाव सराहत सादर अनायास साँशाति वितईहै ॥ उथपे थपन उजारि बसावन गई बहोरि विरद सदईहै । तुलसी प्रभु आरत आरति हर अभय बाँह केहि केहि न दई है॥१४०॥ ते नर नरकरूप जीवत जग भवभञ्जन पदविमुख अभागी । निशिवासर रुचि पाप अशुचिमन खलमति मलिन निगमपथत्यागी ॥ नहिं सतसंग भजन नहिं हरिको श्रवणन राम कथा अनुरागी । सुत वित दार भवन ममता निशि सोवत अति न कबहुँ मति जागी ॥ तुलसि दास हरिनाम सुधा तजि शठ हठि पियत विषय विष माँगी । सूकर श्वान शृगाल सरिस जन जन्मत जगत जननिदुख लागी ॥ १४१ ॥ रामचन्द्र रघुनायक तुम सों हो विनती केहि भाँति करों । अघ अनेक अवलोकि आपने अनघ नाम अनुमानि डरों ॥ परदुखदुखी सुखी परसुख ते सन्त-शील नहिं हृदय धरों । देखि आनकी विपाति परमसुख सुनि सम्पति विनु आगि जरों॥भक्ति विराग ज्ञान साधन कहि बहुविधि डहँकत लोक फिरों । शिव सरबस सुखधाम नाम तव बेंचि नरकप्रद उदर भरों ॥ जानत हूं निज पाप जलधि जिय जल सीकरसम सुनत लरों । रजसम पर अवगुण सुमेरु करि गुण गिरि सम रजते निदरों । नाना वेष बनाइ दिवस निशि पर-वित जेहि तेहि जुगति हरों । एको पल न कबहुँ अलोल चित हित दै पदसरोज सुमिरों ॥ जो आचरण विचारहु मेरो कल्प कोटि लगि औटि मरों । तुलसिदास प्रभुकृपा विलोकनि गोपद ज्यों भवसिंधु तरों ॥ १४२ ॥ सकुचत हौं अति राम कृपानि-धि क्योंकरि विनय सुनावों ॥ सकल धर्म विपरीत करत केहि भाँति नाथ मनभावों॥ जानत हूँ हरि रूप चराचर मैं हठि नय-न न लावों । अंजन केश शिखा युवती तहँ लोचन शलभ पठावों ॥ श्रवणान्हिको फल कथातिहारी यहसमुझों समुझावों । तिन्हश्रवणान्हि परदोषनिरन्तर सुनिसुनि भरिभरितावों ॥ जेहिरसनागुणगाइ तिहारे

विनु प्रयास सुख पावों। तेहि मुख पर अपवाद भेक ज्योंराटि राटि जन्म नशावों॥ करहु हृदय अति विमल बसहिं हरि कहि कहि सबहिं शिखावों। हौं निज उर अभिमान मोह मद खलमण्डली बसावों॥ जो तनु धारि हरिपद साधहिं जन सो विनु काज गँवावों। हाटकघट भरि धरचो सुधागृह तजि नभ कूप खनावों॥ मन क्रम वचन लाइ कीन्हे अघ ते कारि यतन दुरावों। पर प्रेरित ईर्षा वश कबहुँक कियो कछु शुभ सो जनावों॥ विप्रद्रोह जनु बाँट परचो हठि सबसों वैर बढ़ावों। ताहू पर निजमति विलास सब सन्तन माँझगनावों॥ निगम शेष शारद निहोरि जो अपने दोष कहावों। तौ न सिराहिं कल्पशत लगि प्रभु कहा एक मुख गावों॥जो करणी अपनी विचारौं तौ कि शरण हौं आवों। मृदुल स्वभाव शील रघुपति को सो बल मनहिं दिखावों॥ तुलसिदास प्रभु सो गुण नहीं जेहि स्वप्नेहुँ तुमहिं रिझावों। नाथ कृपा भवसिंधु धेनुपद सम जो जानि सिरावों॥ १४३॥ सुनहु राम रघुवीर गुसांई मन अनीतिरत मेरो। चरणसरोज बिसारि तिहारे निशिदिन फिरत अनेरो॥ मानत नाहिं निगम अनुशासन त्रास न काहू केरो। भूल्यो शूल कर्म कोलुन्ह तिल ज्यों बहु बारनि पेरो॥ जहँ सत्संग कथा माधव की स्वप्नेहुँ करत न फेरो। लोभ मोह मद काम क्रोधरत तिन्ह सों प्रेम घनेरो॥ परगुण सुनत दाह परदूषण सुनत हर्ष बहुतेरो। आप पापको नगर बसावत सहि न सकत परखेरो॥ साधन फल श्रुति सार नाम तव भव सरिता कहँ बेरो। सो परकर काकिनी लागि शठ बेंचि होत हठि चेरो॥ कबहुँकहौं संगति स्वभाव ते जाउँ सुमारग नेरो। तब करि क्रोध संग कुमनोरथ देत कठिन भट भेरो॥ इक हौं दीन मलीन हीनमति विपति जाल अति घेरो। तापर सही नजाइ करुणानिधि मनको दुसह दरेरो॥ हारि परचों करियत्न बहुत विधि ताते कहत सवेरो। तुलसिदास यह त्रास मिटै जब हृदय करहु तुम डेरो॥ १४४॥ सो धों को जो नाम लाजते नहीं राख्यो रघुवीर। कारुणीक

बिनु कारणही हरिहरी सकल भवभीर ॥ वेदविदित जगविदित अजामिल विप्रबन्धु अघधामा । घोर यमालय जात निवारयो सुत हित सुमिरतनामा ॥ पशु पाँवर अभिमान सिंधु गज ग्रस्यो आइ जब ग्राह । सुमिरत सुकृत सपदि आये प्रभु हरयो दुसह उर दाह ॥ व्याध निषाद गृध्र गणिकादिक अगणित अवगुणमूल । नाम ओटते राम सबनिकी दूरि करी सब शूल ॥ केहि आचरण घाटिहौ तिन्हते रघुकुलभूषण भूप । सीदत तुलसिदास निशि बासर परयो भीमतमकूप ॥ १४५ ॥ कृपासिंधु जनदीनदुवारे दादि न पावत काहे । जब जहँ तुमहिं पुकारत आरत तब तिन्हके दुख दाहे ॥ गज प्रह्लाद पांडुसुत कपि सबके रिपु संकट मेटयो । प्रणत बन्धुभय विकल विभीषण उठि सो भरत ज्यों भेटयो ॥ मैं तुम्हरे लै नाम ग्राम एक उर आपने बसावों । भजन विवेक विराग लोगभले क्रम क्रम करि ल्यावों ॥ सुनि रिसभरे कुटिल कामादिक करहिं जोर बरिआई । तिन्हहिं उजारि नारि अरि धन पुर राखहिं रमा गुसांई ॥ सम सेवा छल दान दंड हौं रचि उपाय पचिहारयो । बिनु कारणके कलह बड़ो दुख प्रभु सों प्रगटि पुकारयो ॥ सुरस्वारथी अनीशअलायकनिठुरदयाचित-नाहीं । जाउँ कहाँ को विपति निवारक भवतारक जगमाहीं ॥ तुलसी यदपि पोच तौ तुम्हरो और न काहू केरो । दीजै भक्ति बाँह बेरक ज्यों सुवस बसै अब खेरो ॥ १४६ ॥ हौं सब विधि राम रावरो चाहत भयो चेरो । ठौर ठौर साहवी होत है ख्याल काल कलि केरो ॥ काल कर्म इन्द्रिय विषय गाहक गण घेरो । हौं न कबूलत बाँधिकै मोल करत करेरो ॥ बंदि छोर तेरो नाम है विरुदैत बड़ेरो । मैं कह्यो तब छल प्रीति कै मांगे उर डेरो ॥ नाम ओट अबलगि बच्यों मलयुग जग जेरो । अब गरीबजन पोषिये पाइबो न हेरो ॥ जेहि कौतुक बक श्वानको प्रभु न्याय निबेरो । तेहि कौतुक कहिये कृपालु तुलसी है मेरो ॥ १४७ ॥ कृपासिंधु ताते रहौं निशि दिन मनमारे । महाराज लाज आपुहि

निज जाँघ उघारे॥ मिल्यो रहैं मारचो चहैं कामादि संघाती। मो बिनु रहैं न मेरि ये जारैं छल छाती॥ बसतहिये हित जानि मैं सबकी रुचि पाली। कियो कथिकको दंड हौं जड़कर्मकुचाली॥ देखी सुनी न आजुलौं अपनायत ऐसी। करहिं सबै शिर मेरहीं फिरि परै अनैसी॥ बड़े अलेखी लखिपेर परिहरे न जाहीं॥ असमंजस में मगन हौं लीजै गहि बाहीं॥ वारक बलि अवलोकिये कौतुक जन जीको। अनायास मिटि जाइगो संकट तुलसीको॥ ॥ १४८ ॥ कहौं कौनमुँह लाइकै रघुवीर गुसांई। सकुचत समुझत आपनी सब सांइ दोहाई॥ सेवत वश सुमिरतसखाशरणागत सोहौं। गुणगण सीतानाथके चित करत न हो हौं॥ कृपासिंधु बंधुदीनके आरत हितकारी। प्रणतपालविरुदावली सुनिजानि बिसारी॥ सेइ न धेइ नसुमिरिकेपदप्रीति सुधारी। पाइ सुसाहिब राम सों भरिपेट बिगारी॥ नाथगरीबनिवाज हैं मैं गही गरीबी। तुलसी प्रभु निज औरते बनि परै सों कीबी॥ १४९॥ कहाँ जाउँ कासों कहौं और ठौर न मेरे। जन्म गवायों तेरेही-द्वार किंकर तेरे॥ मैं तो बिगारी नाथ सों आरतिके लीन्हे। तोहिं कृपा निधि क्यों बनै मेरीसी कीन्हे॥ दिन दुरदिन दिन दुर्दशा दिनदुखदिन दूषण। जबलौं तू न विलोकि है रघुवंशविभूषण॥ दई पीठ विनु डीठ मैं तुम विश्वविलोचन। तोसों तुहीं न-दूसरो नत शोचविमोचन॥ पराधीन देवदीन हौं स्वाधीन गुसांई। बोलनिहारे सों करै बलि विनय कि झांई॥ आपु देखि मोहिं देखिये जन मानिय साँचो। बड़ी ओट राम नामकी जेहि लयो सो बाँचो॥ रहनि रीतिरामरावरी नित हिय हुलसी-है। ज्यों भावै त्यों करु कृपा तेरो तुलसी है॥ १५०॥ रामभद्र मोहिं आपनो शोच है अरु नाहीं। जीव सकल संतापके भाजन जगमाहीं॥ नातो बड़े समर्थ सों एक और किधो हूं। तोको मोसे अति घने मोको इक तो हूं॥ बड़ि गलानि हानि है हिये सर्वज्ञ गुसांई। कूर कुसेवक कहत हौं सेवककी नाँई॥ भलो पोच रामकोकहै मोहिं सब

नर नारी। बिगरे सेवक श्वान ज्यों साहब शिर गारी ॥ असमंजस मनको मिटै सो उपाय न सूझै । दीनबंधु कीजै सोई बनिपरै जो बूझै ॥ विरुदावली बिलोकिये तिन्ह में कोई होहौं । तुलसी प्रभुको परिहरचो शरणागत सोहौं ॥ १५१ ॥ जो पै चेराई रामकी करतो न लजातो। तौ तू दास कुदाम ज्यों कर कर न बिकातो ॥ जपत जीह रघुनाथको नाम नहिं अलसातो। बाजीगरके सूम ज्यों खल खेह नखातो ॥ जो तू मन मेरे कहे राम नाम कमातो। सीतापति सम्मुख सुखी सब ठाँव समातो ॥ राम सुहाते तोहि जो तू सबहिं सोहातो। काल कर्म कुल कारनी कोऊ न कोहातो ॥ रामनाम अनुरागही जिय जो रति आतो । स्वारथ परमारथ पथी तोहिं सब पतिआतो। सेइसाधुसुनिसमुझिकैपरपीर पिरातो। जन्मकोटिको काँदलो हृद हृदय थिरातो । भवमगअगमअनन्त है विनुश्रमहि सिरातो।महिमा उलटे नामको मुनि कियो किरातो ॥ अमर अगमतनुपाइसो जड़जायनजातो । होतो मंगल मूल तू अनुकूल विधातो ॥ जो मन प्रीति प्रतीति सों राम नामहि रातो ॥ तुलसी रामप्रसाद सो तिहुँ ताप न तातो ॥ १५२ ॥ राम भलाई आपनी भल कियो न काको । युग युग जानकीनाथ जग जागत साको ॥ ब्रह्मादिक विनती करी कहि दुख वसुधा को। रविकुलकैरवचन्द भो आनन्द सुधा को ॥ कौशिक गरत तुषार ज्यों तकि तेज तिया को। प्रभु अनहित हितको दियो फल कोप कृपा को ॥ हरचो पाप आप जाइकै सन्ताप शिलाको । शोचमगन काढ़्यो सही साहब मिथिलाको ॥ रोषराशि भृगुपति धनी अहमिति ममता को । चितवत भाजन कर लियो उपसम समता को । मुदित मानि आयसु चले वन मातु पिताको ॥ धर्मधुरन्धर धीर धुर गुण शीलजिता को ॥ गुह गरीब गत ज्ञातिहू जेहि जिउ न भखा को। पायो पावन प्रेमते सन्मान सखाको ॥ सद्गति शबरी गिद्धकी सादर कर ताको । शोचसींव सुग्रीवके संकटहरताको ॥ राखि बिभीषणको सकै तेहि काल कहा को। आज

विराजतराजहो दशकण्ठ जहां को । वालिसवासी औधके बूझिय नखाको ॥ ते पाँवर पहुँचे तहाँ जहँ मुनि मन थाको । गति न लहै रामनाम सों विधि सों शिरजाको। सुमिरत कहत प्रचारिकै वल्लभ गिरिजा को ॥ अकानि अजामिलकी कथा सानन्द नभाको ॥ नाम लेत कलिकालहूं हरिपुरहि नगाको ॥ रामनाम महिमाकरै काम भूरुह आको ॥ साक्षी वेद पुराण है तुलसीतन ताको ॥ १९३ ॥ मेरे रावरीये गति है रघुपति बलि जाउँ ॥ निलज नीच निर्धन निर्गुण कहँ जग दूसरो न ठाकुर ठाउँ ॥ हैं घर घर भव भरे सुसाहिब सूझत सबनि आपनो दाउँ । वानर बंधु विभीषण हित विन कोशलपाल कहूं न समाउँ ॥ प्रणतारातिभंजन जनरंजन शरणागत पविपंजर नाउँ। कीजै दास दास तुलसी अब कृपासिंधु विनु मोल बिकाउँ ॥ १९४ ॥ देव दूसरो कौन दीनको दयाल । शीलनिधान सुजान शिरोमणि शरणागत प्रिय प्रणतपाल ॥ को समर्थ सर्वज्ञ सकल प्रभु शिव सनेह मानस मराल।को साहब किये मीत प्रीतिवश खग निशिचर कपि भील भाल ॥ नाथ हाथ माया प्रपञ्च सब जीव दोष गुण कर्म काल । तुलसिदास भलो पोच रावरो नेकु निरखि कीजिये निहाल ॥ १९५ ॥

राग सारंग ।

विश्वास एक राम नामको । मानत नहीं प्रतीति अनत ऐसोई स्वभाव मन वाम को ॥ पढ़िबो परयो न छठी छमत ऋग यजुर अथर्वण साम को ॥ व्रत तीरथ तप सुनि सहमत पचि मरै करै तन छाम को॥कर्मजाल कलिकाल कठिन आधीन सुसाधित दाम को ॥ ज्ञान विराग योग जप तप भय लोभ मोह कोह काम को ॥ सब दिन सब लायक भव गायक रघुनायक गुणग्राम को । वैठे नाम काम तरुतर डर कौन घोर वन घाम को ॥ को जानै को जैहै यमपुर को सुरपुर परधाम को । तुलसिहि वहुत भलो लागत जग जीवन रामगुलाम को ॥ १९६ ॥ कलि नाम कामतरु राम को । दलनिहार दारिद दुकाल दुख दोष घोर वन घाम को ॥ नाम

लेत दाहिनो होत मन वाम विधाता वामको । कहत मुनीश महेश महातम उलटे सूधे नाम को ॥ भलो लोक परलोक तासु जाके बल ललित ललाम को । तुलसी जग जानियत नाम ते शोच न कूच मुकामको ॥ १५७ ॥ सेइये सुसाहब राम सो । सुखद सुशील सुजान शूर शुचि सुन्दर कोटिक काम सो ॥ शारद शेष साधु महिमा कहैं गुण गण गायक साम सो । सुमिरि सप्रेम नाम जासों रति चाहत चन्द्र ललाम सो ॥ गमन विदेश न लेश कलेश को सकुचत सकृत प्रणाम सो । साखी ताको विदित विभीषण बैठो है अविचल धाम सो ॥ टहल सहज जन महल महल जागत चारों युगयाम सो । देखत दोष न खीझत रीझत सुनि सेवक गुणग्राम सो ॥ जाके भजे तिलोक तिलक भये त्रिजग योनि तनु ताम सो । तुलसी ऐसे प्रभुहि भजे जो न ताहि विधाता बाम सो ॥ १५८ ॥

राग नट ।

कैसे देउँ नाथहि खोरि । काम लोलुप भ्रमत मन हरिभक्ति परिहरि तोरि ॥ बहुत प्रीति पुजाइबे पर पूजिबे पर थोरि । देत शिष शिखयो न मानै मूढ़ता असि मोरि ॥ किये सहित सनेह जे अघ हृदय राखै चोरि । संग वशकिये शुभ सुनाये सकल लोक निहोरि ॥ करों जो कछु धरों सचि पचि सुकृत शिला बटोरि । पैठि उर वरवश दयानिधि दम्भ लेत अजोरि ॥ लोभ मनहिं नचाव कपि ज्यों गरे आशा डोरि । बात कहौं बनाइ बुधज्यों वरविराग निचोरि ॥ एतेहुँ पर तुम्हरो कहावत लाज अँचई घोरि । निलजता पर रीझि रघुवर देह तुलसिहिं छोरि ॥ १५९ ॥ है प्रभु मेरोई सब दोषु । शीलसिंधु कृपालु नाथ अनाथ आरतपोषु ॥ वेष वचन विराग मन अघ अवगुणनिको कोषु । राम प्रीति प्रतीति पोलो कपट करतब ठोषु ॥ राग रंग कुसंगही सो साधु संगति रोषु । चहत केहरि यशहि सेइ शृगाल ज्यों खरगोसु ॥ शंभु शिखवन रसनहूं नित रामनामहिं घोषु । दम्भहूं कलिनाम कुम्भज शोच सा-

गरसोषु ॥ मोद मंगल मूल अति अनुकूलनिज निरयोषु । राम नाम प्रभाव सुनि तुलसिंहुँ परम सन्तोषु ॥ १६० ॥ मैं हरि पतितपावन सुने । मैं पतित तुम पतितपावन दोउ बानक बने ॥ व्याध गणिका गज अजामिल साखि निगमानि भने । और अधम अनेक तारे जात काँपै गने ॥ जानि नाम अजानि लीन्हे नरक यमपुर मने । दासतुलसी शरण आयो राखिये अपने ॥ १६१ ॥

राग मलार।

तोसों प्रभु जोपै कहुँ कोउ होतो । तौ सहि निपट निरादर निशि दिन रटि लटि ऐसोघटि कोतो ॥ कृपासुधा जलदानि माँगिवो कहो सो साँच निसोतो । स्वाति सनेह सलिल सुख चाहत चित चातक को पोतो ॥ काल कर्म वश मन कुमनोरथ कबहुँ कबहुँ कछु भोतो । ज्यों मुदमय बासि मीन वारि तजि उछरी भभरि लेत गोतो ॥ जितो दुराउ दास तुलसी उर क्यों कहि आवत ओतो । तेरे राज राय दशरथके लयो बयो बिनु जोतो ॥ १६२ ॥

राग सोरठ।

ऐसो को उदार जगमाहीं । विनु सेवा जो द्रवै दीनपर रामस-रिस कोउ नाहीं । जो गति योग विराग यत्नकरि नहिं पावत मुनि ज्ञानी । सो गति देत गिद्ध शबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी ॥ जो सम्पति दशशीश अर्पि करि रावण शिव पहँ लीन्ही । सो सम्पदा विभीषण कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्ही ॥ तुलसिदा-स सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो । तौ भजु राम काम सब पूरण करैं कृपानिधि तेरो ॥ १६३ ॥ एकै दानि शिरो-मणि साँचो । जिहिं यांच्यो सो याचकतावश फिरि बहुनाच न नाचो ॥ सब स्वारथी असुर सुर नर मुनि कोउ न देत विनु पाये । कोशलपाल कृपालु कल्पतरु द्रवत सकृत शिरनाये ॥ हरिहुँ और अवतार आपने राखी वेद बड़ाई । लै चिउरा निधि दई सुदामहिं यद्यपि बाल मिताई ॥ कपि शबरी सुग्रीव विभीषण को नहिं कियो अयाची । अब तुलसिहि दुख देति दयानिधि दारु

ण आश पिशाची ॥ १६४ ॥ जानत प्रीति रीति रघुराई । नाते सब हाते करि राखत रामसनेह सगाई ॥ नेह निबाहि देह तजि दशरथ कीरति अचल चलाई । ऐसेहुँ पितु ते अधिक गीध पर ममता गुण गरुआई ॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणप्रिया बिसराई । रण पर्यो बंधु विभीषणहीको शोच हृदय अधिकाई ॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भइ जब जहँ पहुनाई । तव तहँ कहि शबरीके फलनिकी रुचि माधुरी न पाई ॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुचि शिरनाई । केवट मीत कहे सुख मानत वानर बंधु बड़ाई ॥ प्रेमकनौडौ राम सों प्रभु त्रिभुवन तिहुँकाल न भाई । ऋणी तोर हौं कह्यो कपिसों ऐसी मानिहि को सेवकाई ॥ तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई । तौ तोहिं जन्मि जाय जननी जड तनु तरुणतागवाँई ॥ १६५ ॥ रघुवर रावरि यहै बडाई । निदरिगनी आदरगरीब पर करत कृपाअधिकाई थके देव साधन अनेक करि स्वप्नेहुँ नाहिं देतादिखाई । केवट कुटिल भालु कपिको नृप कियो सकुल सँग भाई ॥ मिलि मुनिवृन्द फिरत दण्डकवन सो चरचौ न चलाई । बारहिं बार गृध्र शबरीकी वर्णत प्रीति सुहाई ॥ श्वान कहेते किये पुर बाहर यती गयन्द चढ़ाई तियनिन्दक मतिमन्द प्रजा रज निज नय नगर बसाई ॥ यह दरबार दीनको आदर रीति सदा चलि आई। दीनदयालु दीन तुलसीकी काहु न सुरति कराई ॥ १६६ ॥ ऐसे राम दीनहित कारी । अतिकोमल करुणानिधान विन कारण परउपकारी ॥ साधन हीन दीन निज अघ, वश शिला भई मुनिनारी॥ गृहते गवनि परशि पद पावन घोर शापते तारी॥ हिंसारत निषाद तामस वपु पशु समान वनचारी । भेंट्यो हृदय लगाइ प्रेमवश नाहिं कुल जाति विचारी ॥ यद्यपि द्रोह कियो सुरपतिसुत कहि न जाइ अति भारी। सकललोक अवलोकि शोकहत शरणयगे भय टारी॥ विहँगयोनि आमिप अहारपर गीध कौन व्रतधारी जनकसमान किया ताकी निज कर सब भाँति सँवारी ॥ अधमजाति

शबरी योषित शठलोक वेद ते न्यारी। जानि प्रीति दै दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी॥ कपि सुग्रीव बंधुभय व्याकुल आयो शरण पुकारी। सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो वालि सहि गारी॥ रिपुको अनुज विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी। शरण गये आगे है लीन्हों भेंट्यो भुजा पसारी॥ अशुभ होइ जिनके सुमिरे ते वानर ऋच्छ विकारी। वेदविदित पावन कियेते सब महिमा नाथ तुम्हारी॥ कहँ लगि कहों दीन अगणित जिन्ह की तुम विपति निवारी। कलिमलग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी॥१६७॥ रघुपति भक्ति करत कठिनाई। कहत सुगम करणी अपार जाने सोइ जेहि बनिआई॥ जो जेहि कला कुशल ताकहँ सोइ सुलभ सदा सुखकारी। सफरी सम्मुख जल प्रवाह सुरसरी बहे गज भारी॥ ज्यों शर्करा मिलै सिकतामहँ बलते न कोउ बिलगावै। अति रसज्ञ सूक्षम पिपीलिका विनुप्रयासही पावै॥ सकल दृश्य निज उदर मेलि सोवै निद्रा तजि योगी। सोइ हरिपद अनुभवै परमसुख अतिशय द्वैत वियोगी॥ शोक मोह भय हर्ष दिवस निशि देश काल तहँ नाहीं। तुलसिदास यहि दशाहीन संशय निर्मूल न जाहीं॥१६८॥ जोपै रामचरण रति होती। तौ कत त्रिविधशूल निशिवासर सहते विपति निसोती॥ जो संतोष सुधा निशिवासर स्वप्नेहुँ कबहुँक पावै। तौ कत विषय विलोकि झूंठ जल मन कुरंग ज्यों धावै॥ जो श्रीपति महिमा विचारि उर भजते भाव बढ़ाए। तौ कत द्वारद्वार कूकर ज्यों फिरते पेट खलाए॥ जे लोलुप भये दास आशके ते सबही के चेरे। प्रभु विश्वास आश जीती जिन्ह ते सेवक हरि केरे॥ नहिं एकौ आचरण भजन को विनय करत हौं ताते। कीजै कृपा दासतुलसी पर नाथ नामके नाते॥१६९॥ जो मोहिं राम लागते मीठे। तौ नवरस षटरस अनरस है जाते सब सीठे॥ वंचक विषय विविध तनु धरि अनुभवे सुने अरु डीठे। यह जानत हौं हृदय आपने स्वप्ने न अघाइ उबीठे॥ तुलसिदास प्रभु सों एकहि बल वचन कहत

अति ढीठे। नामकि लाज राम करुणा करि केहि न दिये करि चीठे॥ १७०॥ यों मन कबहूँ तुमहिं न लाग्यो। ज्यों छल छाँड़ि स्वभाव निरन्तर रहत विषय अनुराग्यो ॥ ज्यों चितई परनारि सुने पातक प्रपंच घर घर के । त्यों न साधु सुरसरि-तरंग निर्मल गुणगण रघुवर के ॥ ज्यों नासा सुगंधरसवश रसना षटरसरतिमानी । रामप्रसाद मालजूँठन लगि त्यों न ललकि ललचानी ॥ चंदन चन्द्रवदनि भूषण पट ज्यों चह पांवर परस्यो। त्यों रघुपतिपदपद्म परशको तनु पातकी न तरस्यो॥ ज्यों सब भाँति कुदेव कुठाकुर सेए वपु वचन हियेहूं। त्यों न राम सुकृतज्ञ जे सकुचत सकृत प्रणाम किये हूँ। चंचल चरण लोभ लगि लोलुप द्वार द्वार जग बागे। रामसीय आश्रमनि चलत त्यों भये न श्रमित अभागे ॥ सकस अंगपदविमुख नाथ मुख नाम की ओट लई है। है तुलसिहि परतीति एक प्रभु मूरति कृपामई है॥ १७१॥ कीजै मोको यम यातनामई । राम तुमसे शुचि सुहृद साहिबहि मैं शठ पीठि दई ॥ गर्भवास दश मास पालि पितु मातु रूप हित कीन्हो। जड़हि विवेक सुशील खलहि अपराधिहि आदर दीन्हों ॥ कपट करौं अन्तर्यामिहुँ सों अघ व्यापकहिं दुरावौं। ऐसहु कुमति कुसेवक पर रघुपति न कियो मनवावौं॥ उदर भरों किंकर कहाइ बेच्यो विषयनि हाथ हियो है। मोसे वंचक को कृपालु छल छाँड़ि कै छोहु कियो है ॥ पल पलके उपकार रावरे जानि बूझि सुनि नीके। भिद्यो न कुलि-शहुते कठोर चित कबहुँ प्रेम सिय पीके ॥ स्वामीकी सेवक हितता सब कछु निज सांइ दोहाई। मैं मति तुला तौलि देखो भई मेरिहि दिशि गरुआई ॥ एतेहु पर हितकरत नाथ मेरो करि आयो अरु करिहैं । तुलसी अपनी ओर जानियत प्रभुहि कनो-डोइ भरिहैं॥ १७२॥ कबहुँक हों यहि रहनि रहौंगो । श्रीरघुनाथ कृपालु कृपाते संत स्वभाउ गहौंगो ॥ यथालाभ संतोष सदाकाहू सों कछु न चहौंगो। परहित निरत निरंतर मन क्रम वचन नेम

निबहौंगो ॥ परुष वचन अति दुसह श्रवण सुनि तेहि पावक न दहौंगो । विगत मान सम शीतल मन पर गुण अवगुण न कहौंगो ॥ परिहरि देहजनित चिन्ता दुख सुख समबुद्धि सहौं गो । तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि अविचल हरि भक्ति लहौं-गो ॥ १७३ ॥ नाहिंन आवत आनभरोसो । यहि कलिकाल सकल साधनतरु है श्रम फलानि फरोसो ॥ तप तीरथ उपवास दान मख जेहि जो रुचै करो सो । पायहि पै जानिबो कर्म फल भरि भरि वेद परोसो ॥ आगम विधि जप योग करत नर सरत न काज खरोसो । सुख स्वप्नेहु न योग सिधि साधन रोग वियो-ग धरोसो ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह मिलि ज्ञान विराग हरो-सो । बिगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरोसो ॥ बहु-मत सुनि बहुपंथ पुराणनि जहाँ तहाँ झगरोसो । गुरु कह्यो राम भजन नीको मोहिं लागत राम राज डगरोसो ॥ तुलसी विनु परतीति प्रीति फिर फिरि पाचि मरै मरो सो ॥ रामनाम वोहित भवसागर चाहै तरन तरोसो ॥१७४॥ जाके प्रिय न राम वैदेही । सो छाँड़िये कोटि वैरीसम यद्यपि परमसनेही ॥ तज्यो पिता प्रह्लाद विभीपण बंधु भरत महतारी । बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज वनितनि भयो मुद मंगलकारी ॥ नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँलों । अञ्जन कहा आँखि जेहि फूटै बहुतक कहो क-हाँलों ॥ तुलसी सो सब भाँति परमहित पूज्य प्राण ते प्यारो । जासों होय सनेह रामपद एतो मतो हमारो ॥ १७५ ॥ जो पै रहनि राम सों नाहीं । तौ नर खर कूकर शूकर से जाय जियत जग माहीं॥काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूँख प्यास सबहीके । मनुज देह सुर साधु सराहत सो सनेह सिय पीके ॥ शूर सुजान सुपूत सुलक्षण गनियत गुण गरुआई । विनु हरिभजन इँद्राय-णके फल तजत नहीं करुआई ॥ कीरति कुल करतूति भूति भलि शील स्वरूप सलोने । तुलसी प्रभु अनुराग रहित जस सालन शाक अलोने ॥ १७६ ॥ राख्यो राम सुस्वामी सों

नीच नेह न नातो । एते अनादर होतहूं ते नहातो ॥ जोरे नए नाते नेह फोकटके फीके । देहके दाहक गाहक जीके ॥ अपने अपनेको सब चाहत नीको ॥ मूल दुहूँको दयालु दूलह सीको ॥ जीवके जीवन प्राणके प्यारे । सुखहूको सुख राम सो बिसारे ॥ कियो करैगो तोसे खलको भलो । ऐसे सुसाहब सों तू कुचाल क्यों चलो ॥ तुलसी तेरी भलाई अजहूं बूझै । राडउराउत होत फिरि- कै जूझै ॥ १७७ ॥ जो तुम त्यागो राम हौं तो नहिं त्यागों । परिहरि पाँय काहि अनुरागों ॥ सुखद सुप्रभु तुमसों जगमाहीं । श्रवण नयन मन गोचर नाहीं ॥ हौं जडजीव ईश रघुराया । तुम मायापति हौं वशमाया ॥ हौं तो कुयाचक स्वामी सुदाता । हौं कुपूत तुमहीं पितु माता ॥ जो पै कहूं कोउ बूझत बातो । तो तुलसी विनु मोल बिकातो ॥ १७८ ॥ भयेहूं उदास राम मेरे आश रावरी । आरतस्वारथी सब कहैं बात बावरी ॥ जीवनको दानी धन कहा ताहि चाहिये । प्रेम नेमको निबाहे चातक सराहिये ॥ मी- नते न लाभ लेश पानी पुण्य पीनको । जलविनु थल कहां मीचु विनु मीन को ॥ बड़ेही की ओट बलि बाँचि आये छोटे हैं । चलत खरेके संग जहाँ तहाँ खोटेहैं ॥ याहिदरबार भलो दाहिनेहु वामको॥मोको शुभदायक भरोसो रामनाम को । कहत नशानी ह्वैहै हिये नाथ नीकी है । जानत कृपानिधान तुलसीके जीकी है॥ १७९॥

राग बिलावल ।

कहाँ जाउँ कासों कहौं को सुने दीन की । त्रिभुवन तुहीं गति सब अंगहीन की ॥ जग जगदीश घर घरनि घनेरे हैं । निराधा- रको अधार गुणगण तेरे हैं ॥ गजराज काज खगराज तजि धायो को । मोसे दोष कोष पोसे तोसे माय जायो को ॥ मोसे क्रूर कायर कुपूत कौडी आधके । किये बहुमोल तैं करैया गीध- श्राद्धके ॥ तुलसी की तेरेहीबनाये बलि बनैगी । प्रभुकी विलम्ब अम्ब दोष दुख जनैगी ॥ १८० ॥ बारक विलोकि बलि कीजै मो- हिं आपनो । राय दशरथके तू उथपन थापनो ॥ साहब शरणपाल

सबल न दूसरो ॥ तेरो नाम लेतहीं सुखेत होत ऊसरो ॥ वचन करम तेरे मेरे मन गड़े हैं। देखे सुने जाने मैं जहान जे ते बड़े हैं ॥ कौने कियो समाधान सनमान शिलाको । भृगुनाथ सों ऋषी जितय्या कौन लीला को ॥ मातु पितु बंधु हित लोक वेदपाल को । बोलको अचल नत करत निहाल को ॥ संग्रही सनेहवश अधम असाधु को । गीध शबरीको कहो करि है शराध को ॥ निराधारको अधार दीन को दयालु को ॥ मीत कपि केवट रजनीचरभालु को ॥ रंक निर्गुणी नीच जितने निवाजेहैं । महाराज सुजन समाज ते विराजे हैं ॥ सांची बिरुदावली न बढ़ि कहि गई है। शीलसिंधु ढील तुलसी की बार भई है ॥ १८१ ॥ केहू भाँति कृपासिन्धु मेरी ओर हेरिये । मोको और ठौर न सुटेक एक तेरिये ॥ सहस शिला ते अति जड़ मति भई है । कासों कहौं कौने गति पाहनहिं दई है ॥ पद राग याग चहौं कौशिक ज्यौं कियोहै । कलिमल खल देखि भारी भीति भयो है ॥ करम कपीश वालि बली त्रास त्रस्यो हौं । चाहत अनाथ नाथ तेरी बाँह बस्यो हौं ॥ महामोह रावण विभीषण ज्यों हयो है। त्राहि तुलसी त्राहि तुलसी तिहूं ताप तयो है ॥ १८२ ॥ नाथ गुणगाथ सुनि होत चित चाउ सो । राम रीझिबे की जानो भगति न भाउ सो ॥ करम स्वभाव काल ठाकुर न ठांउ सो। सुधन न सुतन न सुमन सुआउ सो ॥ याँचो जल जाहि कहैं अमिय पिआउ सो । कासों कहौं काहू सों न बढ़त हिआउ सो । बाप बलि जाउँ आपु करिये उपाउ सो । तेरेही निहारे परै हारेहू सुदाउ सो ॥ तेरेही सुझाये सूझै असुझ सुझाउ सो । तेरेही बुझाये बूझै अबुझ बुझाउ सो॥ नाम अवलम्ब अम्बु दीन मीन राउ सो॥ प्रभु सों बनाइ कहौं जीह जरि जाउ सो ॥ सब भाँति बिगरी है एक सुब नाउ सो । तुलसी सुसाहिबहि दियोहै जनाउ सो ॥ १८३ ॥

राग आसावरी ।

राम प्रीतिकी रीति आप नीके जनियतहैं ॥ बड़ेकी बड़ाई छोटेकी छोटाई दूरि करै ऐसी बिरदावलि बलि वेद मनियत हैं ॥

गीध को कियो शराध भीलनीको खायो फल सोऊ साधु सभा भलीभाँति भनियत हैं । रावरे आदरे लोक वेदहू आदरियत योग ज्ञानहूते गरू गनियत हैं ॥ प्रभुकी कृपा कृपालु कठिन कलिहु काल महिमा समुझि उर अनियतहैं । तुलसी परायेवश भये रस अनरस दीनबंधु द्वारे हरि हठ ठनियत हैं ॥ १८४ ॥ राम नामके जपे जाइ जियकी जरनि । कलिकाल अपर उपायते अपाय भये जैसे तम नाशिबेको चित्रके तरनि ॥ करम कलाप परिताप पाप साने सब ज्यों सुफूल फूलैतरु फोकट फरनि । दंभलोभ लालच उपासना विनाशिनीके सुगति साधन भई उदर भरनि ॥ योग न समाधि निरुपाधि न विराग ज्ञान वचन विशेष वेष कहूं न करनि । कपट कुपथ कोटि कहनि रहनि खोटि सकल सराहैं निज निज आचरनि ॥ मरत महेश उपदेश है कहा करत सुरसरि तीर काशी धरम धरनि ॥ रामनामको प्रताप हर कहैं जपैं आप युगयुग जानैं जगवेदहूं वरनि ॥ मति रामनामहींसों रति रामनामहीं सों गति रामनामहीं की विपति हरनि । रामनाम सों प्रतीति प्रीति राखे कबहुँक तुलसी ढरैंगे राम आपनी ढरनि ॥ १८५ ॥ लाज न लागत दास कहावत । सो आचरण बिसारि शोच तजि जो हरि तुम कहँ भावत । सकल संग तजि भजत जाहि मुनि जप तप याग बनावत । मोसम मन्द महाबल पाँवर कौन जतन तेहि पावत । हरि निर्मल मलग्रसित हृदय असमंजस मोहिं जनावत । जेहि सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहँ आवत ॥ जाकी शरण जाइ कोविद दारुण त्रयताप बुझावत । तहू गये मद मोह लोभ अति सरगहुँ मिटत नशावत ॥भवसरिता कहँ नावसंत यह कहि औरनि समुझावत । हौं तिन्ह सों हरि परम वैर करि तुम सों भलो मनावत ॥ नाहिंन और ठौर मो कहँ ताते हठि नातो लावत । राखु शरण उदार चूड़ामणि तुलसिदास गुण गावत ॥ १८६ ॥ कौन यतन विनती करिये । निज आचरण विचारि हारि हिय मानि जानि डरिये ॥ जेहि साधन हरि द्रवहु जानि जन सो हठि परिहरिये । जाते विपति

जाल निशि दिन दुख तेहि पथ अनुसरिये ॥ जानतहूं मन वचन कर्म परहित कीन्हे तरिये । सो विपरीत देखि परसुख विनु कारणही जरिये । श्रुति पुराण सबको मत यह सतसंग सुदृढ़ धरिये। निज अभिमान मोह ईर्षा वश तिन्हहिं न आदरिये॥ सन्तसोइ प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि तरिये । कहो अब नाथ कौन बलते संसार शोक हरिये ॥ जब कब निज करुणा स्वभाउ ते द्रवहु तो निस्तारिये । तुलसिदास विश्वास आन नहिं कत पचि पचि मरिये ॥ १८७ ॥ ताहि ते आयो शरण सबेरे ज्ञान विराग भक्ति साधन कछु स्वप्नेहुँ नाथ न मेरे ॥ लोभ मोह मद काम क्रोध रिपु फिरत रैनि दिन घेरे । तिन्हहिं मिले मन भयो कुपथ रत फिरै तिहारेहि फेरे ॥ दोष निलय यह विषय शोकप्रद कहत सन्त श्रुति टेरे। जानतहूं अनुराग तहाँ अति सो हरि तुम्हरेहि प्रेरे ॥ विष पियूष सम करहु अग्नि हिम तारि सकहु बिनु बेरे । तुम सम ईश कृपालु परमहित पुनि न पाइहौं हेरे ॥ यह जिय जानि रहौं सब तजि रघुवीर भरोसे तेरे । तुलसिदास यहि विपति वागुरो तुम सों बनिहि निबेरे ॥ १८८ ॥ मैं तू अब जान्यो संसार। बाँधि न सकहि मोहिं हरिके बल प्रगट कपट आगार । देखतहीं कमनीय कछु नाहिंन पुनि पुनि किये विचार । ज्यों कदली तरु मध्य निहारत कबहूँ न निकरत सार ॥ तेरे लिये जनम अनेक मैं फिरत न पायो पार। महामोह मृगजल सरिता महँ बोऱ्यो हौं बारहिं बार ॥ सुनु खल छल बल कोटि किये वश होहिं न भक्त उदार। सहित सहाय तहाँ बसि अब जेहि हृदय न नंदकुमार। तासों करहु चातुरी जो नहिं जानै मर्म तुम्हार। सो परि मरै डरै रजु अहि ते बूझै नहिं व्यवहार ॥ निज हित सुनु शठ हठ न करहि जो चहहि कुशल परिवार। तुलसिदास प्रभुके दासन्ह तजि भजहि जहाँ मद मार ॥ १८९ ॥

राग गौरी ।

राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे । ना-

हिं तो भव बेगारि महँ परिहौ छूटत अति कठिनाई रे ॥ बाँस पु-
रान साज सब अठ कठ सरल तिकोन खटोला रे । हमहिं दि-
हल करि कुटिल करमचंद मन्द मोल बिनु डोला रे ॥ विषम
कहार मारमदमाते चलहिं न पाँव बटोरारे । मन्द विलन्द अ-
भेरा दलकन पाइयदुख झकझोरा रे ॥ कांट कुराय लोटन लपेटन
ठाँवहिं ठाँउँ बझाऊं रे । जस २ चलिय दूरि तस २ निज बासन
भेंट लगाऊंरे ॥ मारग अगम संगनहिं सम्बल नाउँ गाउँ कर
भूलारे ॥ तुलसिदास भवत्रास हरहु अब होहु राम अनुकूलारे ॥
॥ १९० ॥ सहज सनेही राम सों तैं कियो न सनेह । ताते भव
भाजन भयो सुनु अजहुँ शिखावन एह ॥ जो सुख मुकुर विलो-
किये अरु चित न रहै अनुहारि । त्यों सेवतहु न आपने ये मातु
पिता सुत नारि ॥ दै दै सुमन तिल बासकै अरु खरि परिहरि
रस लेत । स्वारथहित भूतल भरे मनमेचक तनुसेत ॥ करिबी
त्यों अब करतु हैं करिबेहित मीत अपार ॥ कबहुँ न कोउ रघुवीर
सों नेह निबाहनिहार ॥ जासों सब नातो फुरै तासों न करी पहि
चानि । ताते कछु समझों नहीं कहा लाभ कहँ हानि ॥ साँचो जा-
न्यो झूठको झूठे कहँ साँचो जानि । कौन गयो कौन जातहै कौन
जैहै करि हित हानि ॥ वेद कह्यो बुध कहतहैं अरु होहुँ कहत हों
टेरि । तुलसी प्रभु साँचो हितू तू हिये की आँखिन हेरि ॥ १९१ ॥
एक सनेही साँचिलो केवल कोशलपालु । प्रेमकनोड़ो रामसों
नहिं दूसरो दयालु ॥ तनु साथी सब स्वारथी सुर व्यवहार सुजान ।
आरत अधम अनाथहित को रघुवीर समान ॥ नाद निठुर
सम चर शिखी सलिल सनेह न शूर । शशि सरोग दिनकर
बड़े पयद प्रेमपथ कूर ॥ जाको मन जासों बँध्यों ताको सुखदा-
यक सोइ । सरलशील साहब सदा सीतापतिसरिस न कोइ ॥
सुनि सेवा सहि को करै परिहरै को दूषण देखि । केहि दिवान
दिन हीनको आदर अनुराग विशेखि ॥ खग शबरी पितु मातु
ज्यों माने कपिको किये मीत । केवट भेंटयो भरत ज्यों

ऐसो को कहु पतित पुनीत ॥ देइ अभागहि भाग कोको राखे-शरण सभीत। वेद विदित विरदावली कवि कोविद गावत-गीत ॥ कैसेउ पाँवर पातकी जेहि लई नामकी ओट । गांठी बाँ-ध्यो दामसो परख्यो न फेरि खर खोट ॥ मन मलीन कलिकि-लबिषी होत सुनत जासु कृतकाज। सो तुलसी कियो आपनो रघुवीर गरीब निवाज ॥ १९२ ॥ जोपै जानकीनाथ सों नातो नेह न नीच ॥ स्वारथ परमारथ कहा कालि कुटिल बिगोयो बीच ॥ धर्म वर्ण आश्रमनिके पैयत पोथिही पुरान । करतब विन वेष देखिये ज्यों शरीर बिनुप्रान ॥ वेद विहित साधन सबै सुनि-यत दायक फल चारि। राम प्रेम बिनु जानिबो जैसे सरसरिता बिन वारि ॥ नाना पथ निर्वाणके नाना विधान बहुभाँति । तुलसी तू मेरे कहे जपु रामनाम दिन राति॥ १९३ ॥ अजहुँ आपने रामके करतब समुझत हित होइ । कहँ तू कहँ कोशल धनी तोको कहा कहत सब कोइ ॥ रीझि निवाज्यो कबहिं तू कब खीझि दई तोहिं गारि। दर्पण वदन निहारिकै सुविचार मान हिय हारि॥ बिगरी जन्म अनेककी सुधरत लगै पल न आधु। पाहि कृपानिधि प्रेम सों कहै कौन राम कियो साधु ॥ वाल्मीकि केवटकथा कपि भील भालु सन-मान। सुनि सन्मुख जो न राम सों तिहिं को उपदेशहि ज्ञान॥ का सेवा सुग्रीव की का प्रीति रीति निरवाहु। जासु बंधु वध्यो व्याध ज्यों सो सुनत सोहात न काहु॥ भजन विभीषणको कहा फल कहा दियो रघुराज। राम गरीबनिवाजके बड़ी बाँह बोलकी लाज ॥ जपहि नाम रघुनाथको चर्चा दूसरी न चालु । सुमुख सुखद साहव सुधी समरथ कृपालु नतपालु ॥ सजल नयन गद्गद गिरा गहवर मन पुलक शरीर। गावत गुणगण रामके केहिकी न मिटी भवभीर ॥ प्रभु कृतज्ञ सर्वज्ञ हैं परिहरु पाछिली गलानि। तुलसी तोसों राम सों कछु नइ न जान पहिचानि॥ १९४ ॥ जो अनुराग न रामसनेही सों। तो लह्यो लाहु कहा नरदेही सों ॥ जो तनु धरि परिहरि सब सुख भय सुमति राम अनुरागी। सो तनु पाइ अवाइ

किये अघ अवगुण अधम अभागी ॥ ज्ञान विराग योग जप तप मख जग मुद मग नाहिं थोरे । राम प्रेम बिनु नेम जाय जैसे मृग जल जलधि हिलोरे ॥ लोक विलोकि पुराण वेद सुनि समुझि बूझि गुरु ज्ञानी । प्रीति प्रतीति रामपदपंकज सकल सुमंगलखानी ॥ अजहुँ जानि जिय मानि हारि हिय होइ पलक महँ नीको । सुमिर सनेह सहित हित रामहिं मातु मतो तुलसी को ॥ १९५ ॥ बलि जाउँ हों राम गुसाईं । कीजिये कृपाआपनी नांईं ॥ परमारथ सुरपुर साधन सब स्वारथ सुखद भलाई । कालि सकोप लोपी सुचाल निज कठिन कुचाल चलाई ॥ जहँ जहँ चित चितवत हित तहँ नित नव विषाद अधिकाई । रुचि भावती भभरि भागहि समुहाहिं अमित अनभाई ॥ आधि मगन मन व्याधि विकल तन वचन मलीन झुठाई । एतेहुँ पर तुम सों तुलसी की प्रभु सकल सनेह सगाई॥१९६॥ काहे को फिरत मन करत बहु जतन मिटै न दुख विमुख रघुकुल वीर॥ कीजै जो कोटि उपाय त्रिविध ताप नजाइ कह्यो जो भुज उठाइ मुनिवर कीर। सहज टेव बिसारि तु हीं धौं देखु विचारि मिलै न मथत वारि घृत बिनु क्षीर । समुझि तजहिं भ्रम भजहिं पद युगम सेवत सुगम गुण गहन गम्भीर ॥ आगम निगम ग्रन्थ ऋषि मुनि सुर सन्त सबहीको एक मत सुनु मतिधीर । तुलसिदास प्रभु बिन प्यास मरै पशु यद्यपि है निकट सुरसरि तीर ॥ १९७ ॥ नाहिंन चरणरति ताहि ते सहों विपति कहत श्रुति सकल मुनि मतिधीर । बसे जो शशि उछंग सुधा स्वादित कुरंग ताहिको भ्रमनिरखिरविकर नीर ॥ सुनिय नाना पुराण मिटत नहीं अज्ञान पढिय न समुझिये जिमि खग कीर। बूझत बिनाहिं पाश सेमर सुमनआश करत चरत तेइ फल बिनु हीर॥कछु न साधनसिद्धि जानों न निगम विधि नाहिं जपतपवशमन न समीर ॥ तुलसिदास भरोस परम करुणा कोश प्रभु हरि हैं विषमभवभीर ॥ १९८ ॥ मन पाछितैहै अवसर बीते।दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु कर्म वचन अरु हीते ॥ सहसबाहु दशवदन आदिनृप

बचे न काल बलीते। हम हम करि धन धाम सँवारे अन्त चले उठि रीते॥ सुत वनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सबही ते। अन्तहुँ तोहिं तजैंगे पामर तू न तजहि अबही ते॥ अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़ त्यागु दुराशा जीतें। बुझै न कामअग्नि तुलसी कहुँ विषय भोग बहु घीते॥ १९९॥ काहेको फिरत मूढ़ मन धायो। तजिहरिचरणसरोजसुधारस रविकर जल लय लायो॥ त्रिजगदेव नर असुर अपर जग योगि सकल भ्रमि आयो। गृह वनिता सुत बंधु भये बहु मातु पिता जिन्ह जायो॥ जाते निरय निकाय निरन्तर सोइ न तोहिं सिखायो। तवहित होइ कटहिं भवबन्धन सो मगु तोहिं न बतायो॥ अजहुँ विषय कहँ जतन करत यद्यपि बहुविधि डहँकायो। पावक काम भोग घृत ते शठ कैसे परत बुझायो॥ विषयहीन दुख मिले विपति अति सुख स्वप्नेहुँ नहिं पायो। उभय प्रकार प्रेत पावक ज्यों धन दुखप्रद श्रुति गायो॥ छिन छिन क्षीण होत जीवन दुर्लभ तनु वृथा गँवायो॥ तुलसिदास हरि भजहि आश तजि कालउरग जग खायो॥ २००॥ ताँबे सों पीठि मनहुँ तनु पायो। नीच मीच जानत न शीशपर ईश निपट बिसरायो॥ अवनि रवनि धन धाम सुहृद सुत को न इन्हहिं अपनायो। काके भये गए सँग काके सब सनेह छल छायो॥ जिन्ह भूपनि जगजीति बाँधि यम अपनी बाँह बसायो। तेऊ काल कलेऊ कीन्हें तू गिनती कब आयो॥ देखु विचार सार का साँचो कहा निगम निज गायो। भजहि न अजहुँ समुझि तुलसी तेहि जेहि महेश मन लायो॥ २०१॥ लाभ कहा मानुष तनु पाये। काय वचन मन स्वप्नेहुँ कबहुँक घटत न काज पराए॥ जो सुख सुरपुर नरक गेह वन आवत विनहिं बुलाए। तेहि सुख कहँ बहु जतन करत मन समुझत नहिं समुझाए॥ परदारा परद्रोह मोहवश किये मूढ़ मन भाए। गर्भवास दुखराशि यातना तीव्र विपति बिसराए॥ भय निद्रा मैथुन अहार सबके समान जग जाए। सुरदुर्लभतनु धरि न भजे हरि मद अभिमान गँवाए॥

गई न निज परबुद्धि शुद्ध ह्वै रहे न रामलय लाए । तुलसिदास यह अवसर बीते का पुनिके पछिताए ॥ २०२ ॥ काज कहा नरतनु धरि सारयो । पर उपकार सारश्रुति को सो धोखेहु में न विचारयो ॥ द्वैतमूल भय शूल शोकफल भवतरु टरै न टारयो । रामभजन तीक्ष्ण कुठार लै सो नहिं काटि निवारयो ॥ संशय सिंधु नाम बोहित भाजि निज आतमा न तारयो । जन्म अनेक विवेकहीन बहु योनि भ्रमत नहिं हारयो ॥ देखि आनकी सहज सम्पदा द्वेष अनल मन जारयो । शम दम दया दीन पालन शीतल हिय हरि न सँभारयो । प्रभु गुरु पिता सखा रघुपति में मन क्रम वचन बिसारयो । तुलसिदास यहि आश-शरण राखिहि जेहि गीध उधारयो ॥ २०३ ॥ श्रीहरिगुरुपद कमल भजहु मन तजि अभिमान । जेहि सेवत पाइय हरि सुखनिधान भगवान ॥ परिवा प्रथम प्रेम बिनु राम मिलन अतिदूरि । यद्यपि निकट हृदय निज रहे सकल भरि पूरि ॥ दुइज द्वैत मति छाँड़ि चरहि महि मंडल धीर । विगत मोह माया मद हृदय सदा रघुवीर ॥ तीज त्रिगुण पर परमपुरुष श्रीरमण मुकुन्द । गुण स्वभाव त्यागे विनु दुर्लभ परमानन्द ॥ चौथि चारि परिहरहु बुद्धि मन चित अहँकार । विमल विचार परमपद निज सुख सहज उदार ॥ पाँचइ पाँच परस रस शब्द गन्ध अरु रूप । इन्ह कर कहा न कीजिये बहुरि परव भवकूप ॥ छठि षडवर्ग करिय जप जनकसुतापति लागि ॥ रघुपति कृपा वारि बिनु नहिं बुताइ लो भागि ॥ सातैं सप्तधातु निर्मित तनु करिय विचार । तेहि तनु केर एक फल कीजिये पर उपकार । आठइँ आठ प्रकृति पर नि-र्विकार श्रीराम । केहि प्रकार पाइय हरि हृदय बसहिं बहुकाम ॥ नवमी नवद्वारपुर बसि जेहि न आपु भल कीन्ह । ते नर योनि अनेक भ्रमत दारुण दुख दीन्ह ॥ दशइँ दशहु कर संयम जो न करिय जिय जानि।साधन वृथा होइँ सब मिलहिं न शारँगपानि ॥ एकादशी एक मन वशकै सेवहु जाइ । सोइ व्रत कर फल पावै आवागमन नशाइ ॥ द्वादशि दान देहु अस अभय होइ त्रैलोक । पर

हित निरत सो पारन बहुरि न व्यापक शोक। तेरसि तीन अवस्था तजहु भजहु भगवन्त। मनक्रम वचन अगोचर व्यापक व्याप्य अनन्त॥ चौदशि चौदह भुवन अचर रूप गोपाल। भेद गये विनु रघुपति अति न हरहिं जगजाल॥ पूनो प्रेम भक्ति रस हरिरस जानहिं दास। सम शीतल गत मान ज्ञानरत विषय उदास॥ त्रिविध शूल होलिय जारिय खेलिय अब फाग॥ जो जिय चहसि परमसुख तौ यहि मारग लाग॥ श्रुति पुराण बुध संमत चांचरि चरित मुरारि। करि विचार भवतरिय परिय न कबहुँ यमधारि॥ संशय शमन दमन दुख सुखनिधान हरि एक। साधु कृपा बिनु मिलहिं न करिय उपाइ अनेक। भवसागर कहँ नाउ शुद्ध सन्तन के चरण। तुलसिदास प्रयास बिनु मिलहिं राम दुखहरण॥ २०४॥

राग कान्हरा।

जो मन लागै रामचरण अस। देह गेह सुत वित कलत्र महँ मगन होत बिनु यतन किये जस॥ द्वन्द्व रहित गत मान ज्ञान रत विषय विरत खटाइ नानाकस। सुखनिधानसुजान कोशलपति ह्वै प्रसन्न कहु क्यों न होहिं बस॥ सर्व भूतहित निर्व्यलीकचित भक्ति प्रेम दृढ़ नेम एक रस। तुलसिदास यह होइ तबहिं जब द्रवै ईश जेहि हते शीशदश॥ २०५॥ जो मन भज्यो चहै हरि सुरतरु। तौ तजि विषय विकारसार भजु अजहूँ जो मैं कहौं सोइ करु॥ सम संतोष विचार विमल अति सतसंगति ए चारि दृढ़ करि धरु। काम क्रोध अरु लोभ मोह मद राग द्वेष निःशेष करि परिहरु॥ श्रवण कथा मुखनाम हृदय हरि शिर प्रणाम सेवा कर अनुसरु। नयनन निरखि कृपा समुद्र हरि अग जग रूप भूप सीतावरु॥ इहै भक्ति वैराग्य ज्ञान यह हरितोषन यह शुभ व्रत आचरु। तुलसिदास शिवमत मारग यहि चलत सदा स्वप्नेहुँ नाहिंन डरु॥ २०६॥ नाहिंन और कोऊ शरण लायक दूजो

श्रीरघुपति सम विपति निवारण । काको सहज स्वभाउ सेवक वश काहि प्रणत पर प्रीति अकारण ॥ जन गुण अलप गनत सुमेरु करि अवगुण कोटि विलोकि बिसारन । परमकृपालु भगत चिन्तामणि विरद पुनीत पतितजनतारन ॥ सुमिरत सुलभ दासदुख सुनि हरि चलत तुरत पटपीत सँभारन । साखि पुराण निगम आगम सब जानत द्रुपदसुता अरु वारन ॥ जाको यश गावत कवि कोविद जिन्हके लोभ मोह मद मारन । तुलसिदास तजि आश सकल भजु कोशलपति मुनिवधू उधारन ॥ २०७ ॥ भजिवे लायक सुखदायक रघुनायक सरिस शरण पद दूजो नाहिं न । आनँदभवन दुख दमन शोकशमन रमारमन गुण गनत सिराहिं न ॥ आरत अधम कुजाति कुटिल खल पतित सभीत कहूं जे समाहिं न । सुमिरत नाम विवशहू बारक पावत सो पद जहाँ सुर जाहिं न॥जाके पदकमल लुब्ध मुनि मधुकर विरति जे परम सुगतिहु लुभाहिं न । तुलसिदास शठ तेहि न भजसि कस कारुणीक जो अनाथहि दाहिन ॥ २०८॥

राग कल्याण ।

नाथ सों कौन विनती कहि सुनावौं । त्रिविध अनगनित अवलोकि अघ आपने शरण सम्मुख होत सकुचि शिरनावौं ॥ विरचि हरिभक्तको वेष वर वाटिका कपटदल हरित पल्लवनि छावौं । नाम लागि लाइ लासा ललित वचन कहि व्याध ज्यों विषय विहँगनि बझावौं ॥ कुटिल शत कोटि मेरे रोम पर वारि यहि साधु गनतीमो पहिलहिं गनावौं । परमबर्बर खर्व गर्व पर्वत चढ्यो अज्ञ सर्वज्ञ जनमणि जनावौं । साँच किधौं झूठ मोको कहत कोउ-कोउ रामरावरो होहुँ तुम्हरोइ कहावौं ॥ विरदकी लाज करि दासतु-लसीहि देव लेहु अपनाइ अब देहु जनि बावौं ॥ २०९ ॥ नाहिनो नाथ अवलंबमोहिं आनकी । कर्म मन वचन प्रण सत्य करुणानिधे एक गति राम भवदीय पदत्राणकी ॥ कोह मद मोह ममता

यह तन जानि मन बात नाहिं जाति कहि ज्ञान विज्ञानकी । काम संकल्प उर निरखि बहु बासनहिं आश नाहिं एकहू आंक निर्वान की॥ वेद बोधित कर्म धर्म विनु अगम अति यदपि जियलालसा अमरपुर जानकी। सिद्ध सुर मनुज दनुजादि सेवत कठिन द्रवहिं हठयोग दिए भोग बलि प्राण की ॥ भक्तिदुर्लभ परम शंभु शुकमुनि मधुप प्यास पदकंज मकरंद मधु पानकी॥ पतितपावन सुनत नाम विश्रामकृत भ्रमत पुनि समुझि चित ग्रन्थि अभिमानकी ॥ नरक अधिकार मम घोर संसारतम कूप कहि भूप मोहिं शक्ति आपानकी ॥ दासतुलसी सोऊ त्रास नहिं गनत मन सुमिरि गुह गीध गज ज्ञाति हनुमानकी ॥ २१० ॥ और कहँ ठौर रघुवंशमणि मेरे॥ पतितपावनप्रणतपाल अशरणशरण बाँकुरे विरद विरुदैत केहि केरे। समुझि जियदोष अतिरोष करि रामजेहि करत नहिं कान विनती वदन फेरे॥ तदपि ह्वै निडर हौं कहौं करुणासिंधु क्यों बरहि जात सुनिबात बिन हेरे। मुख्य रुचि होत वसिबे को पुर रावरे राम तेहि रुचिहि कामादि गण घेरे॥ अगम अपवर्ग अरु स्वर्ग सुकृतैक फल नाम बल क्यों बसो यमनगर नेरे। कतहुँ नाहिं ठाउँ कहँ जाउँ कोशलनाथ दीन वितहीन हों विकल विनु डेरे।। दास तुलसिहि वास देहु अब करि कृपा वसत गज गृध्र व्याधादि जेहि खेरे ॥ २११ ॥ कबहुँ रघुवंशमणि सो कृपा करहुगे। जेहि कृपा व्याध गज विप्र खल नर तरे तिन्हहिं सम मानि मोहिं नाथ उद्धरहुगे॥ योनि बहु जन्मि किए कर्म खल त्रिविधविधि अधम आचरण कछु हृदय नहिं धरहुगे। दीनाहित अजित सर्वज्ञ समरथ प्रणतपाल चित मृदुल निजगुणनि अनुसरहुगे ॥ मोह मद मान कामादिखल मंडली सकुल निर्मूल करि दुसह दुःख हरहुगे। योग जप यज्ञ विज्ञान ते अधिक अति अमल दृढ़ भक्ति दे परमसुख भरहुगे ॥ मन्दजन मौलिमणि सकल साधनहीन कुटिलमन मलिन जिय

जानि जो डरहुगे । दासतुलसी वेद विदित विरुदावली विमल यश नाथ केहि भाँति विस्तरहुगे ॥ २१२ ॥

राग केदारा ।

रघुपति विपति दवन । परमकृपालु प्रणतप्रतिपालक पातित पवन ॥ क्रूर कुटिल कुल हीन दीन अतिमालिन यवन । सुमिरत नाम राम पठए सब अपने भवन ॥ गज पिंगला अजामिलसे खल गनेधौं कवन । तुलसिदास प्रभु केहि न दीनि गति जानकी रमन ॥ २१३ ॥ हरि सम आपदाहरन । नहिं कोउ सहज कृपालु दुसह दुखसागरतरन ॥ गज निजबल अवलोकि कमल गहि गयो शरन । दीन वचन सुनि चले गरुड़ तजि सुनाभूधरन ॥ द्रुपदसुताको लग्यो दुशासन नगन करन । हाहरि पाहि कहत पूरे पट विविध बरन ॥ इहै जानि सुर नर मुनि कोविद सेवत चरन । तुलसिदास प्रभु को न अभय कियो नृग उद्धरन ॥ २१४ ॥

राग कल्याण ।

ऐसी कौन प्रभुकी रीति । विरद हेत पुनीत परिहारि पांवरानि पर प्रीति ॥ गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाइ । मातुकी गति दई ताहि कृपालु यादवराइ ॥ काममोहित गोपिकनपर कृपा अतुलित कीन्हि । जगतपिता विरंचि जिन्हके चरणकी रज लीन्हि ॥ ॥ नेमते शिशुपाल दिन प्रति देत गनि गनि गारि । कियो लीन सुआप में हरि राजसभा मँझारि ॥ व्याध चित दै चरण मारयो मूढ़मति मृगजानि । सो सदेह स्वलोक पठयो प्रगट करि निजबानि ॥ कौन तिन्हकी कहै जिन्हके सुकृत अरु अघ दोउ । प्रगट पातकरूप तुलसी शरण राख्यो सोउ ॥ २१५ ॥ श्री रघुबीर की यह बानि । नीचहूं सों करत नेह सुप्रीति मन अनुमानि ॥ परम अधम निषाद पाँवर कौन ताकी कानि । लियो सो उर लाइ सुत ज्यों प्रेमकी पहिचानि ॥ गीध कौन दयालु जो विधि रच्यो हिंसा सानि । जनक ज्यों रघुनाथ ताकहँ दियो जल निज

पानि ॥ प्रकृति मलिन कुजाति शबरी सकल अवगुणखानि। खाततांके दिये फल अति रुचि बखानि बखानि ॥ रजनिचर अरु रिपुविभीषण शरण आयो जानि। भरत ज्यों उठि ताहि भेटत देहदशाभुलानि ॥ कौन सुभग सुशील वानर जिनहिं सुमिरत हानि। किये ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि ॥ राम सहज कृपालु कोमल दीन हित दिन दानि। भजहि ऐसे प्रभुहि तुलसी-कुटिल कपट न ठानि ॥ २१६ ॥ हरि तजि और भजिये काहि। नाहिनै कोउ राम सों ममता प्रणत पर जाहि ॥ कनककशिपु विरंचिको जन करम मन अरु बात। सुतहि दुखवत विधि न-वरज्यो कालके घरजात ॥ शम्भु सेवक जान जग बहु बार दिए दशशीश। करतराम विरोध सो स्वप्नेहुँ न हटक्यो ईश ॥ और देवन की कहाकहों स्वारथहिके मीत। कबहुँ काहु न राखिलियो कोउ शरण गयउ सभीत ॥ को न सेवत देत संपति लोकहू यह रीति। दासतुलसी दीन पर एक रामही की प्रीति ॥ २१७ ॥ जोपै दूसरो कोउ होइ। तो हौं बारहिं बार प्रभु कत दुख सुनावौं रोइ ॥ काहि ममता दीन पर काको पतितपावन नाम। पापमूल अजामिलहिं केहि दियो अपनो धाम ॥ रहे शंभु विरंचिसुरपति लोकपाल अनेक। शोकसरि बूडत करीसहि दई काहु न टेक ॥ विपुल भूपति सदसि महँ नर नारि कह्यो प्रभु पाहि। सकल समरथ रहे काहु न वसन दीन्हो ताहि ॥ एक मुख क्यों कहों करुणासिंधुके गुणगाथ। भक्तहित धरि देह काह न कियो कोशलनाथ ॥ आपसे कहुँ सौंपिये मोहिं जो पै अतिहिं विनात। दासतुलसी और विधि क्यों चरण परिहरि जात ॥ २१८ ॥ कबहिं देखाइहौ हरि चरण। शमन सकल कलेश कलिमल सकल मंगलकरण ॥ शरद भव सुन्दर तरुणतर अरुणवारिज वरण। लच्छि लालित ललित करतल छवि अनूपम धरण ॥ गंग जनक अनंगअरिप्रिय कपट बटु बलिछरण। विप्रतिय मृग वधिकके दुख दोप दारुणदरण ॥ सिद्ध सुर मुनि बृन्दवन्दित

सुखद सब कहँ शरण। सकृत उर आनत जिनहिं जन होत तारणतरण॥ कृपासिंधु सुजान रघुवर प्रणत आरति हरण। दरश आश पियास तुलसीदास चाहत मरण॥ २१९॥ द्वारे हौं भोरही को आज। रटत ररिहा आरि और न कौरहीते काज॥ कलिक-राल दुकाल दारुण सब कुभांति कुसाज। नीच जन मन ऊंच-जैसी कोढ़ में की खाज॥ हहरि हिय मैं सदय बूझ्यो जाइ सा-धुसमाज। मोहुसे कहुँ कतहुँ कोउ तिन कह्यो कोशलराज॥ दीनता दारिददलै को कृपावारिधिवाज। दानि दशरथ रायके-तुम बानइत शिरताज॥ जनमको भूखो भिखारी हौं गरीबनेवाज। पेट भरि तुलसिहि जेंवाइयभक्तिसुधासुनाज॥ २२०॥ करियसँभार कोशलराय। और ठौर न और गति अवलम्ब नाम विहाय॥ बूझि अपनी आपनो हित आप बाप न माय। राम राउरनाम गुरु सुर स्वामि सखा सहाय॥ राम राज न चले मानस मलिनके छल छाय। कोप तेहि कलिकाल कायर मुयहि घालतघाय॥ लेत केहरि सों बयर ज्यों भेक हनि गोमाय। त्योंहिं रामगु-लाम जानि निकाम देव कुदाय॥ अकनि याके कपट करतब अमित अनय अपाय। सुखी हरिपुर बसत होत परीक्षितहि पछिताय॥ कृपासिंधु विलोकिये जन मन की शासति साय। शरन आयो देव दीनदयालु देखन पाय॥ निकट बोलि न बरजिये बलिजाँउ हनिय न हाय। देखिहैं हनुमान गोमुख नाहरनिके न्याय॥ अरुण मुख भ्रू विकट पिंगल नयन रोष कषाय। वीर सुमिरि समीरको घटिहै चपल चित चाय॥ विनय सुनि विहँसे अनुज सो वचनके कहिभाय। भलि कही कह्यो लषण हूँ हँसि बने सकल बनाय॥ दई दीनहि दादि सो सुनि सुजन सदन बधाय। मिटे संकट शोच पोच प्रपंच पाप निकाय॥ पेखि प्रीति प्रतीत जन पर अगुण अनघ अमाय। दास तुलसी कहत मुनिगण जयति जय उरगाय॥ २२१॥ नाथ कृपाहीको पन्थ चितवत दीन हौं दिन राति। होइ धौं केहि काल दीनदयालु जानि न जाति॥ सगुण ज्ञान विराग भक्ति

सुसाधनानि की पाँति।भजे विकल विलोकि कलि अघ अवगुण-निकी थाति॥ अति अनीति कुरीति भई भुइ तरनिहूं ते ताति। जाउँ कहँ बलिजाउँ कहुँ ना ठाउँ मति अकुलाति॥ आप सहित न आपनो कोउ बाप कठिन कुभाँति। श्यामघन सींचिये तुलसी शालि सफल सुखाति॥ २२२॥ बलि जाउँ और कासों कहौं। सद्गुणसिंधु स्वामि सेवक हित कहुँ न कृपानिधि सों लहौं॥ जहँ २ लोभ लोल लालचवश निजहित चित चाहनिचहौं। तहँ २ तरणितकत उलूक ज्यों भटकि कुतरुकोटर गहौं॥ काल स्वभाउ करमविचित्र फलदायक सुनि शिर धुनि रहौं। मोको तौ सकल सदा एकहिरस दुसह दाह दारुण दहौं॥ उचित अनाथ होइ दुखभाजन भयो नाथ किङ्कर नहौं। अब रावरो कहाय न बूझिये शरणपाल शाँसति सहौं॥ महाराज राजीवविलोचन मगन पाप सन्तापहौं। तुलसी प्रभु जब जेहि तेहि विधि राम निबाहे निरवहौं॥ २२३॥ आपनो कबहूँ करि जानि हो। राम गरीबनिवाज राजमणि विरद लाज उर आनिहो॥ शीलसिंधु सुन्दर सब लायक समरथ सद्गुण खानि हो। पाल्यो है पालत पालहुगे प्रणत प्रेम पहिचानि हो॥ वेद पुराण कहत जग जानत दीनदयालु दीन दानि हो। कहि आवत बलिजाउँ मनहुँ मेरी बार बिसारे बानि हो॥आरत दीन अनाथनिके हित मानत लौकिक कानि हो। है परिणाम भलो तुलसीको शरणागत भय भानिहो॥ २२४॥ रघुवरही कबहूं मन लागिहै। कुपथ कुचाल कुमति कुमनोरथ कुटिल कपट कब त्यागिहै। जानत गरल अमिय विमोहवश अमिय गनत करि आगि है। उलटी रीति प्रीति अपनेकी तजि प्रभुपद अनुरागिहै॥ आखर अर्थ मंजु मृदु मोदक राम प्रेम पगि पागिहै। ऐसे गुण गाइ रिझाइ स्वामि सों पाइ है जो मुहँ मागिहै॥ तू यहि विधि सुख शयन सोइहै जियकी जरनि भूरि भागिहै। रामप्रसाद दास तुलसी उर रामभगति योग जागिहै॥ २२५॥ भरोसो और आइहै उर ताके। के कहूं लहै जो रामहि सो साहब के अपने बल जाके॥ के कलिकाल कराल न

सूझत मोह मार मद छाके। कै सुनि स्वामि स्वभाउ न रह्यो चित जो हित सब अँग थाके॥ हौं जानत भलिभाँति अपनपौ प्रभु सों न साके। उपल भील खग मृग रजनीचर भले एक सुन्यो करतव काके॥ मोको भलो रामनाम सुरतरु सो रामप्रसाद कृपालु कृपाके। तुलसी सुखी निशोच राज ज्यों बालक माय ववाके॥ २२६॥ भरोसो जाहि दूसरो सो करो। मोको तो रामको नाम कलपतरु कलिकल्याण फरो॥कर्म उपासन ज्ञान वेदमत सो सब भाँति खरो। मोहिंतो श्रावणके अंधहि ज्यों सूझत रंग हरो॥ चाटत रहौं श्वान पातरि ज्यों कबहुँ न पेट भरो।सो हौं सुमिरत नाम सुधारस पेषत परुसि धरो॥ स्वारथ औ परमारथ हू को नहिं कुंजरो नरो। सुनियत सेतु पयोधि पषाणनि करि कपिकटक तरो॥ प्रीति प्रतीति जहाँ जाकी तहँ ताको काज सरो। मेरे तो माय बाप दोउ आखर हों शिशुअरानि अरो॥ शंकर साखि जो राखि कहों कछु तौ जरि जीह गरो। अपनो भलो राम नामहिं ते तुलसिहिं समुझि परो॥ २२७॥ नाम राम रावरोई हितु मेरे। स्वारथ परमारथ साथिन्ह सों भुज उठाइ कहौं टेरे॥ जननी जनक तज्यो जन्मि कर्म बिनु विधिहूं सृज्यो हों अवढेरे। मोहसे कोउ २ कहत रामहिको सो प्रसंग केहि केरे॥ फिरयों ललात बिनु नाम उदरलगि दुखउ दुखित मोंहि हेरे। नाम प्रसाद लहत रसाल फल अबहों बबुर बहेरे॥ साधत साधु लोक परलोकहि सुनि गुनि जतन घनेरे। तुलसीके अवलंब नामको एक गाँठि कइ केरे॥ २२८॥ प्रिय रामनाम ते जाहि न रामो। ताको भलो कठिन कलिकालहुँ आदि मध्य परिणामो॥ सकुचत समुझि नाममहिमा मद लोभ मोह कोह कामो। राम नाम जप निरत सुजन पर करत छाँह घोर घामो॥ नाम प्रभाउ सही जो कहै कोउ शिला सरोरुह जामो। जो सुनि सुमिरि भागभाजन भइ सुकृतशील भीलभामो॥ वालमीकि अजामिलके कछु हुतो न साधन सामो॥ उलटे पलटे नाम महातम गुंजनि जितो ललामो। राम ते अधिक नाम करतव जेहि किए नगर गत गामो। भये बजाइ दाहिने जो जपि तुल-

सिदासहु से बामो ॥ २२९ ॥ गरैगी जीह जो कहौं और को हौं। जानकी जीवन जनम जनम जग ज्यायो तिहारेहि कौर कोहौं॥ तीनि लोक तिहुँ काल न देखत सुहृद रावरे जोर को हौं। तुम्हसों कपट करि कल्परकृमि ह्वै हौं नरक घोर को हौं॥ कहा भयो जो मन मिलि कलिकालहि कियो भुरूट भोर को हौं। तुलसिदास शीतल नित यहि बल बड़े ठेकाने ठौर को हौं॥ २३० ॥ अकारण को हितू और को है। विरद गरीबानिवाज कौनको भौंह जासु जन जोहै॥ छोटो बड़ो चहत सब स्वारथ जो बिरंचि विरचोहै। कोल कुटिल कपि भालु पालिबो कौन कृपालुहि सोहै॥ काको नाम अनख आलस कहें अघ अवगुणनि बिछोहै। को तुलसी से कुसेवकु संग्रह्यो शठ सब दिन सांई द्रोहै॥ २३१ ॥ और मोहिं कोहै काहि कहि हो। रंकराज ज्यों मनको मनोरथ जेहि सुनाइ सुख लहिहौं॥ यमयातना योनि संकट सब सहे दुसह अरु सहिहौं। मोको अगम सुगम तुम्हको प्रभु तउ फल चारि न चहिहौं॥ खेलिबेको खग मृग तरु किंकर ह्वै रावरो रामहौं रहिहौं। यहि नाते नर कहुँ सचुपैहौं या विनु परम पदहु दुख दहिहौं॥ इतनी जिय लालसा दासके कहत पानही गहिहौं। दीजे वचन कि हृदय आनिये तुलसी को पन निर्वहिहौं॥ २३२ ॥ दीनबंधु दूसरो कहँ पावों॥ को तुमविनु परपीर पाइहै केहि दीनता सुनावों॥ प्रभु अकृपालु कृपालु अलायक जहँ २ चितहि डोलावों। इहै समुझि सुनि रहों मौनहीं कोही भ्रम कहा गँवावों॥ गोपद बुडिवे योग कर्म करों बातनि जलधि थहावों। अति लालची काम किंकर मन मुख रावरो कहावों॥ तुलसी प्रभु जिय की जानत सब अपनो कछुक जनावों। सो कीजे जेहि भाँति छाँडि छल द्वार परो गुण गावों॥२३३॥मनोरथ मनको एकै भाँति। चाहत मुनि मन अगम सुकृत फल मनसा अघन अघाति॥ कर्म भूमि कलि जन्म कुसंगत मति विमोह मद माति। करत कुयोग कोटि क्यों पैयत परमारथ पद शांति॥ सइ साधु गुरु सुनि पुराण श्रुति बूझ्यो राग बाजीतांति। तुलसी प्रभु स्वभाउ सुरतरुसों ज्यों दर्पण मुखकांति॥२३४॥जन्म गयो बादिहिं वर बीति।

परमारथ पाले न पर्‌यो कछु अनुदिन अधिक अनीति ॥ खेलत खात लडकपन गो चलि यौवन युवतिन्ह लियो जीति । रोग वियोग शोक श्रम संकुल बड़ी वय वृथहि अतीति ॥ राग रोष ईर्षा विमोहवश रुची न साधु समीति । कहे न सुने गुणगण रघुवरके भइ न रामपद प्रीति ॥ हृदय दहत पछिताय अनल अब सुनत दुसह भवभीति । तुलसी प्रभुते होइ सो कीजिय समुझि विरदकी रीति ॥ २३५ ॥ ऐसेहि जन्म समूह सिराने । प्राणनाथ रघुनाथसे प्रभु तजि सेवत चरण विराने ॥ जे जड जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने । सूखत वदन प्रशंसत तिन्ह कहँ हरि ते अधिक करि माने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरन्तर करत न पाँय पिराने । सदा मलीन पंथके जल ज्यों कबहुँ न हृदय थिराने ॥ यह दीनता दूरि करिबेको अमित यतन उर आने । तुलसी चित चिन्ता न मिटै विनु चिन्तामणि पहिचाने ॥ २३६ ॥ जो पै जिय जानकी नाथ न जाने । तौ सब कर्म धर्म श्रमदायक ऐसइ कहत सयाने ॥ जे सुर सिद्ध मुनीश योगविद वेद पुराण बखाने । पूजा लेत देत पलटे सुख हानि लाभ अनुमाने ॥ काकोनाम धोखेहुं सुमिरत पातकपुंज सिराने । विप्र वधिक गज गृद्ध कोटि खल कौनके पेट समाने ॥ मेरुसे दोष दूरि करि जनके रेणुसे गुण उर आने । तुलसिदास तेहि सकल आश तजि भजहि न अजहु अयाने ॥ २३७ ॥ काहे न रसना रामहिं गावहि । निशिदिन पर अपवाद वृथा कत रटि २ राग बढावहि ॥ नरमुख सुन्दर मन्दिर पावन बसि जनि ताहि लजावहि । शशि समीप रहि त्यागि सुधा कत रवि कर जल कहँ धावहि । काम कथा कलि कैरव चन्दिनि सुनत श्रवणदै भावहि । तिनहिं हटकि कहि हरि कल कीरति कर्ण कलंक नशावहि ॥ जातरूप मति जुगुति रुचिर मणि रचि रचि हार बनावहि । शरण सुखद रविकुल सरोज रवि रामनृपहि पहिरावहि । वादविवादस्वादतजि भजि हरि सरसचरित चित लावहि । तुलसिदास भवतरहिं तिहूं पुर तू पुनीत यश पावहि ॥ २३८ ॥ आपनो हित रावरे सो जो पै सूझै ।

तौ जनु तनुपर अछत शीश सुधि क्यों कबन्ध ज्यों जूझै॥ निज अवगुण गुण राम रावरे लखि सुनि मति मन रूझै। रहनि कहनि समुझनि तुलसी की को कृपालु विनु बूझै॥२३९॥जाको हरि दृढ़ करि अंग करचो। सोइ सुशील पुनीत वेदविद विद्या गुणनि भरचो॥ उत्पति पांडुतनयकी करणी सुनिसतपन्थ डरचो। ते त्रयलोक्य पूज्य पावन यश सुनि २ लोक तरचो॥ जो निज धर्म वेद बोधित सो करत न कछु बिसरचो। विन अवगुण कृकलासकूप मज्जत कर गहि उधरचो॥ ब्रह्म विशिख ब्रह्माण्ड दहन क्षम गर्भ न नृपति जरचो। अजर अमर कुलिशहुँ नाहिंन वध सो पुनि फेन मरचो॥ विप्र अजामिल अरु सुरपति ते कहा जो नहिं बिगरचो॥ उनको कियो सहाय बहुत उरको सन्ताप हरचो॥ गणिका अरु कन्दर्प ते जग महँ अघ न करत उबरचो। तिनको चरित पवित्र जानि हरि निज हृदि भवन धरचो॥ केहि आचरण भलो मानै प्रभु सो तो न जानि परचो॥ तुलसिदास रघुनाथ कृपाको जोवत पन्थ खरचो॥२४०॥ सोइ सुकृती शुचि साँचो जाहि राम तुम रीझे। गणिका गृध्र वधिक हरिपुर गये लैकरसी प्रयाग कब सीझे॥ कबहुँ न डग्यो निगम मग ते पग नृप जग जानि जिते दुख पाये। जग धौं कौन दीक्षित जाके सुमिरत लै सुनाम वाहन तजि धाये॥ सुर मुनि विप्र विहाइ बड़े कुल गोकुल जन्म गोपगृह लीन्हों। बायों दियो विभव कुरुपति को भोजन जाइ विदुर घर कीन्हों॥ मानत भलहि भलो भक्तन ते कछुक रीति पारथहि जनाई। तुलसी सहज सनेह रामवश और सबै जलकी चिकनाई॥२४१॥ तब तुम मोहू से शठनिको हठि गति देते। कैसेहु नाम लेहि कोउ पामर सुनि सादर आगे ह्वै लेते॥ पापखानि जियजानि अजामिल यमगण तमकि ताइ ताको भेते। लिये छुड़ाइ चले कर मींजत पीसत दाँत गये रिसि रेते॥ गौतमतिय गज गृद्ध विटप कपि है नाथहि नीके मालुम तेते। तिन्ह तिन्ह का जनि साधु समाज तजि कृपासिंधु तब २ उठि गेते॥ अजहुँ अधिकआरत यहि द्वारे पतितदुनीन होत नहिं केते। मेरे पासंगहु न

पूजिहै ह्वै गएहैं होने खल जेते ॥ हौं अबलौं करतूति तिहारिय चितवतहुतो न रावरे चेते । अब तुलसी पूतरो बाँधि है सहिन जात मोपै परिहास एते ॥ २४२॥ तुम सम दीनबंधु न दीन कोउ मोसम सुनहु नृपति रघुराई । मो सम कुटिल मौलिमणि नहिं जग तुम सम हरि न हरन कुटिलाई॥ हौं मन वचन कर्म पातक रत तुम कृपालु पतितनि गतिदाई । हौं अनाथ प्रभु तुम अनाथ हित चित यह सुरति कबहुँ नहिं जाई ॥ हौं आरत आरतिनाशक तुम कीरति निगम पुराणनि गाई । हौं सभीत तुम हरण सकल भय कारण कौन कृपा बिसराई ॥ तुम सुख धाम राम श्रमभंजन हौं अति दुखित त्रिविध श्रम पाई ॥ यह जिय जानि दासतुलसी कहँ राखहु शरण समुझि प्रभुताई ॥२४३ ॥ यहै जानि चरणन्ह चित लायो । नाहिन नाथ अकारणको हित तुम समान पुराण श्रुति गायो । जननि जनक सुत दार बंधुजन भये बहुत जहँ २ हौं जायो । सब स्वारथ हित प्रीति कपट चित काहू ना हरिभजन सिखायो ॥ सुर मुनि मनुज दनुज अहि किन्नर मैं तनु धरि शिर काहि न नायो । जरत फिरत त्रयताप पापवश काहु न हरि कहि कृपा जुडायो ॥ यत्न अनेक किये सुख कारण हरिपद विमुख सदा दुख पायो । अब थाक्यो जलहीन नाव ज्यों देखत विपति जाल जग छायो ॥ मोकहँ नाथ बूझिये यह गति सुखनिधान निजपति बिसरायो । अब तजि रोष करहु करुणाहरि तुलसिदास शरणागत आयो ॥ २४४ ॥ याहि ते मैं हरिज्ञान गँवायो । परि हरि हृदय कमल रघुनाथहि बाहर फिरत विकल भयो धायो । ज्यों कुरंग निज अंग रुचिर मद अति मतिहीन मर्म नहिं पायो । खोजत गिरि तरु लता भूमि बिल परम सुगन्ध कहाँते धौं आयो ॥ ज्यों सर विमल वारि परिपूरण ऊपर कछु सिवार तृण छायो । जारत हियो ताहि तजिहौं शठ चाहत यहि विधि तृषा बुझायो ॥ व्यापत त्रिविधताप तनुदारुण तापर दुसह दरिद्र सतायो । अपनेहिं धाम नाम सुरतरु तजि विषय बबूर बाग मन लायो ॥ तुम सम ज्ञाननिधान मोहि सम मूढ़ न आन पुराणनि गायो । तुलसि-

दासप्रभु यह विचारि जिय कीजै नाथ उचित मन भायो॥ २४५॥ मोहिं मूढ़मनबहुत बिगोयो। याके लिए सुनहु करुणामय मैं जग जन्म जन्म दुखरोयो॥ शीतल मधुर पियूष सहज सुख निकटहिं रहत दूरि जनु खोयो। बहुभाँतिन श्रम करत मोहवश वृथाहिं मन्दमति वारिविलोयो॥ कर्म कीच जिय जानि सानि चित चाहत कुटिल मलहिमलधोयो। तृषावन्त सुरसरि विहायशठ फिरि २विकल अकाश निचोयो॥ तुलसिदास प्रभु कृपाकरहु अब मैं निजदोष कछू नहिं गोयो। डासतही गइ बीति निशा सब कबहुँ न नाथ नींदभरि सोयो॥२४६॥ लोक वेदहू विदित बात सुनि समुझि मोहमोहित विकल मति थिति न लहति। छोटे बड़े खोटे खरेमोटेऊ दूबरे राम रावरे निबाहे सबहीकी निबहति॥ होती जो आपने वश रहती एकही रस दुनी न हरष शोक शासति सहति। चहतो जो जोइ जोइ लहतो सो सोइ सोइ केहू भाँति काहू की न लालसा रहति॥ कर्मकाल स्वभाव गुण दोष जीव जग माया ते सो सभय भौंह चकित चहति। ईशनि दिगीशनि योगीशनि मुनीशनिहूं छोड़ति छोडायेते जो गहायेते गहति॥ शतरंज को सो राज काठको सब समाज महाराज बाजी रची प्रथम न नहति। तुलसी प्रभुके हाथ हारिबो जीतिबो नाथ बहु वेष बहु सुख शारदा कहति २४७॥ राम जपु जीह जानि प्रीति सों प्रतीति मानि रामनाम जपे जैहै जी की जरानि। राम नाम सों रहनि रामनाम की कहा न कुटिल कलिमल शोकसङ्कटहरानि॥ रामनामको प्रभाउ पूजि यत गणराउ कियो न दुराउ कही आपनी करानि। भवसागरको सेतु काशीहूं सुगति हेतु जपत शारद शंभु सहित घरानि॥ वाल्मीकि व्याध हैं अगाध अपराध निधि मरा मरा जपें पूजे मुनि अमरनि। रोक्यों विन्ध्य सोख्यो सिंधु घटजहूं नामबल हारयो हिय खारो भयो भूसुर डरनि॥ नाम महिमा अपार शेष शुक बार २ मति अनुसार बुध वेदहु बरनि। नामरति कामधेनु तुलसीको कामतरु रामनाम है विमोह तिमिर तरनि॥२४८॥ पाहि पाहि रामपाहि रामभद्र रामचंद्र सुयश श्रवण सुनि आयो हौं शरण। दीनबन्धु दीनता दरिद्र दाह दोष दुख

दारुण दुसह दर दरप हरण ॥ जब २ जगजाल व्याकुल करम काल सब खल भूप भये भूतलभरण । तब २ तनु धरि भूमिभार दूरि करि थापे मुनि सुर साधु आश्रम वरण ॥ वेद लोक सब साखी काहु कीरती न राखी रावणकी वन्दि लागे अमर मरण । ओकदै विशोक किये लोक पति लोकनाथ रामराज भयो धर्म चारिहु चरण ॥ शिला गुह गृद्ध कपि भील भालु रातिचर ख्यालही कृपालु कीन्हे तारण तरण । पीलउद्धरण शीलसिंधु ढील देखियाति तुलसी पै चाहत गलानिहीं गरण ॥ २४९ ॥ भली भाँति पहिचाने जाने साहब जहाँ लों जग ज़ूडे होत थोरेही २ गरम । प्रीति न प्रवीन नीति हीन रीतिके मलीन मायाधीन सब किये कालहूँ करम ॥ दानव दनुज बडे महामूढ़ मूढ़ चढ़े जीते लोक नाथ नाथबल-निभरम ॥ रीझि २ दिये बर खीझि २ घाले घर आपने निवाजे कीन काहूके शरम । सेवा सावधान तू सुजान समरथ साँचो सद्गुणधाम राम पावन परम ॥ सुरुख सुमुख एकरस एकरूप तोहिं विदित विशेषि घट २ के मरम। तोसों नतपाल न कृपाल न कंगाल मोसों दया में बसत देव सकल धरम ॥ राम कामतरु छाँह चाहै रुचि मन माहँ तुलसी विकल बलि कालि कुधरम ॥ २५० ॥ तौ हौं बार बार प्रभुहि पुकारि कै खिजावतौं न जोपै मोकों होतो कहुँ ठाकुर ठहर । आलसी अभागे मोसे तैं कृपालु पाले पोसे राजा मेरे राजाराम अवध शहर ॥ सेए न दिगीशन दिनेश गणेश गौरी हित कै न माने विधि हरिउ न हर । राम नामहीं सों योग क्षेम नेम प्रेमपण सुधा सो भरोसे एहु दूसरो जहर ॥ समाचार साथके अनाथ नाथ कासों कहौं नाथहीके हाथ सब चोरऊ पहर॥ निज काज सुर काज आरतके काज राज बूझिये विलंब कहाँ कहूं न गहर। रीतिसुनि रावरी प्रतीति प्रीति रावरे सों डरत हों देखि कालिकालको कहर ॥ कहेही बनैगी कै कहाये बलिं जाउँ राम तुलसी तू मेरी हारी हिये न हहर ॥ २५१ ॥ राम रावरो स्वभाउ गुण शील महिमा प्रभाउ जान्यो हरहनुमान लषण भरत। जिन्हके हिये सुथल राम प्रेम सुरतरु लसत सरस सुख फूलत फरत॥ आप माने स्वामीके सखा सुभाइ

पति ते सनेह सावधान रहत डरत। साहब सेवक रीति प्रीति परमिति नीति नेमको निबाह एकटेक न टरत॥ शुक सनकादिक प्रह्लाल नारदादि कहैं रामकी भगति बड़ी विरत निरत। जाने बिनु भक्ति न जानिबो तिहारे हाथ समुझि सयाने नाथ पगनि परत॥क्षमत विमत न पुराण मत एक पथ नेति नेति नेति नित-निगम करत। औरनि की कहा चली एकै बात भले भली राम नाम लिए तुलसीहूंसे तरत॥ २५२॥ बाप आपने करत मेरी घनी घटिगई। लालची लवार की सुधारिये बारक बलि रावरी भलाई सबही की भली भई॥ रोगवश तनु कुमनोरथ मलिन-मन पर अपवाद मिथ्या वाद वाणी हुई। साधनकी ऐसी विधि साधन बिना न सिद्धि बिगरी बनावै कृपानिधि कृपा नई॥ प-तितपावन हित आरत अनाथनिको निराधारको अधार-दीनबंधु दई। इन्ह में न एको भयो बूझिं न जूझे न जयो ताहि ते त्रिताप तयो लुनियत बई॥ स्वांग सूधो साधु को कुचाल कालिते अधिक परलोक फीकीमति लोक रंग रई। बड़े कुसमाज राज आजु लौं जो पाए दिन महाराज केहू भाँति नाम ओट लई॥ राम नामको प्रताप जानियत नीके आप मोको गति दूसरी न विधि निरमई। खीझिबे लायक करतब कोटि कोटि कटु रीझिबे लायक तुलसी की निलजई॥ २५३॥ राम राखिये शरण राखि आए सबदिन। विदित त्रिलोक तिहूँकाल न दयालु दूजो आरत प्रणतपाल को है प्रभु बिन॥ लाले पाले पोपे तोपे आलसी अभागी अघी नाथ पै अनाथनि सो भये न उऋन। स्वामी समरथ ऐसो हौं तिहारो जैसो तैसो कालचाल हेरि होति हिए घनी घिन॥ खीझि रीझि बिहँसि अनख क्यों हूं एक बार तुलसी तू मेरो बलि कहियत किन। जाहि शूल निरमूल होहिं सुख अनुकूल महाराज राम रावरी सों तेहि छिन॥ २५४॥ राम रावरो नाम मेरो मातु पितु है। सुजन सनेही गुरु साहब सखा सुहृद राम नाम प्रेम अविचल वितु है॥ शत कोटि चरित अपार दधिनिधि मथि लियो काढ़ि वामदेव नाम घृतु है। नामको भ-रोसो बल चारिहूं फलको फल सुमिरिये छाँड़िछल भलो कृतु है॥ स्वारथ

साधक परमारथदायक नाम राम नाम सारिखो न और हितु है । तुलसी स्वभाव कही साँचिये परैगी सही सीतानाथ नाथनके चितहू कौ चितु है ॥ २५५ ॥ राम रावरो नाम साधु सुरतरु है । सुमिरे त्रिविधघाम हरत पूरत काम सकल सुकृत सरसिजको सरहै ॥ लाभहूको लाभ सुखहूको सुख सरबस पतितपावन डरहूको डर है । नीचेहूको ऊँचेहूको रंकहूको रायहूको सुलभ सुखद आपनो सो घर है ॥ वेदहुँ पुराणहुँ पुरारिहुँ पुकारि कह्यो नाम प्रेम चारि फलहूको फर है । ऐसे राम नाम सों न प्रीति न प्रतीति मन मेरे जान जानिबो सोई नर खर है ॥ नामसों न मातु पितु मीत हित बंधु गुरु साहिब सुधी सुशील सुधारक है । नाम सों निबाह नेह दीनको दयालु देह दासतुलसी को बलि बडो वर है ॥२५६॥ कहे बिनु रह्यो न परत कहे रामरस न रहत । तुमसे सुसाहब की ओट जन खोटो खरो काल की करमकी कुशासति सहत ॥ करत विचार सार पैयत न कहूं कछु सकल बड़ाई सब कहाँ ते लहत । नाथ की महिमा सुनि समुझि आपनी ओर हेरि हारिकै हहरि हृदय दहत ॥ सखा न सुसेवक न सुतिय न प्रभु आप माय बाप तुही साँचो तुलसी कहत । मेरी तो थोरी है सुधैरगी बिगरियो बलि राम रावरी सो रही रावरो चहत॥ २५७॥ दीनबंधु दूरियो किये दीनको न दूसरो शरण । आपको भलो है सब आपनेको कोऊ कहूं सबको भलो है राम रावरो चरण ॥ पाहनपशु पतंग कोल भील निशिचर काँच ते कृपानिधान किए सुवरण । दंडक पुहुमि पायँ परशि पुनीत भई उकठे विटप लागे फूलन फरण ॥ पतित पावन नाम बामहूं दाहिनो देव दुनी न दुसह दुख दूषण दरण । शीलसिंधु तोसों ऊंची नीचियो कहत शोभा तोसों तुही तुलसीको आरतिहरण ॥ २५८ ॥ जानि पहिचानि मैं बिसारे हौं कृपानिधान एतो मान ढीठ हौं उलटि देत खोरि हौं। करत यतन जासों जोरिवे को योगीजन तासों क्यों हूं जुरी सोअभागो बैठे तोरिहौं ॥ मोसे दोष कोशको भुवनकोश दूसरो न आपनी समुझि सूझि आयो टकटोरि हौं । गाढ़ीके

श्वान की नाईं माया मोह की बड़ाई छिनहिं तजत छिन भजत बहोरिहौं। बडो सांई द्रोही न बराबरी मेरी को कोऊनाथकी शपथ किये कहत करोरि हौं॥ दूरि कीजै द्वार ते लवार लालची प्रपंची सुधा सों सलिल शूकरी ज्यों गह डोरि हौं। राखिये नीके सुधारि नीच को डारिये मारि दुहूं ओर की विचारि अब न निहोरि हौं। तुलसी कही है सांची रेख बार २ खांची ढील किये नाम महिमाकी नाव बोरिहौं॥ २५९॥ रावरी सुधारी जो बिगारी बिगरेगी मेरी कहो बलि वेद किन लोकु कहा कहै गो। प्रभुको उदास भाउ जनको पाप प्रभाउ दुहूं भाँति दीनबंधु दीन दुख दहैगो॥ मैंतो दियो छातीपवि लयो कलिकालदवि शासति सहस परवश को न सहैगो। बांकी विरदावली बनैगी पालेही कृपालु अन्तमेरो हाल हेरियो न मन रहैगो॥ करमी धरमी साधु सेवक विरतरत आपनी भलाई थल कहां को न लहैगो। तेरे मुँह फेर मोसे कायर कपूत कूर लटे लटपटेनिको कौन परिगहैगो॥ काल पाय फिरत दशा दयालु सबही की तोहिं बिनु मोहिं कबहूं न कोऊ चहैगो। वचन करम हिये कहौं राम सौंह किये तुलसी पैनाथके निबाहे निबहैगो॥ २६०॥ साहब उदास भये दास खास खीस होत मेरी कहा चली हौं बजाइ जाइ रह्योहौं॥ लोकमें न ठाउँ परलोकको भरोसो कौन हौंतो बलिजाउँ रामनाम हीते लह्यो हौं॥ करम स्वभाव काल काम कोह लोभ मोह ग्रह-अति गहनि गरीब गाढ़े गह्यौ हौं। छोरिवेको महाराज बाँधिवेको कोटि भट पाहि प्रभु पाहि तिहुँ ताप पापदह्यो हौं॥ रीझि बूझि सबकी प्रतीति प्रीति एही द्वार दूध को जर्यो पियत फूंकि २ मह्यो हौं। रटत २ लट्यो जाति पाँति भाँति घट्यो जूठनिको लालची चह्यो न दूध नह्यो हौं॥ अनत चह्यों न भलो सुपथ सुचाल चल्यो नीके जिय जानि इहाँ भलो अनचह्यो हौं। तुलसी समुझि समुझायो मन बार बार अपनों सो नाथहूं सों कहि निरवह्यो हौं॥ २६१॥ मेरी न बनै बनाये मेरे कोटि कल्प लौं राम रावरे बनै बनायेपल पाउ में। निपट सयाने हौ कृपानिधान कहा कहौं लिये बेर बदलि अमोलमणि

आउ मैं ॥ मानस मलीन करबत कलिमल पीन जीहहू न जप्यो नाम बक्यो आउबाउ मैं। कुपथ कुचाल चल्यो भयो न भूलिहूं भलो बाल दशाहू न खेल्योखेल त सुदाउमैं ॥ देखी देखा दंभ ते कि संग ते भई भलाई प्रगटि जनाई कियो दुरित दुराउ मैं। राग रोष द्वेष पोषेगोगण समेत मन इनकी भगतिकीन्हीं इनहींको भाउ मैं ॥ आगिलो पाछिलो अबहूंको अनुमानही ते बूझियत गति कछु कीन्हीं तो न काउ मैं ॥ जग कहै राम की प्रतीति प्रीति तुलसीहू झूठे सांचे आश्रय साहब रघुराउ मैं ॥ २६२ ॥ कह्यो न परत विनु कह्यो न रह्यो परत बड़ो सुख कहत बडे सो बलि दीनता । प्रभु की बडाई बडी आपनी छोटाई छोटी प्रभु की पुनीतता आपनी पापपी-नता ॥ दुहूँओर समुझि सकुचि सहमत मन सन्मुख होत सुनि स्वामीसमीचीनता । नाथ गुणगाथ गाए हाथजोरि माथो नाए नीचऊ निवाजे प्रीति रीति की प्रवीणता ॥ यहि दरबारहै गरब ते सरबहानि लाभ योग क्षेम को गरीबी मिस कीनता । मोटो दशकन्ध सों न दूबरो विभीषण सों बूझि परि रावरे की प्रेमपराधीनता ॥ यहां की सयानप अयानप सहस सम सूधो सतभाय कहै मिटति मलीनता । गृद्ध शिला शबरी की सुधि सब दिन किए होइगी न सांई सों सनेह हित हीनता ॥ सकल कामना देत नाम तेरो कामतरु सुमिरत होत कलिमल छलक्षी-नता। करुणानिधान वरदान तुलसी चहत सीतापति भगति सुरसरिनीर मीनता ॥ २६३ ॥ नाथ नीके के जानि बी ठीक जन जीय की । रावरो भरोसो नाह कैसे प्रेम नेम लियो रुचिर रहनि रुचि मति तीय की ॥ दुकृत सुकृत वश सबही सों संग पर्‌यो परखि पराई गति आपनेहूं कीय की । मेरे भलेको गोसांई पोच को न शोच होय सकल किये कहौं सौंह साँची सियपीय की ॥ ज्ञानहूं गिराके स्वामी बाहर अन्तर्यामी यहाँ क्यों दुरैगी बात सुख की औ हीयकी । तुलसी तिहारो तुमहीं ये तुलसी के हित राखि कहूं हौं जोपै हुतो हो माखी घीय की ॥ २६४ ॥ मेरो कह्यो सुनि पुनि भावै तोहिं करि सो । चारिहू

विलोचन विलोक तू तिलोक महँ तेरो तिहुँकाल कहुँ कोहै हितु हारि सो ॥ नए नए नेह अनुभये देह गेह वासि परिखे प्रपंची प्रेम परत उघरि सो।सुहृद समाज दगाबाजिही को सौदा सूत जब जाको काज तब मिले पाँय परिसो ॥ विबुध सयाने पहिचाने कैंधौ नाहीं नीके देत एक गुण लेत कोटि गुण भरिसो । करम धरम श्रम फल रघुवर विनु राख कोसो होम है ऊसर कैसो बरिसो ॥ आदि अन्त बीच भलो भलो करै सबहीको जाको यश लोक वेद रह्यो है बगरि सो । सीताप-तिसारिखो न साहब शीलनिधान कैसे कल परै शठ बैठो सो विसरिसो ॥ जीवको जीवन प्राण प्राणको परमहित प्रीतम पुनीत कृत नीच निदरि सो । तुलसी तोको कृपाल जो कियो कोशलपाल चित्र-कूटको चरित्र चेतु चित करि सो ॥ २६५ ॥ तन शुचि मन रुचि मुख कहौं जन हौं सिय पीको । केहि अभाग जान्यो नहिं जो न होइ नाथ सों नातो नेह न नीको ॥ जल चाहत पावक लहौं विष होत अमी को। कलि कुचाल सन्तनि कही सोइ सही मोहिं कछु फहम न तरनि तमी को ॥ जानि अन्ध अञ्जनकहै बन बाघिनि घी को । सुनि उपचार विकार को सुविचार करौं जब तब बुद्धि बल हरै हीको ॥ प्रभु सो कहत सकुचत हौं परौं जनि फिरि फीको । निकट बोलि बलि बरजिये परिहरै ख्याल अब तुलसिदास जड़ जीको ॥२६६॥ ज्यों ज्यों निकट भयो चहौं कृपालु त्यों त्यों दूरि परयोहौं । तुम चहुँ युग रस एक राम हौं हूं रावरो यदपि अघ अवगुणन्हि भरयोहौं ॥ बीच पाइ नीच बीचहीं छरनि छरयोहौं । हौं सुवरण कुवरण कियो नृप ते भिखारि करि सुमति ते कुमति करयोहौं ॥ अगणित गिरि कानन फिरयो विनु आगि जरयोहौं । चित्रकूट गये मैं लखी कलिकी कुचाल सब अब अपडरनि डरयोहौं ॥ माथनाइ नाथ सों कहौं हाथ जोरि खरयोहौं । चीन्हों चोर जिय मारिहै तुलसी सों कथा सुनि प्रभु सों गुदरि निवरयो ॥२६७॥ प्रणकरिहौं हठि आजुते राम द्वार परयोहौं तू मेरो यह विन कहे उठिहौं न जनम भरि प्रभुकी सौं करि निवरयोहौं ॥ दै दै धक्का यमभट थके टारे न टरयोहौं । उदर दुसह शासति सही बहुबार जनमि जग नरक निदरि निकरयोहौं॥

हौं मचला लै छाँडिहौं जेहि लाग अरचोहौं । तुम दयालु बनिहै दिये बलि विलंब न कीजिय जात गलानि गरचो हौं ॥ प्रगट कहत जो सकुचिये अपराध भरचोहौं । तो मनमें अपनाइये तुलसिहि कृपा करि कलिविलोकि हहरचोहौं ॥ २६८ ॥ तुम अपनायो तब जानिहौं जब मन फिरि परिहै । जेहि सुभाव विषयनि लग्यो तेहिं सहज नाथ सों नेह छाँडि छल करि है ॥ सुत की प्रीति प्रतीति मीत की नृप ज्यों डर डरिहै । अपनो सो स्वारथस्वामी सों चहुँ बिधि चातक ज्यों एकटेक ते नहि टरिहै ॥ हरषिहै न अति आदरे निदरे न जरि मरिहै । हानि लाभ दुख सुख सबै समचित हित अनहित कलि कुचाल परिहरिहै ॥ प्रभु गुण सुनि मन हरषि है नीर नयनानि ढरिहै । तुलसिदास भयो रामको विश्वास प्रेम लखि आनन्द उमँगि उर भरि है ॥ २६९ ॥ राम कबहुँ प्रिय लागिहौ जैसे नीर मीनको । सुख जीवन ज्यों जीवको मणि ज्यों फणि को हित ज्यों धन लोभ लीन को ॥ ज्यों स्वभाव प्रिय लगति नागरी नागर नवीनको । त्यों मेरे मन लालसा करिये करुणा कर पावन प्रेम पीनको ॥ मनसा को दाता कहैं श्रुति प्रभु प्रवीन को । तुलसिदास को भावतो बलिजाउँ दयानिधि दीजै दान दीन को ॥२७०॥ कबहुँ कृपा करि रघुवीर मोहूँ चितैहो । भलो बुरो जन आपनो जिय जानि दयानिधि अवगुण अमित वितैहो ॥ जन्म जन्म हौं मन जित्यो अब मोहिं जितैहो । हौं सनाथ ह्वैहों सही तुमहूं अनाथपति जो लघुतहि न भितैहो ॥ विनय करों अप भयहुँ ते तुम्ह परमहितै हो । तुलसिदास कासों कहै तुमही सब मेरे प्रभु गुरु मात पितैहो ॥ २७१ ॥ जैसो हौं तैसो हौं राम रावरो जन जानि परि परिहरिये । कृपासिंधु कोशलधनी शरणागतपालक ढरनि आपनी ढरिये ॥ हौं तो बिगरायल और को बिगरो न बिगरिये । तुम सुधारि आए सदा सबकी सबही विधि अब मेरियो सुधरिये ॥ जग हँसिहै मेरे सँग्रहे कत एहि डर डरिये । कपि केवट कीन्हे सखा जेहि शील सरलचित

तेहि स्वभाव अनुसरिये ॥ अपराधी तउ आपनो तुलसी न बिसरिये। टूटियो बाँह गरे परै फूटे हूं विलोचन पीर होत हितकरिये ॥ २७२ ॥ तुम जानि मन मैलो करो लोचन जानि फेरो। सुनहु राम बिनु रावरे लोकहु परलोकहु कोउ न कहू हितु मेरो ॥ अगुण अलायक आलसी जानि अधन अनेरो। स्वारथके साथिन तज्यो तिजरा कैसो टोटक औचट उलटि न हेरो ॥ भक्ति हीन वेद बाहिरो लखि कलिमल घेरो। देवनिहू देव परिहरयो अन्याव न तिनको हौं अपराधी सब केरो॥नाम की ओट लै पेट भरत हौं पै कहावत चेरो। जगत विदित बात है परी समुझिये धौं अपने लोक की वेद बड़ेरो ॥ ह्वै है जब तब तुम्हहिं ते तुलसीको भलेरो। दीन दिन हूं दिन बिगरिहै बलिजाउँ बिलंब किए अपनाइये सबेरो॥२७३॥ तुम तजि हौं कासों कहौं और को हितु मेरे ॥ दीनबंधु सेवक सखा आरतअनाथ पर सहज छोहू केहि केरे ॥ बहुत पतित भवनिधि तरे बिनु तरिनी बिनु बेरे। कृपा कोपसतिभायहुँ धोखेहु तिरिछेहुँ राम तिहारेहि हेरे ॥ जो चितवनि सौंधी लगे चितइये सबेरे। तुलसिदास अपनाइये कीजै न ढील अब जीवन अवधि अति नेरे ॥ २७४ ॥ जाऊँ कहाँ ठौर है कहां देव दुखित दीन को। को कृपालु स्वामी सारिखो राखे शरणागत सब अंग बल विहीन को॥गणिहिं गुणिहिं साहब लहै सेवा समीचीन को। अधन अगुण आलसिनको पालवो फबिआयो रघुनायक नवीन को ॥ मुख कै कहा कहौं विदित है जीकी प्रभु प्रवीन को। तिहुँकाल तिहुँलोक में एक टेक रावरी तुलसी से मनमलीन को ॥२७५॥ द्वार द्वार दीनता कही काढ़ि रद परी पाहूं। है दयालु दुनि दशदिशा दुख दोष दलन क्षम कियो न संभाषण काहूँ ॥ तनु जनेउ कुटिल कीट ज्यों तज्यो मातु पिताहूं। काहेको रोष दोष काहियों मेरेही अभाग मोसों सकुचत सब छुइ छाहूं। दुखित देखि संतन कह्यो शोचै जनि मन माहूं। तोसे पशु पाँवर पातकी परिहरे न शरण गए रघुबर ओर निवाहूं ॥ तुलसी तिहारो भये भयो सुखी प्रीति प्रतीति विनाहूं। नामकी महिमा शीलनाथको मेरो भलो विलोकि अबते सकुचाहूं सिहाहूं॥ २७६ ॥ कहा न कियो कहां न गयो शीश काहि न नायो।

राम रावरो बिनभये जन जनमि जनमि जग दुख दशहूं दिशि पायों। आश विवश खास दास है नीच प्रभुनिजनायों । हाहा करि दीनता कही द्वार द्वार बारबार परी न छार मुहँ बायों ॥ अशन वसन बिन बावरो जहँतहँ उठि धायों । महिमा अति प्रिय प्राणते तजि खोलि-खलनि आगे खिन खिन पेट खलायों ॥ नाथहाथ कछु नाहिं लग्यो लालचललचायों। सांच कहौं नाच कौन सो जौ न मोहिं लोभ लघु निलज नचायों ॥ श्रवण नयन मन मग लगे सब थल पतितायों॥ मूंड़मारि हिय हारिकै हित हेरिहहरि अब चरण शरण ताकि आयों । दशरथके समरथ तुम्हीं त्रिभुवन यशगायों।तुलसी नमत अवलोकिये बालि बांह बोल दै विरदावली बुलायों ॥ २७७ ॥ रामराय बिन रावरे मेरेको हितू सांचो । स्वामी सहित सबसों कहों सुनि गुणि विशेषि कोउ रेख दूसरी खांचो ॥ देह जीव योगके सखा मृषा टाच न टांचो । किये विचार सार केदलि ज्यों मणि कनक संग लघु लसत बीच बिच कांचो ॥ विनयपत्रिका दीनकी बापु आपुही बांचो । हिये हेरि तुलसी लिखी सो स्वभाव सही करि बहुरि पूछियेहि पांचो ॥ २७८॥ पवनसुवन रिपुदवन भरत लाल लषण दीन की । निज निज अवसर सुधि किये बलिजाउँ दास आश पूजि है खास खीन की ॥ राज द्वार भली सब कहैं साधु समीचीन कीं। सुकृत सुयश साहब कृपा स्वारथ परमारथ गति भयेगति विहीनकी। समय सँभारि सुधारिवी तुलसी मलीनकी । प्रीति रीति समुझाइवी नतपाल कृपालुहि परामिति पराधीन की॥२७९॥मारुतिमन रुचि भरतकी लखि लषण कही है।कलि-कालहू नाथ नामसों प्रतीति प्रीति एक किङ्कर की निबही है ॥सकल सभा सुनि लै उठी जानि रीति रहीहै॥ कृपा गरीबनिवाज की देखत गरीबको साहब बाँह गहीहै॥विहँसि राम कह्यो सत्य है सुधि मैंहूँ लहीहै मुदित माथ नावत बनीतुलसीअनाथकी परी रघुनाथहाथ सहीहै ॥

यदि रघुपतिभक्तिर्मुक्तिदा वक्ष्यते सा सकलकलुषहर्त्री सेवनायामयासात् ।
शृणुत सुमतिमन्तो निर्मिता रामभक्तैर्जगति तुलसिदासै रामगीतावलीयम् ॥ १ ॥

इति श्रीतुलसीदासकृता विनयपत्रिका समाप्ता ।

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी-मुंबई.

श्रीगणेशायनमः ।

कलि धर्म्माधर्म निरूपण ।
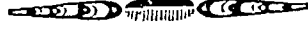
प्रसिद्ध कविवर श्रीमद्गोस्वामि तुलसी-
दासजी रचित
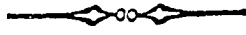
जिसमें
वर्तमान कलिमल विधान चारो वर्णका आचार अविचार
धर्म अधर्म उदाहरणों युक्त वर्णितहै ।

वही–लोकोपकारार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

श्रावण संवत् १९५२

श्रीरामपंचायतन ॥
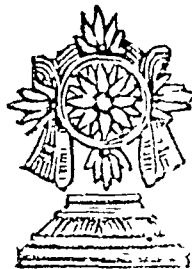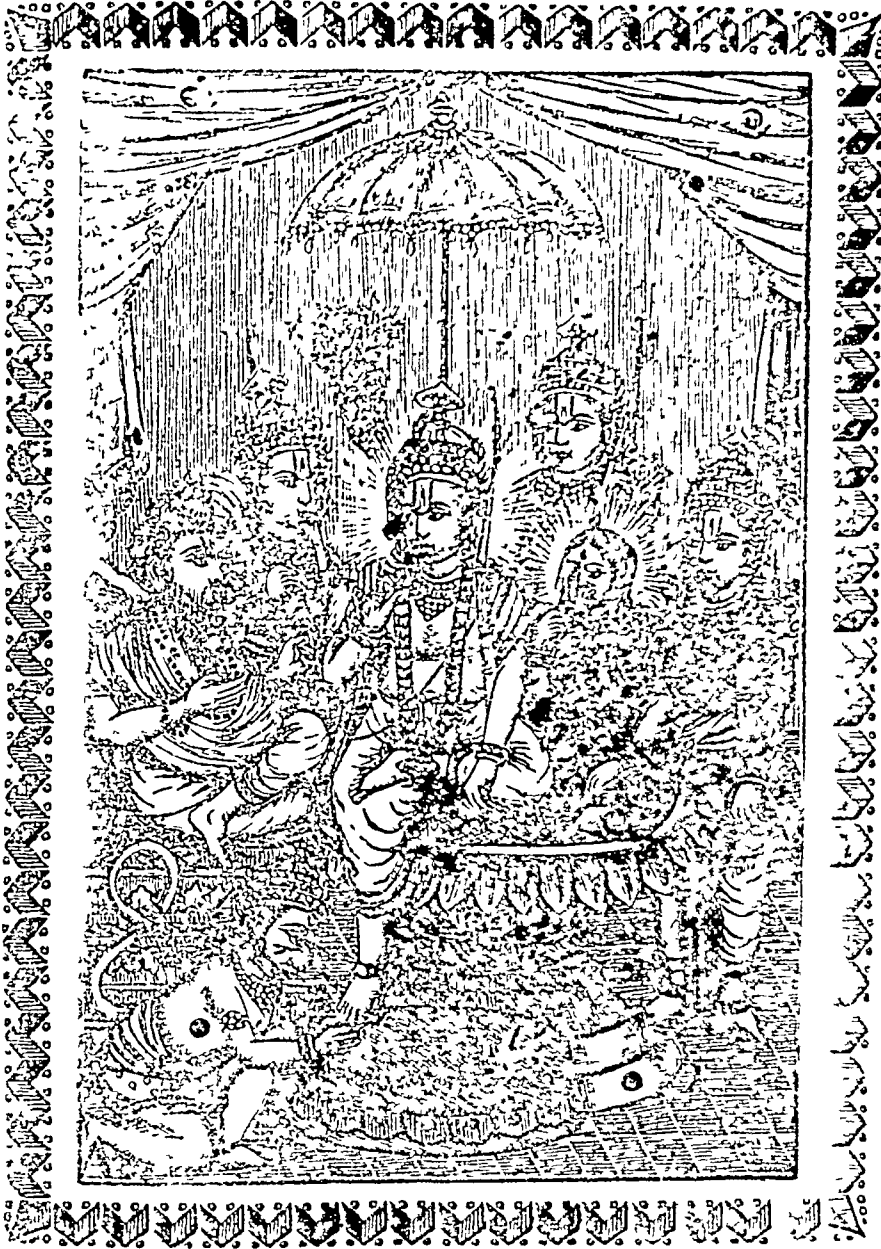
श्रीः ।

अथ श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास कृत

कलिधर्म्माधर्म निरूपण ।

चौ०—रेवातीर सुदेश सुग्रामा ❀ बसहि विप्र इक शंकर नामा ॥
धर्म शील शुचि साधु स्वभाऊ ❀ भूलि कुमारग धरै न पाऊ ॥
सुत विनीत पतिपूजक नारी ❀ गृह समाज सब भाँतिसुखारी ॥
रेवा मज्जन सज्जन सेवा ❀ प्रिय गुरु अतिथि प्रीय महिदेवा ॥
सुजन शिरोमणि गुणगण गेहू ❀ शिव सेवक हरि चरण सनेहू ॥
सुनै निगम आगम विधिनाना ❀ रामायण इतिहास पुराना ॥
लोक चतुर परलोक सयाना ❀ जीवन धन हरि हर गुणगाना ॥
आश्रम वरण धर्म युग धर्मा ❀ कर्म विकर्म कुकर्म सुकर्मा ॥

दोहा—ज्ञान विराग उपासना, कर्म अनेक प्रकार ॥
शंकर सादर धर्म सब, समुझे बारहिबार ॥

श्रुति प्रणीत नृपगण मनुवानी ❀ नरक स्वर्ग अपवर्ग कहानी ॥
सब हित धर्म रहस्य घनेरे ❀ पुण्य प्रबंध विमल बहुतेरे ॥
सुकवि सुभाषित सरल सुहाये ❀ सुने सकल जहँ जहँ जग पाये ॥
युग प्रसंग कलिकाल स्वभाऊ ❀ सुनि मन सोच भूमि सुरराऊ ॥
मति अनुहार कहै कवि सोई ❀ कलि कुचालि जग प्रगट न होई ॥
कलिमल मलिन सकल नर नारी ❀ वरण धर्म नहिं आश्रम चारी ॥
नीच निरंकुश निठुर नृपाला ❀ सचिव स्वारथी क्रूर कराला ॥
राज सरिस सब प्रजा अभागी ❀ दुसह दुरित दुख दारिद दागी ॥

दो०—दंभ सहित सब धर्म कलि, छल समेत व्यवहार ॥
स्वारथ सहित सनेह सब, रुचि अनुहर आचार ॥

विप्र सुमारग पाउँ न देहीं ❀ बेचहि बेद धर्म दुहि लेहीं ॥
हरि हर परिहरि पूजहिं प्रेता ❀ सभा सुवेष कुचालि निकेता ॥

बोलत कोकिल करतब कागा ❀ वितहित होम नेम जप जागा ॥
कहत करत पट कर्म सुजाना ❀ सेवा करि करि लेहिं कुदाना ॥
पूजन पठन न होत प्रवीना ❀ छल मलीनमन धन आधीना ॥
वासर सो नाहिं होहिं सुपापी ❀ पर अपकार परायण पापी ॥
कलि इहिविधि बुध विप्र विगोये ❀ मूढ़विशेष झुठाहिंहिं खोये ॥
परहिं कूपजहँ दिनहि उजारे ❀ किहि अवलंवहि अंध विचारे ॥

दोहा—धर्म सुतीरथ मंत्रसुर, महिमहिदेव विचार ।
तेछलि कलिमल किय प्रथम, योगौ हरिसो धार ॥

क्षत्री छलमय कलि मल मूला ❀ वंचकविप्र वेदप्रतिकूला ॥
अपने धर्म न सुपनेहु वलही ❀ समर सपरस शूर लर मरहीं ॥
नीच विचार नीच व्यवहारू ❀ नीच जीविका नीच अचारू ॥
क्षत्रिजात अभिमान न लेही ❀ कर्ममलेच्छ जीतियशलेही ॥
शूर सहाय सबल बलजेई ❀ क्षत्रीजाति कहावत तेई ॥
तीसर वर्ण विशेष विवाकी ❀ सेवाकारि जगजीवन जाकी ॥
मूलन सुधनहिं सोइ सुजाती ❀ सकल वरणसंकर उतपाती ॥
आश्रम मध्य मुख्य संन्यासी ❀ तिहि कीन्हे कलिकाल निवासी ॥

दोहा—वरण विवेक विरागमय, मानस कलिमल खानि ।
मुंडित मूँड कषाय पट, दंडकमंडलु पानि ॥

सून कलह प्रिय पातक पीना ❀ संयम नेम दया दम हीना ॥
ब्रह्म कहावहिं ब्रह्म निरूपन ❀ जगवंचक वितहित बहुरूपन ॥
वासर साधहिं योग समाधी ❀ भोग परायण शांति उपाधी ॥
बोलनिवेष हंस वक करणी ❀ पंडित विहत यती गति वरणी ॥
परममूढ परमारथवादी ❀ परमहंसवहुवेष विषादी ॥
पठेविप्रढिगराहि यति होता ❀ परमहंस पथ पाप निसोता ॥
आश्रम नहिं कलि काननवासी ❀ कुटिल कुटीचर कलिमल रासी ॥
वटुव्रत रहित सकल गुणखाली ❀ पढ़ि सुनि कुलगुरु करहिं कुचाली ॥

दो०—निलज निरंकुश निठुर सब, पढ़ै थोर बहु गाल ॥
आश्रम वरण विगोइ सब, गलगाजत कलिकाल ॥
गृही गृहाश्रम धर्म विहीना ❋ धरणि धाम धन सोच मलीना ॥
सुरगुरुपितर अतिथि अपवादी ❋ स्वारथरतपरमारथवादी ॥
कपटी कोल कुमारगगामी ❋ कुधन कुधाम कुभामिनि स्वामी ॥
कुमति कुशील कुजीवनि जीवहिं ❋ सुरसरि तीर कूपजल पीवहिं ॥
करहिं अधर्म कर्म मन वानी ❋ चलहिं वामपथ ज्ञान गुमानी ॥
अवगुण अघ न अघाहिं अमापी ❋ चहहिं सुकृत फल पामर पापी ॥
आश्रम वरण सुधर्म मलिनसे ❋ जग सर कलि हिमहुए नलिनसे ॥
थोर वहुत कहुँ कहुँ कोइ कोई ❋ आश्रम दुखित वरण पहिलोई ॥
दो०—सकल धर्मविपरीति कलि, कलपित कोटि कुपंथ ॥
पुण्य पराइ पहार वन, दुरे पुराण सुग्रंथ ॥
निज निज धर्म विमुख सब लोगा ❋ भोगहीनरतिरोग वियोगा ॥
क्षमा क्षीन पटु पीन प्रकोपू ❋ दिन दिन अशुभ उदय शुभलोपू ॥
सत्य सनेह शील सुखवीते ❋ शम दम दान दया जन रीते ॥
धर्म पंच विधि कलिमलभाँड़े ❋ सबहि बजाइ वेद पथ छाँड़े ॥
कर्म कलाप उपासन ज्ञाना ❋ तप जप तीरथ व्रत बहुदाना ॥
वित हित सकल सदंभ सहेतू ❋ छल मल निधि कलि कपट निकेतू ॥
कलि उतपातहोहिं बहुतेरे ❋ भूमिरु कंप विघात घनेरे ॥
लूक पात दिग दाह विशाला ❋ निशि सुरेश धनु केतु कराला ॥
दो०—काई सुरसरि विमल जल, भूमी मलिन सुथान ॥
फूलहिं फलहिं कुसमय तरु, सूचक अशुभ निदान ॥
तिनकर फल दुख दुरित दुकाला ❋ विविध व्याधिवश प्रजा बिहाला ॥
ईति भीति महि कृषी मलीना ❋ फरहिं कुविटप सुतरु फलहीना ॥
घटहिं सुवस्तु सुनाज सुयोगा ❋ बढ़हिं कुवस्तु कुधान कुयोगा ॥
विद्यावनिज कृषी सिवकाई ❋ निपट थोर फल श्रम अधिकाई ॥
अन्नपान फल रस लघु स्वादा ❋ पाठ थोर बड़वाद विवादा ॥

धेनु थोर पय पय घृत थोरा ❀ अबल साधु जन खल बरजोरा ॥
सुमति मंत्र औषधि सबलोपे ❀ कपट मंत्र विष कलिमल रोपे ॥
बरसहिं ऊषर सालि सुखाहीं ❀ उलटी रीति सकल कलिमाहीं ॥

दो०--गोड गुआर गँवार नृप, यमन महा महिपाल ।
साम न दाम न भेदकलि, केवल दंड कराल ॥

चोर चारु लघु लंपट लोभी ❀ सचिव सभासद मद महि छोभी ॥
राज सरिस सब राज समाजी ❀ प्रजा विकल बड़राज बिराजी ॥
देश उजारि नरेश प्रतापा ❀ जरहिं जीव जग तीनहु तापा॥
भूपति वंचक प्रजा अभागी ❀ प्रजा जरहिं अवनिप अघमागी ॥
प्रजा रोष मृग विहंग समाजा ❀ राजा विषम गय्र वृषवाजा ॥
महिप मुदित सुनि प्रजा अकाजू ❀ प्रजा कहहिं कब जाइहि राजू ॥
राजउ प्रजा परस्पर खोटे ❀ जग जन्महिं करि कलिमलमोटे॥
सुखहित करहिं कुचाल कलेशू ❀ सहहिं दुसह दुख देश विदेशू ॥

दो०-प्रीति सगाई सकल गुण, वणिज उपाय अनेक ।
कलबल छल कलिमल मलिन, डहकत एकहिएक॥

वणिज महाजन साहु सुनामा ❀ बोलनि दाहिन करनी वामा ॥
उभय बरद हर करहिं किसाना ❀ जोतहिं गोमग सर शुभथाना ॥
बाँधि बरद मुँहु दाँवरि देहीं ❀ तिहि अब सब निशिचर हरि लेहीं ॥
धरणि धाम धन धरम विहीना ❀ प्रिय परिजन अपमान मलीना ॥
अशन वसन बिन बंधु वियोगी ❀ कुमति कुसाज कुरूप कुरोगी ॥
कलही कुटिल कठिन कटुवादी ❀ फिरहिं विकल बिललात विषादी॥
नींद भूख आलस वश कीन्हे ❀ सुख सद्गुण कलिमल हरिलीन्हे॥
आरति अछी अनाथ अभागी ❀ सब नर नारि जरहिं जठरागी ॥

दो०-ठाकुर कूर कुसचिव सब, पुरुष नारि आधीन ।
गुरु वितहित सब शिष्य वश, मूरख विवश प्रवीन॥

धनी कुलीन धनी गुणसागर ❀ धनी साधु सब भाँति उजागर ॥
विबुध वेद गुरु विप्र विरोधी ❀ धनी पूजिहहिं पाप पयोधी ॥

विन धन मुनिगण गरहिं गलानी ❁ सहहिं निरादर घर घर मानी ॥
धनहित कहहिं दिवसकर राती ❁ नीचहि नवहिं बड़े सब भांती ॥
साधु सुजाति सुशील सुजाना ❁ विनधनजन दुख दोष निधाना ॥
कलि केवल धन मूल भलाई ❁ बुधि विवेक बल विनय बड़ाई ॥
प्रीति सहेतु अकारण कोही ❁ सब पितु मातु बंधु गुरु द्रोही ॥
पिसुन पंच पंडित छलवादी ❁ वकत लवार सुकवि अपवादी ॥

दो०—चोर चतुर वटपारभट, प्रभु प्रिय भँडुवाभंड ॥
सब भक्षक परमारथी, कलि कुपंथ पाखंड ॥

सब कवि कोविद कलानिकेता ❁ साधक सिद्ध सधर्म सचेता ॥
हम सब भाँति बड़े सब छोटे ❁ हम विन खोर खरे सब खोटे ॥
सकल कहहिं हमसरिस न दूजा ❁ कोकहि मानइ कोकहि पूजा ॥
लोक वेद मरयाद विसारी ❁ सब नर नारि यथा रुचिकारी ॥
वकता सबकोउ सुनै न वानी ❁ सब याचक जगकोउ न दानी ॥
सब सिखवैं जन सुनै न कोऊ ❁ गुरु शिष अंध वधिर समदोऊ ॥
सुत पितु मात हाथ विन व्याहे ❁ पुनि रिपु होहिं नारि मुखचाहे ॥
तिय वश तनय वसै ससुरारी ❁ परिहरि लोकलाज कुलगारी ॥

दो०—कामचारिनी करकसा, घरमें नारि प्रधान ॥
तियगुण सील विहीन सब, दूषण दुरित निधान ॥

विधवा वहु सौभागिनि थोरी ❁ कठिन करम मन बोलत भोरी ॥
विधवा भूषण वसन विशेषी ❁ सौभागिनि सिहाहिं सुनि देषी ॥
हिंदू तुरक उभय कलि जीते ❁ निज निज करम धरम विपरीते ॥
गृही दरिद्र यती धनवाना ❁ नागरकूर गँवार सुजाना ॥
शूद्र पुराणिक विप्र किसाना ❁ युवा जरठ गुण जरठ जुवाना ॥
विप्र वर्म असि शर धनुधारी ❁ पुस्तक पाणि नीच नर नारी ॥
विप्र कछौटी पहिरि अन्हाहीं ❁ शूद्र सदर्भ निमज्जन जाहीं ॥
जाति पाँति बहु भेद अचारा ❁ एक वरण सब किए विचारा ॥

छंद-सबवरण एकविचार कीन्हेकोलकुलिकलिमलमई ।
वहु वेष वहु मत शैव शाक्तिक सौर सुरसेवा नई ॥

सब जाति पाँति जमाति जोरहिं जटिल भूत भयावने ।
अति रोष दोष निधान मानी खान पान अपावने ॥
सोरठा—कलि पाषंड प्रचार, प्रबल पाप पामर पतित ।
तुलसी उभय अधार, राम नाम सुरसरित जल ॥
सभा सराहिय सोर विशेषी ❀ श्रवण अगम कह आँखिन्हि देषी ॥
करि प्रपंच वंचै परघाती ❀ सोइ बड़धीर तासु बड़छाती ॥
कौड़ी कारण कहहिं कुसाखी ❀ ऋण अवनीक मरण अभिलाषी ॥
शठहि सुमति साहसी जुवारी ❀ जीवन थोर दुरास अपारी ॥
साँचि बात जिहि सभा वखानी ❀ हँसहिं लोग बड़कूवक ज्ञानी ॥
जहाँ होहिं जप यज्ञ पुराना ❀ विरति विवेक विचार न नाना ॥
कथाकीर्त्तन साधु समाजा ❀ तहँ विशेष कलिकाल विराजा ॥
दो०—शूर समर रथ तीर्थ पुनि, कपट कुचालि कुसाज ।
मनहुँ भवासो मारि कलि, राजत सहित समाज ॥
बेचहिं गाय विसाहहिं छेरी ❀ दुहगा सुतिय सुहागिनि चेरी ॥
पर पर पर वर सुरसरि सेतू ❀ दूर करहिं निज कीरति हेतू ॥
हरि पर ग्रंथ करहिं निजग्रंथा ❀ चहहिं सुयश सुखचलहिं कुपंथा ॥
काटहिं सुरतरु बवहिं बबूरे ❀ निज घर वरहिं बतावहिं धूरे ॥
भल क्रमनास कहहिं गति गंगा ❀ तुलसिहि हँसहिं सराहहिं भंगा ॥
गुरु पितु मातु साधु सिखपेली ❀ तीरथ चलहिं समाज सकेली ॥
सुथल सुतीरथ वन सुरथाना ❀ तहाँ तुरक कलि करहिं मशाना ॥
प्रीति प्रतीत न काहुकि काहू ❀ सब ठग चोर महाजन साहू ॥
दोहा—मंदिर मूरति मलिन कलि, थान प्रधान विचारि ।
ते सब सादर पूजिहहिं, फलहि भगति अनुहारि ॥
विष्णु भक्ति महिमा अधिकाई ❀ चहुँ युग बड़ चहुँ वेद बड़ाई ॥
काल कर्म गुण प्रकृति प्रभाऊ ❀ भक्तिसमीप जाहिं नहिं काऊ ॥
कर्मक देव ज्ञान विज्ञाना ❀ जप तप योग उपासन नाना ॥
भक्ति अनुग्रह जापर होई ❀ सो बड़ सबल सपन पर सोई ॥
पक्षपात नहिं कहहुँसुभाऊ ❀ लोक वेद बड़ भक्ति प्रभाऊ ॥

आप विमल कलिकाल मलीना ❀ अस विचारि हरि भक्ति प्रवीना ॥
अलख अनूप निरूपन जाई ❀ भक्ति सुथल लघु रूप समाई ॥
सब भगवंत सुग्रंथ सयानी ❀ जिमि माधुरी रसाल समानी ॥
दो०-तुलसी कानन साधु मन, गुरु पद प्रेम प्रमान।
भरत चरित सुर सरित जल, राम भक्ति विश्राम ॥
अमल भक्ति पथ अमल अनेका, लखहिं विमल जन विमल विवेका ॥
भक्ति विशेष भक्ति विश्रामा ❀ ते थोरे जन तलधि ललामा ॥
भक्ति निवास मनुज मन देषी ❀ कलिहि सकुच संताप विशेषी ॥
भक्ति भानु कलि कलुष उलूका ❀ सोच विलोकत लोचन टूका ॥
भक्ति वास सब शूक समाना ❀ वाम देत कलि कपट सयाना ॥
राम भक्त कहुँ कहुँ द्वै चारी ❀ अनघ अमान अमल अविकारी ॥
ते महि मंडल मंडन रूपा ❀ प्रीति रामपद अचल अनूपा ॥
तिन कहँ कलि कृत युग सम साजू ❀ सुकृत न सुखद यथा युवराजू ॥
दो०-जो हरि भक्त कहाय जग, वित हित करत कुफेर।
दंड कपट पाषंड भट, पठइ किये कलि जेर ॥
ते कलि वश बहुनाचहिं नाचा ❀ भूलि न बोलहिं सपनेहु सांचा ॥
तिलक विचित्र मनोहर माला ❀ वसन विभूषण वचन रसाला ॥
मिलत मधुर गावत मृदुवानी ❀ करम कठिन नहिं जाइ बखानी ॥
गूढ़ गर्व अघ अवगुण गरुये ❀ राम प्रेम परमारथ हरुये ॥
देव पितर महिदेव विरोधी ❀ मोह लोभ वश लंपट क्रोधी ॥
ज्ञान विराग सुनत जरि मरहीं ❀ आश्रम वरण धर्म परिहरहीं ॥
तजि सुकर्म कुलरीति सुहाई ❀ कलपि कुपंथ कुचालि चलाई ॥
खान पानकर थोर विचारू ❀ एकादशी विशेष अचारू ॥
दो०-बड़े भाग तजि जगत गुरु, उपदेशहिं सबकाहु।
सरवस गुरहि समर्पिए, लेहु जन्म कर लाहु ॥
हिंदू तुरक नारि नरहीना ❀ सबकहँ देहिं समंत्र सबीना ॥
बेचहिं निज हरिनाम नगीना ❀ लोलुप लोभ विषय बड़ पीना ॥
वेद पुराण भागवत गीता ❀ पढ़ि गुन अर्थ करहिं विपरीता ॥

सुधन सुनारि धनी वश होई ❀ पुरुषारथ परमारथ सोई ॥
वेष वरण हरि भक्ति विराजा ❀ जिय हुलसत कलि सहित समाजा॥
शंकर नाम सुनत मरि जाई ❀ सेवत यवन सुजन्म सिराई ॥
वितहित अंग बंग मग वासी ❀ वित विन वाइ लगावहिं कासी ॥

दो०-उपदेशक आचरण अस, पढ़हिं सुनहिं सब ग्रंथ।
ये उपदेशे नारि नर, कहे न चले कुपंथ ॥

ये गुरु बड़े नीच उपदेशे ❀ काल पाय पछितांहिं ठगेसे ॥
गुरु नग दिये न अवगथ गाठी ❀ खाई वेचत महडालाठी ॥
विन वित भक्ति न भक्त सुहाहीं ❀ सुख संताप शोच मन माहीं ॥
बहुत उपाय किये धन लागी ❀ दिन दिन दुनी दुरासा दागी ॥
सुमति न सुनिय न स्वामि सखाई ❀ विन वित सब हित मीत बड़ाई ॥
होइ न कृषी वणिज नहिं सेवा ❀ गये कुदेश भये गुरु देवा ॥
अचई उभय लोक गति थोरी ❀ विष्णु सुधर्म तजे तृण तोरी ॥
शिष्य कहाय बड़े गुरु केरे ❀ करि छल दंभ कपट बहु तेरे ॥

दो०-जिहि विधि उरके आप गुरु, सहसभाँति सोइरीति
करि प्रपंच वंचित सबहि, डरत न करत अनीति ॥

सधन सुधर्म नारि नरभोरी ❀ लोक वेद गति सासुझि थोरी ॥
तेकरि शिष्य सकल अपनाये ❀ कल्पि भक्तिमय वचन सुनाये ॥
गुरु विमूढ़ शिष निपट कुमेधा ❀ जुरा समाज वाम भये वेधा ॥
सोविधि कहहिं जोइ मन भावा ❀ सोइ निषेध जो नहिं ह्वै आवा ॥
आपुगये गुरुगये विगारे ❀ वातल वावर बीछी मारे ॥
सो वरनिय कुचालि किहि भांती ❀ एक पात जेमहिं सब जाती ॥
कोरि चमार गोड गुरु देवा ❀ तिनकर करहिं महीसुर सेवा ॥
भजहिं जवाहिं तजि ज्ञात जनेई ❀ तव सराहि शिषकरिआहिं तेई ॥

दो०-साखी शब्दी दोहरा, कहि कहिनी उपखान,
भक्ति निरूपण भक्त कलि, निंदत वेद पुरान ॥

नाम सुनाम वाम पथयामी ❀ कायर कूर कुतरकी कामी ॥
सकल सुभाय कुनिंदक मंदा ❀ कुल कुठार तिय नर कुल वृंदा॥

कलि पाषंड प्रचंड प्रचारा ❀ संड भंड सब विधि व्यवहारा ॥
भगत कहाय अवाय अभेरे ❀ देखत कोमल करम करेरे ॥
भगत नारि नर भक्ति विहीना ❀ दंभ निधान प्रपंच प्रवीना ॥
लोकहु वेद भगति पथ मोटा ❀ जिनके लिये लागि सोइ तोटा ॥
तिनके करतब किमि कहि जाहीं ❀ एकहि आंक भलाई नाहीं ॥
कहत सकल कलिकाल कुचाली ❀ बाढ़ै कथा वृथा शिरखाली ॥

दो०– तिहिते कही सहेतु कलि, कथा समास समेत ।
सुनिसदंभ शठ सकुचिहहिं, ह्वैहैं सुजन सचेत ॥

कलि गुणकहेउँ सुमति अनुहारी ❀ सुनेउ न भय उपजे द्वैचारी ॥
कलियुग मानस पातक नाहीं ❀ पुण्य पुनीत मनोरथ माहीं ॥
वाचिक पाप जाहिं पछिताने ❀ शिव सुमिरत सुरसरित अन्हाने ॥
कायिक कलुप कठिन कलिकाला ❀ सद्यफलहिं परिणाम कराला ॥
पुनि संसार दोष कलि थोरे ❀ करतहिं कह कति घोर कठोरे ॥
करै जो संग समान सलोना ❀ जान वठत करता सम सोना ॥
हरि शंकरहि भाय भजिभोरे ❀ पावहिं सुजन सफल श्रम थोरे ॥
जो छल छाड़ि धर्म रति होई ❀ फलै सुधासन शिरधरि सोई ॥

दो०--अन्नदान सब यज्ञ मय, निरुपधि धर्म निधान ।
तपतीरथ सुरसरित जल, दरशन मज्जन पान ॥

कलि केवल परमारथ हेतू ❀ राम नाम भवसागर सेतू ॥
साधन नाम सिद्धि फलधामा ❀ जेहि न प्रतीति ताहि विधिवामा ॥
कृतयुग जोरत योग समाधी ❀ त्रेता कर्म परम निरुपाधी ॥
द्वापर हरिपद पूज सप्रीती ❀ पाव परमगति नर जगजीती ॥
कलि जपि नाम सरुचि विश्वासा ❀ सो फल सुलभ सब अनियासा ॥
ते सुकृती शुचि साधु सुजाना ❀ सद्गुण शील रसील निधाना ॥
जेहरि नाम जपत दिन राती ❀ प्रीति प्रतीति सप्रेम सुभाती ॥
राम महातम चहुँ युग भारी ❀ कलि विशेष दायक फल चारी ॥

दो०–यथा भूमि सबबीजमय, न खत निवास अकास ।
राम नाम सब धर्ममय, जानत तुलसीदास ॥

यह विश्वास जासु जिय नाहीं ❀ जीवन जारिजात जग माहीं ॥

सुधन सुनारि धनी वश होई ❋ पुरुषारथ परमारथ सोई ॥
वेष वरण हरि भक्ति विराजा ❋ जिय हुलसत कलि सहित समाजा॥
शंकर नाम सुनत मरि जाई ❋ सेवत यवन सुजन्म सिराई ॥
वितहित अंग वंग मग वासी ❋ वित विन वाइ लगावहिं कासी ॥

दो०-उपदेशक आचरण अस, पढ़हिं सुनहिं सब ग्रंथ।
ये उपदेशे नारि नर, कहे न चले कुपंथ ॥

ये गुरु बड़े नीच उपदेशे ❋ काल पाय पछितांहिं ठगेसे ॥
गुरु नग दिये न अवगथ गाठी ❋ खाई वेचत महडालाठी ॥
विन वित भक्ति न भक्त सुहाहीं ❋ सुख संताप शोच मन माहीं ॥
बहुत उपाय किये धन लागी ❋ दिन दिन दुनी दुरासा दागी ॥
सुमति न सुनिय न स्वामि सखाई ❋ विन वित सब हित मीत बड़ाई ॥
होइ न कृषी वणिज नहिं सेवा ❋ गये कुदेश भये गुरु देवा ॥
अचई उभय लोक गति थोरी ❋ विष्णु सुधर्म तजे तृण तोरी ॥
शिष्य कहाय बड़े गुरु केरे ❋ करि छल दंभ कपट बहु तेरे ॥

दो०-जिहि विधि उरके आप गुरु, सहसभाँति सोइरीति
करि प्रपंच वंचित सबहि, डरत न करत अनीति ॥

सधन सुधर्म नारि नरभोरी ❋ लोक वेद गति सासुझि थोरी ॥
तेकरि शिष्य सकल अपनाये ❋ कलिप भक्तिमय वचन सुनाये ॥
गुरु विमूढ़ शिष निपट कुमेधा ❋ जुरा समाज वाम भये वेधा ॥
सोविधि कहहिं जोइ मन भावा ❋ सोइ निपेध जो नहिं है आवा ॥
आपुगये गुरुगये विगारे ❋ वातल वावर वीछी मारे ॥
सो वरनिय कुचालि किहि भांती ❋ एक पात जेमहिं सव जाती ॥
कोरि चमार गोड गुरु देवा ❋ तिनकर करहिं महीसुर सेवा ॥
भजहिं जवहिं तजि ज्ञात जनेई ❋ तव सराहि शिषकारिअहिं तेई ॥

दो०-साखी शब्दी दोहरा, कहि कहिनी उपखान,
भक्ति निरूपण भक्त कलि, निंदत वेद पुरान ॥

नाम सुनाम वाम पथगामी ❋ कायर कूर कुतरकी कामी ॥
सकल सुभाय कुनिंदक मंदा ❋ कुल कुठार तिय नर कुल वृंदा॥

कलि पाषंड प्रचंड प्रचारा ❋ संड भंड सब विधि व्यवहारा ॥
भगत कहाय अवाय अभेरे ❋ देखत कोमल करम करेरे ॥
भगत नारि नर भक्ति विहीना ❋ दंभ निधान प्रपंच प्रवीना ॥
लोकहु वेद भगति पथ मोटा ❋ जिनके लिये लागि सोइ तोंटा ॥
तिनके करतब किमि कहि जाहीं ❋ एकहि आंक भलाई नाहीं ॥
कहत सकल कलिकाल कुचाली ❋ बाढ़ै कथा वृथा शिरखाली ॥

दो०– तिहिते कही सहेतु कलि, कथा समास समेत ।
सुनिसदंभ शठ सकुचिहहिं, ह्वैहैं सुजन सचेत ॥

कलि गुणकहेउँ सुमति अनुहारी ❋ सुनेउ न भय उपजे द्वैचारी ॥
कलियुग मानस पातक नाहीं ❋ पुण्य पुनीत मनोरथ माहीं ॥
वाचिक पाप जाहिं पछिताने ❋ शिव सुमिरत सुरसरित अन्हाने ॥
कायिक कलुष कठिन कलिकाला ❋ सद्यफलहिं परिणाम कराला ॥
पुनि संसार दोष कलि थोरे ❋ करतहिं कह कति घोर कठोरे ॥
करै जो संग समान सलोना ❋ जान वठत करता सम सोना ॥
हरि शंकरहि भाय भजिभोरे ❋ पावहिं सुजन सफल श्रम थोरे ॥
जो छल छाड़ि धर्म रति होई ❋ फलै सुधासन शिरधरि सोई ॥

दो०--अन्नदान सब यज्ञ मय, निरुपधि धर्म निधान ।
तपतीरथ सुरसरित जल, दरशन मज्जन पान ॥

कलि केवल परमारथ हेतू ❋ राम नाम भवसागर सेतू ॥
साधन नाम सिद्धि फलधामा ❋ जेहि न प्रतीति ताहि विधिवामा ॥
कृतयुग जोरत योग समाधी ❋ त्रेता कर्म परम निरुपाधी ॥
द्वापर हरिपद पूज सप्रीती ❋ पाव परमगति नर जगजीती ॥
कलि जपि नाम सरुचि विश्वासा ❋ सो फल सुलभ सबै अनियासा ॥
ते सुकृती शुचि साधु सुजाना ❋ सद्गुण शील रसील निधाना ॥
जेहरि नाम जपत दिन राती ❋ प्रीति प्रतीति सप्रेम सुभाँती ॥
राम महातम चहुँ युग भारी ❋ कलि विशेष दायक फल चारी ॥

दो०–यथा भूमि सबवीजमय, नखत निवास अकास ।
राम नाम सब धर्ममय, जानत तुलसीदास ॥

यह विश्वास जासु जिय नाहीं ❋ जोवन जारिजात जग माहीं ॥

धर्मछीन कलिपातक पीना ❀ यथा ढोल धुनि सुनिय नवीना ॥
होइ अमंगल मंगल रासी ❀ यथाकेतु गृह जगत उमासी ॥
नीप अधीन काल गुण दोषा ❀ लोक वेद मति नाहिंन धोषा ॥
भये वेणु महिषादिक राजा ❀ पुण्य काल कलिकाल विराजा ॥
विक्रमादि अवनिप कलि जाये ❀ कृतत्रेता सब धर्म चलाये ॥
काल कर्म महिपाल अधीना ❀ कहत पुराण विनीत प्रवीना ॥

दोहा- यथा अमल पावक पवन, पाय सुसंग कुसंग ।
कहिय कुवास सुवास तिमि, काल महीश प्रसंग ॥

शंकर काल चालि सुनि देषी ❀ दिन दिन बढ़त विषादविशेषी ॥
विप्र जन्म गृह भाउ बिशाला ❀ करम भूमिनश काल कराला ॥
कृशतन नींद भूख भई थोरी ❀ गृह कृत प्रीति होत मति भोरी ॥
जागत वागत सोवत सपने ❀ सुमिरे सबै सोच मन अपने ॥
विनाअमर अमृत तनु साधा ❀ गये जाय परलोक न साधा ॥
विलसत खात बालपन वीता ❀ भये तरुण तरुणी मनजीता ॥
वढ़त वयस अधि वढ़त दुरासा ❀ बुधि विवेक बल तेज हरासा ॥

दो०-हम हमार अविचार बड़, भूरिभार धरि शीश ।
शठ हठ परवश भये इमि, कीर कोसकृमि कीश ॥

सो०-कह शंकर मत संत, वेद पुराण विचार सब । द्रवैं जानकी कंत, तब छूटै संसार भय ॥ अब विनवों मन तोहिं,होहि राम पदकमल रति । अपथन प्रेरौ मोहिं,सुनहु सिखावन परमहित ॥ करुणासिंधु दयाल, तुमविन अवर न दूसरो।पतितनकी प्रतिपाल,करै कौन तुम विन प्रभो ॥ कह यह तुलसीदास, भववारिध बंधनहन्यो ॥ तव छूटै भवफास,जव रघुवीर कृपा करो ॥ नर तन धरि करिकाज, साज त्यागिमद मानको । गाइ नाथ रघुराज, माँजि माँजि मनविमल वर ॥

इति श्रीगुसाँई तुलसीदासकृत कलि धर्म्माधर्म निरूपणं सम्पूर्णम् ॥

दो०-कलिचरित्र तुलसी कथित, द्विज ज्वालाप्रसाद । सोध्यो मति अनुसार सबसुनितेहि मिटै विषाद ॥ सकल वेद अरु शास्त्रको, यही सारको सार । मन वच कर्म सयान तजि, भजिये रामउदार ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना- खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-मुंबई.

श्रीः ।

छप्पयरामायण ॥

जिसमें

सातोकांडरामायण की कथा अतिरुचिर छप्पय छन्दोंमें अतीव सरलपदों से वर्णित है

जिसको

महात्मा श्रीगोसाईं तुलसीदासजीने रामचरित्रानुरा-
गियों के आनन्दार्थ निर्मित किया

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई.

निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रकट किया ।

भा० शु० संवत् १९५१ शके १८१६

श्रीः ।

अथ छप्पयरामायण ॥

छप्पय ।

श्रीगुरुचरणसरोजवन्दि गणनाथमनावों ॥ जेहिप्रसादशुभहोय रामसोइविनयसुनावों ॥ आरतभञ्जन रामनाममुनिसाधुन गाई ॥ सुमिरतगाढ़ेनाथ होतसबठौरसहाई ॥ श्रीपतिरघुपतिअवधपतिकर-हुँनाथसोजापना ॥ कृपाकरहु श्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसन्तापना ॥ ॥ १ ॥ रहिकपोतशिशुपतिसमेतबैठेतरुपासा ॥ गगनउड़ेशंचान भूमितलअग्निप्रकासा ॥ व्याधागहिकरबाणदेखिलोचनजलमोचित पक्षीसोमनमहँसभीतदंपतिउरशोचित ॥ दुष्टदवनकरुणायतन राखिलेहुशरणापना ॥ कृपाकरिय श्रीरामचन्द्र ममहरहुशोकसंताप ना॥२॥उठेततक्षणमेघवृष्टिजलअनलबुताने ॥ निकसिभुअंगमडसे सुधी व्याधाबिकलाने ॥ निसरेउकरतेतीरजाय शंचानहिंमारी ॥ अ-स्तुतिकरतकपोतनाथप्रणतारतिहारी ॥ सोप्रभुहोहुदयालुममजिमि कपोतरिपुदापना ॥ कृपाकरहु श्रीरामचन्द्र मम हरहुशोकसंतापना ॥ ३ ॥ जैजैमीनवराह कमठनरहरि श्रीवामन ॥ परशुराम श्रीराम कृ-ष्ण जन हित खलदामन ॥ जगन्नाथकलिकीनमामिदशविधिवपुधा रन ॥ अमितरूपअगणितचरित्रकृतनामउदारन ॥ सुररंजनसज्जन सुखद सियानाथअरिजापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोक संतापना ॥ ४ ॥ वधिताड़कासुबाहुविप्रमखरक्षकरघुपति ॥ मोचित बाहनशापभक्तवरदायकशुभगति॥ प्रणविदेहकोराखिरामखंडयोधनु शंकर ॥ दीन्हशरासनबाणजानिरामहिंसुपरशुधर ॥ सियविवाहिगवने अवधछूटेजनककलापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसं-तापना॥५॥राजत्यागिवनचलेअसुरमारनसुरकारज॥ केवटधोवत चर णत्रिलोचनअजपदजारज ॥ चित्रकूटवासिअमितकोलभिल्लनकरिपा-वन ॥ भरततोपिकृतचरणपीठदैशोकनशावन ॥ चलेभरतस्तुति करतराखिलियेविरदापना ॥ कृपाकरहु श्रीरामचंद्रममहरहुशोक

संतापना ॥ ६ ॥ पाहिकहतबचिप्राणचक्षुइकहतेजयंता ॥ वधिवि
राधखर दूषणादिमुनिसुयशकहंता ॥ हेमकपटमृगप्राणदीन्हप्रभुशर
केलागत ॥ गतिगृध्रहिंदेहतिकबंधशबरीशरणागत ॥ बालित्राससु
ग्रीवरहुगिरिपरकरतकलापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशो
कसंतापना ॥ ७ ॥ हनुमतचीन्हेउँनामनाथ निजदासहिजानी ॥ भ
क्तिविमलवरदेइ मित्रकृतशारँगपानी॥ बालिवधो कपिराज साजिऋ-
तुमेह गँवाये ॥ करमुद्रिक दे सिय उदेश हनुमानपठाये ॥ वहाँसि
यानिशिदिनजपतरामनाममनआपना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममह
रहुशोकसंतापना ॥ ८ ॥ हर्षिचलेहनुमानभाग्यनिजकरतबड़ाई ॥
खोजत सर गिरिखोहऋच्छकपिसंगसगाई ॥ गयेसिंधुतटसकलशोक
वशसुनिसंपाती ॥ सुनिसपक्षहोयजोहसियायहसुरआराती ॥ निरखि
सिंधुठहरेसभैकरहिंविलापकलापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहु
शोकसंतापना ॥ ९ ॥ पुलकिउठेहनुमानकानसुनिवयनऋछेशा ॥
चलतमहाधुनिगरजिडोलुगिरि दिग्गजशेशा॥सुरसावदनसमायसिंहि
कोवधतसिधाये ॥ प्रभुप्रताप जलयान पार सागरहोइआये॥मुष्टिकह
नितहँलंकिनी सुमिरिचलेहरि आपना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्र मम
हरहु शोक संतापना ॥ १० ॥ गृह गृह शोधतचले जोह कतहूं नहिं
पाये ॥ लगे उचारण रामनामसुनिविभीषणआये ॥ सन्ततमिलिदु
हुँकरतमुदित जिमिवासरकोका ॥ युक्तिविभीषणबूझिआयजहँविट
पअशोका ॥ मौनलईकपिछपिगुणतयुक्तिहोयप्रगटापना ॥ कृपाकर
हुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ ११ ॥ तेहिअवसरदशकंधना
रिसँगआयडेरावा ॥ प्रभुप्रतापरविआपुनखतसुनिगृहहिसिधावा ॥
विरहवंतहोयअनलतचहिमाँग्यहुवैदेही ॥ शोकहरनमुद्रिकादीन्हक
पिऔसरतेही ॥ चीन्हिहरषविस्मयनेहि दुखभंजनप्रभुआपना ॥ कृ
पाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोक संतापना ॥ १२ ॥ वरणिरामगुण
कस्मिणामबोले हनुमाना ॥ हौंअनुचरतवनाथमातुमँमुँदरीआना ॥
निकटबोलिसुनि अमियवयन [illegible]कुशलाता ॥ कहे[illegible]
[illegible]कीजै [illegible] ॥ कपिमुखरामसंदेशसुनिक[illegible]

विरहापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसंतापना ॥ १३
सियप्रबोधिलैतबनिदेशसुसमीरकुमारा ॥ गयेबागफलखायतोरि
रुरक्षकमारा ॥ सुवनवधेसुनिबिसहुवाहुवननादपठाये ॥ लं
दहनहितकीशतासुकरआपुबँधाये ॥ दनुजबांधिपटलायादियोल
देखिकीशापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना
॥ १४ ॥ ज्वालावन्तकरालकीशचढ़िकनकअटारी ॥ नगर
रचहुँओरजरनलागेनरनारी ॥ वातजातबलपुंजहाँकसुनिदनु
सकाने ॥ बालवृद्धसंपतिविहायसबजरतपराने ॥ जरालंकबचुएक
रविभीषणकेहरिजापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्र ममहरहुशोक
तापना ॥ १५ ॥ श्रमविहायपुरजारिसिंधुमहँलूमबुताई ॥ आयमा
पदपद्मवंदिकपिमांगुरजाई ॥ सहिदानीकछुदेहुमातुसुधिप्रभुहिजन
वों ॥ चूड़ामणिदैकह्यो मातुबहुविनयसुनावों ॥ कहेउमोरिहुतिन
थजू शरणलाजरखुआपना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्र ममहरहुशोव
संतापना ॥ १६ ॥ विविधभाँतिदैधीरमातुपदवंदिकपीशा ॥ चले
भाशिषपाय आयभेंटेसबकीशा ॥ चरणचूमिकरिकीश सकल
पूछहिंकुशलाई ॥ कहतकथासबभाँति आयमधुवनफलखाई ॥
दिरामपदकंजकहिसीतासुधिइतहासना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रमम
हरहु शोकसंतापना ॥ १७ ॥ विरहअनलतनुतप्तआपुहितराखीनै
ना ॥ अबबिलम्बजनिकरहुसिया हेराजिवनैना ॥ शक्रसुवनमृगहेम
जानुतवबाणप्रतापा ॥ जानुकबंधअरुवालिकहाभैसोशरचापा ॥ सि
याविनयचरणनपड़ीचूड़ामणिदिहिआपना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्र
ममहरहुशोकसंतापना ॥ १८ ॥ सियाविनयसुनि सियानाथ करग
हिधनुतीरा ॥ उतरेकटकसमूह संगलैसागरनीरा ॥ मिलेविभीषण
आय पाहिकहि जयअवधेशा ॥ प्रणतपालकरिअभैतासुपुनिकहि
लंकेशा ॥ तारनसिन्धुउपलपुनिकृतशंकरस्थापना ॥ कृपाकरहु
श्रीरामचन्द्र ममहरहुशोकसंतापना ॥ १९ ॥ रामेश्वरसुखधाम राम
कहि श्रीमुखवानी ॥ जासुनामउच्चारप्रेमगतिपावतप्रानी ॥ गिरिजा
रमनदयालु दीनहित दानीअवढर ॥ जनपर होहुदयालुदीनहितसो

गौरीवर ॥ उमारमनममदुखदमन हरहुशोकसंतापना ॥ कृपाकरहु श्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २० ॥ जलनिधिउतरेपार भालुकपि कटकसमेता ॥ पठैबसीठींबूझिमरमगढ़उठेसचेता ॥ चारियूथहोइलगेवीरसबसुभटजुझारे ॥ प्रभुप्रतापकरिदापऋच्छकपिकटक सँहारे ॥ कंपअकंपआदिकहतेकहिजैजैनाथापना ॥ कृपाकरहुश्री रामचन्द्र ममहरहु शोकसंतापना ॥ २१ ॥ महोदरअतिकायआदि कहहँतिहनुमंता ॥ हांकिसमरमहँमेघनादकहँहत्योअनन्ता ॥ अहिरावणवधकियउरामसेवकसुखदाई ॥ दलपाछेकरसोंहत्रोणकटिकसिद्धौ भाई ॥ कृपादृष्टिकरिविपुलबलनाथदियोदलआपना ॥ कृपाकरहुश्री रामचन्द्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २२ ॥ कुम्भकर्णअतिविकटरूप आवादलमाहीं ॥ दपटिपटकिभटभालुकीशमरदेमहिमांहीं ॥ उठि बहोरितेहिअस्त्रशस्त्रछांड़ेकपिदलपर ॥ दलपाछेकरिसौंहलीन्हनिज शरसीतावर ॥ वध्योताहिनिजपाणिप्रभुदेवजयतिकरुजापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसंतापना ॥२३॥ रावणआयोसौंहवंधुपरशैलचलावत ॥ दलपाछेकरिसौंहताहिप्रभुआपुखेलावत ॥ कहतदेवअवजनिविलम्बकरदुष्टहिंमारो ॥ त्रिभुवनविजयसमेतनाथ निजपुरपगुधारो ॥ सुनिपुकाररावणहतेराजविभीषणथापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २४ ॥ प्रभुसिखलैहनु अंगदादिगयेसियालेवाई ॥ निसरिदियोतेसियाशपथमिसुप्रभुपहँआई ॥ शोभितजानकिरामसंगकपिदलहर्षाने ॥ जैजैजैतिउचारदेवमुनिसाधुनगाने ॥ ब्रह्मादिकस्तुतिकरतछविनिहारिनाथापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २५ ॥ चढ़िपुष्पक आरूढ़रामसियलपणसमेता ॥ चलेअवधलैसखासंगप्रभुकृपानिकेता ॥ आयेतीरथराजभेजिहनुमानभरतपहँ ॥ वातजातसानन्दजात प्रभुभरतदरशकहँ ॥ भरतविरहवारिधिमगनरामदेहुदर्शापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २६ ॥ हनूमानजलयानभेटकरिजलनिधिपारा ॥ कहेउकुशललैसमाचारचलुपवनकुमारा ॥ भरतआयगुरुनिकटमातुपुरलोगजनाई ॥ पुलकिउठेसमस्वा

तिवारिजनुचातकपाई ॥ गंगपूजिसियरामचलेवपायकुशलअनुजाप
ना॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥२७॥ उतरियान
तेपुरसमीपभेटेमुनिगुरुजन ॥ भरतचरणहियलायपुनिकभेटेरिपुसूद
न ॥ लषणभरतसानंदमिलेसानुजद्वौभाई ॥ हुँकरिगायदिनअंतधाय
जनुवच्छपिआई ॥ मिलिपरिजनसानंदसियरामचलेभवनापना ॥
कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २८ ॥ गुरुअनुशासन
सचिवसाजिअभिषेकबनाई ॥ रामसिंहासनराज्यदीनगुरुमुनिसमुदा
ई॥ भरतगहेकरछत्रचवरसियरामनिहारे ॥ मुदितजन्मफलपायमा
तुआरतीउतारे ॥ वेदस्तुतिकरिजयतिभनिभक्तिदेहुरामापना ॥ कृ
पाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २९ ॥ छुटेबंदिसबविबु
धकोटितेंतीसहरषिकै ॥ स्तुतिकरतबनायपुष्पजयमालबरषिकै ॥
शंभुआयकृतविविधभांतिस्तुतिश्रीरामा । पायरजायसुचलेदेवसब
निजनिजधामा ॥ बिदाकियोसबसखाहिप्रभुदेवजयतिकरुजापना । कृ
पाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना॥ ३० ॥रामचरितअवगा
हसिंधुकोइपारनपावा॥शेषशारदानिगमनेतिकहिनिजमुखगावा ॥ शं
भुउमासनभरद्वाजसोंयाज्ञवल्क्यमुनि । कागभुशुण्डिसोंगरुडमानासि
ककहितुलसीगुनि ॥ कहैसुनैरतिरामपदएकराजमतिआपना । कृपा
करहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ ३१ ॥

इति श्रीछप्पयरामायणतुलसीदासकृत

समाप्तः ॥

श्रीवेङ्कटेशायनमः ॥

श्रीसीतारामाभ्यांनमः ॥

अथ श्रीहनुमानबाहुक प्रारंभः

छप्पय ॥

सिंधुतरनसियसोचहरनरविबालवरनतनु ॥ भुजविसालमूरतिक-
राल कालहुकोकालजनु ॥ गहनदहननिरदहनलंकनिःशंकवंकभु
व ॥ यातुधानबलवानमानमददवनपवनसुव ॥ कहतुलसिदाससेवत
सुलभसेवकहितसंततनिकट ॥ गुनगनतनमतसुमिरतजपतशमनस-
कलशंकटविकट ॥ १ ॥ स्वर्णशैलसंकासकोटिरवितरुनतेजधन ॥
उरविसालभुजदंडचंडनखवज्रवज्रतन ॥ पिंगनयनभ्रुकुटीकरालरसना
दशनानन ॥ कपिसकेसकरकसलंगूरखलदलबलभानन ॥ कहतुल-
सिदासबसजासुउरहनुसूरतमूरतिविकट ॥ संतापपापतेहिपुरुपकहँ
सपनेहुँनहिंआवतनिकट ॥२॥ कूलना ॥ पंचमुखछमुखभृगुमुख्यभट
असुरसुरसर्वसरिसमरसमरत्थशूरो ॥ वाँकुरोवीरविरुदैतविरुदावली
वेदवंदीवदतपैजपूरो ॥ जासुगुणगाथरघुनाथकहजासुबलविपुलजल
भरितजगजलधिकूरो ॥ दीनदुखदवनकोकौनतुलसीसहैपवनकोपूतर
जपूतरूरो ॥ ३ ॥ घनाक्षरी ॥ भानुसोंपढनहनुमानगएभानुमनअ-
नुमानिशिशुकेलिकियोफेरफारसो ॥ पाछिलेपगनिगमगगनमगनमन
क्रमकौनभ्रमकपिबालकविहारसो ॥ कौतुकविलोकिसुरपालहरिहर
विधिलोचननिचकाचौंधीचित्तनिखँभारसो ॥ बलकैधौंवीररसधीरज
कैसाहसकैतुलसीशरीरधरेसबनिकोसारसो ॥ ४ ॥ भारतमेंपारथक
रथकेतुकपिराजगाज्योसुनिकुरुराजदलहलबलभो ॥ कह्योद्रोणभीष
मसमीरसुतमहावीरवीररसवारिनिधिजाकोबलजलभो ॥ वानरसुभा-
यबालकेलिभूमिभानुलागिफलँगफलांगहूतेघाटिनभतलभो ॥ नायना
यमाथजोरिजोरिहाथजोधाजोहैंहनुमानदेखेजगजीवनकोफलभो ॥५॥

गोपदपयोधिकरिहोलिकाज्योंलायलंकनिपटनिशंकपरपुरगलबलभो द्रोणसोपहारलियोख्यालहींउखारिकरिकंदुकज्योंकपिखेलबेलकैसो फलभो॥शंकटसमाजअसमंजसमेंरामराजकाजजुगपूंगनिकोकरतलप लभो॥ साहसीसमर्त्थतुलसीकोनाहजाकीवांहलोकपालनीकोफिरिफि रिथिरथलभो ॥६॥ कमठकीपीठिजाकेगोडनिकीगाडैमानोनापकेभा जनभरिजलनिधिजलभो ॥ यातुधानदावनपरावनकोदुर्गभयोमहामी नवासतिमितोमनिकोथलभो ॥कुंभकर्णरावणपयोदनादईंधनकोतुल सीप्रतापजाकोप्रबलअनलभो ॥भीषमकहतमेरेअनुमानहनुमानसारि खोत्रिकालनत्रिलोकमहाबलभो ॥ ७॥ दूतरामरायकोसपूतपूतपौन कोतुअंजनीकोनंदनप्रतापभूरिभानुसो॥सीयसोचशमनदुरितदोषदम नशरनआएअवनलखनप्रियप्रानसो ॥ दशमुखदुसहदरिद्रदरिवेकोभ योप्रगटत्रिलोकओकतुलसीनिधानसो ॥ज्ञानगुनवानबलवानसेवासाव धानसाहेबसुजानउरआनुहनुमानसो ॥ ८॥ दवनदुवनदलभुवनविदि तबलवेदयशगावतविबुधवंदीछोरको॥ पापतापतिमिरतुहिनविघटन पटुसेवकसरोरुहसुखदभानुभोरको ॥ लोकपरलोकतेविसोकसपनेन सोकतुलसीकहीएहैभरोसोएकओरको ॥ रामकोदुलारोदासवामदेव कोनिवासनामकलिकामतरुकेसरीकिसोरको ॥९॥ महाबलसींवमहा भीममहाबानयतमहावीरविदितवरायोरघुवीरको ॥कुलिशकठोरतनु जोरपरैरोररनकरुणाकलितमनधारमीकधीरको ॥दुर्जनकोकालसोक रालपालसज्जनकोसुमिरेहरनहारतुलसीकेपीरको॥ सीयसुखदायकदु लारोरघुनायककोसेवकसहायकहैसाहसीसमीरको ॥१०॥ रचिवेको विधिजैसेपालिवेकोहरिहरमीचमारिवेकोज्यायवेकोसुधापानभो॥धरि वेकोधरानितरनितमदलिवेकोसोखिवेकृशानुपोषिवेकोहिमभानुभो ॥ खलदुखदोषिवेकोजनपरितोषिवेकोमांगिवोमलीनताकोमोदकसुदान भो ॥ आरतकीआरतीनिवारिवेकोतिहूंपुरतुलसीकोसाहिवहठीलो हनुमानभो॥ ११ ॥ सेवकसेवकाईजानिजानकीसमानैकानिसानु कूलशूलपानिनवैनाथनाककको ॥ देवीदेवदानवदयावनेह्वैजोरैहाथवा पुरेवराकऔरराजारानाराकको ॥ जागतसोवतबैठेवागतविनोदमोद

ताकैजोअनर्थसोसमर्थएकआंकको ॥ सबदिनरूरोपरैपूरोजहांतहांता
हिजाकेहैभरोसहियहनुमानहांकको ॥ १२ ॥ सानुगसगौरिसानुकूल
शूलपाणिताहिलोकपालसकललषणरामजानकी ॥ लोकपरलोकको
विसोकसोत्रिलोकताहितुलसीतमाहिकहिकहावीरआनकी ॥केसरीकि
सोरवंदीछोरकेनिवाजेसबकीरतिविमलकपिकरुणानिधानकी ॥ बाल
कज्यौंपालिहैंकृपालुसुनिसिद्धताको जाकेहिएहुलसतिहांकहनुमान
की ॥ १३ ॥ करुणानिधानबलबुद्धिकेनिधानमोदमहिमानिधानगुन
ज्ञानकेनिधानहौ ॥ वामदेवरूपभूपरामकेसनेहीनामलेतदेतअर्थधर्म
कामनिरवानहौ ॥ आपनोप्रभावसीतानाथकोसुभावशीललोकवेद
विधिहुविदुखहनुमानहौ ॥ मनकीवचनकीकरमकीतिहूँप्रकारतुलसी
तिहारोतुमसाहिबसुजानहौ ॥ १४ ॥ मनकोअगमतनसुगम
कियेकपीशकाजमहाराजकेसमाजसाजसाजेहैं ॥ देववंदीछोररणरो
रकेसरीकिसोरयुगयुगजगतेरेविरदविराजेहैं ॥ वीरवरजोरघटिजो
रतुलसीकीओरसुनिसकुचानेसाधुखलगणगाजेहैं ॥ विगरीसँवारअं
जनीकुमारकीजैमोहिंजैसेहोतआएहनुमानकेनिवाजेहैं ॥ १५ ॥ मत्त
गयंद ॥ सुजानशिरोमणिहौहनुमानसदाजनकेमनवासतिहारो ॥ ढारो
विगारोमैंकाकोकहाकेहिकारणखीझतहोंतोतिहारो ॥ साहेबसेवक
नातेतहातोकियौतोतहांतुलसीकोनचारो ॥ दोषसुनाएतेआगेहुँ
कोहुसियारतहौंमनतौहियहारो ॥ १६ ॥ तेरेथपेउथपैनमहेशथ
पैथिरकोकपिजेघरघाले ॥ तेरेनिवाजेगरीबनिवाजविराजतवैरिनके
उरशाले ॥ शंकटसोचसबैतुलसीलियेनामफटैमकरीकेसेजाले ॥
बूढभएबलिमेरेहिवारकिहारपरेबहुतैनतपाले ॥ १७ ॥ सिंधुतरे
बडेवीरदलेखलजालेहैंलंकसेवंकमवासे ॥ तैरणकेहरिकेहरिकेविद
लेअरिकुंजरछैलछवासे ॥ तोसोंसमर्थसुसाहिबसेइसहैतुलसीदुखदोष
दवासे ॥ वानरवाजबढेखलखेचरलीजतक्यौंनलपेटिलवासे ॥ १८ ॥
अच्छविमर्दनकाननभानिदशाननआननभानानिहारो ॥ वारिदनाद
अकंपनकुंभकरन्नसेकुंजरकेहरिवारो ॥ रामप्रतापहुतासनकच्छविप
च्छसमीरसमीरदुलारो ॥ पापतेशापतेतापतिहूंतेसदातुलसीकहँसो

रखवारो ॥ १९ ॥ घनाक्षरी ॥ जानतजहानजनहनुमानकोनिवाज्यौ मनअनुमानिवलिवोलनविसारिए ॥ सेवायोगतुलसीकवहूंकहांचूकप रीसाहेवसुभावकपिसाहेवसंभारिए ॥ अपराधीजानिकीजैसासातिस हसभाँतिमोदकमरैजोताहिमाहुरनमारिए ॥ साहसीसमीरकेदुलारेर घुवीरजूकेवाहँपीरमहावीरवेगिहींनिवारिए ॥ २० ॥ वालकविलोकि वलिवारेतेआपनोकियोदीनवंधुदयाकीन्हीनिरुपाधिन्यारीये ॥ रावरो भरोसोतुलसीकेरावरोईवलआशारावरीयैदासरावरोविचारिये ॥ वड़ो विकरालकलिकोकोनविहालकियोमाथेपगुवलीकोनिहारिसोनिवारि ए ॥ केसरीकिसोररणरोरवरजोरवीरवाहूपीरराहुमातुज्यौंपछारिमा रिए ॥ २१ ॥ उथपेथपनथिरथपेउथपनहारकेसरीकुमारवलआपनो संभारिए ॥ रामकेगुलामनिकोकामतरुरामदूतमोसेदीनदूवरकोताकि यातिहारिए ॥ साहिवसमर्थतोसोंतुलसीकेमाथेपरसोऊअपराधविनु वीरवाँधिमारिए ॥ पोषरीविसालवाहूंवलिवारिचरपीरमकरीज्यौंपक रिकैवदनविदारिए ॥ २२ ॥ रामकोसनेहरामसाहसलषणसियराम कीभगतिसोचशंकटनिवारिए ॥ मुदमरकटरोगवारिनिधिहेरिहारे जीवजाम्बवंतकोभरोसोतेरोभारिए ॥ कूदिएकृपालुतुलसीसोंप्रेमपथ यतेंसुथलसुवेलभालवैठिकैविचारिए ॥ महावीरवाँकुरेवराकीवाहुपीर क्योंनलंकिनीज्यौंलातघातहीमरोरिमारिए ॥ २३ ॥ लोकपरलोकहूं तिलोकनविलोकियततासोंसमरथचपचारिहूँनिहारिए ॥ कर्मकाल लोकपालअगजगजीवजालनाथहाथसवनिजमहिमाविचारिए ॥ खा सदासरावरोनिवासतेरोतासुउरतुलसीसोंदेवदुखीदेखियतभारिए॥ वा ततरुमूलवाहुशूलकपिकछुवेलिउपजीसकेलिकापिखेलहीउखारिये ॥ ॥ २४ ॥ करमकरालकंसभूमिपालकेभरोसेवकीवकभगिनीकाहु तेकहांडरैगी ॥ वडीविकरालवालघातिनीनजातकहिवाहुवलवालक छवीलेछोटेछरैगी ॥ आईहैवनायवेपआपतूविचारिदेखपापजायसव कोगुणीकेपालैपरैगी ॥ पूतनापिशाचिनीजौंकापिकाह्नतुलसीकीवाहू पीरमहावीरितेरेमारेमरैगी ॥ २५ ॥ भालकीकिकालकीकिरोपकी त्रिदोषकीहै वेदनविषमपापतापछलछाहँकी ॥ करमनकूटकीकियंत्रमं

त्रकूटकीपराहिज।हिपापिनीमलीनमनमाहकी॥ पायहैसजायनतकह तबजायतोहि बावरीनहोहिबानिजानिकपिनाहकी॥ आनहनुमानकीदोहाईबलवानकीशपथमहावीरकीजोरहैपीरबाहँकी॥२६॥सिंहिकासहारिबालिसुरसासुधारिछललंकिनीपछारिमारिबाटिकाउजारीहै॥ लंकापरजारिमकरीविदारीबारबारयातुधानधारिधूरिधानीकरिडारीहै॥ तोरियमकातरिमंदोदरिकढोरिआनिरावणकीरानिमेघनादमहतारीहै॥ भीरबाहँपीरकीनिपटराखीमहावीरकौनकेसकोचतुलसीकेसोचभारीहै॥२७॥ तेरीबालकेलिवीरसुनिसहमतधीरनूलतशरीरसुधिशक्ररविराहकी॥ तेरीबांहबसतविसोकलोकपालसबतेरोनामलिएरहैआरतिनकाहुकी॥ सामदामभेदविधिवेदहूलवेदसिद्धिहाथकपिनाथहीकेचोटीचोरसाहुकी॥आलसअनखपरीहाँसकिसिखावनहैएतेदिनरहीपीरतुलसीकेबाहुकी॥२८॥ टूकनिकोघरघरडोलतकंगालबोलिबालज्योंकृपालतनपालपालिपोसोहै॥ कीन्हीहैसंभारसारअंजनीकुमारवीरअपनोविसारीहै नमरेहूंभरोसोहै॥ एतनोपरेखोसबभांतिसमरथआजुकपिनाथसाँचीकहोकोत्रिलोकतोसोहै॥ सासतिसहतदासकीजैपेषिपरिहासचीरीकोमरनखेलबालकनिकोसोहै॥२९॥आपनेहीपापतेत्रितापतेकीशापतेबढीहैबांहवेदनकहीनसहिजातिहै॥ औषधअनेकयंत्रमंत्रटोटकादिकिएबादिभएदेवतामनाएअधिकातिहै॥ करतारभरतारहरतारकर्मकालकोहै जगजालजोनमानतिइतातिहै॥ चेरोतेरोतुलसीतूमेरोकह्योरामदूतढीलतेरीबारमोहिपीरतेपिरातिहै॥ ॥३०॥ दूतरामरायकोसपूतपूतवायकोसमर्त्थहाथपायकोसहायअसहायको॥ बांकीविरुदावलिविदितवेदगाइयतरावणसोभटभयोमुठिकाकेघायको॥ एतेबडेसाहेबसमर्थकोनिवाजोआजुसीदतसुसेवकवचनमनकायको॥थोरिबाहूपीरकीबडीगलानितुलसीको कौनपापकोपलोपप्रगटप्रभायको॥३१॥ देवीदेवदनुजमनुजमुनिसिद्धनागछोटेबड़ेजीवजेतेचेतनअचेतहैं॥ पूतनापिशाचीयातुधानीयातुधानवामरामदूतकीरजाइमाथेमानिलेतहैं॥ घोरयंत्रमंत्रकूटकपटकुयोगरोगहनुमानआनसुनिछांडतनिकेतहैं॥ क्रोधकीजैकर्मकोप्रबोधकीजैतुल-

सीकोसोधकीजैतिनकोजोदोपदुखदेतहैं ॥ ३२ ॥ तेरेबलवानरजिता येरनरावनसेंतेरेघालेयातुभानधाएघरघरके ॥ तेरेबलरामराजकियेस बसुरकाजसकलसमाजसाजसाजेरघुवरके ॥ तेरेगुणमानसुनिगीरवान पुलकितसजलविलोचनविरंचिहरिहरके ॥ तुलसीकेमाथेपरहाथफेरो कीशनाथबूझिएनदासदुखीतोसेकनिगरके ॥ ३३ ॥ पालेतेरेटूकको परेहूंचूकमूकिये नकूरकौडीटूकोहोंआपनीओरहेरिये ॥ भोरानाथभो- रेहौसरोषहोतथोरेदोषपोषितोषिथापिआपनोनअवडेरिये ॥ अंबुतुहौ अम्बुचरअम्बुतुहौडिंभसोनबूझिएविलंबअवलंबमेरेतेरिये ॥ बालक विकलजानिपाहिप्रेमपहिचानितुलसीकेबांहेपरलांबीलूमफेरिये॥३४॥ घेरिलियोरोगनिकुलोगनिकुयोगनिज्यौंवासरजलदघनघटाधकिनाईहै वरषतवारिपीरजारियेजवासेजसरोषविनुदोषधूममूलमलिनाईहै ॥ क रुणनिधानहनुमानमहाबलवानहेरिहँसिहांकिफूंकिफौजेतेउड़ाईहै ॥ खाएहुतेतुलसीकुरोगराडराकसनिकेशरीकिशोरराखेवीरवरियाईहै ॥ ॥ ३५ ॥ मत्तगयन्द ॥ रामगुलामतुहींहनुमानगुसांइसुसाईसदाअनु- कूलो ॥ पाल्यौहौंबालकआखरदूपितुमातुज्योंमंगलमोदसमूलो ॥ बा- हुकीवेदनबांहपगारपुकारतआरतआँनदभूलो ॥ श्रीरघुवीरनिवारिये पीररहोंदरवारपरोलटिलूलो ॥ ३६ ॥ घनाक्षरी ॥ कालकीकराल- ताकरमकठिनाईकीधोंपापकेप्रभावकीसुभायवायवावरे ॥ वेदनकुभां तिसोसहीनजातिरातिदिनसोईबांहगहीजोगहीसमीरडावरे ॥ लायोत- रुतुलसीतिहारोसोनिहारिवारिसींचिएमलीनभोकुपरितापतावरे ॥ भू- तनिकी आपनीपराईहैकृपानिधानजानियतसवहीकीरीतिरामरावरे ॥ ॥ ३७ ॥ पाँयपीरपेटपीरबाहुपीरमुखपीरजरजरसकलशरीरपीर मईहै ॥ देवभूतपितरकर्मखलकालग्रहमोंहिपरदवरिदमानकसीदईहै॥ होंतोविनमोलहींविकानोवालिवारेहीतेंओढरामनामकीललाटलिखिल ईहै ॥ कुंभजकेकिंकरविकलबूडेगोखुरनि हायरामरायऐसीहालक हूंभईहै ॥ ३८ ॥ बाहुकसुबाहुनीचलीचरमलीचामिलिमुहँपीडके तुजाकुरोगयातुधानहै ॥ रामनामजपजागकियोचाहौसानुरागका लकैसेदूतभूतकहांमेरोमानहै ॥ सुमिरेसहाइरामलषणआखरदोऊ

जिन्हकेसाकेसमूहजागतजहानहै ॥ तुलसीसँभारिताडकासँहारि मारिभटवेधेवरगदसेबनाइवानवानहै ॥ ३९ ॥ ॥ वालपने सूधेम नरामसनमुखभयोरामनामलेतमांगिखातठकठाकहौं ॥ परचौलो करीतिमेंपुनीतप्रीतिरामरायमोहवशबैठोतोरितरकितराकहौं ॥ खोटे खोटेआचरणआचरतअपनायो अंजनीकुमारसोध्यौरामपानिपाक हौं ॥ तुलसीगुसांईभयोभोडेदिनभूलिगयोताकेफलपावतनिदानपरि पाकहौं ॥ ४० ॥ अशनवसनहीनविषमविषादलीनदेखिदीनदूब रोकरैनहायहायको ॥ तुलसीअनाथसोसनाथरघुनाथकियोदियोफ लशीलसिंधुआपनेसुभायको ॥ नीचएहिवीचपतिपाइभरुआइगो विहायप्रभुभजनवचनमनकायको ॥ तातेतनुपेषियतघोरवरतोरमि सिफूटिफूटिनिकसतलोनरामरायको ॥ ४१ ॥ जीवोंजगजानकीजीव नकोकहायजन मरिवेकोवाराणसीवारिसुरसरिको॥ तुलसीकेदुहूंहाथ मोदकहैंऐसेठाँव जाकेजियेमुएसोचकरिहैंनलरिको ॥ मोकोझूठो सांचोलोगरामकोकहतसबमेरेमनमानहैनहरकोनहरिको ॥ भारीपीर दुसहशरीरतेविहालहोतसोऊ रघुवीरविनुसकैदूरिकरिको ॥ ४२ ॥ सीतापतिसाहेबसहायहनुमाननितहितउपदेशकोमहेशमानोगुरुकै ॥ मानसवचनकायशरणतिहारीपायतुम्हरेभरोसेसुरमैंनजानेसुरकै ॥ व्याधिभूतजनितउपाधिकाहूखलकी समाधिकीजैतुलसीकोजानिजन फुरकै ॥ कपिनाथरघुनाथभोलानाथभूतनाथरोगसिंधुक्योंनडारियत गायखुरकै ॥४३॥ कहौहनुमानसोंसुजानरामरायसोंकृपानिधानशंक रसोसावधानसुनिये ॥ हरपविपादरागरोपगुणदोपमईविरचीविरंचि सवदेखियतदुनिये ॥ मायाजीवकालकेकरमकेसुभायकोकैरयारामवे दकहैंसांचीमनगुनिये ॥ तुमसेकहानहोयहाहासोबुझैयेमोहिंहोदूरहों मौनहींवयोसोजानिलुनिये ॥ ४४ ॥

इति श्रीगुसांईतुलसीदासकृतहनुमानबाहुकसमाप्त।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ हनूमानचालीसा ॥

प्रारम्भः ॥

दोहा ॥

श्रीगुरुचरणसरोजरज, निजमनमुकुरसुधार । वरणोंरघुवर विमलयश, जोदायकफलचार ॥ १ ॥ बुद्धिहीनतनुजानिकै, सुमिरोंपवनकुमार ॥ बलबुधिविद्यादेहुमोहिं, हरहुकलेशविकार ॥

चौपाई—जयहनुमानज्ञानगुणसागर ॥ जयकपीशतिहुँलोकउजागर ॥ रामदूतअतुलितबलधामा ॥ अंजनिपुत्रपवनसुतनामा ॥ महावीरविक्रमबजरंगी ॥ कुमतिनिवारसुमतिकेसंगी ॥ कंचनवर्णविराजसुवेशा ॥ काननकुंडलकुंचितकेशा ॥ हाथवज्रऔध्वजाविराजै ॥ काँधेमूंजजनेऊसाजै ॥ शंकरसुवनकेसरीनंदन ॥ तेजप्रतापमहाजगवंदन ॥ विद्यावानगुणीअतिचातुर ॥ रामकाजकरिवेकोआतुर ॥ प्रभुचरित्रसुनिवेकोरसिया ॥ रामलषणसीतामनबसिया ॥ सूक्ष्मरूपधरिसियहिंदिखावा ॥ विकटरूपधरिलंकजरावा ॥ भीमरूपधरिअसुरसँहारे ॥ रामचन्द्रकेकाजसँवारे ॥ लायसजीवनलषणजिवाये ॥ श्रीरघुवीरहृदयभरलाये ॥ रघुपतिकीनीबहुतबड़ाई ॥ तुममममप्रियाभरतसमभाई ॥ सहसवदनतुमरोयशगावै ॥ असकहिश्रीपतिकण्ठलगावै ॥ सनकादिकब्रह्मादिमुनीशा ॥ नारदशारदसहितअहीशा ॥ यमकुबेरदिगपालजहांते ॥ कविकोविदकहिसकैंकहांते ॥ तुमउपकारसुग्रीवहिकीन्हा ॥ राममिलायराजपददीन्हा ॥ लंकेश्वरभयेसबजगजाना ॥ वीरपराक्रमकीर्तिबखाना ॥ युगसहस्रयोजनजोभानू ॥ लीलाताहिमधुरफलजानू ॥ प्रभुमुद्रिकामेलिमुखमाहीं ॥ जलधिलाँघिगयेअचरजनाहीं ॥ दुर्गमकाजजगतकेजेते ॥ सुगमअनुग्रहतुमरेतेते ॥ रामदुलारेतुमरखवारे ॥ होतनआज्ञाविनपैसारे ॥ सबसुखलहैतुम्हारीशरना ॥ तुमरक्षककाहूकोडरना ॥ अपनातेजसम्हारोआपै ॥ ती

तबराक्षसिकोकहिशोकनिवारो ॥ ताहिसमैहनुमानमहाप्रभुजायमहा रजनीचरमारो ॥ चाहतिसीयअशोकसोंआगि सुदैप्रभुमुद्रिविषाद निवारो ॥ को० ॥ ४ ॥ बाणलग्योउरलक्ष्मणकेतब ॥ प्राणतजेसुत रावणमारो ॥ लेगृहवैद्यसुषेणसमेततभीगिरि द्रोणसुवीरउपारो ॥ आनिसजीवनिहाथदेईतबलक्ष्मणकेतुमप्राण उबारो ॥ को० ॥ ५ ॥ रावणयुद्धअजानकियो तबनागकिपाशसबैशिरडारो ॥ श्रीरघुनाथ समेतसबैदलमोहभयोतबसंकटभारो ॥ आनिखगेशतबैहनुमानजु बंधनकाटिसुत्रासनिवारो ॥ कोनहिं० ॥ ६ ॥ बंधुसमेतजबैअहिरा वण लैरघुनाथपतालसिधारो ॥ देविहिपूजिभलीविधिसोंबलिदेहुसबै मिलिमंत्रविचारो ॥ जायसहायभयेतबहीं अहिरावणसैन्यसमेतसंहा रो ॥ कोन०॥७॥ कार्यकियेबड़देवनकेतुमवीरमहाप्रभुदेखविचारो ॥ कौनसुसंकटमोरगरीबकूंजोतुमसोंनाहिंजातहैटारो ॥ वेगिहरोहनुमा नमहाप्रभु जो कछुसंकटहोयहमारो ॥ कोनहिं० ॥ ८ ॥

दोहा ॥ लालदेहलालीलसै, अरुधरिलाललँगूर ॥ वज्रदेहदानवद लन, जयजयजयकपिशूर ॥ यहअष्टकहनुमानको, विरचिततुलसी दास ॥ गंगादासजुप्रेमसों, पढेहोयदुखनास

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृतसंकटमो

चनहनूमानाष्टकंसंपुर्णम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना.

मुंबई.